राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

प्रधान सम्पादक – पद्मश्री मुनि जिनविजय, पुरातत्त्वाचार्य,

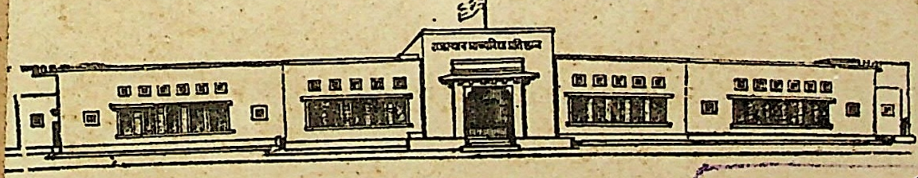
[सम्मान्य सञ्चालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर

ग्रन्थाङ्क ८३

महेसदास राव कृत

बिन्हैरासौ

[बादशाह शाहजहाँ के शाहजादों के युद्धों का वर्णन]



प्र का श क

राजस्थान राज्य संस्थापित

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

जोधपुर (राजस्थान)

RAJASTHAN ORIENTAL RESEARCH INSTITUTE, JODHPUR

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

प्रधान सम्पादक—पद्मश्री मुनि जिनविजय, पुरातत्त्वाचार्य

[सम्मान्य सञ्चालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर]

ग्रन्थाङ्क ८३

महेसदास राव कृत

बिन्हैरासौ

(बादशाह शाहजहाँ के शाहजादों के युद्धों का वर्णन)

प्रकाशक

राजस्थान राज्य संस्थापित

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

RAJASTHAN ORIENTAL RESEARCH INSTITUTE, JODHPUR.

जोधपुर (राजस्थान)

१९६६ ई०

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

राजस्थान राज्य द्वारा प्रकाशित

सामान्यत: अखिलभारतीय तथा विशेषत: राजस्थानदेशीय पुरातनकालीन
संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, राजस्थानी, हिन्दी आदि भाषानिबद्ध
विविधवाङ्मयप्रकाशिनी विशिष्ट-ग्रन्थावली

प्रधान सम्पादक

पद्मश्री मुनि जिनविजय, पुरातत्त्वाचार्य

सम्मान्य संचालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर;
ऑनरेरि मेम्बर ऑफ जर्मन ओरिएन्टल सोसाइटी, जर्मनी;
निवृत्त सम्मान्य नियामक (ऑनरेरि डायरेक्टर),
भारतीय विद्याभवन, बम्बई; प्रधान सम्पादक,
सिंघी जैन ग्रन्थमाला, इत्यादि

ग्रन्थाङ्क ८३

महेसदास राव कृत

बिन्हैरासौ

[बादशाह शाहजहाँ के शाहजादों के युद्धों का वर्णन]

प्रकाशक

राजस्थान राज्याज्ञानुसार

सञ्चालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

जोधपुर (राजस्थान)

१९६६ ई०

महेसदास राव कृत

बिन्हैरासौ

[बादशाह शाहजहाँ के शाहजादों के युद्धों का वर्णन]

कवि की अन्य कृतियों, परिशिष्ट एवं विस्तृत भूमिका सहित

श्री सौभाग्यसिंह शेखावत

अनुसन्धान-सहायक

राजस्थानी शोध संस्थान, जोधपुर

द्वारा सम्पादित

प्रकाशनकर्ता

राजस्थान राज्याज्ञानुसार

सञ्चालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

जोधपुर (राजस्थान)

विक्रमाब्द २०२२ | भारतराष्ट्रीय शकाब्द १८८७ | ख्रिस्ताब्द १९६६

प्रथमावृत्ति १००० | मूल्य– ६.७५

मुद्रक– हरिप्रसाद पारीक, साधना प्रेस, जोधपुर

विषय - सूची

सञ्चालकीय वक्तव्य

भारत में मुगल-साम्राज्य की जड़ों को पक्का करने में राजस्थान की तत्कालीन रियासतों के राजाओं का बड़ा हाथ रहा है। इन राजाओं के भाई-बेटे, सामंत और सामान्य राजपूत परिवार भी उनके साथ साम्राज्य की रक्षा और उसके विस्तार के प्रयत्नों में जी-जान से सहयोग देते थे। इन लोगों में आपसी रूप में पद, ख्याति, दरबारी मनसब और आभिजात्य को लेकर तो मन-मुटाव और एक दूसरे को नीचे दिखाने की अहमहमिका बनी रहती थी और हर एक अपने को अन्य से वरिष्ठ प्रमाणित करने के लिए अवसर की ताक लगाये बैठा रहता था, परन्तु जहां साम्राज्य संबंधी या सम्राटों के वैयक्तिक जीवन तथा पारिवारिक प्रश्न उपस्थित होते थे उनमें ये लोग समान रूप से साम्राज्य का ही साथ देने के लिए होड़ लगाते थे। युद्धों में जाने के लिए एक से एक आगे बढ़ कर उपस्थित होता था और शाही-परिवार में भी कभी आपसी कलह का प्रसंग आता तो ये लोग उन्हीं में से एक या दूसरे पक्ष को अपना कर उसी का हित-साधन करने के लिए अपनी सहज रण-कण्डू का निर्वापन किया करते थे। ऐसे अवसरों पर जिन नायकों का चरित्र ऊंचा उभर आता था उनको शाही इतिहास-लेखक भी अपने विवरणों में प्रमुख स्थान देते थे और बादशाह भी उन्हें यथावसर मनसब, खिलअत और जागीरें आदि देकर सम्मानित करते थे। यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि कुछ राजाओं की शक्ति और रुतबा इतना बढ़ गया था कि बादशाह के घराने को उनके घरानों से मान प्राप्त होने लगा था।

सम्राटों, उनके वजीरों, सेनानायकों और अन्य बड़े अधिकारियों के कार्यों और सुयश को तो दरबारी इतिहास लेखक या उनकी मजलिसों के कवि, शायर और चारण, भाट आदि चिरस्थायी करने के प्रयत्न करते थे और उनकी कृतियां भी यथानुरूप प्रसिद्धि में आती चली गई थीं परन्तु, जैसा कि सभी जानते हैं, प्यादे लड़ते हैं और बख्शी का नाम होता है, जो वास्तव में रणक्षेत्र में लड़ने वाले राजपूत क्षत्रिय सैनिक अपना अदम्य उत्साह और शौर्य प्रदर्शित करते थे उनकी कीर्ति-गाथा को स्थिर करने के लिए उनके वंश-भाट और चारण या फिर कोई लड़ाई के मैदान में आंखों देखे हाल को लिपिबद्ध करने वाला समीक्षक ही किसी न किसी रूप में स्थिर रूप देता था। ऐसे ही विवरणों के फलस्वरूप कितनी ही लघु वचनिकाओं, रासों, ख्यातों और बातों का निर्माण हुआ

है जो बहुत कम प्रसिद्धि में आ सके और कोई-कोई तो रचयिता के परिवार में ही पड़ा नष्ट हो गया अथवा हाथों-हाथ उतर कर कहीं का कहीं पहुँच गया, खंडित हो गया या फिर किसी ने उसमें अपनी बुद्धि लगा कर जोड़-तोड़ कर मूल रूप से भिन्नता ला कर उसे घटा बढ़ा दिंया, इत्यादि । परन्तु निःसन्देह ऐसी रचनाएं जब उपलब्ध हो जाती हैं और उनका अनुशीलन किया जाता है तो कितने ही ऐसे कुलों और शूरवीरों का पता चलता है कि जिनके वीर कार्यों ने घटनाओं को निर्णायक मोड़ दिए हैं और इतिहास निर्माण में जिनका पूरा दायित्व रहा है। यह बात दूसरी है कि कारणान्तर से श्रेय किसी और को मिला हो ।

राव महेशदास कृत 'बिन्हैरासो' भी ऐसी ही रचना है जिसका मुख्य विषय तो गद्दी के लिए बादशाह शाहजहां के पुत्रों की लड़ाई का है परन्तु कवि का उद्देश्य अपने आश्रयदाता राजगढ़ के शासक अर्जुन गौड़ की वीरता और रण-कौशल का गुण-गान करना है। प्रसंगवश उसने इस संबंध में हुई तीनों ही लड़ाइयों का वर्णन किया है परन्तु जिस रुचि और ओज के साथ उज्जयिनी युद्ध का विवरण दिया गया है, जिसमें अर्जुन गौड़ वीर गति को प्राप्त हुआ था, उससे कवि का झुकाव और उद्देश्य प्रत्यक्ष ही स्पष्ट हो जाता है। ऐसा ही खिड़िया जगा की राव रतनसिंह महेसदासोत की वचनिका में हुआ है जिसमें आधार तो शाहजादों का युद्ध ही है परन्तु कवि का अभीष्ट राव रतनसिंह की यशोगाथा को चिरंजीवी करने का है ।

प्रस्तुत 'बिन्हैरासो' ब्रजभाषा प्रभावित डिंगल की, जिसको कि राजस्थानी ही मानना चाहिए, एक अज्ञात कृति है। इसकी एकमात्र उपलब्ध प्रति लेकर जब जोधपुर स्थित राजस्थानी शोध संस्थान के संचालक डा० नारायणसिंहजी भाटी और उनके शोध सहायक श्री सौभाग्यसिंहजी शेखावत आए और हमको पाण्डुलिपि दिखाई तो इसको अद्यावधि अज्ञात, अप्रकाशित और भाषा एवं कितने ही ऐतिहासिक मुद्दों और तिथियों का हल करने योग्य समझ कर हमने राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला में इसके प्रकाशन को समुचित माना और श्री सौभाग्यसिंहजी शेखावत को ही जो इसका रुचिपूर्वक अध्ययन कर रहे थे संपादन-भार सौंप दिया। इन्होंने बहुत योग्यता पूर्वक, इस रचना की एक ही प्रति उपलब्ध होते हुए भी पदच्छेद और अर्थानुसंधान की संगति बैठा कर पाठ संपादन किया है, तथा शब्दार्थ और संदर्भ खोलने के भी अधिकाधिक प्रयास किये हैं। साथ ही परिशिष्ट में गौड़ों की वंशावली, ऐतिहासिक टिप्पणियां व नामानुक्रमणिका देकर पुस्तक को बहुत उपयोगी बना दिया है। इसके अतिरिक्त उनकी अध्ययन-पूर्ण विस्तृत भूमिका में कवि और उसकी रचनाओं, प्रस्तुत रचना के साहित्यिक

और ऐतिहासिक विवेचन का यथाशक्य पूरा विवरण भी कम महत्त्वपूर्ण नहीं है ।

शाहजहां के शाहजादों के युद्धों के विषय में अन्य भी बहुत सी रचनाएं उपलब्ध होती हैं और इतिहास के विशेषज्ञों ने भी इस संघर्ष का ऐतिहासिक विश्लेषण करने में कोई कसर नहीं रखी है । प्रस्तुत रचना में इन युद्धों की तिथियां भी विक्रमी संवत् के अनुसार दी गई हैं । किसी-किसी इतिहास के विद्वान् द्वारा उल्लिखित तिथियों से संभवतः इनका मेल नहीं बैठता । विद्वान् संपादक का अनुमान है कि उज्जैनी युद्ध में राव महेशदास स्वयं प्रत्यक्षदर्शी रहा होगा । अतः यह विषय इतिहास संशोधकों के लिए संशोध्य और रुचिकर हो सकता है ।

विद्वान् संपादक ने ग्रंथ के नामकरण और इसकी अप्रसिद्धि के कारण पर भी अपनी भूमिका में प्रकाश डाला है और अनुमान किया है कि 'बिन्है' शब्द दो के लिए और 'रासो' युद्ध के लिए प्रयोग में आता है इसलिए कवि ने इसे 'बिन्हैरासो' नाम दिया होगा क्योंकि इसमें आरम्भ में उज्जैनी और धौलपुर के दो युद्धों का वर्णन करने का ही विचार रहा होगा, इत्यादि । अथवा "अपने वीर आश्रयदाताओं के यश का विनय-पूर्वक प्रसारण करने के लिए ग्रंथ का नाम 'बिन्है रासो' रखा गया हो तो भी युक्ति-संगत है ।" परन्तु, हमें प्रथम अनुमान ही अधिक संगत लगता है । बिन्है शब्द प्रायः कवि ने 'दो' के अर्थ में ही प्रयुक्त किया है और आरम्भ में भी ग्रन्थ का परिचय देते हुए प्रकट किया है—

"पिता पूत दळ द्वै जुड़ै, भिन भिन वरणौं ताय"

(पृष्ठ १ पद्य २)

पिता और पुत्रों के दोनों दलों में यह युद्ध हुआ जिसका भिन्न-भिन्न रूप में इस ग्रन्थ में वर्णन हुआ है । दो दलों के युद्धों का वर्णन होने के कारण ही इसका नाम "बिन्हैरासो" है । अन्यत्र भी कई स्थलों पर "बिन्है" व "दुहूँ" "दुई" आदि शब्दों का प्रयोग हुआ है । यथा—

"दसयेक घड़ी चढतै दिवस, दळां साहि चढिया दुई"

(पृष्ठ १२३ पद्य ३२)

"मिळि दीठि दीठि वहूं दळां मद्धि"

(पृष्ठ १२५ पद्य ३७)

"साहि बिन्है घर संधि, कोट काबली करारै"

(पृष्ठ १०६ पद्य ११)

"फतै पाय मोटो बिन्है साहि फूलै"

(पृष्ठ १०३ पद्य २०३)

श्री सौभाग्यसिंह जी शेखावत एक अध्ययनशील विद्वान् हैं। इनकी रुचि और योग्यता का जो उपयोग इन्होंने इस पुस्तक के संपादन में किया है और एतद् द्वारा राजस्थानी भाषा एवं कतिपय ऐतिहासिक तथ्यों का उद्घाटन तथा इतिहास में अप्रसिद्ध कतिपय वीरों और उनके कुलों के परिचय का उद्धार हुआ है उसके लिए ये हमारी ओर से बधाई के पात्र हैं। आशा है ये अपने अध्ययन और शोध में गतिशील होकर भविष्य में भी इसी प्रकार शोधकर्त्ताओं को उपकृत करते रहेंगे।

इस पुस्तक के प्रकाशन में भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय से 'हिंदीतर आधुनिक भारतीय भाषाओं की विकास योजना—राजस्थानी' के अन्तर्गत व्यय का कतिपय अंश अनुदान के रूप में प्राप्त हुआ है तदर्थ हम उक्त मंत्रालय के प्रति हार्दिक आभार प्रकट करते हैं।

राजस्थान पुरातन ग्रंथ-माला के ८३वें ग्रंथांक रूप में प्रकाशित इस रचना से विद्वानों को संतोष और आमोद प्राप्त होगा, ऐसी हमारी आशा है।

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान
जोधपुर
७-२-६६

मुनि जिनविजय
सम्मान्य सञ्चालक

भूमिका

राजस्थान में जितना विशाल साहित्य डिंगल तथा पिंगल भाषाओं में लिखा गया है, उसका बहुत थोड़ा अंश प्रकाशित होकर विद्वानों के हाथों में पहुँचा है। अनेक महत्त्वपूर्ण कवि और कृतियाँ अभी तक अज्ञात हैं। प्रस्तुत कृति बिन्हैरासो और उसका कर्त्ता महेशदास राव दोनों अद्यावधि अज्ञात थे। यद्यपि यह कृति अपने आप में साहित्यिक एवं ऐतिहासिक दृष्टि से एक महत्त्वपूर्ण कृति है और इसका कर्त्ता एक प्रतिभावान् कवि रहा है। अतः इस कृति की ऐतिहासिक और साहित्यिक महत्ता पर प्रकाश डालने से पहले हम इसके कर्त्ता के सम्बन्ध में प्राप्त साधनों के आधार पर आवश्यक जानकारी प्रस्तुत कर रहे हैं।

कवि-वंश परिचय

राजस्थानी-साहित्य-सर्जक जातियों में चारणों और रावों का महत्त्वपूर्ण स्थान रहा है। चारण-समाज के कवियों ने अधिकतर डिंगल भाषा में काव्य-रचना की है और राव जाति के कवियों ने पिंगल में। राव कवियों की रचना-प्रवृत्ति वीररस के स्थान पर श्रृङ्गाररस की ओर अधिक रही है। पर जिन राव कवियों ने डिंगल भाषा में वीररसात्मक काव्य का सर्जन किया है, उनकी कृतियाँ डिंगल के अन्य जातीय श्रेष्ठ कवियों की रचनाओं की भली प्रकार समता करने में सक्षम हैं। राव कवियों की कलाकृतियों का अवलोकन करने से एक बात और जान पड़ती है कि उनका काव्याध्ययन; नियमित, व्यवस्थाबद्ध और काव्यशास्त्रीय पद्धतियों के अनुकूल हुआ था। यही कारण है कि अन्य जातीय कवियों के प्राचीन ग्रंथों में लिपि की जैसी और जितनी असावधानियाँ मिलती हैं, उतनी राव कवियों की रचनाओं में नहीं मिलतीं।

राजस्थान में रावों को ब्रह्मभट्ट अथवा भाट भी कहते हैं। संभवतया भाट शब्द भट्ट का ही विकृत रूप है। राजस्थान के कई भागों में पीढ़ियाँ लिखने वाले और वंशावलियाँ लिपिबद्ध कर सुरक्षित रखने वाले बड़वों और वहीबंचों को भी भाट सम्बोधन से पुकारा जाता है। किन्तु ब्रह्मभट्ट, राव और काव्यकार भाट जाति, उन भाटों से अपने आपको सर्वथा अलग और श्रेष्ठ मानती है। यह जाति चारणों की भाँति ही एक काव्योपजीवी जाति है और उनके समान

ही राजपूत जाति के अतिरिक्त अन्य जातियों से दान आदि की याचना नहीं करती। राजपूत समाज भी इन दोनों जातियों का बड़ा सम्मान रखता है और चारण कवियों को कविराज और राव कवियों को कविराव के आदरणीय सम्बोधन से बतलाते हैं। वैसे इन दोनों ही कवि-जातियों की गणना 'षट्दर्शनों' में होती है, जो शासक और प्रजा दोनों ही के लिए पूज्य रहे हैं।

रावों अथवा भाटों की बारह शाखाएं प्रसिद्ध हैं। उन बारह शाखाओं में 'लाखनौत' भी एक शाखा कहलाती है। लाखनौत शाखा वाले राव अपना उत्पत्ति सम्बन्ध गौड़ शाखा के चन्द्रवंशी क्षत्रियों से प्रकट करते हैं। उनका कथन है कि खिलजी वंश के प्रसिद्ध बादशाह अलाउद्दीन खिलजी के शासनकाल में पूर्व दिशा से पाँच गौड़ क्षत्रिय भ्राता राज्य-च्युत हो कर राजस्थान की ओर आए थे। उनके नाम वामनदेव, वच्छराज, हृदयचंद, रणसीं और उदयसीं थे। उन्होंने राजस्थान में अजमेर-मेरवाड़ा और सांभर के समीपस्थ भूभाग पर आधिपत्य स्थापित कर अपना निवासस्थान बनाया। राज्य-संस्थापन के उस संघर्ष में रणसीं और उदयसीं दो भ्राता तो मारे गए और वामनदेव, वच्छराज तथा हृदयचंद जीवित रहे, जिन्होंने ऊपर कथित भूप्रांत पर शासन किया। कालान्तर में अजमेर और सांभर तो उनके अधिकार से निकल गए और अब उनकी संतति के निवास में राजगढ़, शिवपुर बड़ौदा, और मारवाड़ के मारोठ परगने के गांवों और कोटा-बूंदी के गांवों में कहीं-कहीं 'छड़े-बीछड़े' परिवार रह गए हैं।

उन पांचों भ्राताओं में वच्छराज बड़ा प्रतापी, वीर और उदार शासक हुआ। उसने अजमेर को अपनी राजधानी बना कर शासन किया। उसकी उदारता और वदान्यता राजस्थान में आज भी काव्य-श्रुतियों के रूप में प्रचलित है।[१] उससे छोटे वामनदेव ने मारवाड़ प्रदेश के नागौर जिले के मारोठ परगने पर आधिपत्य स्थापित किया; तब से उस भाग का नाम गौड़ावाटी प्रचलित हुआ। कविराजा बांकीदास ने अपनी ख्यात में वामनदेव को पृथ्वीराज चौहान का बहनोई लिखा है और उसी के द्वारा वामन को अजमेर प्रान्त दिये जाने का जिक्र किया है।[२] गौड़ावाटी भूभाग पर गौड़ क्षत्रियों का लगभग पाँचसौ वर्षों तक शासन रहा। इस अवधि में गौड़ों और कछवाहों की शेखावत शाखा तथा गौड़ों और राव

---

[१] दीधो अड़व पसाव दत, वीर गौड़ बछराज।
गढ़ अजमेर सुमेर जिम, ऊंचौ दीसे आज॥

[२] बांकीदास री ख्यात, सं० नरोत्तमदास स्वामी, पृ. १६६

मालदेव जोधपुर की सेनाओं के मध्य एक-दो बार भयानक संघर्ष भी हुए, पर गौड़ों की संगठित शक्ति और शेरशाह सूरी के मारवाड़ पर आक्रमण के कारण राव मालदेव का अधिकार स्थायित्व प्राप्त नहीं कर पाया। बादशाह शाहजहाँ के शासनकाल में गौड़ों का प्रताप-रवि पूरे प्रभाव से तपा जो उसकी अस्वस्थता के कारण संवत् १७१५ विक्रमी में जब शाहजादा औरंगजेब उज्जैन और धौलपुर के रणक्षेत्रों में शाही सेना को परास्त कर दिल्ली के सिंहासन पर आरूढ़ हुआ, तब अस्त हुआ। औरंगजेब ने बादशाह बनने के बाद अपने सैनिक पक्ष को सबल बनाने तथा दाराशिकोह और बादशाह शाहजहाँ के पक्ष को निर्बल करने तथा उपर्युक्त युद्धों के प्रतिपक्षी योद्धाओं से प्रतिशोध लेने के उद्देश्य से उनके मनसब तथा जागीरें जप्त कीं। साथ ही अपने समर्थक योद्धाओं को वे ही जागीरें प्रदान कर उनके प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट करने का उपक्रम किया। उपर्यंकित दोनों युद्धों में औरंगजेब और मुराद के पक्ष में राठौड़ों की दूदावत (मेड़तिया) शाखा के सांवलदास का पुत्र रघुनाथसिंह राठौड़ भी उनकी सेना में रह कर लड़ा था। उसके बाद के शाहशुजा और दाराशिकोह के विरुद्ध लड़े गए युद्धों में भी वह अनवरत औरंगजेब का सहायक बना रहा। फलस्वरूप बादशाह बनने के बाद औरंगजेब ने संवत् १७१७ वि० में गौड़ावाटी का भूभाग रघुनाथसिंह मेड़तिया को प्रदान किया। रघुनाथसिंह अपनी अकेली शक्ति से गौड़ों पर काबू न पा सका। तब उसने अपने ननिहाल और ससुराल पक्ष के लाडखानी (शेखावत) तथा राजावत कछवाहों की सशर्त सैनिक सहायता प्राप्त कर गौड़ावाटी पर अपना अधिकार स्थापित किया।[1] इस प्रकार गौड़ावाटी की पराजय के साथ वामनदेव के वंशजों की सैनिक शक्ति सदा के लिए समाप्त प्रायः हो गई।

उपर्युक्त वच्छराज और वामनदेव के अवशेष जीवित बंधु हृदयचंद के वंश में लाखन नाम का पुत्र हुआ। उस लाखन से रावों की लाखनवत अथवा लाखनौत शाखा का प्रचलन हुआ। कविराजा बांकीदास ने लाखन गौड़ के भाटों में मिल जाने का उल्लेख किया है।[2] राजस्थान में अनेक जातियों की उत्पत्ति के संबंध में इससे मिलती-जुलती कथाएं प्रचलित हैं। ऐसी दशा में पुष्ट प्रमाणाभाव में यह तो नहीं कहा जा सकता कि इस कथा में कितना ऐतिहासिक तथ्य है, किन्तु इतना अवश्य माना जा सकता है कि लाखनौत रावों में अनेक विद्वान्, योद्धा

---

[1] राठौड़ों की ख्यात, राजस्थानी शोध संस्थान, जोधपुर का संग्रह।

[2] लाखण गौड़ भाट हुवो जिणरे वंश रा लाखणोत भाट गोडां रा अतेसरी।
बांकीदास री ख्यात, सं० नरोत्तमदास स्वामी, पृ० १६५।

और राजसभाओं में प्रतिष्ठाप्राप्त व्यक्ति हुए हैं । इस शाखा वालों को अपने योग्य पूर्वजों के कारण ब्रह्मभट्ट समाज में भी यथेष्ट सम्मान और गौरव मिला है ।

लाखनौतों में जैसा कि ऊपर संकेत कर आए हैं, समय-समय पर अनेक विद्वान्, कवि, योद्धा और राजदरबारों में बैठक तथा सम्मान प्राप्त करने योग्य व्यक्ति हुए हैं । इन राज्यमान्य लाखनौतों में प्रस्तुत ग्रंथ बिन्हैरासो के कर्त्ता विद्वान् और कवि महेशदास के पिता बाघा अथवा बाघजी भी एक प्रसिद्धि-प्राप्त व्यक्ति थे । इनके दो और भाई थे, जिनके नाम भीखाजी और रामाजी थे[1] । बाघाजी आमेर नरेश राजा मानसिंह कछवाहा, राणा प्रतापसिंह मेवाड़ और नारायना के स्वामी राव खंगार कछवाहा के समकालीन थे । प्रसिद्धि है कि राजा मानसिंह ने हल्दीघाट के युद्ध में राणा प्रतापसिंह को पराजित कर उदयपुर की प्रसिद्ध झील पीछोला में अपने अश्व को पानी पिलाते समय गर्वोक्ति के साथ घोड़े को सम्बोधित कर कहा था—'हे अश्वराज ! इस सरोवर का निर्मल जल विजय प्राप्त कर आज या तो तूं ने ही पिया है या एक बार राव जोधा राठौड़ के घोड़े ने पिया था ।' यह दर्पोक्ति उसी की सेना के एक चारण कवि को सहन नहीं हुई और उसने अपने भावी लाभालाभ का विचार किए बिना ही राजा की भर्त्सना करते हुए वहीं एक दोहा कह सुनाया ।[2] चारण के उस अपमान-जनक दोहे पर रुष्ट होकर कछवाहा नरेश ने अपने राज्य के चारणों के सभी शासनिक गांव उनसे छीन लिए । उनमें से कई गांव अन्य जातियों के कवियों को प्रदान किये । राजा ने चारणों के उन गांवों में से एक ग्राम और लाखपसाव बाघा को भी देने का प्रस्ताव किया, लेकिन विवेकशील बाघा ने चारणों की उदक का गांव लेना स्वीकार नहीं किया । इस पर राजा मानसिंह और बाघा के भी दर्शन-व्यवहार नहीं रहा । बाघा ने चारणों की उदक से उतरा हुआ गांव लेने में अपना अपमान समझा और तब फिर वह भी एक दोहे द्वारा अपना विरोध प्रकट कर आमेर से चला गया ।[3] तदन्तर राजा मान-सिंह के ननिहाल श्रीनगर के पंचायण पंवार के आमात्य चतुर कवि किसना भादा

---

[1] स्वर्गीय कविराव मोहनसिंहजी उदयपुर द्वारा संकलित 'राव जाति का इतिहास' की सामग्री से ।

[2] माना मन अंजसे मती, अकबर बळ आयाह ।
जोवै जंगम आप रै, पांणां बळ पायाह ।।

[3] मांन नांव जांचूं नहीं, आही बाघ री टेक ।

ने मानसिंह को प्रसन्न कर चारणों को उनके गांव पुनः दिलवा कर उनका संकट मिटाया। पर बाघा तो मानसिंह नाम के किसी राजपूत का दान न लेने की प्रतिज्ञा कर चुका था, इसलिए वह अपने जीवन-काल में फिर आमेर नहीं गया। बाघा की इस निर्लोभिता, विवेक और साहसिक कार्य के कारण अपने समय के कवि समाज में बड़ा सम्मान बढ़ा। वह जैसा विवेकशील, विचारक, और मान-धनी था, उसी के अनुरूप स्पष्टभाषी और डिंगल-साहित्य का प्रौढ़ विद्वान भी था। यद्यपि राजा मानसिंह से उसकी अनबन हो चुकी थी, पर उसी के सजातीय और सहयोगी अन्य कछवाहा सामन्त योद्धाओं से उसका पूर्ववत ही मेल-मिलाप और सम्पर्क बराबर बना रहा।

कविराव बाघा की रचनाएँ प्रयत्न करने पर भी अच्छी संख्या में प्राप्त नहीं हुई हैं। हमारी अब तक की खोज में उसके रचित डिंगल भाषा के दो वीर गीत ही हमें उपलब्ध हुए हैं। प्राप्त गीतों में प्रथम गीत नरायना के स्वामी कछवाहों की खंगारोत शाखा के प्रवर्त्तक राव खंगार और राणा प्रतापसिंह के संवत् १६३३ वि० के खमनोर स्थान के युद्ध पर आधारित है। राव खंगार उस युद्ध में अपने सजातीय तत्कालीन प्रसिद्ध योद्धा राव लूनकर्ण शेखावत अमरसर, राजा माधवसिंह कछवाहा भानगढ़ और राजा मानसिंह आमेर सहित शाही सेना में नियुक्त था। कवि बाघा की भाषा, शैली और रचनाक्रम का अवलोकन करने के उद्देश्य से वह गीत यहां उद्धृत किया जाता है—

गीत

कळहणि करि थाट कळळ ऊकळतै, सौहड़ सिखरि पांव सजि सार।
औवड़ि रांण प्रताप ऊपरां, खमियौ खांडा धार खंगार॥
ऊतर अकळ अचळ घण ऊरड़, हूंकळ कळ बीजूजळ हांम।
माथै लोह निहसि मेवाड़ै, वूठौ जगड़ तणौ वरियांम॥
किरमर सेन कूंत कैलपुरा, मेह छेह अरि उर सिरमौर।
कळहणि रहचि किया कछवाहे, खळ डळ पळ चीखळ खमणौर॥

यद्यपि खमनोर (हल्दीघाट) के युद्ध में राणा प्रतापसिंह को पराजित होना पड़ा था, परन्तु अपार जन-धन की हानि उठा कर भी उन्होंने स्वाभिमान, कुल-गौरव और अपनी स्वतन्त्रता की कष्टसाध्य साधना की टेक को त्यागने की कभी कल्पना नहीं की। उनकी स्वतंत्रता तथा देश-भक्ति की उस उत्कट भावना ने जोधपुर के राव चन्द्रसेन, सिरोही के राव सुरतान देवड़ा और सिवाना के राव कल्ला राठौड़ प्रभृति कतिपय स्वतन्त्रता-प्रेमी राजाओं में भी साहस का संचार किया। राणा प्रतापसिंह की स्वतन्त्रता की गौरवमयी टेक

ने मुगल दरबार और बाहर के अनेक डिंगल कवियों को प्रभावित किया। फलस्वरूप तत्कालीन प्रसिद्ध कवि पृथ्वीराज राठौड़, दुरसा आढ़ा, माला सांदू आदि कवि उसके चरणों पर अपनी वाणी के शब्द-सुमन समर्पित कर पवित्र हुए हैं। हम पहिले लिख आए हैं कि कवि बाघा एक स्वाभिमानी व्यक्ति था, तब भला उस काल के एकमात्र स्वाधीन हिन्दू नरेश राणा प्रतापसिंह पर वह कुछ भी न लिखे, यह कैसे हो सकता था ? राणा के वीर चरित्र और स्वाधीनता के संघर्ष-शील प्रयास ने कवि बाघा को भी आकर्षित किया और उसने अपनी ओजपूर्ण भाषा में तलवार-बल से मेवाड़ की स्वतन्त्रता को सुरक्षित रखने का एक गीत लिख सुनाया—

गीत

खळ कटकां खळां सांवरत खांडी, खांडौ कदैन राखै खांप।
खांडावळि राखै खूंमांणै, प्रथमी खांडा तणै प्रताप ॥१॥
रवदां चूक अचूक रातड़ै, पळ नह रूक विछोड़ै पांण।
रूके कुम्भ कळोधर राखै, रेणां रूक तणी तिम रांण ॥२॥
सत्रहर सार अपार सुरंगे, जूटि सार घर राखण जोध।
सारि मारि राखै दस सहसौ, सार तणी अवनी सीसोध ॥३॥
असुरां रौळ चौळ व्रण आउध, आउध ग्रहि आतम अरियां।
आउध ध्रम धरती ऊदावत, आउध धारै ऊधरिया ॥४॥

उल्लिखित दोनों गीतों के माध्यम से कवि की भाषा, भाव-निर्वाह, उसके अध्ययन, विचारधारा और रचना-प्रणाली की यत्किंचित झलक हमें प्राप्त हो सकती है।

कवि बाघा के पांच पुत्र हुए जिनके नाम क्रमशः काशीदास, महेशदास, कल्याणदास, गंगादास और पोखरदास थे। बाघा अपने जीवन के संध्याकाल में तीर्थराज पुष्कर के सन्निकट अपने निवास-स्थान ग्राम खोहरी में ही स्थायी रूप से रहने लगा और उसी स्थान पर अपनी जीवन-लीला संवरण की। तब उसकी मृत्यु के पश्चात उसके पांचों योग्य पुत्र अपने भाग्य और काव्य-कौशल की परीक्षा करने के लिए प्रयत्नशील हुए। उनमें से सबसे बड़ा काशीदास राजा विट्ठलदास गौड़ के पुत्र राजा अनिरुद्धसिंह गौड़ के पास गया और अपनी काव्य-चातुरी से राजा को प्रसन्न कर शिवपुर बड़ौदा के पास जागीर प्राप्त की। काशीदास ने वहां पर अपने नाम पर काशीपुरा गांव आबाद किया। वह अपने जीवनकाल में राजा अनिरुद्धसिंह की सेवा में ही बना रहा। दूसरे पुत्र महेशदास ने राजा विट्ठलदास गौड़ के द्वितीय पुत्र, बादशाह शाहजहां के अत्यन्त विश्वासी

मनसबदार और दरबारी अर्जुन गौड़ की सेवा स्वीकार की। अर्जुन गौड ने महेशदास की काव्य-सेवाओं पर प्रसन्न होकर अपने राज्य राजगढ़ में महेशदास को जागीर और निवास के लिए हवेली प्रदान की। महेशदास ने राजगढ़ में एक बड़ा तालाब बनवाया और अपनी हवेली का सुधार कर उसके परकोट बनवाया। वह जलाशय और हवेली उसके वर्तमान वंशज श्री गोवर्द्धनसिंह राव के अधिकार में है। महेशदास की सन्तति में राजगढ़, इन्द्रगढ़, गोदावरी, बड़ौदा और खूंजी आदि गांवों के राव हैं। महेशदास अपने अन्य चारों बन्धुओं में सर्वाधिक प्रसिद्धि प्राप्त व्यक्ति हुआ। उसने बड़े परिमाण में काव्य ग्रन्थों का प्रणयन किया जिन पर आगे अलग से विचार किया जाएगा।

बाघा के तृतीय पुत्र का नाम कल्याणदास था। वह मेवाड़ के प्रतापी नरेश राणा राजसिंह के दरबार में पहुँचा और राणा से मेवाड़ का समेला ग्राम प्राप्त कर वहाँ अपना निवास बनाया। उसने अपने रचित भक्तिकाव्य ग्रंथ 'गुणगोबिन्द' में समेला ग्राम का इस रूप में उल्लेख किया है।[1] कल्याणदास ने नरकाव्य और भक्तिकाव्य दोनों प्रकार का काव्य लिखा है। उसके कृतित्व और रचनाशैली की परिचिति के लिए अर्जुन गौड़ पर लिखा गया एक गीत यहाँ उदाहरण के लिए दिया जा रहा है। गीत अर्जुन का उज्जैन के युद्ध में लड़ते हुए वीरगति प्राप्त करने का सूचक है। कवि ने युद्ध की विवाह से समता करते हुए उसके उपकरणों और क्रियाओं का सावयवरूपक में वर्णन किया है जो वस्तुतः बड़ा सुन्दर बन पड़ा है—

गीत

ऊजेणि मंडप जुध अवरंग मांडै, ऋगळ केसरियां अजै किया।
तोरण थया तणां तरवारचां, थांम साबळां तणां थया ॥१॥

गौड़ मौड़ बंध ठौड़ गराजू, राजू सूरति सिरी रढ़ाळ।
दुलहणि जोय वीठळ रौ दुलही, मन उलही मेळै बरमाळ ॥२॥

चतुरंगी गवरंगी चातुर, बर आतुर अजमेरि बर।
घूंघट ढाल तणां घातिया, भाळी तीछि कटाछि भर ॥३॥

कँवर बांण जमूर अखति कढ़ि, हाथां कियै जमदढ़ हथळेव।
फिरि फिरि अफिरि कियै सुज फेरा, जोगणि घेरा राग जमेव ॥४॥

खेत महळ बीचि रहसि बहसि खगि, तिहसि मिहसि कसि ऊससि ताव।
लोहां लाट लाल रंग लाडै, घट घट घाट ऊपरै घाव ॥५॥

---

[1] बास समेळे बाघतण, लाखणीत कलियांण।
गायो श्रीगोविन्द गुण, पायो भगत प्रमांण ॥

अड़थड़ मिरड़ भिरड़ झड़ अवझड़, नवड़ भवड़ वड़ निवड़ नड़ ।
आवट कूटि तूटि कसणांवट, छूटि जड़ावटि फूटि छड़ ।।६।।

अपछर हर खेचर भूचर अंग, लग आपोपण लाग लिया ।
त्याग दिया अजमल वड त्यागी, कारण वाद मुराद किया ।।७।।

साहां वदै न चूको सावो, राखै दहुं राहा बिचि टेक ।
वड जानी जसवंत बीछड़तां, बींद बींदणी मिळै विसेक ।।८।।

कल्याणदास का पुत्र दयालदास हुआ, जिसने 'रांणा-रासो' नामक प्रबंध की रचना की । 'रांणा-रासो' में राणा राजसिंह तक के मेवाड़ के नरेशों का इतिवृत्तात्मक काव्यवर्णन है । ग्रंथ की भाषा बड़ी क्लिष्ट और ओजमयी है । कल्याणदास के वंशज आजकल गाधेरी, पावसू और केदारड़ी आदि गांवों में रहते हैं ।

बाघा के चतुर्थ पुत्र गंगादास और पांचवें पोखरदास के उत्तराधिकारी हाडा-वाटी के इन्द्रगढ़, पीपलदा, वड़ोली आदि गाँवों में रहते हैं । काशीदास, गंगादास और पोखरदास भी कवि और विद्वान् बताए जाते हैं, किन्तु प्रयत्न करने पर भी उनकी रचना के अंश उपलब्ध नहीं हुए हैं । इस प्रकार बाघा के पांचों वंशधरों ने अपने सम्मिलित वतन खोहरी गाँव को तीर्थराज पुष्कर के समर्पित कर दिया । खोहरी ग्राम में बाघा के निवास की स्मृति के रूप में उसकी हवेली के खुर्रे का एक जीर्ण-शीर्ण भाग अवस्थित है । बाघावतों के खोहरी ग्राम के निवास, उनकी उदारता, वीरता आदि की ध्वनि एक प्राचीन दोहे में इस प्रकार व्यक्त हुई है—

जुध वंका खत्रवट खरा, अं हैं बाघ हराह ।
नग सारीसा नीपजै, घन खोहरी घराह ।।

इस प्रकार प्राप्त जानकारी के आधार पर कवि बाघा लाखनोत और उसके पांचों पुत्रों की संक्षिप्त परिचयात्मक परिचिति यहाँ देने का प्रयास किया गया है ।

कवि-परिचय

कविवंश परिचय में पहिले उल्लेख किया जा चुका है कि कविराव महेश-दास रावों की लाखनोत शाखा के कवि बाघाराव का द्वितीय पुत्र था । उसका जन्म पुष्कर के समीपस्थ खोरी (खोहरी) नाम के ग्राम में हुआ था । जब वृद्धावस्था प्राप्त कर बाघा का देहावसान हो गया, तब महेशदास भी अपने अन्य भ्राताओं के साथ खोरी ग्राम को तीर्थराज पुष्कर के अर्पण कर राजगढ़ के शासक ठाकुर अर्जुन गौड़ की सेवा में चला गया । अर्जुन गौड़ ने महेशदास की प्रतिभा और काव्य-गुणों पर मुग्ध होकर अपने ठिकाने राजगढ़ में निवास के लिए एक

हवेली और जीवन-निर्वाह के लिए भूमि प्रदान कर सम्मानपूर्वक अपने वहाँ रख लिया। तब वहाँ उसने कृषि की सिंचाई के लिए एक तालाब का निर्माण करवाया और हवेली में सुधार करवा कर अपना स्थायी निवास बनाया।[1] वह हवेली, तालाब और भूमि का अंश अद्यावधि उसके उत्तराधिकारी वंशज गोवर्द्धनसिंह राव के अधिकार में है।

कवि के व्यक्तिगत जीवन में उसके बाल्यकाल, शिक्षा, गुरु, विवाह और सन्तति आदि का परिचय अनेक प्रकार का प्रयत्न करने पर भी सुलभ नहीं हुआ। कवि ने अपने आश्रयदाता गौड़ अर्जुन और उसके पुत्र राजसिंह की वंशावली में गौड़ों का वंश-वृत्तान्त लिख कर उनके इतिहास को तो सुरक्षित करने की दिशा में प्रयत्न किया है, परन्तु स्वयं के तथा अपने कुल के विषय में अपने ग्राम का नाम और स्वयं का नाम संकेत करने के अतिरिक्त कुछ भी नहीं लिखा है। यही नहीं अपने लिखित ग्रंथों के इतिहास-प्रसंगों में उसने प्रमाणित संवत् तिथियाँ और वार आदि का प्रकाशन किया है, पर ग्रंथ के निर्माण काल के सूचक संवतादि का कहीं भी ग्रंथांश अथवा पुष्पिका में संकेत नहीं दिया है। ऐसी स्थिति में कवि का समग्र जीवन-परिचय तो क्या बल्कि काव्य-साधनाकाल भी सही रूप में निर्धारित करना बड़ा कठिन है। कवि के वंशज या बहीवाचक से तथा प्राप्त ख्यातों और प्रकाशित-अप्रकाशित किसी भी पुस्तक में उसके विषय में कहीं कोई आधारभूत सकेत उपलब्ध नहीं हुआ है। कवि की कृतियों के विषय में आज से चार वर्ष पूर्व मैंने पहली बार पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से साहित्य-संसार को अवगत करवाया था। तदनन्तर मैं कवि के परिचय और उसकी अन्य कृतियों की जानकारी के लिए प्रयत्नशील रहा हूँ, किन्तु अद्यावधि कोई परिचय प्राप्त न हो सका। कवि के अध्ययन के विषय में अन्त:साक्ष्य के आधार पर यह कहा जा सकता है कि वह संस्कृत, पिंगल और डिंगल भाषा का विद्वान् था। अरबी और फारसी के शब्दों की भी उसे अच्छी जानकारी थी। ज्योतिष, भूगोल, छंदशास्त्र और रणकौशल एवं विद्या का उसने विधिपूर्वक अध्ययन किया था। भारतीय राजवंशों, मुगलों, पठानों, सैयदों, उजबेगों आदि यवन जातियों के इतिहास का वह पूर्ण ज्ञाता था। आदि कवि वाल्मीकि की रामायण, वेदव्यास का महाभारत और शुकदेव, जयदेव, कृष्ण, माघ, दण्डो, चन्द्र वरदाई, कविकुलगुरु कालिदास आदि संस्कृत और भाषा-कवियों की कृतियों का उसने

---

[1] कवि के वंशज गोवर्द्धनसिंह का लेखक के नाम पत्र।

अध्ययन किया था। अतः वह बहु-भाषाविद् और शास्त्रीय कोटि का विद्वान् माना जा सकता है ।

कवि के समय और काव्यसाधना-काल की जानकारी के लिए भी हमारे पास उसके काव्यग्रंथों के नायकों, घटनाओं, तिथि-संकेतों और संकेतित प्रसंगों के अतिरिक्त कोई साधन अथवा स्रोत नहीं है । अतः उपर्युक्त आधारों पर ही कवि का काव्य-रचना-काल स्थिर करने का प्रयत्न किया जा रहा है। प्राप्त ग्रंथों को घटनाओं के आधार पर, रचनाकाल के स्थिरीकरण के लिए निम्न प्रकार से रखा जा सकता है—

(१) राव अमरसिंघ नागौर का साका
(२) बिन्हैरासो
(३) राणा राजसिंघ का गुणरूपक
(४) डिंगल गीत
(५) राजा जयसिंघ के छप्पय
(६) गौड़ों की वंशावली
(७) रघुनाथ चरित नवरसवेलि

'राव अमरसिंघ का साका' बादशाह शाहजहाँ के शाहजादे दाराशिकोह की हवेली में लगे शाही दरबार में बख्शी सलाबतखाँन को मार कर अर्जुन गौड़ आदि योद्धाओं द्वारा राव अमरसिंह के मारे जाने की संवत १७०१ की घटना पर आधारित है।[1] इस घटना के दूसरे वर्ष अमरसिंह का पुत्र राव रायसिंह शाही सेवा में उपस्थित हुआ और उसने बलख, बदख्शा, कंधार आदि के युद्ध में भाग लिया। बलख का युद्ध संवत् १७०३ में हुआ था।[2] साका में कवि ने राव रायसिंह के जन्म और बाल्यकाल का ही वर्णन किया है, युद्धों का नहीं। अतः इससे ऐसा जान पड़ता है कि यह कृति संवत् १७०१ और संवत् १७०३ के मध्य की रचना है। यदि इसके बाद की होती तो कवि रायसिंह के उपर्युक्त युद्धों में भाग लेकर वीरता प्रदर्शित करने का अवश्य वर्णन करता, जैसा कि डिंगल के अन्य कवियों के इसी कोटि के काव्यों में मिलता है।

बिन्हैरासो और राणा राजसिंह का रूपक संवत् १७१६ से पूर्व की रचनाएँ हैं, क्योंकि उसके बाद की गौड़ों की वंशावली में कवि ने राजा अनिरुद्धसिंह गौड़ के

---

[1] मारवाड़ का इतिहास, विश्वेश्वरनाथ रेउ, द्वितीय भाग, पृ. ६५४।

[2] मआसिरुल् उमरा, अनु० ब्रजरत्नदास बी. ए., भाग १, पृ. ७५

राज्यासन पर उसके पुत्र राजा नृसिंहदास गौड़ का बैठना लिखा है।[1] अनिरुद्धसिंह की मृत्यु संवत् १७१६ में हो चुकी थी।[2] राजा जयसिंह के छप्पयों में छत्रपति शिवा सीसोदिया को पराजित करने का उल्लेख किया है। मिर्जा राजा जयसिंह ने संवत् १७२३ में राजा शिवा को समझा-बूझा कर शाही दरबार में उपस्थित हो जाने के लिए सहमत कर भेजा था। इसलिए ये छप्पय संवत् १७२३ के पास की रचना ठहरते हैं।[3] डिंगल-गीतों में राजा रामसिंह कछवाहा का गीत संवत् १७४४ से १७५५ के मध्य रचा गया होगा, क्योंकि उनका शासनकाल उपर्युक्त संवतों तक ही सीमित रहा है।[4] शेष गीत संवत् १७१५ तथा संवत् १७१६ के मध्य में लिखे गए होंगे। कवि की अन्तिम रचना रघुनाथ-चरित-नवरस-वेलि मानी जानी चाहिए। वेलि में कवि ने नवरसों के माध्यम से मर्यादापुरुषोत्तम श्रीरामचन्द्र का १२७ छंदों में वर्णन् किया है जो अपूर्ण है। यह उसके वृद्धकाल की कृति है जो कि शारीरिक असमर्थता के कारण शायद अपूर्ण रह गई है। कवि ने जब गौड़ों की वंशावली लिखी, तभी उसके मन में संसार की असारता, जीवन की भूलभ्रांतियां और प्रमाद-जन्य अकृत्यों आदि की चिन्ता उभर कर मस्तिष्क पर आ जमी थी। उसने वंशावली में स्पष्ट लिखा है—

करां सुक्रत कीधा नहीं, कुक्रत कुंमाया।
क्रम तीरथ क्रमिया नहीं, अणक्रमे आया॥

रांम नांम रटिया नहीं, यम जनम गुंमाया।
सुंणिया कथा पुरांण नहीं, नंहि वेद वंचाया॥
... ...।

गुणि अनि मानव गाइयो, यों नृगुण कहाया॥ वि.रा.प.पृ.२०४-२०५

कवि ने अपने विगत जीवन का सिंहावलोकन करते हुए राम की भक्ति न कर मानव-काव्य रचने के प्रति पश्चाताप व्यक्त किया है। इस प्रकार की रचना का परिपक्व अवस्था में ही लिखा जाना संभव होता है। मृत्यु का आसन्न भय भगवान् के चरण-शरण की ओर जाने के लिए प्रेरित करता है। अतः वंशावली के बाद कवि ने वेलि की रचना कर सुख का अनुभव किया होगा।

---

[1] बिन्हैरासो, परिशिष्ट घ, पृ. २१७

[2] मुगल दरबार, अनु० व्रजरत्नदास, भा. १, पृ. ६४

[3] मुगल दरबार, व्रजरत्नदास, भा. १, पृ. १६२-६३

[4] मुगल दरबार, व्रजरत्नदास, भा. १, ३४२-४४

उपर्यंकित घटना-संकेतों के आधार पर हम कवि का काव्य-सर्जनकाल संवत् १७०१ से संवत् १७५५ के मध्य स्थिर कर सकते हैं।

वैसे कवि गौड़-क्षत्रियों का आश्रित और कृपापात्र था किन्तु उसके ग्रंथों के आधार पर राव रायसिंह नागौर, राणा राजसिंह उदयपुर और हाडावाटी के कोटा-बूंदी के सामन्त-सरदारों से भी उसका परिचय और सम्मान पाना माना जा सकता है। अमूमन मध्यकालीन राजस्थानी कवियों की यह परम्परा रही है कि वे जिस किसी वीर पर काव्य-रचना करते, वह काव्य उसके नायक अथवा नायक के उत्तराधिकारी को सुना कर उससे पुरस्कार और प्रतिष्ठा प्राप्त करते थे। तब फिर महेशदास का भी अपने काव्य-नायकों से सम्मान प्राप्त करना असंभव नहीं माना जा सकता।

कथासार

बिन्हैरासो में कवि ने मुगल बादशाह शाहजहां के विद्रोही पुत्र शाहज़ादा शुजा, मुरादबख्श और औरंगजेब के तीन युद्ध बनारस, उज्जयिनी और धौलपुर का वर्णन किया है। तीनों शाहजादों में पहले पहल शुजा ने बगावत कर युद्ध की स्थिति पैदा की थी। परिणामस्वरूप पहला युद्ध संवत् १७१४ में बनारस के समीप शुजा और शाही सेनानायक मिर्जा राजा जयसिंह कछवाहा के मध्य हुआ। उसमें शाही पक्ष की विजय हुई, परन्तु कवि ने उस युद्ध का वर्णन बाद के दोनों युद्ध उज्जयिनी और धौलपुर युद्धों के वर्णन के बाद लिखा है। यहां कवि द्वारा प्रस्तुत वर्णन-क्रम के अनुसार तीनों युद्धों का कथासार पृथक-पृथक दिया जा रहा है, जो कि इस ऐतिहासिक काव्य-ग्रंथ को समझने में सहायक सिद्ध होगा।

उज्जयिनी-युद्ध

बिन्हैरासो की कथा का आरंभ कवि ने विद्या की अधिष्ठात्री भगवती वाग्देवी, अशुभ गणों तथा काव्य दोषों के विनाशक, देवाधि अग्र-वंद्य गणपति और मानव-समाज में श्रेष्ठमति-निधि परम गुरु की वन्दना से किया है। पिता और पुत्रों के उभय पक्षों में हुए युद्ध में अनेक भूपतियों का संहार हुआ, उन वीरों के वृत्तों को रूपक-बद्ध करने में सफलता हेतु श्रेष्ठमति और उक्ति वैचित्र्य-प्रदाता तीनों देवों से याचना की है।

परम प्रतापी बादशाह अकबर और संसार के नूर शाहंशाह नूरुद्दीन जहांगीर नव खण्डों में अपने तेज-प्रताप को विकीर्ण कर चले गए। उनके उस महान् सिंहासन पर प्रतापी बादशाह शाहजहां आरूढ़ हुआ। उसने खड्ग-बल

से चारों दिशाओं को विजित कर संसार में अपने यश का अर्जन किया। उसके दरबार में मेवाड़ नरेश राणा राजसिंह के अतिरिक्त भारत के हिन्दू और मुसलमान सभी राजा और नवाब एक पैर पर खड़े रह कर सेवा करते हैं। वह दोनों राह वालों के लिए समान रूप से पूजित है। चारों दिशाओं में उसके पराक्रम और कीर्त्ति के वाद्य बजते हैं। उसके बुद्धिमान और सुयोग्य चार राजकुमार हैं, जिन्हें वय-क्रम से दाराशिकोह को उत्तर दिशा, शाहशुजा को पूर्व दिशा, औरंगजेब को दक्षिण दिशा और मुरादबख्श को पश्चिम दिशा के प्रान्त सौंपे हुए हैं और वह स्वयं केन्द्र में दिल्ली के सिंहासन पर विराजमान है। ज्वाजल्यमान सूर्य के समान संसार पर उसका तेज-प्रताप छाया हुआ है। नव-खण्ड और सप्त-द्वीपों में उसके विरुद्ध शस्त्र उठा कर सामना करने का साहस किसी में नहीं है।

इस प्रारम्भिक प्रस्तावना के अनन्तर कवि अपने वर्ण्य कथा-प्रसंग की ओर उन्मुख हुआ है।

बादशाह शाहजहां के जीवित ही संसार में उसकी मृत्यु का प्रवाद फैल गया कि दिल्ली का शाही सिंहासन और छत्र-चँवरादि राज्य-चिन्ह खाली हो गए हैं। यह सम्वाद सुन कर सारे संसार में शोर मच गया। बादशाह के निधन की सूचना पाकर उसके तीनों शाहजादे दिल्ली पर आधिपत्य जमाने के लिए प्रयत्न-रत हुए। सब से पहिले पूर्वदेशीय प्रान्तों के राज्यपाल शाहजादा शाहशुजा ने दिल्ली की ओर कूच किया। वह यमराज तुल्य प्रचण्ड, वीर शाहजादा अपनी गज, अश्व और पदाति सेना को युद्ध-सज्जा से सज्जित कर पथ के नगरों को लूटता, दुर्गों को ध्वस्त करता और विजय-घोष करता हुआ चला। जब बादशाह शाहजहां और युवराज दाराशिकोह ने सुना कि शाहशुजा तोप, बन्दूक, तीरकमानों से सज्जित अस्सी हजार गजाश्व सेना के साथ दिल्ली की ओर तीव्रता से बढ़ कर आ रहा है तो उसने अपनी सल्तनत के स्तम्भ-तुल्य हिन्दू और मुस्लिम उमराव-नवाबों को आमंत्रित किया। उनमें दुर्धर्ष वीर राठौड़, कछवाहा हाडा और गौड़ सभी आये। राजा जसवंतसिंह, राजा जयसिंह, राव शत्रुशाल, राजा अनिरुद्धसिंह, नवाब दलेलखांन, शाहजादा सुलेमानशिकोह और राव रायसिंह जैसे बड़े-बड़े राव, राजा, नवाब आकर उपस्थित हुए। बादशाह ने दिल्ली-साम्राज्य की रक्षा का दायित्व उन पर प्रकट करते हुए कहा—"पूर्वी प्रान्त के राज्यपाल शुजा ने विद्रोह कर दिया है। उसके सैनिक अभियान के कारण भूलोक में आतंकजनित भय छा गया है।" यह कह कर बादशाह ने शुजा को पराजित करने के लिए मिर्जा राजा जयसिंह, शाहजादा सुलेमान

शिकोह, राव रायसिंह और राजा अनिरुद्धसिंह को जसवंतसिंह गौड़, उदयभानु राठौड़, भोजराज खंगारोत, भावसिंह, रणछोड़दास, दलेलखांन रुहेला, बहादुरखां सैयद, मीर जाफर और कासिमखांन सैयद सहित विदा किये। वे वीर छत्तीसों प्रकार के युद्ध-वाद्यों की मेघ-तुल्य गर्जना करते हुए पूर्व दिशा की ओर चले।

उधर दिल्ली और पूर्व की घटनाओं की सम्वाद-सामग्री संकलित कर आगरा के गुप्तचर औरंगजेब के पास औरंगाबाद पहुंचे। औरंगजेब ने दूतों द्वारा वस्तुस्थिति की जानकारी प्राप्त कर दक्षिण के अपने हितैषी गोलकुण्डा, कर्नाटक, बीजापुर आदि के प्रान्ताध्यक्षों तथा योद्धाओं को युद्ध-सामान से तैयार होकर औरंगाबाद आ उपस्थित होने के आदेश भेजे। तदनन्तर उस विचक्षणमति शाहजादे ने अपने विदग्ध गुप्तचरों को दिल्ली, आगरा, गुजरात और अहमदाबाद की ओर भेजा। वे साधु-सन्यासी और यति-योगियों के वेश में यत्र-तत्र समाचार संकलित करने लगे। तभी शाहजादा दाराशिकोह को सूचना मिली कि गुजरात का प्रान्तपति शाहजादा मुराद भी अपनी विशाल चतुरंगिनी सजा कर दिल्ली पर अधिकार करने के लिए चल पड़ा है। शाहजादा दाराशिकोह ने राजा जसवंतसिंह को बुलाया। तब वह पंचहजारी मनसबदार था। उसे सप्तहजारी का पद प्रदान कर शाहजादा मुराद को रोकने के लिए मालवा की ओर विदा किया। राजा जसवंतसिंह, अर्जुन गौड़, राव मुकन्दसिंह हाडा, वीरभद्र गौड़, मोहनसिंह, जूझारसिंह, कन्हीराम, किशोरसिंह हाडा, राजा रतनसिंह राठौड़, राजा रायसिंह कछवाहा, दलथम्भ झाला, राघवदेव झाला, सुजानसिंह सीसोदिया, राजा वैरीसिंह शेखावत, ठाकुर गोवर्द्धनदास कूपावत, रावत केशरीसिंह, रुक्मांगद सीसोदिया, राव अमरसिंह चंद्रावत, राजा अमरसिंह कछवाहा, वेलू, परशु दक्षिणी, राजा देवीसिंह, राजा सुजानसिंह बुन्देला, राजा छत्रमणि यादव, बलिराम हाडा, प्रतापसिंह राठौड़, सबलसिंह सीसोदिया, जखमी उजबक, इफ्तिखारखांन और कासिमखां आदि अनेकानेक उमराव नवाबों को लेकर ससैन्य उज्जैन की ओर चला।

गुप्तचरों की खबरों से औरंगजेब को शाहजादा मुराद के अपने आपको बादशाह घोषित करने की सूचना मिली। और यह भी पता लगा कि वह शम्श-बेग और मंसूरखांन आदि योद्धाओं सहित पचास हजार सेना लेकर अपने प्रान्त से उज्जैन के लिए प्रस्थान कर चुका है। उसकी वह विशाल सेना गिरिराज से प्रवाहित नदी के समान उमड़ती आगे बढ़ी। सैनिकों, अश्वों, गजों और बार-बरदारी के ऊंटों तथा बैलों के पदाघातों से दुर्गम गिरि-घाटियां चूर्ण होकर

साफ मार्गों में बदल गए। मुराद के इस प्रयाण से औरंगजेब को असीम प्रसन्नता हुई। इधर वह भी अपनी सेना सजा कर चला। मार्ग में दोनों सेनाएं सम्मिलित हुईं। शाहजादे परस्पर मिल कर आनन्दित हुए। दोनों ने एक दूसरे से छल न करने के लिए अपने बीच रहमान की शपथ ली। तदनन्तर साम्राज्य को हस्तगत करने की सैनिक योजना पर विचार हुआ। उनके इस सम्मिलित आयोजन से चतुर्दिक् कोहराम व्याप्त हो गया। वह सेना क्या थी मानो प्रालेय समुद्र धरा पर उमड़ पड़े हों, अथवा बारह मेघ दिल्ली घरा को जल-प्लावित करने को घुमड़ आये हों। वहां से ससैन्य प्रस्थान कर शाहजादों ने मेवाड़ के राणा राजसिंह को खासा रुक्का और उपहार भेज कर अपने पक्ष में आ जाने के लिए प्रार्थना की। पत्र में मेवाड़ नरेशों के गौरव, शौर्य और सहयोग की प्रशंसा लिखी। शाहजादों की गज, अश्व, रथ और पदाति सेना के प्रस्थान-भार से शेषनाग के सिर भाराक्रान्त होकर फटने लगे। उनके पदाघातों से उठे धूलि-समूह से आकाश छिप गया। रवि-ज्योति धूमिल हो गई। प्रालेय मेघ सदृश्य यूथबद्ध गज-घटाओं के चलने से कच्छप की पीठ कसमसाने लगी। अविचल हिमाचल चल-विचल हो गया। दिक्पाल अकुला गए। दिशाओं के बंधन टूट गए। वह सेना क्या थी मानो संग्राम-सागर की ओर महागिरि ही चले आ रहे थे। उस सेना में अरब, ईराक, तुर्की आदि देशोत्पन्न उत्तम जाति के असंख्य घोड़े थे। उन पर अश्व भूलें, पाखरें, लक्षाधिक मूल्य के ललाट भूषण सजे हुए थे। पैरों में घुंघरू शोभित थे। उस सेना में मुसलमानों की विभिन्न जातियों और शाखाओं के एक लाख सैनिक, बरकंदाज, तोपची और धनुर्धर योद्धा थे। वे जिरहबख्तर, जूसण, सेलार, चिलकन्ते, घूघियाँ, हाथों में दस्ताने, जंघाओं पर राग और पैरों में लोह-शृंखलाओं के मोजे धारण किये हुए थे। कालकीट के समान भयानक वे योद्धा बल और आकृति में समतुल्य थे। उनके मुख रक्तिम, नेत्र लघु, स्कन्ध उन्नत और मस्तक स्थूल थे। भाभरा-भूताकृति वे वीर अगम्य स्थानों में भी सहज गम्य थे। वे अस्पष्ट अरबी, तुर्की और पश्तों भाषाएं बोलते थे। एक-एक योद्धा के अपने भाथे में सौ-सौ बाण भरे हुए थे। ऐसा वह भयानक सैन्यदल आसेर दुर्ग के पास आकर ठहरा। आसेर के दुर्गाध्यक्ष मानसिंह गौड़ को औरंगजेब ने सन्देश भेज कर दुर्ग सुपुर्द करने का आदेश दिया। स्वामि-भक्त मानसिंह ने शाहजादे की आज्ञा की उपेक्षा कर अभीतता प्रकट की। साम, दाम और भय किसी भी प्रकार जब वह लोभ में न आया, तब औरंगजेब 'पहिले दिल्ली विजय करेंगे, फिर आसेर और उसके दुर्गपाल को समझेंगे' कह कर वहां से आगे बढ़ा।

एक सप्ताह के प्रयाण के पश्चात् शाहजादों की सेना मालव के माण्डव दुर्ग पर पहुँची। वह माण्डव हिमालय पर स्थित शिवधाम कैलाश के समान था। वहाँ का दुर्गपाल राजा शिवराम गौड़ साक्षात् अपराजयी शिव था। शाहजादा मुराद ने माण्डव को हस्तगत करने के लिए राजा शिवराम पर भय का दण्ड फेंका। अपनी सेना में उच्चपद देने का वचन दिया। परन्तु उस वीर पर तनिक भी प्रभाव नहीं हुआ। तब राजा पर औरंगजेब कोपान्वित हुआ। उसने गर्वोक्ति-पूर्वक अगले प्रातः माण्डव को समूल नष्ट कर डालने का प्रण किया। दूसरे दिन शाहजादे सुल्तान मुहमद और निजावतिखांन की अधीनता में सेना ने मांडव पर आक्रमण किया। राजा शिवराम और उसके अनुज पोखरदास ने सामना किया। तोपों, बन्दूकों और बाणों का युद्ध हुआ। गढ़ नहीं टूटा। शिवराम की दृढ़ता को देख कर शाहजादों ने उज्जैन के पथ पर आगे प्रयाण किया।

इधर राजा जसवंतसिंह के नेतृत्व में शाही सेना ने खाचरोद पहुँच कर अपना पड़ाव डाला। उस सेना में क्षत्रियों के छत्तीस राजकुलों और शाखा-प्रशाखाओं के योद्धा थे। उधर से औरंगजेब और मुराद की सेनाएं भी खाचरोद की ओर बढ़ी। दोनों सेनाओं के मध्य दस कोस की दूरी शेष रह गई थी। युद्ध का अवसर प्राप्त कर वीर वैताल, भूत, प्रेत, पिशाच, चण्डियाँ, शिव, रणदेवी, भैरव, नारद तथा गृद्ध, शृगाल आदि रणक्षेत्र में आकाश-पथ से उतरने लगे। राजा जसवंत-सिंह ने नरायनेचौर नाले के पास अपना सैनिक शिविर स्थापित किया।

वैशाख मास कृष्णपक्ष अष्टमी तिथि गुरुवार संवत् १७१५ का दिन था। सूर्य श्रवण नक्षत्र पर था। वालवकरण नामक योग था। उस योग में दोनों पक्षों की सेनाओं ने अपने-अपने मोरचे तैयार किए। गज, अश्व और पदाति सेनाएँ पंक्तिबद्ध हुईं। इस प्रकार तैयारी में अष्टमी का वह दिन व्यतीत हुआ। दिवा-वसान के साथ औरंगजेब ने अपना भृत्य राजा जसवंतसिंह की सेवा में भेज कर सेना का मार्ग न रोकने का आग्रह किया। राजा ने यह स्वीकार नहीं किया। तब मुराद ने अपना दूत भेज कर कहलाया कि—"पिता और पुत्रों की भेंट को कोई कैसे रोक सकता है ?" तब राजा ने दूत के साथ पांच हजार सेना लेकर शाहजादों को आगे जाने की स्वीकृति-सूचना भेजी। इस समाचार से दोनों शाहजादे क्रुद्ध हो उठे। इतने में अर्द्ध रात्रि बीत चुकी थी। युद्ध की नौबतें घोष करने लगीं। रवि उदय होते ही शाही सेना पर शाहजादों ने गोला-बारी के साथ युद्धारम्भ की घोषणा की। संवत् १७१५ का वर्ष था। वैशाख वदि नवमी शुक्रवार धनिष्ठ नक्षत्र, ब्रह्मयोग और तैतिल नाम का करण था। उस शुभ वेला में शाहजादों की सेना कवचादि से सज कर तैयार हुई। मुसलमान योद्धा

अपने इष्ट का स्मरण करने लगे। सुर, असुर और नर-समाज विस्मित हुआ। उधर अष्टमी की मध्यरात्रि व्यतीत होते ही हिन्दू योद्धा जगे। वे दैनिक कर्मों से निवृत्त हो कर अपने-अपने आराध्यों का स्मरण करने लगे। अप्सराएँ योद्धाओं को पति रूप में प्राप्त करने के लिए शृङ्गार करने लगीं।

उसी वेला में वीरश्रेष्ठ अर्जुन गौड़ उठा। उसने तेल-मर्दन कर स्नान किया। महादेव का अर्चन कर एकादश मृतक कर्म किये। भगवान् भास्कर को अर्घ्य दिया। पूजा के स्वर्ण-पात्र विप्रों को दान किये। फौज-बख्शी को बुलाया और सिलहखाने से अस्त्र-शस्त्र, जिरहवख्तर निकला कर योद्धाओं को प्रदान किये। इस प्रकार संसार में अपनी रण-ख्याति अमर रखने के लिए वह वीर सन्नद्ध हुआ। उसका सिंह-तुल्य पराक्रमी काका वीरभद्र कवच धारण कर तैयार हुआ। युद्ध रूपी अखाड़े का सिंह अंगद के समान समर-धीर वीरश्रेष्ठ मुरारिदास खैराड़ा तैयार हुआ। वह सदा उधारे युद्ध मोल लेने की प्रसिद्धि प्राप्त था। उसके साथ रावत पद के विरुद को धारण करने वाला पृथ्वीराज और उसका अनुज आशकर्ण केशरिया पट धारण कर तैयार हुआ। प्रतापसिंह के पुत्र राजसिंह ने भी केशरिया बाना पहिन कर अप्सराओं के वरण की कामना की। केहलण का वंशधर वीरश्रेष्ठ मानसिंह अर्जुन की सेना की अग्रिम पंक्ति में सिर कट पड़ने पर भी तलवार चलाते रहने को प्रतिज्ञा ले तत्पर हुआ। क्षात्र-जोश से आपूरित जसराज का पुत्र सांईदास भाखरोत रणभूमि में अपने प्राणों की आहुति देने के लिए वचन-बद्ध हुआ। गजयूथ पर सिंह की झपट के समान, अरि-समूह पर धावा मारने के लिए भाखरोत कुशलसिंह सज्जित हुआ। सुन्दरदास का पुत्र इन्द्रभानु और युद्ध-विद्या का पंडित राघवदास किशनदासोत अपने नाम को प्रसिद्ध करने की कामना करने लगे। गौड़ावाटी प्रदेश के मारोठ संस्थान का अधिपति नरहरिदास दोनों शाहजादों की सेना से लोहा बजाने के लिए तैयार हुआ। दीपचन्द का उत्तराधिकारी अपराजयी वीर जगभानु कटार, कृपाण और कमान सम्हाल कर उद्यत हुआ। आमेर के कछवाहा कुल को गौरवान्वित करने वाला कर्मसिंह का पुत्र किशोरसिंह अपने घट को सती के नारियल की भांति उत्सर्ग करने के लिए सज्जित हुआ। उनके साथ ही मुरारिदास खैराड़ा के नव प्रसिद्ध वीर जो नवों सिद्धों के समान युद्ध-सिद्ध थे, सन्नाह-सन्नद्ध हुए। खीचीवाड़े का वैरीशाल खीची, जहाजपुर का मोहनदास चंद्रावत, जयरामदास मोहनदासोत, राघवदास खैराड़ा, जोधसिंह, खेतसिंह, मनराम पंवार, भीमसिंह ताजखानोत और चूंडा का वंशज कुंभकर्ण खवास, ये नवों ही वीर अपने कुल को कीर्त्तिमान् करने के लिए तैयार हुए।

प्रभात का रवि उदय हुआ। गौड़ों की सेना के अध्यक्ष अर्जुन ने अपना अश्व मांगा। सईस उसे युद्ध साज से सजा कर लाया। वह गजराज के सदृश्य विशाल गात्र वाला था। प्रभात-कालीन सूर्य-सा उसका रक्तिम वर्ण था। उच्चैश्रवा के प्रतिरूप, उस अश्वराज पर अर्जुन आरूढ़ हुआ। अपने स्वामी के अश्वारोहण पर उसके सामन्त वीरभद्र, श्यामदास दशौन्धी, मुरारिदास खैराड़ा, पृथ्वीराज आदि सभी वीर सवार होकर अपने-अपने मोरचों पर आए।

अर्जुन ने राव मुकुंदसिंह हाडा को दूत द्वारा कहलवाया—'शाहजादे सिर पर आ लगे हैं। राजा जसवंतसिंह अभी तक तैयार नहीं हुआ। लगता है मारवाड़ नरेश को कायरता ने आ घेरा है। उसने पहिले कभी बड़े संग्राम में भाग भी नहीं लिया है। जो अनेक युद्धों में लड़ चुके हैं, वे ही इस बार भी लड़ेंगे।' दूत-मुख से अर्जुन का सन्देश सुन कर हाड़े वीर कवच, दस्ताने और टोप धारण कर तैयार हुए। तदनन्तर उन वीरों ने विद्युत तुल्य तीक्ष्ण तलवारें और कटारें सम्हालीं। अपने अंगों को मुक्तामाल, कण्ठांभूषण और बहुमूल्य जवाहिरातों से सजाया। अर्जुन के सन्देश से अपने स्वजातीय वीरों और सुभट सामन्तों को अवगत किया। तत्पश्चात् वे वीर युद्ध-नक्कारों के रण घोष के साथ अश्वों पर सवार हुए। उनके इस प्रकार अश्वों पर चढ़ने पर विपक्षी योद्धाओं में हलचल मच गई। अश्वों की पीठ पर वजन पड़ कर उनके पाखर कवचों की कड़ियां टूटने लगीं। गजों की पीठ पर झूलें लहराने लगीं। निशान, ध्वज और पीत-पताकाएँ आकाश में फहराने लगी। उनके सवारी करते ही सीसोदिया परमार, राठौड़, कछवाहे, गौड़, भाटी और चालुक्य आदि अनेक जातियों के वीर अपने-अपने घोड़ों पर चढ़ कर चले। चौहानों की उस चतुरंगिनी सेना के प्रयाण से समस्त भूलोक भयाक्रान्त हो गया।

गौड़ों और हाड़ों के युद्ध-भूमि में प्रस्थान करने पर राजा जसवन्तसिंह ने भी अपने सुभटों को रण-मंत्रणा के लिए बुलाया। तब राठौड़ वीर विट्ठलदास चांपावत, गोवर्द्धन कूंपावत और जोधा, बीका, उदावत, जैतावत, मेड़तिया, सिंघल आदि राठौड़वंशीय योद्धा उपस्थित हुए। तब विट्ठलदास ने कहा—'महाराजा, सुनिए! जैसा जीना वैसा ही मरना। युद्ध का दुर्लभ अवसर सुलभ हुआ है। शीघ्र ही तैयार हो जाइए। शत्रुओं के सिर तोड़ने हैं। सिलह कीजिए और सेना को पंक्तियों में—हरावल, चन्दावल, गोल, जंघाल, तरंगाल और बरंगाल में विभाजित कीजिए।'

तदनन्तर राजा जसवन्तसिंह सवार हुए। अपने जीवन को क्षणभंगुर समझने वाला राजा रतनसिंह अश्वारूढ़ हुआ। झाला वीर दलथंभ खड्ग सम्हाल

कर चला। शत्रुओं पर वज्रघाती प्रहार करने वाला उसका अनुज राघवदेव झाला सवार हुआ। चित्तौड़ दुर्ग की रक्षा में कपाट तुल्य दृढ़ वीर केशरसिंह और रुक्मांगद अश्वों पर चढ़ कर आगे बढ़े। रण में मर कर रविमण्डल का भेदन करने वाला उत्साही वीर सुजानसिंह सीसोदिया चला। इफ्तियार खांन सैयद सन्नाह-सज्जित होकर रणाभिमुख हुआ और उनके प्रस्थान करते ही राजा भीम का पुत्र राजा रायसिंह सीसोदिया, कछवाहा वीर दोनों अमरसिंह, राजा बैरीसिंह शेखावत आदि अनेक सुभट रणस्थली में अपने-अपने मोरचों की ओर बढ़े।

सेना के प्रयाण से धरा काँप उठी। चारों दिशाएं भयाक्रान्त हो उठीं। हाथियों पर कसे हुए रण-वाद्य गड़गड़ाने लगे। ध्रीह-ध्रीह के घोष में धूंसे बजने लगे। करताल, भैरी और झाहलों ने भयानक नाद किया। तुरही और रणतूर त्रह-त्रह की आवाज में गूंजने लगे। बरघू और शहनाइयाँ बजीं। झांझे झिंगुर के समान झणकार करने लगीं। रणवाद्यों की प्रतिध्वनि से गिरि-मालाओं में गर्जना फैल गई। गजगाहों से ढंके गजराजों की पंक्तियां आगे बढ़ीं। तोपखाने के प्रधान कासिमखांन ने प्रस्थान किया। गजनालें, शुतर-नालें, गौ नालें और सीसा बारूद से लदे हुए शुतरों की पंक्तियां चलीं। राजा जसवन्तसिंह सेना के केन्द्र में स्थिर हुए। हरावल का भार राजा रतन, गोवर्द्धन राठौड़, रावत दयालदास झाला, राघवदास झाला, रावत केशरीसिंह शक्तावत, राजा देवीसिंह, राजा सुजानसिंह, सैयद इफ्तियार खांन आदि हिन्दू यवन वीरों ने ग्रहण किया। सेना के वाम पार्श्व में राजा रायसिंह, सुल्तान का पुत्र सबलसिंह व फतहसिंह नियुक्त हुए। दाएँ भाग का नेतृत्व राजा बैरीसिंह, दोनों अमरसिंह, खेलू, मालू और राजा छत्रमणि यादव ने सम्हाला।

उधर दोनों शाहजादों के वीर सैनिक खुदा की निवाजश कर अश्वों पर सवार हुए। सेना की अग्रिम पंक्ति में निजामत खांन, भगवन्तसिंह हाडा, केशरीसिंह राठौड़, सफशिकन खाँ, बहादुरखां, अल्लाहयार खां, मंसूर खाँ, शेख-मीरक आदि चालीस हजार योद्धाओं ने प्रस्थान किया। उनकी चंदावल, बरंगाल और तरंगाल भागों में दो दो हजार सुभटों को स्थिर कर तोपखाने को व्यवस्थित किया। इकसठ हजार सेना पृष्ठ भाग में, बीस हजार वाएं और उन्नीस हजार दाहिने पक्ष में जमा कर शाहजादों ने रणभूमि में प्रवेश किया।

उभय सेनाएं एक दूसरे के अभिमुख हुईं। वीर रस के सैंधव बजने प्रारंभ हुए। हिन्दू वीरों ने शिव और राम के नामों का उच्चारण किया। यवनों ने अल्लाह-अल्लाह का स्मरण किया। तोपें गोले बरसाने लगीं। रवि का प्रकाश

धूमिल हो गया। पलीतों की आग से गजाश्वों की पाखरें जलने लगीं। आकाश-पथ में उड़ते पक्षी भस्म होकर भूमि पर गिरने लगे। तोपों के भयानक रव से पृथ्वी आकाश में मेघ का-सा गर्जन व्याप्त हो उठा। हाथियों की अँधेरियां खुलीं। पैर लंगरों से मुक्त हुए। गृद्ध-गणों से पृथ्वी और आकाश ढंक गया। गोलों और तीरों की भयंकर झड़ी लग गई। रवि-मण्डल से च्युत नक्षत्रों की भांति गोले गिरने लगे। उभयपक्षीय योद्धाओं के वक्ष भाग को चीर कर बाण पीठ के पार लगने लगे। भालों की पैनी नोकें आर-पार पहुँचती थी। बाँध के फव्वारों के समान श्रोणित की धाराएं बहती थीं। यवन रोजा पर्व के दिन की क्रीड़ा के समान लोह-क्रीडा करने लगे। ढालें चटकती थीं। योद्धागण घावों से आपूरित यत्र-तत्र प्रहार करते थे। भालों की नोकों से गज-शुण्ड छिन्न-विच्छिन्न हो गए थे। कवचों की कड़ियां टूट कर योद्धाओं के तन क्षतिग्रस्त हो गए। कटार, गूर्ज, परशु और गुप्तियों की चोटों से अश्व, गज और योद्धा भू पर लोटते थे। चुगों की चपेट खाकर मदमस्त हस्ति तक मदहीन हो जाते थे। तलवारों की हूल और गदाओं के प्रहार चलते थे। महाक्षेत्र उज्जयिनी की भूमि में नारद, भैरव और वैंतालों ने नृत्य किया। उस समय सबसे पूर्व पांच सौ राठौड़ योद्धा धराशायी हुए। तीन सौ भाटी वीरगति प्राप्त हुए। राजा जसवन्तसिंह आगे बढ़ा। दोनों शाहजादों ने हल्ला कर सामना किया मानो प्रालेय समुद्र बढ़ चला हो।

गजों से गज भिड़ गए। मस्तक से छिन्न उनकी दंतावलियां अलग जा गिरती थीं। आपस की टक्कर से एक भाग उठता, दूसरा उसका पीछा करता हुआ पांव रोप कर गिरि के समान रुप जाता। उनमें कतिपय अशुण्ड कटते ही भयंकर चिग्घाड़ करते थे। महावत और ध्वजाएं रणभूमि पर पड़ी थीं। तोपों के गोलों की अजस्र मार से कितने ही मद-मस्त भद्रजाति गज मदहीन हो गए। योद्धाओं के एक के बाद एक शस्त्र टूट कर गिर गए थे। पृथ्वी धूम्रा-च्छन्न हो गई थी। रणवाद्यों के तुमुल नाद से कुछ भी सुनाई नहीं पड़ता था मानो देव-मंदिरों की झालरों का रव हो रहा हो।

योद्धाओं के हाथ और पैर संधि-स्थानों से अलग हुए पड़े थे। रुधिर के पनाले बहते थे। रणस्थल में मुण्ड नृत्य करते थे। रक्त-पात्र भरे योगिनियां क्रीड़ा-रत थीं। कतिपय सुभट कटि-छिन्न पड़े थे। उनके कलेजे, वृक्क और आंतड़ियां बिखरी पड़ी थीं। फेफड़े, मज्जा और चर्बी के ढेर पड़े थे। उन पर गृध्द-समूह झपट मारते और उड़ते-बैठते थे। कितने ही योद्धा क्षतांग घूमते थे। कइयों के मस्तकों के अर्द्ध टुकड़े फड़-फड़ की ध्वनि करते थे। उनकी खोपड़ियों

की मज्जा ढक्कन-हीन दधि के पात्र समान दीखती थी। कतिपय घायल वक्ष-स्थल वीर सिंह की भांति निर्भीक आगे बढ़ने की धुन में थे। उनकी छातियां राजप्रासाद की खिड़कियों की भांति सहस्र-छिद्र हो गई थी। वे शस्त्र-प्रहारों से भूमि पर गिरते और पुनः उठ कर शस्त्र सम्हाल कर गज-सेनाओं पर वार करते। कवचों और अश्वों की लाशों के ढेर लगे पड़े थे। कई वीरों के पैर कट गए थे। कइयों की जंघाएं खण्ड-खण्ड बिखरी पड़ी थीं। अब युद्ध-परिणाम को देख राठौड़ वीर का साहस हिल गया था। उसका धैर्य साथ छोड़ चुका था।

तदनन्तर कवि ने युद्ध से पलायन करने वाले योद्धाओं में प्रमुख राजा जसवंतसिंह राठौड़, राजा रायसिंह, राव रायसिंह चंद्रावत, और राजा बैरीसिंह कछवाहा आदि सभी भागने वालों का नामोल्लेख किया है। युद्ध में वीरगति प्राप्त करने वाले वीरों में अर्जुन गौड़, वीरभद्र गौड़, मुरारिदास खैराड़ा, राजा रतनसिंह, रावत दयालदास, सीसोदिया सुजानसिंह, रावत केशरीसिंह, रुक्मांगद, राघवदेव, फतहसिंह, गोवर्द्धन, विट्ठलदास, इफ़्तिखार खां, राव मुकंदसिंह, उसके तीनों भाइयों और पृथ्वीराज, पोखरदास, राजसिंह, मानसिंह आदि का नाम-निर्देश किया है।

अब उज्जयिनी में विजय प्राप्त कर दोनों शाहजादों ने आगरा की ओर कूच किया। शाहजहां और दाराशिकोह को आगरा-दिल्ली के उनके प्रस्थान का सम्वाद मिला।

कवि ने इस सूचना के साथ उज्जयिनी खण्ड के वर्णन को पर्यवसित किया है।

धौलपुर-युद्ध

उज्जयिनी में शाही सेना की पराजय का समाचार आगरा पहुँचा। बादशाह ने पत्र खोल कर पढ़ाया। युद्ध से पलायन करने वाले और काम आने वाले वीरों की शाहजहां ने जानकारी प्राप्त की। बादशाह को निश्चय हो गया कि दाराशिकोह के साथ धोखा होने वाला है। तब बादशाही के अन्य हितैषी योद्धाओं को बुलवाने का आयोजन हुआ। राव शत्रुशाल, रुस्तमखां और राजा शिवराम जैसे परम वीरों को फरमान भेजे गए। शाहजादा दारा स्वयं युद्धार्थ तत्पर हुआ।

बूंदी के राजसिंहासन को शोभित करने वाले राव शत्रुशाल चहुवान को लेने अहदी को भेजा। छत्तीस क्षात्रकुलों में शिरोमणि उस राव ने स्वामि-भक्त सेवक की भांति एकनिष्ठ भाव से शाही फरमान ससम्मान ग्रहण किया और तत्काल आगरे के लिए सदल-बल चल पड़ा। उसके प्रयाण की सूचना से

दक्षिण (शाहजादों की सेना) में हलचल मच गई। वह श्याम-वर्ण के गज-समूह को तैयार कर चला, जो मानो साक्षात् यमराज के पुत्र ही हों। उनके प्रस्थान से जल-स्थानों पर स्थल और स्थल-स्थानों में भूमि उभरने लगी। युद्ध में जूझने का विरुद धारण कर वह बूंदी नरेश राव शत्रुशाल आगरा पहुंचा। उसने शाहजहाँ के चरण-स्पर्श कर अपनी स्वामिभक्ति प्रकट की। बाहशाह ने राव को गज, अश्व, तेग, कटार, झिलम-टोप और रत्नाभूषण भेंट किए। शत्रुओं रूपी तारों के लिए वह चन्द्र तुल्य था। लोभी गजराजों के लिए अंकुश माना जाता था। बलाबंध के बादशाह के नाम से सर्वत्र उसकी प्रसिद्धि थी। उसने बीजापुर के शाह को पराजित किया था। गोलकुन्डा के पति से स्वर्ण, जवाहिरात लेकर उसका मान खर्वित किया था। उसने दौलताबाद के सुदृढ़ दुर्ग को क्षण मात्र में जीत लिया था। नागपुर, बंगलाना, टोडा, बीदर और तिलंगाना पर अपनी विजय-पताका फहराई थी। उसने गुड़ी की भाँति अनेक गढ़ों को आकाश में उड़ा दिये थे। खीचियों के प्रदेश को पराजित कर शरणागत बनाया। दक्षिण और उत्तर दिशा के कजिलबाशों को शाही अधीनता के लिए बाध्य किए। ऐसी अपार कीर्त्तिगाथा वाला राव शत्रुशाल बादशाह से भेंट कर अपने आगरा स्थित आवास पर आया।

संध्या का समय था। राव अपनी सभा जोड़े बैठा था। उसमें राजकुमार भारतसिंह, महाराज मोहकमसिंह, गुमानसिंह, जोरावरसिंह, नाहरसिंह, जगतसिंह गौड़, शिवराम खेराड़ा आदि योद्धा उपस्थित थे। वे सभी दिल्लीपति की सहायता के लिए कटिबद्ध थे।

उधर बादशाह ने रुस्तमखांन फिरोजजंग बहादुर को काबुल में पत्र भेजा। उसमें उज्जयिनी में राजा जसवंतसिंह के भागने और औरंगजेब के जीतने का समाचार था। बादशाह ने लिखा—'अर्जुन गौड़ और राव मुकन्दसिंह आदि माधोसिंहोत हाडे रण में मारे गये। औरंगजेब और मुराद की विजय हुई। अब उन्होंने आगरा पर अधिकार करने के लिए प्रस्थान किया है।' तब वह वीर अपनी चतुरंगिनी सेना ले काबुल से चला। उसने ढाल और सिलह धारण कर रक्खे थे। वह ऐसा प्रचण्ड वीर था जो पचास सेर का भाला, बारह सेर की ढाल, एक मन की सिलह, सात सेर की शमशीर, तीन सेर की कटार, दश सेर का शिरस्त्राण, आधे मन की सन्नाह और दश सेर के जंघाओं के कवच धारण किए रहता था, फिर भी उसके लिए वह भार कुसम-कली के तुल्य था। अपने विशाल शरीर के अनुरूप ही वह भोजन करता था। ऐसा वह वीर बादशाह की मदद के लिए आगरा पहुंच कर शाहंशाह से मिला। तब उसके साथ मदोन्मत्त पच्चीस गजराज, पांच

सहस्र घोड़े, और अपने हाथों में नंगी तलवारें लिए असंख्य सैनिक थे। एक सहस्र पदाति तो सदा उसकी पेशवाई में चलते थे। उसी दिन गौड़ों का पति राजा शिवराम अपने बंधु पोखरदास सहित आगरा पहुँच कर दाराशिकोह के पास उपस्थित हुआ।

युद्ध में रावत भीमसिंह को मारने वाला राजा रामसिंह राठौड़ आगरा पहुंचा। वह युद्ध में शत्रुओं पर चूक करने वालों में अचूक था। उसने अनेक युद्धों में प्रचण्ड वीरों का संहार किया था। वह ईडर के दुर्गम किले को विजित कर अपनी कीर्त्ति का प्रसारण कर चुका था। संसार में अभ्यागतों को सदैव अन्नादि से तृप्त करने वाला वह वीर रामसिंह दोनों राहों वालों में प्रशंसा प्राप्त था।

उज्जयिनी में राजा जसवंतसिंह के पलायन करने की बात सुन कर राजा भारमल का पुत्र राजा रूपसिंह राठौड़ दिल्ली की शाहंशाही को सुरक्षित रखने के लिए आगरे आया। वह मरुधरा के नर समाज का रूप था। आमखास में पर्वत की भांति अडिग, शत्रुओं के लिए सिंह-तुल्य और शस्त्र-संचालन में महावीर हनुमान के समान बलिष्ठ भुज था।

तदनन्तर अनम्र वीरों को नत सिर करने वाला राजा भीमसिंह गौड़ आया। वह महावीर पांडव भीम के समान गजेन्द्र सेना को चक्राकार घुमा कर आकाश में फेंकने में सबल था। युद्धस्थल में अंगद के समान स्थिर चरण था और धर्मराज युधिष्ठिर-सा सत्यभाषी था। हठ में साक्षात् दुर्योधन था। वह अनेक विद्याओं का तत्वज्ञाता और शरणागतों का ससम्मान रक्षक था।

इस प्रकार अनेक राजा अपनी राजधानियों से प्रस्थान कर आगरा में सम्मिलित हुए। उल्लिखित वीरों के अतिरिक्त केशरीसिंह राठौड़, नाहरखांन सैयद, अलियारखांन, रहमतुला, शत्रुशाल (बूंदी राव से अन्य), महासिंह, नरपाल, रणछोड़दास राठौड़, सुजानसिंह, राजकुमार रामसिंह, कीर्त्तिसिंह कछवाहा, कुशलसिंह, कनकसिंह, दाउदखां और नरपाल भाखरोत आदि वीरों को बादशाह ने शाहजादा दाराशिकोह के सेनापतित्व में विदा किया।

सेना का प्रस्थान हुआ। घनघोर ध्वनि करते हुए त्रम्बागल बजने लगे। उनकी ध्वनि से शेषनाग के शीश पर स्थित धरा और उत्तुंग आकाश गूंज उठे। हाथियों के हलकों ने प्रस्थान किया। उनकी पीठ पर ढालें और नेजे-निशान-हिलते-लुढ़कते थे। वीरघंटों की आवाजें हुईं। पाखरों और आभूषणों की धम-धम ध्वनि होने लगी। उन गजों में कइयों के बेड़ियों पर बेड़ियाँ जड़ी गई थीं।

अत्यधिक रोसीले उन हाथियों के पैर लंगरों से बाँध कर कठिनता से वश में रखे जाते थे । उन पर चँवर ढुलते और उनके कानों पर छोटी-छोटी पताकाएँ फहराती थीं, जो ऐसी प्रतीत होती थीं मानो विन्ध्यगिरि अथवा श्यामल पर्वतों से गंगा बह रही हो। अश्व पाखरों की असीम झणकारें होती थीं । बेलाल जाति के वे अश्व चाल-विशेष से चलते थे । उन पर सवार योद्धाओं के भाले और उनके धातु के बंध अग्नि की भाँति चमकते थे । उन पर नीले-पीले, और हरे आदि कई रंगों के इन्द्र-धनुष के समान रंगों वाले ध्वज फहराते थे । उनमें अपने-अपने आराध्यों के चिन्ह अंकित थे । अपार बाणों के समूह उनकी पीठों पर लदे हुए थे, जो मानो चलते हुए श्मशान ही हों । इस प्रकार धौलपुर-स्थान पर युद्ध लड़ने के लिए उन्होंने चम्बल के तट पर आकर अपने पड़ाव डाले । उस सेना में एक लाख सैनिक और नवहजार गज थे । प्रातःकाल होते ही युद्ध प्रारम्भ करने के लिए उन वीरों ने प्रारम्भिक तैयारी की । घोड़े पाखर और वीर कवच धारण कर सन्नद्ध हुए । तदुपरान्त राव शत्रुशाल, रुस्तमखांन और राजा शिवराम गौड़ युद्धार्थ तैयार हुए । उनके साथ सूर्य, चन्द्र, अग्नि और ऋषि सभी वंशों तथा कुलों के वीर अश्वों पर सवार हुए ।

वाजित्रों का वीर नाद हुआ । उनकी ध्वनि सुन कर दोनों सुल्तानों की सेना तत्पर हुई । मदमस्त-गजेन्द्रों ने गर्जना की । कायरों के मुख की कान्ति मलीन हुई । रज-राशि से रवि प्रतिबिम्ब धुंधला हो गया । वीरों का वरण करने के लिए आकाश में अप्सराओं के समूह आ डटे । पाखरों के बजने की ध्वनि, कवचों की झनझनाहट और अश्वों की हिनहिनाहटों से चतुर्दिक् कोलाहल फैल गया । दोनों पक्षों से क्रमवार योद्धा अश्वारूढ़ हुए ।

संवत् १७१५ जेष्ठ शुक्ला अष्टमी शनिवार के उस दिन दोनों सेनाओं के महावीरों ने युद्ध प्रारंभ किया । दोनों ओर से तोपों के गोलों के प्रहार हुए । तदनन्तर धनुष, तलवार, कटारियां और गदाओं का युद्ध हुआ । उस विकट युद्ध में प्रथम वीर रुस्तमखांन रण-भूमि पर गिरा तब दाराशिकोह ने सैयद नाहरखांन को उसका स्थान ग्रहण करने के लिए उत्साहित किया । तदनन्तर केशरीसिंह, नरहरिदास और पोखरदास रण-खेत रहे । शाहजादा दाराशिकोह ने युद्धभार नाहरखांन पर डाल कर आगरा का मार्ग लिया । शाहजादा के भागने पर शाही सेना में हलचल मच उठी । तब अपने अश्व को चपलता से बढ़ा कर राव शत्रुशाल ने मोरचे को सम्हाला । उसने अपने सामन्तों को प्रोत्साहित कर शाहजादा मुराद को मुकाबिले के लिए ललकारा । राव के साथ राजा शिव-राम, भीम, रामसिंह और राजा रूपसिंह ने भी अपने घोड़ों को आगे बढ़ाया।

उस आक्रमण में राजकुमार भारतसिंह, मोहकमसिंह, गुमानसिंह, जूझारसिंह, जोरावरसिंह हाडा और शिवराम चालुक्य वीरगति को प्राप्त हुए। राजा रामसिंह राठौड़, राव शत्रुशाल और राजा शिवराम गौड़ भी तदुपरान्त असिधारा में अन्तर्लीन हो गए। इस प्रकार धौलपुर का युद्ध समाप्त हुआ।

पूर्व (वाराणसी) का युद्ध

कवि ने पूर्व (बहादुरपुर) के युद्ध खण्ड वर्णन में प्रारम्भ में, उज्जयिनी-युद्ध में वर्णित बादशाह अकबर, जहाँगीर और शाहजहाँ तथा उसके चारों पुत्रों का वर्णन दोहराया है। तदनन्तर शाहजादा शाहशुजा के विद्रोह को विज्ञप्त कर उसे पददलित करने हेतु शाहजादा सुलेमानशिकोह, मिर्जा राजा जयसिंह कछवाहा, राव रायसिंह राठौड़ और राजा अनिरुद्धसिंह गौड़ को ससैन्य भेजने का उल्लेख किया गया है।

शाहजादा सुलेमानशिकोह ने अपनी सेना को युद्ध-सज्जा से सज्जित कर पूर्व दिशा की ओर प्रस्थान किया। सेना के प्रयाण-समय छत्तीसों प्रकार के वाद्य इस प्रकार व्यंजित हुए जिस प्रकार भाद्रपद में घनघटा ने गर्जन किया हो। उस सेना में दिल्ली-साम्राज्य की रक्षा के लिए सतत तत्पर रहने वाला राजा जयसिंह कछवाहा अश्वारूढ़ होकर चला। राजाओं में श्रेष्ठ राजा माना जाने वाला राव रायसिंह राठौड़ सवार होकर चला। वह रीझ के समय गज-राजों का दानदाता और खीझने पर गज-समूह को चक्राकृति घुमाकर फेंकने में सबल था। तदनुपरान्त वनराज तुल्य पराक्रमी सैनिक-समाज के स्वामि राजा अनिरुद्धसिंह गौड़ ने अश्वारोहण कर प्रस्थान किया। उसका भाई जसवन्तसिंह गौड़ जो सदा युद्ध में अविचल रहने में सुमेरुगिरि के समान माना जाता था, सवार हुआ। वह, राजा अनिरुद्धसिंह का जैसा भाई होंना चाहिए, वैसे ही उच्च गुणों से सम्पन्न था। युद्ध वेला में द्विगुणित जोश के साथ रिपु-समूह का संहार करने वाला मारुराव उदयभानु सवार हुआ। युद्ध में लक्षाधिक विपक्षी सेना को ललकार कर मारने वाला भोजराज खंगारोत अपने वीर साथियों सहित सवार होकर चला। अनेक प्रकार की युद्ध प्रशस्तियों का प्राप्त-कर्त्ता वीर भावसिंह अपने अनुज रणछोड़दास सहित सवार हो कर चला। रुहेला वीरों का प्रमुख, वीर दलेलखांन अपनी सेना को लेकर आगे बढ़ा। गज-मस्तकों पर असि-संघात करने में निपुण सैयद बहादुरखांन अश्व पर आरूढ़ हो रणाभिमुख हुआ। निर्भीत वीर मीरजाफर सवार हुआ। सैयद कासिमखांन ने कवचादि युद्ध-सज्जा से सज कर प्रस्थान किया। उन वीरों के साथ छोटे-बड़े उमराव-योद्धाओं ने घुड़ सवार हो

कर अपने शूरमां सरदारों का अनुगमन करते हुए प्रस्थान किया। इस प्रकार योद्धाओं ने आगरा से प्रस्थान कर यमुना को पार किया। शाहशुजा को दण्ड देने के लिए उद्यत वह सेना अनवरत कूच करती हुई बनारस के समीप गंगा के पास पहुंची। वहाँ विश्राम कर वीरों ने गंगा स्नान किया।

उधर दोनों ओर के गूढ़चर गुप्त सूचनाएँ संकलित करने में सक्रियता बरतने लगे। वहाँ जहाँ-तहाँ से सम्वाद प्राप्त कर अपने-अपने सेना-नायकों को उभयपक्ष की सैनिक गति-विधियों से अवगत करने लगे। तब शाहजादा सुलेमानशिकोह को अनुचरों से सम्वाद मिला कि शाहजादा शुजा सोन नदी के पार उतर कर सहसराव तक आ पहुँचा है। उसकी सेना के हरावल में मुहम्मदहया, जामबेग और राजसिंह हाड़ा जैसे बड़े योद्धा नियुक्त हैं। तब सुलेमानशिकोह ने भी अपनी सेना को गंगा तट पर बनारस में युद्धार्थ सज्जित की।

उधर सहसराव से शाहशुजा ने आगे प्रस्थान किया। वह सेना क्या थी मानो सातों समुद्र ही उद्वेलित होकर पर्वतों को डुबा देने के लिए उद्यत हुए हों। उस विशाल वाहिनी के प्रयाण से मार्ग के सर-सरोवरों का पेय जल सूखकर समाप्त हो गया। काले गजराजों की वह सेना, मार्ग के नगरों को लूटती, उपहत करती दिल्ली पर आधिपत्य स्थापित करने के लिए बढ़ी आ रही थी, मानो मेघों की घटा बरसने के लिए उमड़ कर बढ़ चली हों। इस प्रकार दोनों पक्षों की वीर सेनाएँ गंगा के दोनों दुकूलों पर आमने-सामने आकर डट गईं। तब शाहजादा सुलेमानशिकोह ने अपने सेना-नायकों को युद्ध-मंत्रणा के लिए आमन्त्रित किए। राजा जयसिंह, राजा अनिरुद्धसिंह और राव रायसिंह आए। उन वीरों ने शाहजादा को प्रत्यय दिलाते हुए कहा कि हम दिल्ली पर अधिकार करने की दुर्भिलाषा करने वालों को कुचल कर धूलि समाहित कर देंगे। यह युद्ध तो क्या है, हम पश्चिम दिशा के विशाल पर्वतों तक को अपने बलिष्ठ भुज-पाशों में उठाकर पूर्व दिशा में ला पटकने में समर्थ हैं। उत्तर (बंगाल) दिशा के स्वयंकथित इस बादशाह को ही बंधन में डाल कर बंदीखाने पहुँचा देंगे। हम केवल दिल्ली के शाहंशाह के सम्मुख ही अपना मस्तक नमाते हैं—अन्य किसी के सामने नहीं। बादशाह का अन्न ग्रहण किया है, अतः उस पर किसी प्रकार दोष नहीं लगने देंगे।

तत्पश्चात् दोनों दलों ने अपने-अपने शस्त्रागार खोले। योद्धाओं को सिलह और अश्वों की पाखरें वितरण कीं गई। उभय समूह में आक्रमण की प्रारम्भिक हलचल उत्पन्न हुई। राजा अनिरुद्धसिंह ने अपने योद्धाओं को आहूत किये। उन्हें गंगा का महत्त्व, स्वामिधर्म का पालन, संसार की ममता, जीवन की क्षण-

भंगुरता और युद्ध-मृत्यु का महत्त्व जतला कर उत्साहित किए। उसने कहा—हे वीरश्रेष्ठों! जीवन-मरण के भय-भाव से निर्भ्रम हो कर युद्ध में प्रवेश करो। यह पंचतत्त्वों का शरीर तो अपने-अपने तत्त्वों में अन्तर्लीन हो जाएगा, फिर मरता जीता कौन है? अत: युद्ध में वीरता प्रदर्शन कर कीर्त्ति और लक्ष्मी का संग्रह कीजिए। वैरियों के आयुध-प्रहारों के सम्मुख बढ़िए। यदि रण में मारे गए तो भी लाभ ही है क्योंकि सिर शिव की कण्ठमाल का आभूषण बनेगा, पल से पक्षियों को तृप्ति मिलेगी और अप्सराओं के रूप में सुर-सुन्दरियाँ सुखोपभाग के लिए प्राप्त होंगी। स्वामिधर्म का पालन होगा और यश मिलेगा, अतः कहो—हे वीरों! रण भूमि में प्राणोत्सर्ग करना अच्छा है या पलंग पर पड़े रह कर मरना अच्छा? इस प्रकार उस गौड़ वोर ने महाभारत के योद्धा अर्जुन के समान अपने वीरों को श्री कृष्ण की भाँति जीवन-मृत्यु के रहस्य का बोध कराया। उन वीरों ने युद्ध में प्राण विसर्जन कर सुर बालाओं के द्वारा वरण की कामना के साथ रण में मरने मारने का संकल्प ग्रहण किया।

तब फिर गौड़ों की शाखा-शाखा के वीर सज्जित होकर दरबार में आए। राजा अनिरुद्धसिंह ने शिरस्त्राण तथा कवच धारण किया। उनके सामन्त जसवन्तसिंह, भावसिंह, तेजसिंह, जोरावरसिंह, नवलसिंह, शक्तिसिंह, रुक्मांगद, अचलदास, किशोरदास राव और सांवलदास राव (भाट) सन्नाह सनद्ध हुए। यद्यपि ये भट्ट-बंधु राज्यसंपत्ति से प्रति वर्ष दसमांश प्राप्त करते थे, पर आज अपने स्वामी के सम्मुख युद्ध में लड़ने को उद्यत हो उसका अर्द्ध भाग बँटाने पर तत्पर थे। उपर्युक्त वीरों को तैयार जान, तत्काल ही वीर हरिदास, शिवदास, महेशदास, रामसिंह, डूंगरसिंह, केशवदास, शूरसिंह और कल्याण आदि भी तैयार हुए। इस प्रकार बधु-बांधवों और सज्जित सैनिक समाज में राजा अनिरुद्धसिंह ऐसा शोभायमान हुआ, मानो नक्षत्र रूपी योद्धाओं में वह पूर्णिमा का सोलह कला युक्त नक्षत्रपति चंद्र ही हो।

तदनन्तर धार राज्य का उद्धार-कर्त्ता परमार वीर जुझारसिंह तैयार हुआ। मदमस्त गजसमूह को मारने वाले सिंह तुल्य पराक्रम वाला जसवंतसिंह हाडा तत्पर हुआ। जीवन के प्रति विरक्त, अपार बल वाला मोहकर्मसिह सनद्ध हुआ। उसके साथ ही युद्ध में कर्ण के समान लड़ने में समर्थ कर्ण, सिंह तुल्य साहस-धनी सुजानसिंह, वन के खूंखार सिंह जैसा बली डूंगरसिंह और केशरी खांन तैयार होकर हरावल में नियुक्त हुआ।

तदनन्तर अरि सेना का संहार करने के लिए राजा जयसिंह कछवाहा अश्वारूढ़ होकर रण भूमि की ओर चला। उसके प्रस्थान करने पर एक

बादशाह (शाहजहां) के पक्ष में तो विजय की आशा लहर और दूसरे बादशाह (शाहशुजा) के पक्ष में पराजय की निराशा बढ़ी। उस वीर के तैयार होते ही, शूरसिंह, महासिंह, फतहसिंह, तेजसिंह कछवाहा, मथुरादास गौड़, मधकर (माधवदास ?), रूपसिंह राठौड़ आदि वीर रणभूमि की ओर बढ़े। उन योद्धाओं से घिरा हुआ राजा जयसिंह उस समय इस प्रकार शोभित हुआ, मानो अष्ठ कुली पर्वतों के मध्य सुमेरुगिरि विराजमान हो।

राजा रामसिंह, उदयभानु, दलेलखांन, सैयद बहादुर खां, मीरजाफर आदि वीर, सन्नाह सनद्ध होकर शाहशुजा को पराजित करने के लिए सेना के अग्र-भाग में चले।

शाही दल सवार होकर ऐसे आगे बढ़ा जैसे लहर पर आया हुआ समुद्र उमड़ चला हो। गजराजों पर कसे हुए नक्कारों ने वीर निनाद किया। करनालों का घोर घोष समुद्रों के उस पार तक ध्वनित हुआ। शहनाई और रणतूर्यों का गम्भीर घोष हुआ। तोपों की पंक्तियां चली। गजराजों पर बंधे ध्वजों की डोरियां और लाल पट चमकने लगे। कितने ही वीर माहि-मुरातिव और तोग लिए हुए थे। पदाति वीरों के हाथों में नंगी तलवारें और कन्धों पर बन्दूकें थी। कतिपय कोतिल अश्व मयूर-कला करते चलते थे और उनके साईस लम्बे कदमों से उन्हें सम्हालते हुए चलते थे। उनके सम्मुख मुद्गर तथा गदा-धारी वीर चल रहे थे।

राजा जयसिंह ने हरावल का नेतृत्व ग्रहण किया। कज्जलगिरि की भ्रांति देने वाली अपनी गजसेना को सज्जित कर स्थिर कीं। उनके पीछे जूझारसिंह पंवार, जसवंतसिंह, मोहकमसिंह, कर्णसिंह, सुजानसिंह, डूंगरसिंह, शेरखांन आदि सज कर तैयार हुए। मध्य भाग में शाहजादा सुलेमानशिकोह ने अपनी सेना को तैयार कर स्थिर कीं। मीर जाफर तथा बहादुर खां ने चंदावल, राव रामसिंह ने बाएं पार्श्व और राजा अनिरुद्धसिंह ने दाहिने भाग की सेना का नेतृत्व सम्हाला। इस प्रकार तीस हजार सेना हरावल में उतनी ही गोल में तथा बीस सहस्र चंदावल में और दस-दस सहस्र दोनों पार्श्वों में स्थिर कर मयूर-व्यूह की रचना की। गंगा तट के निकट दोनों सेनाओं में मार-काट मची। सर्वप्रथम परमार और गौड़ों ने शत्रु पर आक्रमण किया। वे बंधन-मुक्त सिंह की भाँति रिपु-सेना पर झपटे। राजा अनिरुद्धसिंह और जाम बेग का सामना हुआ। योद्धाओं के अंग शस्त्राघातों से विंध गए। बाणों की झड़ी लगी। तल-वारों से वज्राग्नि बरसी। कवचों की लोह कड़ियां टूटने लगी। योद्धाओं के स्कन्ध और कटि संधिस्थलों से छिन्न हो पड़ने लगे। भालों की चौधारी मार से

लोहू धाराएं बहने लगीं। योद्धा प्रति योद्धा को ललकार कर प्रहार करने लगे। रणभूमि बसन्त के फाग की आकृति में बदल गई। वीरों के अंग रक्त रूपी गुलाल से रक्तिम बन गए। रवि-रथ आकाश में स्थिर हो गया। शत्रु सेना के पैर उखड़ गए। जामबेग भाग गया। अनिरुद्धसिंह खड़ा रहा।

शाहजादा शुजा के राजचिह्न छीन लिए। उसे जीवित जाने दिया। राजा जयसिंह ने राजचिह्न सहित राजा अनिरुद्धसिंह को शाहजादा सुलेमान शिकोह की सेवा में उपस्थित किया। शाहजादा ने "तुम्हारे ही कारण हम विजयी हुए हैं" कह कर राजा के प्रति कृतज्ञता प्रकट की। विजय के लिए राजा जयसिंह को बधाई दी। समस्त सेना हर्षित हुई।

उपर्युक्त कथासार से स्पष्ट है कि कवि का उद्देश्य तीनों युद्धों में वीरगति तथा विजय प्राप्तकर्त्ता योद्धा का यश-प्रकाशन था। यद्यपि वह गौड़ों का आश्रित कवि था। अतः गौड़ योद्धाओं के युद्ध का विस्तार के साथ वर्णन करना उसका लक्ष्य रहा है, जो उनका आश्रित होने तथा संख्या में गौड़ों के अधिक मारे जाने के कारण अनुचित नहीं कहा जा सकता। तब भी कवि ने सभी जातियों के वीरों का समुचित वर्णन कर अपनी समन्वय दृष्टि एवं निष्पक्ष दृष्टिकोण का परिचय दिया है।

साहित्यिक विवेचन

रस

बिन्हैरासो प्रारम्भ से अन्त तक युद्ध-घटनाओं के वर्णन का काव्य है और वीर रस उसका प्रधान रस है। वीर रस के सहायक रूप में उसके मित्र रस वीभत्स, भयानक तथा रौद्र भी ग्रंथ में यथाप्रसंग व्यवहृत हुए हैं। वीर रस के परिपाक में योद्धाओं की दर्पोक्तियां और शस्त्र-संघात आदि का चित्रण बड़ा प्राणवन्त, ओजस्वी एवं चित्रोपमतामय हुआ है। वीर रस की निष्पत्ति के लिए आसेर किले के दुर्गपाल मानसिंह गौड़ का शाहजादा औरंगजेब को दिया गया वीरोचित उत्तर देखिए:—

मुणै येमि भड़ मांन, सुणो अवरंग सुलिताणं।
साहिजिहां पतिसाह, जांणि राखै जमिरांणं॥
दूठ जेणि मौ दियै, दुरंग जिण रीति स देस्यां।
दूजां सो गहि दुजड़, येमि खळ खट्ट रचेस्यां॥
जिण बात फेरि जाणो रखे, जुद्ध बळाबळ जूटसी।
तूटिसी सीस असुरां तणां, तवि आसेर न तूटसी॥

धौलपुर के युद्ध में शाही सेनानायक शाहजादा दाराशिकोह के रणभूमि से पलायन करते समय सैयद योद्धा नाहरखांन ने सेना का संचालन और युद्ध का भार ग्रहण किया उस समय उसने शत्रु सेना का सामना करते हुए दृढ़ निश्चय के साथ कहाः—

नाहर किम नीसरै, नांम नाहर किम रख्यौ।
दोइ राह यम कह्यौ, साहि आलम मुख अख्यौ ।।
और मरैं व्है सैद, हम जीवतैं कहावैं।
सैदों की क्या रहै, नाजि जो काम न आवैं ।।
हरवल्ल तुमैं हम नां किया, मन यह रह्या मजा खरा।
यक चोट लरौं ठड्ढौ यहां, (तुम) गहौ कोट जा आगरा ।।

गौड़ सेना के अनेक योद्धा रण-मस्त हुए सीधे शाहजादा औरंगजेब पर आक्रमण कर उसे धराशायी करने के लिए दिशा-संकेत पूछते हैं:—

गज फौजां वेहंडी, हठी हरवळ बंगाळां।
खग बाहै होलाळ, खूंदि ढौहिया बढ़ाळां ।।
भड़ां चौळ बंबाळ, घटां पूरै कस घावां।
मुणि बीरभद्र मुरारि, किसूं पीथल्ल कहावां ।।
सांईदास राजसी मांनसी, हद्द मरद्द कुसळौ हठी।
ऊन आस भांण वेऊ कहै. कहौ बाग लीजै कठी ।।

सेनाओं के प्रयाण, तीर-तोपों के बाण-गोलों की गर्जना और शस्त्रों के प्रहारों से उत्पन्न भयानक स्थिति की पृष्ठभूमि में भयानक रस को अभिव्यक्ति मिली है। योद्धाओं के पारस्परिक प्रहारों के रूप में एक उदाहरण देखिएः—

झिलैं सूर सामन्त बाहै झटक्का।
घड़ा ढ़ंग कुढ़ंग रा लै घटक्का ।।
गजां तणां कुंभाथ्ळां सैल लग्गै।
बळे धार हूं धार डंकार बग्गै ।।
कड़ी झड़ै जरद्दां तणी जोध कट्टै।
झटक्का केई ढाल हूंता उभट्टै ।।
बाहै येमि गुरज्जां फरस्यां गुपत्ति।
ढहै जोध असवार जाये धरत्ति ।।
वहै येमि चूगा चपेटा सबाहं।
गजां टूक पड़िया मचै गज्जगाहं ।।

वीभत्स रस का उप-संयोजन करने का भी कवि ने प्रयत्न किया है। युद्ध-स्थल में गज, अश्व और अंग-छेद योद्धाओं के मांस, मज्जा, आंतें आदि पर आमिषचारियों के मंडराने का वर्णन करते हुए लिखा है—

कहुं परै बीर खंडह बिहंड ।
कहुं परै सुण्ड दण्डह प्रचंड ।।
कहुं परै अन्त दन्तह उलझ्भि ।
असिहार फिरै तिह बार मझ्भि ।।
कहुं परै रुण्ड मुण्डह असुण्ड ।
कहुं परै तुंग कहुं परै भुण्ड ।।
कहुं परै लुथ्थि ऊपरि सु लुथ्थि ।
कहुं परै मंसि कहुं परै बुथ्थि ।।
खळकंत श्रोण तवि नाळ खाळ ।
तहां तीर बीर भैरू बिताळ ।।
चवसट्ठि तहां भरि पीवै पत्त ।
सारद्द तंड नारद्द नृत ।।
तहां लियै ईस सीसह सुभट्ट ।
किरमार धार धड़ हूं बिछुट्ट ।।

राजस्थानी काव्य की वर्णन-परम्परानुसार युद्ध-स्थल के मध्य योद्धाओं के कवचादि तथा अप्सराओं के वस्त्रा-भूषण धारण करने के बहाने कवि ने शृंगार वर्णन का भी अवसर निकाल लिया है जो कि परम्परायुक्त होते हुए भी बड़ा सजीव और मोहक है ।

यत सूर कवचि पहरैं सु हेत ।
उत रंभ कंचुकी तनी देत ।।
यत सूर पांग बंधै सु बीर ।
उत रंभ चीर पहरै सु धीर ।।
यत सूर टोप बंधै अतूल ।
उत रंभ दहैं सिर सीस फूल ।।
यत सूर ढाल बंधैं अमांन ।
उत रंभ तरौनां पहरि कांन ।।
यत दस्तान सूर बंधैं अभंग ।
उत रंभ करत मेंहदीन रंग ।।
कर सूर खाग मंजै कराळ ।
बहो रंभ नैन अंजै बिसाल ।।

संसार और जीवन के विषय में शूरवीरों का दृष्टिकोण सामान्य जन से भिन्न होता है । शरीर को वे मरणधर्मी मान कर मृत्यु से सदा अभीत रहते हैं । अतः युद्ध को एक सामान्य जीवन-व्यापार से अधिक महत्व देते हैं तो उसे अश्वमेघ यज्ञ के समतुल्य फलदाता अथवा मुक्ति के साधन के रूप में ही ।

मुक्ति के इस अभियान में कर्त्तव्य-रत योद्धा अपनी आत्मा को ब्रह्मज्योति में मिला कर चिरंतन शांति और सुख को प्राप्त करता है। इस भाव की प्रेरक आसक्तिविहीन उक्तियों में जो दार्शनिक तत्व छिपा है, उसका अवलोकन करने से वीर रस के साथ शान्त रस के गठ-बंधन का जो आभास, वीर भावनाओं के अतिरेक के फलस्वरूप हुआ है, वह भी अवलोकनीय है—

कहै राव सत्रसाल सुणौ भड़ भीछ कहावं।
उरध मंडळ भेद तणा कोइ लैहैं लाहवं।।
करि इस्ट द्रढ़ दमन भेदि सह कमळ उचाई।
स्याम काम धरि मनैं यह पग धरत सवाई।।
व्रहमंड फूटि चालै सु तैं जोतिहि जोति मिलाइयां।
यह घरै पांव असमेद का, दोय मुकति यक पाइयां।।

इस प्रकार कवि ने वीर, भयानक, वीभत्स आदि मित्र रसों के साथ-साथ शृंगार और शान्त रस की कुछ भाव-भूमियों को भी छुआ है।

अलंकार

अलंकारों के प्रयोग के प्रति कवि का विशेष आग्रह तो नहीं रहा है, फिर भी समूचे काव्य में अनेक अलंकारों का स्वाभाविक प्रयोग हुआ है। डिंगल-काव्य-परम्परानुसार वैणसगाई (वर्ण-मैत्री) अलंकार का प्रायः सभी छंदों और सभी स्थलों पर प्रयोग हुआ है। यह वस्तुतः एक प्रकार का अनुप्रास अलंकार होता है। शब्दालंकारों में वयण सगाई के अतिरिक्त यमक, पुनरुक्तवदाभास और अनुप्रास के अनेक भेदों का प्रयोग काव्य में हुआ है। अर्थालंकारों में उपमा, रूपक, अनन्वय, उल्लेख, अत्युक्ति, ध्वन्यर्थ व्यंजन, सन्देह और उत्प्रेक्षा के उदाहरण मिलते हैं। कुछ उदाहरण कवि के कला-कौशल को समझने की दृष्टि से यहां प्रस्तुत किए जा रहे हैं—

अनुप्रास— तवियै भड़ येह मुरारि तणां। घण घाय विभाड़ण फौज घणां।।
सजि सूर सनाह सनाह सजै। रण रूप जिसा नवनाथ रजै।।

श्रुत्यनुप्रास— (१) खयराड़ पहाड़ बराड़ खत्री।
(२) बंधै गाढ़ में बाढ़ जमदाढ़ गाढ़ं।
(३) कसै बाग केकाण केवाण कस्सै।

वृत्यनुप्रास— (१) सजि सूर अनै सामंत सार।
(२) तांणै तेज तंग दुतंग।

छेकानुप्रास— बटका बटका बीथरै, तटका झटका तांन
घटका वढि पड़िया घणां, कुटका कुटका कान।।

सर्वान्त्यानुप्रास— गोवरधन चंदह तणी कूपां किरनाळा ।
महि देणां अरि मारणां बेऊ विरदाळा ।।
जोधा रिड़मल चौंड रा बीका बाहाळा ।
सलखा बीरम जैमला धूहळ धज्जाळा ।।

यमक— (१) चम्मर जेमि चम्मर चार ।
(२) महामत्तिवाळै महामत्तिवाळै ।
(३) मौसरां ऊगा मौसरां खग ब्रंदा खट्टै ।

पुनरुक्तवदाभास— तड़फत भड़ां घड़ टूटै तंडळ बधि संधाण बंधाण ।
फबिया रत घट जांणै फूटा रंग मजीठ मंचाण ।।

उपमा— (१) बारा अपार अणपार बाण । मूराड़ जेमि वहता मुसांण ।।
(२) भींवड़ो जिसो पण्डू रो भींव ।
(३) चित येह बिहूं बळ चमर ढाळ ।
भळहळै दिवाकर जेमि भाळ ।।
(४) गंगेव जेमि अणभेव ग्यांन ।
सरणाय राय राखण समांन ।।

रूपक— (१) बजै सद्द नद्दं छत्तीसं बिहद्दं ।
पुणै मेघ अग्राज तैं भाद्रपद्दं ।।
(२) नरसिंघ रूप भयांण भाळै लांगूवा लंकाळ ।
गाहिया गोपदंन्त गैमर डोळिया तर डाळ ।।
(३) करी जिन नाळि करी जिन कोर ।
घटा घहरि जनु चारों हि ओर ।।

अनन्वय— (१) अजण जेहा अजण रचेबा सु महारण ।
(२) मोहोक्कमं जेहा मोहोक्कमं ।
(३) भीम जिम भीम गयंदां भमाड़ ।
(४) दळ जेहा दरियाव ।

उल्लेख— अजमेरि धरा आदीत ऊगि ।
पयनिधी परां परकास पूगि ।।
भीमाळ वंस ऊजाळ भूप ।
धर खळां तेज परजाळ धूप ।।

अत्युक्ति— (१) असा बाण वेऊ दळां तणा ऊडै ।
बंवे भाण धूंवाण मझ्झेस बूडै ।।
(२) धम धंमयं बाजिय धूजि धरा ।
रज उड्डिय बुड्डिय सहसकरा ।।

वृत्त्यर्थ व्यंजन—	अगगं अगगं गजराज गजै । घननं घननं घन घट्ट बजै ॥ रमझमं थमथमं घूघरयं । प्रति बाजत ते हय पक्खरियं ॥
सन्देह—	बियडांण कसैंस नींसाण बजै । गति मेघ किनां महरांण गजै ॥
उत्प्रेक्षा—	(१) छुटा जिम पावक बाण छुटन्त । वहां धनु ते मनौं बाण छुटन्त ॥ .... तुपक्कन ताड़ पड़ै यक तार । मनौं बिरखा यह होत अपार ॥ .... समट्टिय छुट्टिय भ्रिगनि बांन । मनौं अहिपंख उड़ै असमांन ॥ .... गुरज्जन मार परैं गमकार । मनौं घन कुट्टत लोह लुहार ॥ ....
दृष्टान्त—	(१) मिळै वाय मधि वाय, सुन्नि मधि सुन्नि समावै । तेज तेज में मिळे, पिण्ड घर मांहि मिळावै ॥ आप आप मिळ जाय, रहै अपणौ नह कोई । सत रज तम जिस मांय, जको ले देय समोई ॥ नह तात न मात न भ्रात पुणि, उड़ै हंस राखै कवण । टग टगी लाय रहिये जितैं, भरियौ तजि जाये भवण ॥ (२) यत करही सूर सनांन दान । उत रंभ कर ही मंजन बिधान ॥ यत सूर रांग बंधै असंकि । उत सूर सजै लंहगानि लंकि ॥

कवि ने जहाँ अनेक अलंकारों का प्रयोग यथा स्थान किया है, वहाँ उत्प्रेक्षा का बाहुल्य भी दृष्टिगोचर होता है । उत्प्रेक्षा का अधिक प्रयोग केवल इस ग्रंथ में ही नहीं अपितु इस प्रकार के अन्य ग्रन्थों में भी प्रायः देखने को मिलता है । अलंकारों के प्रयोग को देख कर यह अनुमान लगाया जा सकता है कि कवि की सूझ-बूझ और उसका अध्ययन किस कोटि का है ?

भाषा-शैली

रासो की भाषा ब्रज-मिश्रित डिंगल है और उसमें राजस्थानी भाषा की

मेवाड़ी की क्रियाओं का पुट लक्षित होता है। गद्य-खण्डों में आधुनिक हिन्दी के विकासोन्मुख प्रारम्भिक काल की झलक भी दिखाई पड़ती है। अनेक स्थलों पर अरबी, फारसी और तुर्की के शब्दों का भी प्रयोग हुआ है। मध्यकालीन भारतीय योद्धाओं का अधिकांश समय मुगल दरबार और उनके शासित प्रान्तों में बीतता था। मुगलों के अत्यधिक सम्पर्क के कारण योद्धाओं के आवास-भवनों, वेश-भूषा और शस्त्रादि में मुस्लिम-संस्कृति के अनेक तत्व जाने-अजाने मिल-घुल गए थे। फलस्वरूप यहां की भाषा में भी उनकी भाषाओं के शब्दों का मिल जाना स्वाभाविक था। इस प्रकार रासो में मुस्लिम संग-सम्पर्क और वातावरण के कारण तत्कालीन व्यवहृत शब्दों का संमिश्रण प्राप्त होता है। ऐसे शब्दों में तोग, समसेर, वाका, जहमत्ति, कासीद, बफाति, फजरि, सरजा, करनाळ, नरजान, तखतरेवान, जासूस, बिलंद, बहरख, तसब्बी, चिलकंतो और जनंब्बर आदि अनेक शब्द गिनाए जा सकते हैं।

यह ऐतिहासिक युद्ध-काव्य है। इस कोटि की प्राचीन काव्य-कृतियों में बहुधा संयुक्ताक्षरों और विकृत-वर्णों का बाहुल्य पाया जाता है, पर रासो में शब्दों की अनावश्यक विकृति और क्लिष्ट पद-योजना को अधिक स्थान नहीं मिला है। प्राचीन कवियों की यह धारणा रही है कि संयुक्ताक्षरों और द्वित्वक्षरों के अभाव में युद्ध का वातावरण निष्पन्न नहीं हो पाता और उसके अभाव में ओजगुण का सम्यक् प्रभाव स्थापित नहीं होता; पर रासो में शब्द-विकृति और कृत्रिम-शब्दायोजन के बिना भी ओजगुण प्रभावशील बन पड़ा है। इस प्रकार यह काव्य कृत्रिमताजन्य उपर्यंकित दोष से मुक्त ही माना जा सकता है। अरबी और तुर्की आदि विदेशी भाषाओं के शब्दों के साथ-साथ मराठी के केतला और चा विभक्ति के कहीं-कहीं प्रयोग अलबत्ता हुए हैं, जो डिंगल में प्रायः सर्वत्र प्रचलित रहे हैं।

कवि डिंगल का प्रौढ़ और अधिकारी विद्वान् था। वह, काव्य में किस स्थल पर, किस प्रसंग में, किस योद्धा के लिए और किस वातावरण के लिए किस प्रकार की शब्दावली उपयुक्त और प्रभावी हो सकती है, से भली-भाँति विज्ञ था। अतः उसने काव्य में योद्धाओं की युद्ध-क्रियाओं और युद्ध के वातावरण के अनुकूल शब्दावली का प्रयोग कर अपनी काव्य-कला-दक्षता और भाषाधिकार का परिचय दिया है। युद्धस्थल के वातावरण और गजाश्वों के युद्ध-स्थल में प्रवेश की क्रियाओं को चित्रोपमता देते हुए वर्णन किया है—

अगगं अगगं गजराज गजै। घननं घननं घन घंट बजे॥
रमझंमं घमघमं घूघरयं। प्रति बाजत ते हय पक्खरियं॥
घम घमंय बाजिय घूजि धरा। रज उड्डिय बुड्डिय सहसकरा॥

घसमस्सि घमस्सि जवान घसै । किंरवानन तोड़ि कमांन कसै ।।
खिलि मिल्लिय भिल्लिय छक्करयं । मनु कुंद तुरंगन बक्करयं ।।
पग छुट्टिय संकुल छुट्टि पटा । घनघोरि मिळी दहुंवोर घटा ।।
हिंगलिय यल्लगिय हूल हुयं । घमगज्जर गज्जिय मांचि धुयं ।।

योद्धाओं के पारस्परिक शस्त्र-संघात और घायलों की दशा तथा युद्धस्थल की वीभत्सता के वर्णन में कवि ने सशक्त भाषा का प्रयोग किया है । उपमा और रूपक अलंकार की छटा भी इस पद्यांश में दर्शनीय है—

महा जोध जोधा मिळै मांचि मारं । घड़ां बेहड़ां तेहड़ां तूटि धारं ।।
धरा बासतां घूवळा नाद ढंवके । भिलै भिल्लरी देवद्वारे भरणंक्के ।।
पड़ै जूजुवा टूक यूं हाथ पावं । बहै श्रोणितं नाळ खाळं बहावं ।।
पड़ै सीस रुण्डं पड़ै रुंड प्रेतं । खिलै जुग्गनि खप्र लै मज्झ खेतं ।।
पड़ै लंक हूं टूटि जोधा अनन्तं । कलेजं सबूकं बिसथरी अतं ।।
पड़ै फेफरं गूद नै मेद फूटै । तिनं ऊपरां गिद्धनी झूंड तूटै ।।
घट्टां घाव लग्गास घूमै घुरक्कै । फटा सीस फूटास केई फरक्कै ।।
उड़ी खोपरी मज्झि भेजो स येखी । दहेड़ी जांणै ढांकणी खोल देखी ।।
अनै छातियां घाव केतां स आगे । पुळेवा लजै जोध लंकाळ पागे ।।
कितां छातियां घाव लागे कटारी । बणे राज आवास जाणेस बारी ।।

उपर्यंकित सरल तथा प्रवाहयुक्त शब्द-योजना के पश्चात् अब कुछ पंक्तियां विकट शब्दावली की देखिए, जिसमें द्वित्त्य वर्णों का प्रयोग भी निःसंकोच किया गया है ।

सजि सूर सुभट्टं थूरण थट्टं थट्ट गरट्टं तेथहया ।
बीरारस बट्टं ऊपट पट्टं ऊभट भट्टं ऊलहिया ।।

× × ×

मिळि दीठि दीठि दहूं दळां मद्धि ।
उलट्टिय फट्टिय सात उदद्धि ।।
निघस्सिय खोड़ हजार सुनद्ध ।
सुणं सुरलोक महि पड़ि सद्ध ।।
भन्नकिय सद्द नफेरि न भेरि ।
रुन्नकिय डंडन की बजि फेरि ।।
धुन्नै सिर सेस गिरां सिर धूजि ।
हयख्खुर खेह बिभाकर बूजि ।।

× × ×

पड़े लट्ट चट्टं । बिकट्टं बिकट्टं ।।
पड़ें बंहं गट्टं । बढें लोयघट्टं ।।

कचं आच कख्खं । बणे दाव बख्खं ।।
मंडे मत्तिवाळं क ग्रहे कलाळं ।।
मुकंदे मरट्टं । ठेले गज थट्टं ।।

कवि ने रासो में गद्य-खण्डों में वचनिका और दवावैत का प्रयोग किया है। दवावैत में लघु वाक्यों की योजना और राजस्थानी गद्य के सुष्ठु प्रयोग का एक उद्धरण में देखिए—

"हठ का हमीर । ओहठमाल । भांवतां के भावता । अणभावतां के नाट-साल । सत का समूह । ध्रम की पाज । गदाई का कल्पितरु । जोग की जिहाज । तेज का सूरिज । मूरति का मैण । दुसमनों के दावानळ । सैणों का सैण । दिल का दरियाव । दरियावों सा गहर । दरियावों सा फेर । दरियावों की लहर ।"

यद्यपि कवि ने गद्य-खण्डों का अत्यल्प ही प्रयोग किया है, परन्तु इन अल्प प्रयोगों में ही कवि की गद्य-शैली का नैपुण्य प्रकट हो जाता है । यहां वचनिका का एक अन्य उदाहरण दिया जाता है जिसमें आधुनिक खड़ी बोली के पूर्व रूप प्रयुक्त क्रियाओं का स्वरूप दृष्टिगोचर होता है—

"करनाळों का सोर घमक बजै घनघोर । अराबों की आवाज जुरे अनुरूध महाराजाधिराज । कोहोकबांन चंद्रबांन छूटते हैं । तारे आसमान से तूटते हैं । सुलतान कों वारे गया जामबेग खरा रया । बात करतें बेर लगै । जोधा जुड़ै कायर भगै । राव किसोर सै यौं फुरमाया—जामबेग चलाय आया । बेग के पीलवान नैं हाथी डाल्या । पाहर जैसा पगां चाल्या । ये तै दरम्यांन कौन खड़ा रहै । हाथी का धका हाथी सहै ।"

काव्यकार ने योद्धाओं की जातियाँ, प्रान्त अथवा स्थान, अस्त्र-शस्त्रों तथा घोड़ों की जातियां, रंग और चालों की नाम-गणना कराते हुए लम्बी सूचियां दी हैं । इन स्थलों में कवि के इतिहास, आयुध-विद्या और शालिहोत्र शास्त्र के अध्ययन का समुचित परिचय मिलता है । कहीं-कहीं ग्रंथ में पात्रों के नामों के स्थान पर उनके समानार्थक शब्द भी काम में लिए गए हैं । यह प्रवृत्ति डिंगल काव्यों और डिंगल गीत साहित्य में भी पाई जाती है । उदाहरणार्थ कुछ पंक्तियाँ इस प्रकार हैं—

अर्जुन के लिए उसका पर्यायवाची 'पाराथनामी' शब्द का प्रयोग हुआ है—
नरांनाथ ऊभो स 'पाराथनांमी' । पृ० ५१

सुमेरसिंह के लिए सुमेरु गिरि का पर्यायवाचो 'गिरमेर' शब्द का प्रयोग किया है—

नाना गोपालदास दादा 'गिरमेर'। पृ० ११७

कई स्थलों पर योद्धाओं के नाम के आधे भाग का ही प्रयोग किया गया है और कहीं कहीं नाम को विलोम कर दिया गया है, जैसे गोपालदास के लिए 'पाळ' और उदयभानु के लिए 'भांण' शब्द प्रयुक्त हुआ है—

'पाळ' री जोध लंकाळपति, भीछां कहै सुभल्ल रं।
क्रन भ्रास 'भांण' बेऊ कहै, कहो बाग लीजै कठी। पृ० ९७

इसी प्रकार जसवंतसिंह और रूपसिंह के लिए केवल 'जसवंत' और 'रूप' ही रख दिया है—

भाजियो सुणे 'जसवंत' भड़, 'रूप' रूप चढियो रणे। पृ० ११५

निम्नांकित पद पंक्ति में 'सुजाणसिंघ' के स्थान पर उसका उलटा 'सिंघ-सुजांण' और 'दल्लेलखांन' के लिए 'खांन दलेल' प्रयुक्त हुआ है—

सुणं हरवल्लह 'सिंघ सुजांण'। पृ० ७१
दळां 'खांन दल्लेल' चढं दुहेला। पृ० १४२

अनेक स्थानों पर योद्धाओं के नामों के अल्पार्थ प्रयोग किए गए हैं, परन्तु ये प्रयोग अवज्ञा अथवा छोटापन प्रकट करने के उद्देश्य से नहीं किए गए हैं अपितु कवि का उन स्थलों पर पात्र के प्रति सम्मान, प्रेम और घनिष्टता व्यक्त करना ही लक्ष्य रहा है। जैसे भीमसिंह के लिए कवि ने 'भींवड़ो' और राजा भीमसिंह सीसोदिया के लिए 'भीमांणी' का प्रयोग किया गया है। यहाँ भींवड़ो और भीमांणी महत्ववाची रूप ग्रहण किए हुए हैं।

'भींवड़ो' जिसौ पंडू रौ भींव, सात्रवां गढ़ां ऊपाड़ सींव। पृ० ११९
'भीमांणी' रासो भयंक, साबळां वोपै असंक। पृ० ६६

अल्पार्थ की भाँति ही महत्ववाची सम्बोधनों के भी ग्रंथ में पर्याप्त प्रयोग मिलते हैं, जैसे 'कुसळसिंघ' के लिए 'कुसळेस' और रतनसिंघ के लिए 'रतनेस'; 'मुंकदसिंघ' के लिए 'मुकंदेस' और 'जूझारसिंह' के लिए 'जूझार' महत्ववाची रूप में प्रयुक्त हुए हैं। साक्षी के लिए दो पंक्तियाँ प्रस्तुत हैं—

हुई बार 'कुसळेस' रै फतै हाथां, नरां चाढणो नीर रणधीर नाथां। पृ० १६६
परमारह सूर 'जूझार' पुणं, सिरदार जको जुधबार सुणं। पृ० १५४

डिंगल काव्य परम्परा के अनुसार नामों के रूप भेदों का काव्य में अच्छा प्रयोग किया गया है; जैसे—गौड़ योद्धा अर्जुन के लिए निम्नांकित नाम भेद व्यवहृत हुए हैं—अजमल, अजमाल, अज्जमल, अरजण, अरज्जण, अरजन और अजा आदि।

छंदों की पादपूर्ति के लिए ह, स, ज और य वर्णों का प्रयोग हुआ है। प्रमाणार्थ 'ह' और 'स' के प्रयोग निम्नलिखित पंक्तियों में देखे जा सकते हैं—

'गोवरधन चन्द्रह तणो' और 'नरां नाथ ऊभो स पाराथनांमी।' पृ० ५१

कवि ने स्थान-स्थान पर मुहावरों और कहावती पद्यांशों का प्रयोग कर भावों को प्राञ्जल और भाषा को सरस तथा चमत्कृत रूप प्रदान किया है।

अजमाल लूण ऊजळ करां, आजि लड़ां मुंह आगळां। पृ० ४१

यहाँ 'लूण ऊजळ करां' मुहावरा है।

पत्त चाढ़ण आजि स जहाजपुरं।

यहाँ पर 'पत चाढ़ण' मुहावरा है।

पुणे घात-पाती अंग नी काढ़ि परखे। पृ० ५०

यहाँ 'घात-पाती' मुहावरा है।

माल्वै राव काचौ मतौ मंडियौ। पृ० ५२

यहाँ 'काचौ मतौ मंडियौ' मुहावरा है।

सबै ऊपरां ऊबरी जेणि बत्तं। पृ० ११४

यहाँ 'ऊबरी जेणि बत्तं' मुहावरा है।

दारासाहि पल्लौ गह्यौ नाहर सैद निबाहियां। पृ० १२८

यहाँ 'पल्लौ गह्यौ' मुहावरा है।

कवि ने कहावती पद्यांशों का पर्याप्त प्रयोग किया है। इनसे जहाँ भाषा में लालित्य आया है, वहां भावों में वजन भी। यही नहीं पाठक के मन पर योद्धा के चरित्र की उदात्तता का प्रभाव भी यह कम उत्पन्न नहीं करते हैं। यहां कुछ उदाहरण दिए गए हैं—

'सती तणो नारेळ' तिको 'वेहड़ो उंताळो'। पृ० ४२

बुधसेणि तणो 'अबरी स बरं'। घण नीर चढ़ावणहार घरं॥ पृ० ४३

'कांम रो कोट' कहिये किसोरं। पृ० ५४

भिड़े काजि 'अदां तणो बांधि भारो'। पृ० ५४

'अनथ्थां नाथणो' साहि छळि गौड़ सपांणो। पृ० ११२

अन्त में कहना होगा कि अकृत्रिम भाषा, ओजपूर्ण उक्तियां, स्वाभाविक अलंकार, सशक्त पद्यांश और अवसरानुकूल शब्दावली के प्रयोग से समूचा ग्रंथ दीप्त है।

छंद

रासो में कवि ने इकतीस प्रकार के छंदों का प्रयोग किया है, परन्तु लक्षणों के आधार पर भुजंगप्रयात और भुजंगी के लक्षणों में कोई अन्तर अथवा भेद

नहीं मालूम पड़ता। इसी प्रकार कवित्त और छप्पय भी लक्षणों के अनुसार अभिन्न ही परिलक्षित होते हैं। वस्तुत: ग्रंथ में प्रयुक्त कवित्त हिन्दी का छप्पय छंद ही हैं। अत: लक्षणों के आधार पर उनतीस प्रकार के छंदों का प्रयोग हुआ है। वैसे कवि छंद शास्त्र का विद्वान् था। उसने अपनी अन्य काव्यकृतियों में कतिपय अन्य प्रकार के छंदों का भी प्रयोग किया है। किन्तु यहां कवि की प्रवृत्ति आचार्यत्व प्रकट करने की न होकर ऐतिहासिक काव्य के रूप में वीरों का वीरत्व-प्रदर्शन तथा गुणानुवाद करना ही उसे अभीष्ट था। कृति में प्रयुक्त छंदों के अवलोकन से लगता है कि वीरगाथा काल का छप्पय छंद कवि को विशेष प्रिय रहा हैं। यह छंद पृथ्वीराज रासो में भी अन्य छन्दों के अनुपात में अधिक व्यवहृत हुआ है। अत: कवि को अपने ग्रंथ का रासो नाम होने के कारण नाम की साम्यता तथा स्वयं चन्दवरदाई का सजातीय होने के कारण भी यह छंद अधिक प्रिय रहा हो तो कोई विस्मय नहीं।

कवि ने संस्कृत के त्रोटक, मोतीदाम, शार्दूल विक्रीड़ीत, गाथा तथा हिन्दी के दोहा, सोरठा, छप्पय, बेअखरी आदि का प्रयोग किया है तो डिंगल के प्रसिद्ध गीत छंदों में झमाळ और भाखड़ी आदि का प्रयोग भी अधिकारपूर्ण ढंग से किया है। गद्य-खण्डों में दवावैत और वचनिका के सुन्दर प्रयोग भी यथास्थान मिलते हैं। इनके अतिरिक्त डिंगल के रेड़की, रोमकंध, किलकिला आदि छंद भी उसके द्वारा प्रयुक्त हुए हैं। इसके आधार पर कहा जा सकता है कि कवि डिंगल और पिंगल के छंदशास्त्रों से भली भांति परिचित था। प्रयुक्त छंदों में कुछ को छोड़ कर अधिकांश छंदों के लक्षण हमें डिंगल और पिंगल के प्रकाशित छंदशास्त्रों में मिल जाते हैं। पर ताटंक, अलिला, सागर और वेली भुजंगी आदि छंदों का जिस रूप में इस ग्रंथ में प्रयोग हुआ है, उस रूप में प्राप्त लक्षण ग्रंथों में या तो उपलब्ध नहीं होते या मेल नहीं खाते हैं। छन्दशास्त्र का विषय अपने आप में बहुत बड़ा विषय है और अभी तक अनेक छंद-शास्त्र प्रकाश में भी नहीं आए हैं, ऐसी स्थिति में इन छंदों के सम्बन्ध में प्रामाणिक तौर पर कुछ कहना संभव नहीं है। इस ग्रंथ में जो छंद प्रयुक्त हुए हैं, अध्येताओं की सुविधा के लिए परिशिष्ट में छंदानुक्रमणिका के रूप में उनका निर्देश कर दिया गया है।

यहाँ मैं एक बात और विद्वानों से निवेदन कर देना चाहता हूँ कि इस ग्रंथ की एक ही प्रति उपलब्ध होने से और विभिन्न छंदशास्त्रों में छंदों के लक्षणों में अन्तर होने के कारण ग्रंथ के सम्पादन में यथोचित सतर्कता रखते हुए भी यदि छंदगत कोई कमी रह गई हो तो उसे सम्पादक की विवशता ही समझें।

चरित्र-चित्रण—

वैसे तो कवि ने सभी योद्धाओं का चरित्र-चित्रण करने का प्रयास किया है। सेनानायकों में राजा जसवंतसिंह, राव मुकंदसिंह हाडा, अर्जुन गौड़, राव शत्रुशाल हाडा, रुस्तमखां बहादुर, राजा शिवराम गौड़, राजा रूपसिंह राठौड़, राजा रामसिंह राठौड़, मिर्जा राजा जयसिंह, राजा अनिरुद्धसिंह गौड़, और भीमसिंह गौड़ के चरित्र को उभार कर रखने में कवि को बड़ी सफलता मिली है। परन्तु इन प्रसिद्ध और ख्याति-लब्ध योद्धाओं के अतिरिक्त भी कवि ने अनेकानेक योद्धाओं पर यथास्थान एक-एक छप्पय कवित्त लिख कर उनकी वीरता, स्वामि-धर्म, कर्त्तव्यपरायणता और युद्धार्थ कटिबद्धता का बड़ी ही ओजस्वी एवं प्रवाह युक्त शैली में वर्णन किया है, जिसे पढ़ते ही पाठक के हृदय में एक प्रकार की स्फूर्त्ति और योद्धा के प्रति सद्भावना उत्पन्न हो जाती है।

उदाहरण के लिए उज्जयिनी खण्ड के ऐसे योद्धाओं में शाहपुरा के शासक सुजानसिंह सीसोदिया का एक छप्पय द्रष्टव्य है—

सीसोदियो 'सुजाण' मरण कारण ऊमाहै।
भांण मंडळ भेदवा, चित्त येहा सह चाहै॥
कड़ा-भीड़ कग्गळां, गलां राखण अगंजी।
खग चाढै खरसांण, मेटि मटसांण स मंजी॥
चित्तौड़ नीर चाढ़ण चढ़ै, चालै केमि अचल्ल रो।
सिरदार बिन्है फौजां सिरै, मुणियै सूरजमल्ल रो॥

धौलपुर खण्ड के योद्धाओं के परिचय में भी कवि ने प्रत्येक योद्धा का स्वतंत्र वर्णन किया है। इससे कवि के वर्णन-कौशल का ही भान नहीं होता है बल्कि उस के गहरे इतिहास-ज्ञान का भी बोध होता है। जिन योद्धाओं का वर्णन इतिहास ग्रंथों में दुर्लभ है, उनका परिचय तो यहाँ और भी महत्व रखता है। धौलपुर समर के योद्धा शिवराम चालुक्य का परिचयात्मक उदाहरण इस प्रकार है:—

चाळक बंस उजाळ, नांम 'सिवरांम' कहांणों।
खैराड़ो खग झाट, रीसि गज सीस बहांणों॥
'सत्रसल' आगळि सूर, खळां फाड़ै अवझाड़ै।
केसरिया अंग साजि, जिरह जूसण बीभाड़ै॥
दइवांण असुर दळ दाहिवा, बिहसि बिहसि आघा धरै।
'अवरंग' 'मुराद' ऊपरि उरड़ि, सूंडाडंड निरळंग करै॥

योद्धाओं के परिचयात्मक वर्णन में कवि ने हिन्दू और मुसलमान उभय धर्मों एवं जातियों के योद्धाओं पर समान रूप से प्रकाश डाला है। इस ओर

कवि का पर्याप्त व्यापक दृष्टिकोण रहा है। पूर्व या बनारस युद्ध के योद्धा दलेलखांन रुहेला का कुल परिचय देकर कवि ने युद्ध में उसका स्थिति-निर्देश करते हुए लिखा है:—

विढ़ण करेबा खेल, खांन चढ़ियो खग साहें।
अंग जको बजरंग, सूर ढांपियां सनाहें।
मैमंतां गाजतां, अनै ताता अश्वाकी।
रुहेला रिमराह, बांह देखतो कजाकी।।
घर गाजि बाजि हुव घूहळां, दिल्ली सिर दावा दिया।
जैसिंघ तणै हरवळ जको, करण फतै मुहरै किया।।

इस प्रकार प्रत्येक वीर का स्वतंत्र रूप से चित्रण कर कवि ने उनकी कीर्ति और कार्य को तो अमर बनाया ही है, पर साथ ही अपने कृतित्व को भी महत्वपूर्ण बना दिया है।

ऐतिहासिक मूल्यांकन

बिन्हैरासो में बादशाह शाहजहां के तीन विद्रोही पुत्र शाह शुजा, मुराद और औरंगजेब के बनारस (बहादुरपुर), उज्जयिनी (धर्मतपुरा) और धौलपुर (शामूगढ़) के ऐतिहासिक युद्धों का तीन खण्डों में सविस्तार वर्णन किया गया है। यद्यपि तीनों शाहजादों में सर्व प्रथम बंगाल के राज्यपाल शाह शुजा ने बादशाह शाहजहां की मृत्यु के प्रवाद को वास्तविक मृत्यु मान कर अपने आपको बादशाह घोषित किया था। उसके ताज धारण कर दिल्ली-आगरा पर अधिकार करने के लिए प्रयाण करने की सूचना के बाद शाहजादा मुराद और औरंगजेब ने भी अपने-अपने प्रान्तों से सेनिक तैयारी के साथ आगरा की ओर प्रस्थान किया। इस प्रकार घटना-क्रम के अनुसार पहला विद्रोह और प्रथम युद्ध शाही सेना और शाह शुजा के मध्य दि० १४ फरवरी, १६५८ में बनारस के समीप बहादुरपुर स्थान पर हुआ था। उस युद्ध में शाहजादा शुजा की पराजय और शाही सेना की विजय हुई। किन्तु कवि ने उस प्रथम युद्ध का रासो में सब के अन्त में वर्णन किया है। इस वर्णन क्रम की पृष्ठ-भूमि पर विचार करने पर जान पड़ता है कि कवि द्वारा इस क्रम को आगे-पीछे रखने के पीछे दो बातें मुख्यतया उसके मस्तिष्क में रही होंगी। प्रथम तो बनारस के युद्ध के परिणाम की समग्र सूचना आगरा पहुंची, तब तक उज्जयिनी के युद्ध का आयोजन प्रारंभ हो गया था। अतः उस युद्ध की तिथि, योद्धाओं की जानकारी और अन्य आवश्यक प्रसंगों की वास्तविक परिचिति जो ऐतिहासिक काव्य ग्रन्थ के लिए आवश्यक थी, कवि को विलम्ब से मिली होगी। और उज्जयिनी का युद्ध जो

राजस्थान की सीमा से बहुत अधिक दूरी पर नहीं हुआ था तथा उस युद्ध में उसके आश्रयदाता अर्जुन के मारे जाने की जानकारी कवि को बनारस के युद्ध की जानकारी से पूर्व ही मिल गई होगी। द्वितीय कारण भारतीय साहित्य में दुःखान्त घटनाओं को सुखान्त रूप में पर्यवसित करने की परम्परा रही है। नाटकों और आख्यायिकाओं में ऐसा किया जाता रहा है। ऐतिहासिक काव्यों में भी युद्ध नायक के अवसान को अप्सराओं के साथ प्रणय करवा कर स्वर्गलोक, शिवलोक, चन्द्रलोक आदि के अलौकिक वैभवों की सुखद कल्पनाओं के द्वारा अशुभ को शुभ और अमंगल को मंगल रूप देकर अन्त सुखान्त बना दिया जाता है। यहां कवि ने ऐसी अलौकिक कल्पना न कर प्रथम युद्ध को जिसमें शाही पक्ष की विजय हुई थी, अन्त में वर्णित कर काव्य को अशुभ अथवा दुखान्त नहीं बनने दिया है। अतः कवि का यह क्रम सप्रयोजन भी मान लिया जाए तो कोई आपत्ति-जनक नहीं कहा जाना चाहिए।

रासो में उपन्यस्त क्रम से प्रथम युद्ध दि० शुक्रवार, वैशाख वदि ६, १७१५ विक्रमी (शुक्रवार १६ अप्रैल १६५८ ईस्वी) को उज्जयिनी (मालवा) के रण-क्षेत्र में हुआ था। प्रस्तुत युद्ध के शाही पक्ष की सेना के नायक जोधपुर के राजा जसवंतसिंह और कासिम खां तथा विपक्ष की सेना के नायक शाहजादा औरंगजेब और मुराद थे। शाही पक्ष के उप-सेनानायक अर्जुन गौड़ (राजगढ़ वालों का पूर्वज) और राव मुकन्दसिंह हाडा कोटा थे। उनके सहायक उप-सेनानायकों में राजा रायसिंह सीसोदिया, राजा रतनसिंह राठौड़, राव अमरसिंह चंद्रावत, शाहपुरा का शासक सुजानसिंह सीसोदिया, राजा देवीसिंह बुन्देला, राजा सुजानसिंह बुन्देला, वेलू परशु मरहठा आदि प्रमुख थे। विद्रोही पक्ष के उप-सेनानायकों में शाहजादा मुहम्मद सुल्तान और निजाबत खांन थे तथा उनके सहायकों में सफशिकन खां, शेख मीरक, बहादुर खां, अल्लाहयार खां, केशरीसिंह राठौड़, भगवंतसिंह हाडा, रघुनाथसिंह मेड़तिया आदि थे। तीन प्रहर के भयानक घमासान संग्राम के बाद शाही पक्ष की सेना का पक्ष निर्बल पड़ गया। युद्ध में शाही पक्ष की पराजय के आसार स्पष्ट जान कर प्रधान सेनानायक राजा जसवंतसिंह और कासिम खां एवं राजा रायसिंह, राजा देवीसिंह, राजा सुजानसिंह, वेलू परशु मरहठा और राजा जसवंतसिंह के श्वसुर राजा बैरीसिंह खण्डेला, राजा छत्रमणि करौली, राव अमरसिंह रामपुरा आदि सहायक उप-सेनापति रणभूमि का त्याग कर पलायन कर गए। राव मुकन्दसिंह हाडा, वीर अर्जुन गौड़, राजा रत्नसिंह राठौड़, सुजानसिंह सीसोदिया, दयालदास झाला, विट्ठलदास चांपावत और गोवर्द्धनदास चन्द्रावत (राठौड़) प्रभृति वीर अपने अनेकानेक सामन्तों,

सैनिकों और बन्धु-मित्रों सहित रणक्षेत्र में वीरगति को प्राप्त हुए। विद्रोही शाहजादों की विजय हुई।

इस युद्ध के वृत्तान्त के समसामयिक अरबी फारसी के ग्रंथों, राजस्थानी ख्यातों तथा ऐतिहासिक पत्र-पट्टों के अतिरिक्त ऐतिहासिक काव्य ग्रंथों में अद्यावधि 'वचनिका राठौड़ रतनसिंघजी री महेसदासोत री खिड़िया जगा री कही' की अत्यधिक चर्चा एवं प्रसिद्धि रही है। वैसे प्रसंगवसात् कुंभकर्ण सांदू कृत रतन रासो, जयचंद्र यति कृत सईकी, सगता सांदू कृत इन्द्रसिंघ री रूपक, कविया कर्णीदान कृत सूरज प्रकास और महाकवि सूर्यमल मिश्रण कृत वंशभास्कर में भी वर्णन मिलता है। परन्तु प्रथम तो ये ग्रंथ युद्ध-घटना के बहुत बाद में लिखित कृतियां होने से तथा द्वितीय 'सूरज प्रकास' जैसे ग्रंथ राजा जसवन्तसिंह के उत्तराधिकारी महाराजा अभयसिंह के आश्रय में रचे जाने के कारण ऐतिहासिक तथ्यों से कोसों दूर ही नहीं निकल गए हैं अपितु सत्यता की निर्मम हत्या भी की गई है। उदाहरण के लिए राजा जसवंतसिंह के उज्जयिनी युद्धस्थल से पलायन को किस साहस से छिपा कर पराजय को धूमिल करने का प्रयत्न किया गया है, इस रूप में देखने योग्य है—

दस हजार रवदाळ पड़े गज भिड़ज अपारां।
अंग असि अर आपरै, वहै रत लहि विहारां॥
गूड हाडा गहलोत त्रुटे सिव चख ततरासै।
रूक झटां राठोड़, सूर पड़िया सतरासै॥
वचियो न एक लख दळ विचै, जवन घकै चढ जेण सूं।
'अवरंग' 'मुरादि' वंचिया उभै, आव न तूठी एण सूं॥[1]

अतः ऐसी सूरत में 'वचनिका' की भांति बिन्हैरासो ही एक ऐसा प्रामाणिक ग्रंथ है, जो घटनाओं की फारसी आधारसम्मत पूरी-पूरी जानकारी ही नहीं देता है, अपितु घटनाकृत अतिशयोक्ति जैसे मान्य दोष से भी अछूता है।

उज्जयिनी युद्ध के लिए खिड़िया जगा कृत 'वचनिका' एक महत्व का काव्य-ग्रंथ है अतः रासो के साथ उसको ऐतिहासिक तुलना दर्शाना भी अनुपयुक्त नहीं होगा।

यद्यपि रासो का लेखक कविराव महेशदास वचनिकाकार कविवर खिड़िया जगा की भांति अपने आप को युद्ध वेला पर उज्जैन में उपस्थित रहने और

---

[1] सूरजप्रकास, सं. सीताराम लाळस, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर, भा. २ पृ. २१ छं. २३।

आंखों देखा वर्णन करने का घोष तो नहीं करता है, पर वह इस युद्ध के उप-नेता अर्जुन गौड़ का दरबारी और आश्रित कवि था।[1] इससे उसे घटनाओं की विस्तृत जानकारी होना स्वाभाविक ही है। जहां तक उसके द्वारा वर्णित घटनाओं की सत्यता का प्रश्न है, उसने 'राजरूपक' के कर्त्ता बीरभाण रत्नू की तरह योद्धाओं के नाम, उनका कुल-परिचय, घटनाओं के स्थान और युद्ध की तिथि, वार, समय आदि दिए हैं और प्रत्येक अवसर का जिस विस्तार और आत्मविश्वास के साथ वर्णन किया है, उससे यह भली भांति प्रमाणित होता है कि कवि ने चाहे आंखों से सारा हाल न भी देखा हो, पर उसने घटनाओं की सत्यता के नजदीक रहने का भरसक प्रयत्न किया है।

वचनिका में राजा छत्रमणि यादव, राजा वैरीसिंह शेखावत, राजा अमरसिंह कछवाहा और विपक्षी सेना के शाहजादा-द्वय के अतिरिक्त अन्य बड़े योद्धाओं का नामोल्लेख न पाया जाना कवि खिड़िया के उज्जयिनी युद्ध के समय वहां उपस्थित रहने तथा आंखों देखा वर्णन करने के कथन के प्रति एक स्वाभाविक संशय ही उत्पन्न नहीं करते, बल्कि उसकी एतिहासिकता की कमी की ओर भी एक संकेत दे जाते हैं। रासो में ऐसा अभाव नहीं है। महेशदास ने उज्जयिनी संग्राम विषयक जो विवरण रासो में दिए हैं, वे समकालीन ख्यात ग्रंथों की भांति विस्तृत और अधिक प्रामाणिक, विश्वस्त और ऐतिहासिक महत्व के प्रतिपादक हैं। अतः इस युद्ध से सम्बन्धित अद्यावधि उपलब्ध ग्रंथों में विस्तार, जानकारी और प्रामाणिकता की दृष्टि से रासो एक अन्यतम ऐतिहासिक महत्व की उपलब्धि है।

गुजरात के राज्यपाल शाहजादा औरंगजेब के विद्रोह की गुप्त सूचना प्राप्त होने पर बादशाह शाहजहां के निर्देश से शाहजादा दाराशिकोह ने राजा जसवंतसिंह को औरंगजेब को पददलित करने के लिए भेजने से पूर्व राजा के मन्सब और सम्मान में अभिवृद्धि की तथा उपहारों से पुरस्कृत किया और उसकी वैयक्तिक सेना के अतिरिक्त अनेक शाही मन्सबदारों के रूप में गौड़ों, राठौड़ों, हाडों, सीसोदियों, यादवों, बुन्देलों, कछवाहों, मरहठों और यवनों की सेनाओं को भी साथ में विदा की थीं। राजा जसवंतसिंह के आगरा से मालवा की ओर प्रयाण करने के बाद शाहज़ादा दाराशिकोह और सम्राट शाहजहां को

---

[1] बिन्हैरासो, परिशिष्ट १ (ख) में प्रकाशित गीत—'कदै गाळ बावै नहीं साख तेरह कमंध' गीत की एक अन्य प्राचीन प्रतिकृति के शीर्षक पर 'गीत अरजन गौड़ नूं घर रा भाट रो कह्यो' अंकित मिला है।

मुराद के विद्रोह और सैनिक अभियान की भी सूचना मिल गई थी। दोनों शाहजादों की सम्मिलित सेना को राजा जसवंतसिंह की सेना द्वारा पराजित कर पाना संदिग्ध और असम्भव समझ उसकी मदद के लिए कासिम खां के नेतृत्व में एक बड़ी सेना पीछे से और भेजी थी, जो युद्ध के पूर्व ही राजा जसवंतसिंह की सेना से जा मिली थी।

यद्यपि जसवंतसिंह उज्जयिनी के इस युद्ध में शाही पक्ष द्वारा मनोनीत प्रधान सेनानायक था। युद्ध के संचालन का नैतिक और वैधानिक दायित्व उस पर था। उसने उस दायित्व के निभाने की अपनी ओर से पूरी चेष्टा भी की थी। परन्तु वह औरंगजेब जैसे कैतव-प्रकृति, अग्रदर्शी और अनेक युद्धों में अनुभव प्राप्त योद्धा की तुलना में युद्धों की व्यावहारिकता से अनभिज्ञ और अपरिपक्व मति था। वह कंधार आदि के युद्धों में नियुक्त तो हुआ था, परन्तु स्वतन्त्र रूप से किसी युद्ध का संचालन करने का अवसर और अनुभव उसने प्राप्त नहीं किया था। अतः वह उज्जयिनी में विद्रोही शाहजादों से पूर्व पहुँच कर भी उनको पराजित करने के लिए कोई प्रभावशाली व्यवस्था नहीं कर सका। और न दोनों शाहजादों को नर्मदा को पार करने से तथा सम्मिलित होने से ही रोक सका। दोनों शाहजादों के नर्मदा नदी को पार कर आगे बढ़ आने की सूचना भी उसे तो राजा शिवराम गौड़ के द्वारा प्राप्त हुई, तब कहीं अपनी सेना के शिविर और युद्धस्थान की व्यवस्था की गई। इन तथ्यों से जसवन्तसिंह के गुप्तचर विभाग की निष्क्रियता, स्वयं की अनुभवहीनता और रणनीति-पटुता के अभाव की स्पष्ट झलक मिल जाती है।

विद्रोही पक्ष के उज्जयिनी में पहुँच जाने पर शाहजादों के दूत द्वारा जसवंतसिंह को युद्ध न करने और उनको वृद्ध बादशाह की मिजाजपोशी के लिए आगरा जाने देने की स्वीकृत्ति की बात जिस साहस और निर्भीकता से अस्वीकृत की उसमें तो उसकी बुद्धिमानी और क्षत्रियोचित वीरता लक्षित होती है। परन्तु उसके बाद जिस युद्ध-कौशल की पटुता, तत्परता और सतर्कता बरतने की आवश्यकता थी, वह उससे बरती नहीं जा सकी। रासो के वर्णन के अनुसार तो जब शाहजादों का मार्गविरोध न करने का प्रस्ताव अस्वीकृत हो गया और उभय पक्षों में लड़ना निश्चित हो गया था तब हाडा और गौड़ वीरों ने विपक्षी सेना से लड़ने की प्रारम्भिक तैयारी संपन्न कर ली थी। उसके बाद राजा जसवंतसिंह ने युद्धार्थ-व्यूह रचना करने का आयोजन किया और अपने जातीय वीरों को मंत्रणा के लिये बुलाया। वचनिका में भी संधि का उपक्रम समाप्त हो जाने पर युद्ध मंत्रणा का वर्णन मिलता है। परन्तु वचनिका और रासो दोनों

में ही राजा जसवंतसिंह के अपने सरक्तीय योद्धाओं के अतिरिक्त गौड़ों, हाडों, सीसोदियों, मरहठों, बुन्देलों और यवन योद्धाओं को युद्ध मंत्रणा में सम्मिलित न करना, जसवंतसिंह के युद्ध करने के निर्णय की शिथिलता और हिलते हुए मन की ओर स्पष्ट इंगित करता है ? वह युद्ध का प्रधान सेनानायक था । उसे हिन्दू और यवन योद्धाओं को युद्धार्थ आदेश देने चाहिये थे । उन्हें व्यूह रचना की मंत्रणा में सम्मिलित करना चाहिये था और नहीं तो कम से कम राव मुकंदसिंह हाडा को तो उस मंत्रणा में आमंत्रित करन आवश्यक था, जिसे वे उज्जयिनी की तरफ आते समय एक दिन कोटा में ठहर तथा साथ लेकर आये थे, परन्तु उन्होंने ऐसा नहीं किया ।

उपर्युक्त तथ्यों के उद्घाटन से स्पष्ट है कि दोनों सेनाओं में युद्ध प्रारम्भ होने के कुछ पूर्व तक राजा जसवंतसिंह युद्ध में भाग लेने का निर्णय नहीं कर पाए थे । विद्रोही शाहजादों को पददलित करने के लिए आई हुई शाही सेना में कुछ ऐसे विघटनकारी तत्व मौजूद थे जिन पर राजा जसवंतसिंह का कोई प्रभाव नहीं था । विभिन्न जातियों के प्रमुख योद्धाओं का विश्वास भी वे प्राप्त नहीं कर पाए थे, ऐसा आभास चर्चित विवरणों से मिलता है । अतः युद्ध में प्रवेश करते समय जसवंतसिंह के मस्तिष्क में पराजय की आशंका रही हो तो असंभव नहीं कहा जा सकता । यह शंका इस तथ्य से और भी पुष्ट होती है कि युद्ध से पलायन करने वाले उसके सम्बन्धियों में राजा छत्रमणि यादव, राव अमरसिंह चंद्रावत, और राजा बैरीसिंह शेखावत के नाम भी अंकित हैं इस प्रकार सभी सम्बन्धी योद्धाओं के एक साथ युद्ध का त्याग करने के पीछे कुछ अन्य राजनैतिक कारण भी रहे होंगे, अन्यथा ये सभी एक साथ युद्ध का त्याग कर अपने योद्धाचरित्र को कदापि कलंकित नहीं करते । अतः संभवतया युद्ध के प्रारंभकाल में ही उसके परिणाम की जानकारी जसवंतसिंह को हो गई थी ।

रासो और वचनिका में एक और बड़ा और महत्वपूर्ण मतभेद यह है कि जसवंतसिंह और कासिम खां के रण-त्याग करने के बाद सेना का संचालन-भार राजा रत्नसिंह पर रहा था अथवा अर्जुन गौड़ ने ग्रहण किया तथा जसवंतसिंह आदि के पलायन कर जाने के बाद युद्ध चलता रहा या बन्द हो गया । रासो और वचनिका उनके पलायन कर जाने के बाद भी युद्ध जारी रहने की बात पर एक मत हैं । इस सम्बन्ध में ख्यातों के अतिरिक्त भी अन्य स्रोतों से युद्ध के प्रारंभ रहने की जानकारी मिलती है । राजा जसवंतसिंह की सेना के साहनी कम्मा जगराज कुंभकरणोत परिहार का एक समकालीन डिंगल गीत मिला है, जिसके शीर्षक के लेख

से भी युद्ध के प्रारंभ रहने की पुष्टि होती है।[१] यह संभव भी है कि प्राचीन पद्धति के बड़े युद्ध किसी योद्धा या नायक विशेष के पलायन कर जाते ही सर्वथा समाप्त नहीं हो जाते थे। द्वितीय मारवाड़ की ख्यात की एक प्रति में राजा रत्नसिंह की मृत्यु निम्नलिखित योद्धाओं के साथ दी गई है और तदनन्तर राजा जसवंतसिंह के रणत्याग कर मारवाड़ की ओर प्रस्थान करने का विवरण दिया है।[२] राजा रत्नसिंह की मृत्यु हरावल की पंक्ति के प्रथम आक्रमण में हो जाने की सूचना आलमगीर नामा और कतिपय फारसी स्रोतों के आधार पर लिखित डा० यदुनाथ सरकार की 'हिस्ट्री आफ औरंगजेब' में भी मिलता है। बिन्हैरासो भी रत्नसिंह की मृत्यु जसवंतसिंह के पलायन करने से पूर्व ही स्वीकार करता है। इस प्रकार जसवंतसिंह के रण-क्षेत्र त्याग जाने के बाद के युद्ध संचालन की रत्नसिंह के विषय की कल्पना सारभूत नहीं जंचती। वैसे भी उस समय की सैनिक प्रणाली और युद्ध-पद्धति के अनुसार जातियों की सेनाएं अपने कुल के नेता के नेतृत्व में रहती थीं। इस युद्ध में भी वे अपने अपने जातीय घटकों में अपने सजातीय प्रमुखों के

---

१ गीत साहणी कमा जगराज कुंभकरणोत पढ़ीयार रो उजेण री वेढ़ बाबत महाराजा नूं सात कोस पोंहचाय पाछो आय काम आयो।

—राजस्थानी शोध संस्थान, जोधपुर का संग्रह

२ राव रतन वगैरे घणां काम आया। हाथी खेत रहा। च्यार घड़ी पाछली रा पातसाही फौज बीचळी श्री महाराज घोड़ा ऊठाया। खास हाथी सूं बरछी वाही। नीबाब १ ठौड़ रह्यो नै पछै सीरदार आसकरणजी महेसजी बाग झाली नै मांडां काढ़िया। सू वैसाख बद ऽऽ सोझत पधारीया। आखातीज सोझत करने वैसाख सुद ७ जोधपुर पधारीया नै उजीण री राड़ मैं काम आया सु बीगत पातसाही उमराव दो फेरां पछै काम आया। (१) रा. राव रतनसिंघ म्हेसदासोत दलपत ऊदैसिघोत जालोर राजथांन पछै रतलाम। (२) रा. भाई फतेसिंघ म्हेसदासोत। (३) ५० रजपूत वेली पचास। (४) बारहट जसो राव रतन रो। (५) गौड़ अरजन. बीठलदासोत वेली ४० कांम आया। (६) नीबाब ईफतखार खां सीपाई २०० कांम आया। (७) कासम खां मालक थो सो तो नीसरीयो नै सीपाई लड़िया। (८) झालो दयालदास नरहरदास सांवळदासोत रो आदमी ४० कांम आयो। (९) झालो भाई राघोदास सूधो कांम आयो। (१०) हाडो मुकंदसिघ लोहो लाग नै कांम आयो नै भाई ३ जुजारसिंह, कान्ह, मोहणसिंघ माधोसिंघ रा कांम आया। कीसोरसिंघ लोहो लागां सुं ऊपाड़ियो आदमी २०० सीपाई सुं कांम आया कोटा रा धणी। (११) सीसोदीया कीसनसिंघ नाराणदास सगतावत रो कांम आयो। (१२) सीसोदीयो रुकमांगद सुरतांण अचलावत। (१३) रा. गोरधन चांदावत कूंपावत चंडावळ। (१४) सीसोदीयो सुजाणसींघ सूरजमलोत बेटां ५ सूं कांम आया साहपुरा रो धणी।—राठोड़ां री ख्यात सीताराम लाळस जोधपुर की संग्रह प्रति

नेतृत्व में ही विभाजित थीं और उसी व्यवस्था-क्रम के अधीन उन्होंने युद्ध में भाग लिया था। इसलिए जसवंतसिंह और कासिम खां के बाद किसी एक योद्धा के पूर्ण नेतृत्व की धारणा उचित नहीं लगती।

रासो में विपक्षी सेना-नायक औरंगजेब और अर्जुन गौड़ का पारस्परिक युद्ध अन्त में वर्णित है। रासोकार ने नायक से नायक का युद्ध करवा कर अर्जुन गौड़ को उप-सेनानायक और इस खण्ड के काव्य का नायक चित्रित कर उप-सेनानायक की कोटि में पहुंचा दिया है। उल्लिखित तथ्यों के कारण वचनिका के आधार पर प्रतिष्ठापक उज्जयिनी युद्ध के उप-सेनानायक राजा रत्नसिंह के मृत्युसमय का प्रश्न फिर भी जीवित रह जाता है, जिस पर इतिहास के विद्वानों को उपर्युक्त संदर्भों के आधार पर पुनः विचार करना है।

तृतीय, वचनिका में जहां राजा जसवंतसिंह और राठौड़ सेना के योद्धाओं का विस्तारपूर्वक वर्णन किया गया है, वहां रासो में इस युद्ध में सम्मिलित एव वीरगति पाने वाले और पलायन करने वाले—सभी योद्धाओं पर समुचित प्रकाश डाला गया है। इस प्रकार युद्ध में शरीक योद्धाओं के साथ न्याय तो दर्शाया ही है, पर साथ ही काव्य के महत्व को व्यापकता और विस्तार भी प्रदान कर दिया है।

कवि ने राजा जसवंतसिंह, राव मुकंदसिंह और अर्जुन गौड़ का अपनी-अपनी सेनाओं सहित अलग अलग चित्रण किया है, जिससे राजपूत-युद्ध प्रणाली के अनुसार तीनों प्रमुख योद्धाओं का अलग और स्वतंत्र अस्तित्व भी स्पष्ट हो गया है, जो उचित और प्रमाण सम्मत है। राव मुकंदसिंह और अर्जुन गौड़ ने इस युद्ध में बलिदान होकर जिस वीरता और स्वामि-धर्म-निष्ठता का परिचय दिया, वह बहुत ध्यान देने योग्य है। मुकंदसिंह ने जहां कंधार के युद्ध में दाराशिकोह के सहयोगी निजाबत खां को स्पष्ट रूप से यह जवाब दिया था कि 'ये लोग, जो मेरे साथ हैं, साधारण किराये के टट्टू नहीं हैं, वे मेरे भाई-बंद और नातेदार हैं। मैं उनको वहां नहीं भेज सकता हूं जहां मैं स्वयं नहीं जाना चाहता हूं।'[1] वहां इस युद्ध में, उसी ने परिस्थिति की गंभीरता और शाहजहां के वृद्धावस्था के वचनों को ध्यान में रख कर अपना ही नहीं अपने भाइयों और अन्य साथियों का सर्वस्व युद्ध-वेदी पर चढ़ा दिया।

इन प्रसंगों के अतिरिक्त कवि ने शाहजादों के उज्जयिनी की ओर आते समय

---

[1] दाराशिकोह, डा० कालिकारञ्जन कानूनगो, पृ. ३६

माँडू और आसेर दुर्गों को हस्तगत करने तथा वहां के दुर्गपालों को अपने साथ मिलाने के प्रयत्न-प्रसंगों, राणा राजसिंह से सैनिक सहायता प्राप्त करने के आयोजन आदि ऐतिहासिक संदर्भों की ओर भी आवश्यक संकेत दिए हैं।[१]

उपर्यंकित इन ऐतिहासिक तथ्यों के अतिरिक्त भी रासो में योद्धाओं की वेशभूषा, विभिन्न प्रकार के कवचों, आयुध-प्रकारों, अश्व-गजों की नस्लों, व्यूह रचनाओं और अप्सराओं के वर्णन के रूप में नारी समाज के आभूषणों, पोशाक, पूजा-पाठ, दान-पुण्य आदि का वर्णन देखने योग्य है, जो सांस्कृतिक और समाज-शास्त्रीय अध्ययन की सामग्री प्रदान करते हैं।

उज्जयिनी युद्ध के नायक का निर्णय

बिन्हैरासो में वर्णित उज्जयिनी युद्ध के दो प्रसंगों से यह विदित होता है कि शाही सेना के प्रधान सेनानायक राजा जसवंतसिंह राठौड़ थे। उन में प्रथम तो यह कि बादशाह शाहजहाँ और शाहजादा दाराशिकोह को जब यह विश्वस्त सम्वाद मिला कि मालवा में शाहजादा मुराद ने अपने आपको बादशाह घोषित कर दिया है और गुजरात का शासक औरंगजेब भी उससे मिल गया है और वे दोनों अपनी-अपनी प्रान्तीय सेनाओं को सुगठित कर दिल्ली और आगरा को अधिकृत करने के लिए प्रस्थान करने की योजना में रत हैं, तब उन्होंने जोधपुर के राठौड़ नरेश को दरबार में आमन्त्रित किया और उनकी प्रशंसा करते हुए कहा—

यम साहि दारा ऊचरै, हजरति फुरमाये।
तैं भुजां दिल्ली तखत, गजपत्ति जाये॥

तदनन्तर राजा के द्वारा शाहजादों का अवरोध करने की स्वीकृति प्राप्त कर बादशाह की तरफ से शाहजादा दाराशिकोह ने उनके पंचहजारी मन्सब में अभिवृद्धि कर एक साथ सप्तहजारी बनाया और पांच गज, एक सौ अश्व तथा सिरपाव प्रदान कर सम्मानित किया तथा उनके सहयोग के लिये अनेक मन्सबदार, सामंत, राजा, राव, उमराव, और यवन योद्धाओं को नियुक्त कर मालवा की ओर विदा किया।

द्वितीय दोनों विद्रोही शाहजादों ने शाही सेना द्वारा उज्जयिनी के पास आगरा जाने का मार्ग अवरुद्ध पाकर राजा जसवंतसिंह को मार्ग न रोकने और आगरा जाने देने का दूत के साथ अनुरोध करना जो राजा जसवंतसिंह के सेना-

---

[१] इस कथन के प्रमाण के लिए देखें राणा राजसिंह के नाम औरंगजेब के पञ्जे के निशान वाले पत्र, वीर विनोद, कविराजा श्यामलदास, द्वि. भा, पृ. ४१४-४२३

नायक होने तथा काव्य के नायक की भी भूमिका का निर्माण करता है। अतः यहाँ तक तो जसवंतसिंह के सेनानायक और काव्यनायक होने में कोई संदेह नहीं उठता है, परन्तु तदुपरान्त युद्ध की मंत्रणा, सेनाओं की तैयारी, मोर्चा बन्दी, व्यूह-रचना और राजा जसवंतसिंह, राव मुकंदसिंह तथा अर्जुन गौड़ तीनों की सेनाओं का युद्धप्रवेश और उनकी सवारी का अलग-अलग रूप में समानस्तर पर वर्णन करना राजा जसवंतसिंह के प्रधान सेनापति और काव्य-नायक के अधिकार के सम्मुख एक शंकाजनित समस्या उत्पन्न कर देता है। इस प्रकार युद्ध में प्रवेश करते समय तीनों योद्धाओं को एक समान स्थिति और स्तर पर ला बिठाता है।

अर्जुन गौड़ द्वारा अपने दूत के माध्यम से यह कहलवाना कि "शाहजादे युद्ध हेतु पूरी तरह सन्नद्ध हो कर सिर पर आ लगे हैं और राजा जसवंतसिंह तैयारी तो दूर रही पर अभी तक शैय्या से उठा तक नहीं है" से लगता है कि जसवंतसिंह ने युद्ध में भाग लने के प्रति कोई उत्साहजनक निर्णय तब तक नहीं लिया था।[1] राजा जसवंतसिंह के प्रति उपर्युक्त कथन उसके प्रधान सेनानायक के प्रति असन्तोष ही प्रकट नहीं करता, उसके सेना के नायकत्व के प्रधानत्व के अधिकार पर भी आघात करता है। यद्यपि जसवंतसिंह ने युद्ध में भाग लिया और उसकी सेना के राठौड़, भाटी, कछवाहे आदि अनेक सामन्त रण में पराक्रम दिखा कर वीरगति को प्राप्त हुए। जसवंतसिंह को रणक्षेत्र छोड़ने के लिए बलात् बाधित किया गया। राव मुकंदसिंह हाडा भी अपूर्व शौर्य्य-प्रदर्शन कर रण खेत रहा। तब तीनों नायकों में एक अर्जुन गौड़ अवशेष रहा। उसने स्नान, आराध्य पूजा और विप्रों को स्वर्णादि दान कर प्रतिनायक शाहजादा औरंगजेब का सामुख्य किया। अपने योद्धाओं द्वारा प्रतिनायक पर आक्र-

---

[1] 'अजरण' बसीठी उल्लहे, दळ 'मुकंदेस' दुबाह।
'जसमंत' अजै न जागियो, सिर लग्गा पतसाह॥

मुणै अजमाल मुकंदेस हूंतां मरद्दं।
साहिजादा बिन्है आय चढ़िया सरद्दं॥
मारुवै राव काचो मतो मांडियो।
तिजड़ गही बिन्है फौजां सिरै तांडियो॥
पहर राति हूंता गहर बाणां पड़ै।
असुर दिल्ली वणै राज लेवा अड़ै॥
'सूरहर' देखिये नको भाभो सम्मरां।
दाखवै यतां ऊपरां खाली डम्मरां॥

मण करने के लिए उसकी पहचान के चिह्नादि के बाबत पूछे जाने पर वह कहता है—

जितं मेक रहं दक्खिणावं।
तसं ऊपरां लोह सन्दूक लावं।।

दिढ़े गाढ़ मांझीस बैठो दुबाहं।
सही जांणिजै वोह अवरंग साहं।।

तदनन्तर वह अपने योद्धाओं सहित औरंगजेब से सामुख्य युद्ध कर धराशायी हो जाता है।

अतः उल्लिखित घटना-प्रसंगों से निम्नांकित तथ्यों का उद्‌घाट होता है—

(१) युद्ध-भूमि में सक्रिय भाग लेने की अन्तिम मंत्रणा में राजा जसवंतसिंह का राव मुकंदसिंह, अर्जुन गौड़ आदि को न बुलाना तथा उनके यहाँ स्वयं या प्रतिनिधि को न भेजना और जसवंतसिंह से आदेश लिए बिना ही युद्ध का प्रारम्भ होना।

(२) जसवंतसिंह, मुकंदसिंह और अर्जुन की सवारियों और युद्ध का अलग-अलग वर्णन करना, जो नेतृत्व को युद्धस्थल में तीन भागों में विभाजित कर देता है।

(३) प्रतिपक्षी सेना के नायक औरंगजेब से अर्जुन गौड़ का युद्ध करवाना, जिससे सांकेतिक रूप में यह पुष्टि होती है कि इस युद्ध में अन्तिम रूप से नायकत्व का सेहरा अर्जुन गौड़ पर आ जाता है। डिंगल की प्राचीन काव्य-परम्परा में भी सेनानायकों के प्रत्यक्ष युद्ध को बड़ा महत्त्व देने की परिपाटी रही है, उसका निर्वाह भी इस प्रकार से हो गया है।

धौलपुर युद्ध के नायक का निर्णय

बिन्हैरासो के इस द्वितीय खण्ड में शाहजादा दाराशिकोह और विद्रोही शाहजादे औरंगजेब तथा मुराद के धौलपुर (सामूगढ़) के युद्ध का वर्णन है। यह ऐतिहासिक युद्ध दि० जेष्ठ सुदि ८, संवत् १७१५ (२९ मई, १६५८ ई०) में हुआ था। यद्यपि शाही सेना का सेनाध्यक्ष स्वयं युवराज शाहजादा दाराशिकोह था, किन्तु युद्ध का पासा पलटते जान वह उद्वेलित हो युद्ध से पलायन कर गया था। अतः कवि ने उपसेनानायक राव शत्रुशाल हाडा और रुस्तमखां बहादुर तथा उनके सहयोगी नायक राजा शिवराम गौड़, राजा रामसिंह भिनाय,

राजा रूपसिंह किशनगढ़ और राजा भीम गौड़ जो कि रणभूमि में लड़ते हुए वीरगति को प्राप्त हुए थे, का विस्तार से वर्णन किया है। कवि ने उज्जयिनी के युद्ध में जिस प्रकार अर्जुन गौड़ को उपनायक सिद्ध किया है, उसी प्रकार इस खण्ड में राव शत्रुशाल हाडा को उपसेनानायक मान कर उसका शाहजादे औरंगजेब और मुराद से प्रत्यक्ष युद्ध करवाया है, जिसकी इतिहास ग्रंथों से भी पुष्टि होती है। वैसे भी राव शत्रुशाल हाडा शाही पक्ष के इस युद्ध में सम्मिलित योद्धाओं में सब से बड़ा मन्सबदार, अनेक युद्धों का साक्षात् अनुभवी योद्धा था तथा वह विजय अथवा प्राणोत्सर्ग की प्रतिज्ञा के साथ युद्ध में प्रविष्ट हुआ था। बादशाह ने स्वयं उसके नाम भेजे गए फरमान में सेना-नायक का दायित्व उस पर डाला था।[1]

विदेशी इतिहासकार जेम्स टॉड अपने प्रसिद्ध ग्रंथ 'एनाल्स एण्ड एन्टीक्विटीज आफ राजस्थान' में राव शत्रुशाल की प्रतिज्ञा को दोहराते हुए लिखता हैं कि—'हमारा कोई भी सैनिक युद्ध से भाग नहीं सकता। जो राजपूत डर कर युद्ध से भागता है, वह मरने पर नरक जाता है। मैं बादशाह की तरफ से युद्ध करने आया हूँ। मैंने यह प्रतिज्ञा की है कि युद्ध में या तो विजय प्राप्त करूंगा, अन्यथा प्राण दे दूंगा।' इसलिए राव शत्रुशाल के चरित्र को रासो में विस्तार देना उचित और युक्ति-मान्य है।

रासो के इस भाग में वर्णित घटना प्रसंगों के विषय में फारसी तवारीखों, ख्यातों और राजस्थान तथा उसके भूतपूर्व राज्यों के इतिहास ग्रंथों में बिखरा हुआ और अधूरा वर्णन तो मिलता है परन्तु जैसा रासो में एक साथ दोनों पक्षों के हिन्दू और मुसलमान योद्धाओं का उल्लेख प्राप्त होता है, वैसा नहीं। इस दृष्टि से रासो का यह धौलपुर युद्ध खण्ड भी बड़ा उपयोगी और ऐतिहासिक महत्त्व का है।

धौलपुर के इस युद्ध का ऐतिहासिक काव्य ग्रंथों में वंशभास्कर में विस्तार के साथ वर्णन हुआ है, पर उसमें भी हाडा वीरों के अतिरिक्त उस युद्ध में भाग लेने वाले अन्य कतिपय हिन्दू-मुस्लिम वीरों का नामोल्लेख नहीं मिलता है। एक अन्य चारण कवि काना कविया कृत 'राव सत्रुसाल रा कवित्त' नाम की एक उल्लेखनीय कृति और प्राप्त है, पर वह खण्डित है। राव शत्रुशाल के चरित्र पर तो उसके प्राप्त अंश में पर्याप्त प्रकाश डाला गया है, पर अन्य योद्धाओं की

---

[1] बूंदी रा फरमाण विच, इम लिखियो आदाब।
भूप सता थारै भुजां, अब म्हारै घर आव॥
—वंशभास्कर, सत्रसाल चरित्र-महाकवि सूर्यमल मिश्रण

उपेक्षा उसकी ऐतिहासिक उपादेयता को सीमित बना देती है। कुछ साहित्य-इतिहास-वेत्ताओं ने कवि वृन्द लिखित 'किशनगढ़ री वचनिका' कृति का भी यत्र तत्र नामोल्लेख किया है, जो इस युद्ध को आधार बना कर लिखी गई कही जाती है पर वह कृति हमारे देखने में नहीं आई है। जहाँ तक हमें मालूम हुआ है। डॉ० मोतीलाल मेनारिया के सिवाय अन्य किसी विद्वान ने उसकी खोज करने का यत्न नहीं किया है और उन्हीं के स्रोताधार पर उसका नामोल्लेख करते आ रहे हैं। इनके अतिरिक्त महाकवि भूषण रचित 'सत्रसाल दसक' में भी धौलपुर के संग्राम का वर्णन मिलता है, पर उसमें भी शत्रुशाल का काव्यात्मक वर्णन ही अधिक है। अन्य योद्धाओं तथा युद्ध के इतिवृत्त की दृष्टि से उसका विशेष महत्त्व नहीं है। ऐसी दशा में उसके ऐतिहासिक वर्णन के बारे में कुछ भी कहना संगत नहींहोगा। अतः प्राप्त इतिहासों और ऐतिहासिक काव्य ग्रंथों में बिन्है-रासो का यह धौलपुर युद्ध-वर्णन खण्ड भी उज्जयिनी खण्ड की भांति ही ऐति-हासिक उपयोगिता और महत्त्व का है।

बहादुरपुर युद्ध के नायक का निर्णय

जसा कि उज्जयिनी के युद्ध के प्रारंभ में इंगित कर आए हैं कि बादशाह शाहजहां के तीनों शाहजादों में सब से प्रथम द्वितीय शाहजादे शाहशुजा ने अपने प्रान्त बंगाल में विद्रोह का प्रारंभ किया था। उसने अपनी प्रान्तीय राज-धानी राजमहल में शाही ताज धारण कर बिहार को पार कर बनारस के पास बहादुरपुर में अपनी सेना को ला जमाया था। जब वृद्ध बादशाह और युवराज दाराशिकोह को शुजा के विप्लव का सम्वाद प्राप्त हुआ तो उन्होंने मिर्जा राजा जयसिंह की संरक्षकता में शाहजादा सुलेमानशिकोह को सेनापति नियत कर उसे पददलित करने के लिए भेजा। शाह शुजा और शाही सेना के मध्य मंगलवार, फाल्गुन सुदि एकादसी, संवत् १७१४ (१४ फरवरी, १६५८) को यह युद्ध हुआ। उपर्युक्त युद्ध के विषय में इतिहासों, ख्यातों और फुटकर गीत, दोहों कवित्तों और सोरठों के अलावा कोई महत्त्वपूर्ण काव्य ग्रंथ उपलब्ध नहीं होता। प्राप्त ग्रंथों में भी बहुत ही संक्षिप्त और चलता उल्लेख ही अधिक हुआ है। रासो के इस प्रकरण में दोनों सेनाओं के प्रमुख वीरों, शाह शुजा के आक्रमण अभियान की तैयारी और शाही सेनानायक सुलेमानशिकोह, मिर्जा राजा जयसिंह, राजा अनिरुद्धसिंह गौड़ और राव रायसिंह नागौर प्रभृति बड़े योद्धाओं के अतिरिक्त उदयभानु राठौड़, भोजराज खंगारोत, नबाब दलेलखान, राव कल्याणसिंह नरुका, कुशलसिंह नाथावत, गोविन्ददास ऊहड़, महासिंह शेखावत आदि अनेकानेक वीरों की समग्र जानकारी दी गई है। युद्ध का सेनानायक

कवि ने शाहजादा सुलेमानशिकोह तथा उपसेनानायक मिर्जा राजा जयसिंह और राजा अनिरुद्धसिंह गौड़ को चित्रित किया है, जो फारसी अभिलेखों और गौड़ों की वंशावली आदि ग्रंथों से भी सही प्रमाणित होता है।

इस प्रकार कवि ने विद्रोही शाहजादों के तीनों युद्धों का इस ऐतिहासिक काव्य ग्रंथ में वर्णन किया है तथा मध्यकालीन इतिहास, राजनीति और बादशाह अकबर की सहिष्णुता और तेजके युग के अन्त का इतिहास संजोया है । अतः यह ग्रथ शाहजहां के शासनकाल और उसके पुत्रों के उत्तराधिकार के तीनों युद्ध के महत्वपूर्ण वर्णनों का ग्रंथ है।

रासो का नामकरण और अप्रसिद्धि के कारण

बिन्हैरासो का नामकरण— भारतीय साहित्य में रासो-संज्ञक ग्रंथों की एक दीर्घकालीन परम्परा चली आ रही है। इस परम्परा में जहां सन्देश रासक, पृथ्वीराज रासो, विजयपाल रासो, राम रासो, खुमाण रासो, हमीर रासो और राणा रासो जैसे महाकाय ग्रंथ प्राप्त हैं, वहां जती रासो, बांणियां रासो, खींचड़ रासो, ऊन्दर रासो और धेनु रासो जैसी लघु हास्यप्रधान कृतियाँ भी बहुलता से मिलती हैं। अमूमन ऐसी रचनाएं काव्य के प्रधान नायकों अथवा युद्ध-घटनाओं के नामों से सम्बोधित मिलती हैं, पर बिन्हैरासो का नामकरण उपर्युक्त श्रणी से भिन्न प्रकार का है। कंवि का इस नामकरण के पीछे क्या अभिप्राय रहा है, यह तो स्पष्ट नहीं कहा जा सकता, पर ऐसा लगता है कि उसके मस्तिष्क में ग्रंथारंभ के समय उज्जयिनी और धौलपुर के दो युद्धों का वर्णन करने का विचार रहा होगा। क्योंकि राजस्थानी में 'बिन्है' शब्द दो के लिए और 'रासो' युद्ध के लिए प्रयोग में आता है। इसलिए कवि ने इसे 'बिन्हैरासो' नाम दिया होगा। फिर जब वह तृतीय युद्ध को भी लिखने बैठा होगा तब उसके मन में नाम की सार्थकता का प्रश्न भी शायद उठा होगा, पर इससे पूर्व दोनों युद्धों की प्रसिद्धि और चर्चा अन्य विद्वानों तक फैल गई होगी। ऐसी स्थिति में नाम में परिवर्त्तन करना समीचीन न जान कवि ने उस नाम को पूर्ववत् ही रहने दिया हो तो यह संभावना हो सकती है। वैसे वह गौड़ क्षत्रियों का आश्रित कवि था और बिन्हैरासो मे गौड़ों का सर्वाधिक वर्णन है । इसलिए अपने वीर आश्रयदाताओं के यश का विनय पूर्वक प्रसारण करने के लिए ग्रंथ का नाम 'बिन्हैरासो' रखा गया हो तो भी युक्तिसंगत हो सकता है। गौड़ों की वंशावली में एक स्थल पर कवि ने इस ओर संकेत भी दिया है कि 'नाम बिन्हैरासो दियो, बिन्है करे सब कोय।' यह नाम कवि ने किसी भी प्रयोजन से रखा हो, फिर भी रासो नामक ग्रंथों की परंपरा में इस ग्रंथ का अपना अलग स्थान है।

बिन्हैरासो की अप्रसिद्धि के कारण—पिछले पृष्ठों के विवेचन से यह भली भांति प्रकट हो जाता हैं कि बिन्है रासो बादशाह शाहजहां के विद्रोही शाहजादों के उत्तराधिकार के युद्धों के वर्णनकी दृष्टि से एक सम-कालीन और प्राथमिक ऐतिहासिक महत्व का ग्रंथ है । उसमें मुगल दरबार के उपर्युक्त युद्धों में भाग लेने वाले सभी वंशों और शाखाओं के प्रमुख योद्धाओं का यथातथ्य वर्णन हुआ है जिसका विस्तृत उल्लेख हम कर आए हैं फिर भी ग्रंथ की एक से अधिक प्रतिलिपियां न मिलने और समुचित प्रसार न पाने का क्या कारण रहा, यह प्रश्न उठना स्वाभाविक है । हमारी विनम्र राय में इसके प्रचार न पाने में मुख्यतया चार कारण हो सकते है । प्रथम तो यह कि इस ग्रंथ के तीनों खण्डों में अन्य जातीय योद्धाओं के अनुपात में गौड़-योद्धाओं का वर्णन सबसे अधिक किया गया है । कारण कि इन युद्धों में गौड़ और हाडा वीरों का ही अधिक संहार हुआ था । गौड़ों में तो राजा अनिरुद्ध-सिंह को छोड़ कर अन्य सभी बड़े योद्धा और मन्सबदार वीरगति को प्राप्त हो गए थे । अतः किसी बड़े राजा के जीवित न रहने और उत्तराधिकारियों को भी औरंगजेब द्वारा अपने-अपने राज्यों से वंचित कर देने के कारण ग्रंथ में वर्णित अपने पूर्वजों के कीर्ति-विस्तार को प्रोत्साहन कौन देता ? द्वितीय, उज्जयिनी युद्ध में राठोड़ों के स्वामी राजा जसवंतसिंह के रण-पलायन का कवि ने तथ्या-तथ्य वर्णन किया है, इसलिए राठौड़ समाज में उसके प्रति उपेक्षित भाव बरता जाना अस्वाभाविक नहीं कहा जा सकता । तृतीय, औरंगजेब गौड़ों से सख्त रुष्ट था और उसने बादशाह बनने के बाद संवत् १७१७ में गौड़ों के प्रति अपना रोष प्रकट करते हुए गौड़ों का वतन गोड़ावाटी तक उनसे छीन कर मेड़तिया राठोड़ों को दे दिया था । इसलिए बादशाह के विरुद्ध और उसके प्रतिद्वन्द्वियों के अनुकूल वर्णन को उसके मन्सबदार और कृपापात्र राजागण सुनने को कब और कैसे तैयार होते ? चतुर्थ समान वृत्ति होने के कारण रावों और चारणों में प्रारंभ से ही आपस में विरोध चला आ रहा था । चारण संख्या में अधिक थे इसलिए यहां के काव्य-प्रचार में उनका हाथ मुख्य रूप में रहा और चारण कवि जगा खिड़िया तथा कुंभकर्ण सांदू द्वारा रचित क्रमशः रतनसिंघजी महेस-दासोत दलपतोत री वचनिका तथा रतन रासो इन्हीं घटनाओं को लेकर लिखे गए ग्रन्थ हैं, जिनमें नायकत्व, योद्धाओं के शौर्य तथा घटनाचक्र आदि का वर्णन राठौड़ आदि सामन्तों के अनुकूल करने से उनका प्रचार इन सामन्तों के इलाकों में अधिक होना स्वाभाविक था । क्यों कि जैसा हम पहले बता आये हैं, इस रासो में उपर्युक्त दोनों कवियों से इस कवि का पर्याप्त मतभेद रहा है और उसमें गौड़ों

तथा हाड़ा वीरों की प्रशंसा अधिक की है। चारणों ने तथा उनके आश्रयदाताओं ने कृति को अपने समाज में महत्त्व नहीं दिया और इसीलिए इसकी प्रतिलिपियां भी अधिक नहीं हुईं, जो कि उस समय के प्रचार का प्रमुख साधन थीं।

ऐसा केवल इस कृति के साथ ही हुआ हो सो बात नहीं, राजनैतिक उथल-पुथल, राजवंशों के पतन और उत्थान के साथ लगे हुए कवि-समाज की कृतियाँ इस प्रकार के अनेक कारणों से न केवल काल-कवलित हो गईं, अपितु अभी तक अंधकार के गह्वर में छिपी भी पड़ी हैं और कई महत्वपूर्ण कृतियाँ त्रुटित ग्रंथों में केवल अपनी बानगी प्रदर्शित कर उन महान् कवियों के काव्य-कौशल के नमूने को बचा पाई हैं। यह सब कुछ होते हुए भी जिन काव्य-कृतियों का अपना ऐतिहासिक तथा साहित्यिक मूल्य है, वे जब भी प्रकाश में आती हैं तो निश्चित रूप से हमारे साहित्य के गौरव की वृद्धि करती हैं, चाहे इतिहास के किसी काल में किन्हीं कारणों से उसकी अवज्ञा क्यों न करदी गई हो।

कवि की अन्य कृतियाँ

बिन्हैरासो के अतिरिक्त कवि की निम्नलिखित रचनाएँ उपलब्ध हैं—

(१) राव अमरसिंघ नागौर को साको, (२) राणा राजसिंघ का गुण रूपक, (३) गौड़ों की वंशावली (४) रघुनाथ चरित नवरस वेलि और (५) 'राजा जयसिंह का छप्पय' तथा कतिपय योद्धाओं पर रचित डिंगल गीत। राव अमरसिंह का साका में कवि ने विभिन्न प्रकार के चौतीस छंदों में नागौर के स्वामी राव अमरसिंह राठौड़ के पूर्व-पुरुष राव मालदेव, उदयसिंह, शूरसिंह और गजसिंह का संक्षिप्त रूप में नामोल्लेख कर राव अमरसिंह के पराक्रम और उनके राजकुमार रायसिंह का जन्म-वर्णन किया है। तदनन्तर आगरा के दुर्ग में बादशाह शाहजहाँ के समक्ष सलाबत खां को मारने तथा अर्जुन गौड़ आदि योद्धाओं के सामूहिक आक्रमण से स्वयं के मारे जाने का पतेवार वर्णन किया है। 'राणा राजसिंघ का गुण रूपक' कवि की अट्ठावन छंदों की कृति है। इसमें मेवाड़ की प्राकृतिक सुषमा, गिरि और सरोवरों में वन्य-जीवों का स्वच्छन्द विहार, उदयपुर नगर, वहाँ के राजप्रासाद, सरोवर, राणा की सवारी, उनके हाथी, हाथियों की लड़ाइयाँ आदि का बड़ा सजीव और चित्ताकर्षक वर्णन किया है। शाहजादा औरंगजेब द्वारा सहायता के लिए प्रार्थना करने और फलस्वरूप अप्रकट रूप में उपरोक्त संकेतित सहायता की मंशा से राणा राजसिंह का ससैन्य प्रयाण कर मालपुरा को लूटने तथा मार्ग में आने वाले शाहपुरा आदि बादशाह के सहायक

राज्यों को दण्डित करने का उल्लेख किया है। कवि ने मालपुरा को लूटने के लिये किए गए सैनिक अभियान में सम्मिलित सामन्त-उमरावों का बड़ा महिमा-मय वर्णन किया है। 'गौड़ों की वंशावली' कवि की एक अन्य ऐतिहासिक महत्व की दुर्लभ कृति है। इसमें गौड़ क्षत्रियों का इतिहास, पीढ़ियाँ और उनके युद्धों पर प्रकाश डाला गया है। बादशाह शाहजहाँ के राज्य-प्राप्ति के प्रयत्नों में उसके प्रभावशाली और विश्वस्त सहयोगी गोपालदास गौड़ और उसके वंशज राजा अनिरुद्धसिंह, राजा शिवराम, अर्जुन, भीम आदि सभी योद्धाओं का सार-ग्राही परिचय दिया है। यद्यपि इसका प्रारंभिक अंश कीटभक्षित होने से त्रुटित है, फिर भी गौड़ों के इतिहास और अन्य अनेक घटनाओं के कारण यह कृति अति उपादेय है। रघुनाथ चरित नवरस वेलि एक सौ सत्ताईस छंदों की व्रजभाषा की रचना है। इसमें नवरसों के माध्यम से श्री रामचन्द्र के चरित्र का वर्णन किया गया है। यह वर्णन प्राप्त प्रति में बालकाण्ड तक ही मिला है। अतएव कहा नहीं जा सकता कि ग्रंथ का परिमाण कितना था। कवि इस कृति में रसों के माध्यम से वर्णन करने में सफल नहीं हुआ है। अन्य छप्पय और डिंगल गीतों में कवि ने समसामयिक वीरों में राजा जयसिंह आमेर, दयालदास झाला, राजा रामसिंह कछवाहा आमेर और अर्जुन गौड़ का यश एवं वीरता का वर्णन किया है। मिर्जा राजा जयसिंह के छप्पयों में उनके द्वारा पुरन्दर का किला और छत्रपति शिवा मर-हठा पर विजय प्राप्त करने का उल्लेख है। इस प्रकार 'रघुनाथ चरित नवरस वेलि' के सिवाय सभी कृतियाँ ऐतिहासिक उपयोगिता और महत्त्व की हैं। इसी दृष्टि से 'वेलि' को छोड़ अन्य कृतियों को परिशिष्ट में प्रकाशित कर दिया है।

आशा है परिशिष्ट में दी गई ये कृतियाँ कवि के कृतित्व को सामूहिक रूप में हृदयंगम करने में सहायक सिद्ध होंगी और सम्बन्धित विषयों पर कार्य करने वाले विद्वानों के लिए भी किसी न किसी रूप में सहायक सिद्ध हो सकेंगी।

बिन्हैरासो के सम्पादन में एक ही प्रति का प्रयोग हुआ है कारण कि अनेक विध प्रयत्न करने पर भी इसकी दूसरी प्रति उपलब्ध नहीं हुई। प्रस्तुत प्रति पांच वर्ष पूर्व कवि के वंशज श्री गोवर्द्धनसिंहजी राव द्वारा उदयपुर के प्रसिद्ध विद्वान स्वर्गीय कविराव मोहनसिंहजी को प्राप्त हुई थी। तब कविराव जी पृथ्वीराज रासो के सम्पादन का कार्य सम्पन्न कर 'पृथ्वीराज रासो शब्द-कोष' के निर्माण के कार्य में लगे हुए थे। मैं उन दिनों साहित्य संस्थान, उदयपुर में शोधपत्रिका, त्रैमासिक पत्र का सम्पादन कार्य देख रहा था। एक दिन उन्होंने 'रासो' की वह प्रति मेरे हाथ में थमाते हुए कहा—यह 'बिन्हैरासो' की प्रति है, लीजिए आपको इसका सम्पादन करना है।' मैंने उनका आग्रह

स्वीकार किया और ग्रंथ की प्रतिलिपि का कार्य प्रारंभ हुआ । तदनन्तर उसी वर्ष में उदयपुर से राजस्थानी शोधसंस्थान जोधपुर में आ गया । यहां आने पर मैंने संस्थान के संचालक डॉ० नारायणसिंहजी भाटी को मेरा वह कार्य बताया और 'रासो' के प्रकाशन की व्यवस्था के लिए उनसे आग्रह किया ।

उन्होंने ग्रन्थ की उपादेयता का अनुभव कर प्रसन्नता व्यक्त की तथा राजस्थान प्राच्य-विद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर से प्रकाशित करवाने का सुझाव दिया । फिर मुझे साथ लेकर प्रतिष्ठान के उप संचालक श्रद्धेय गोपालनारायण जी बहुरा की सेवा में ले गए । श्रद्धेय बहुराजी और भाटी जी ने प्रतिष्ठान के सम्मान्य संचालक पूज्यचरण पद्म श्री मुनि जिनविजयजी महाराज, पुरातत्वाचार्य के समक्ष ग्रंथ की ऐतिहासिक और साहित्यिक उपयोगिता प्रकट की । पूज्य चरण ने मेरी प्रतिलिपि का अवलोकन कर मुझे सम्पादनार्थ आवश्यक निर्देश देते हुए कार्य सम्पन्न करने का आदेश दिया । एक वर्ष के अनवरत श्रम के पश्चात् यह कार्य सम्पन्न कर आज विद्वानों की सेवा में इसे प्रस्तुत करते हुए मैं दो कारणों से विशेष प्रसन्नता का अनुभव कर रहा हूं । प्रथम तो यह कि ग्रन्थ ऐतिहासिक महत्व की अज्ञात कृति है । इसके प्रकाशन से कतिपय आदर्श चरित्र योद्धाओं का परिचय प्रकाश में आएगा । द्वितीय मेरे अभिन्न मित्र स्वर्गीय कविराव मोहनसिंहजी की इस रूप में इच्छा पूरी होने से उनकी स्वर्गीय आत्मा को सन्तोष मिलेगा ।

ग्रंथ की सम्पादित प्रति की प्रतिलिपि संवत् १८७६ वैशाख शुक्ला २ सोमवार को इन्द्रगढ़ (कोटा) में महताप (सिंह) के पुत्र जोरावरसिंह के पढ़ने के लिए अगरजी के पुत्र प्रतापजी ने की थी । इन्द्रगढ़ के स्वामी महाराज शिवसिंहजी हाडा बड़े विद्यारसिक, विद्वान् और विद्वानों के गुणग्राहक थे । उनका अपना हस्तलिखित ग्रंथों का बड़ा महत्वपूर्ण पुस्तकागार था, जो अब प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर में सुरक्षित है । यद्यपि प्रतिलिपि-कर्त्ता ने रासो की इस प्रतिलिपि के विषय में, यह किस की प्रति से नकल की गई है, कोई संकेत नहीं दिया है, फिर भी इन्द्रगढ़ में महाराज शिवसिंह के शासन काल में तैयार की जाने के कारण अनुमान किया जा सकता है कि महाराज शिवसिंह के संग्रहालय की प्रति के आधार पर ही इसकी अनुकृति हुई होगी ।

प्राचीन ग्रंथों में आमतौर से छंद-संख्या उस ग्रन्थ की समाप्ति पर अन्त में एक ही स्थान पर लगाने की परम्परा-सी रही है । रासो की इस प्रति में भी छंद-संख्या का वही पुरातन क्रम था । मैंने प्रतिलिपिकार के ही

क्रम को स्वीकार कर छंद संख्या क्रम को यथावत् ही रहने दिया है। पाद टिप्पणियों के स्थान पर आवश्यक शब्दार्थ और परिशिष्ट भाग में सम्बद्ध ऐतिहासिक टिप्पणियां दी गई हैं। कवि के कृतित्व का विद्वान् सम्यक मूल्यांकन कर सकें, इस दृष्टि से उपयोगी समझ कर कवि की प्राप्त अन्य ऐतिहासिक कृतियां भी परिशिष्ट में प्रकाशित कर दी गई हैं।

इस ग्रंथ के सम्पादन में मैंने राजस्थानी शोधसंस्थान के संचालक डॉ० नारायणसिंह जी भाटी से बराबर सहायता प्राप्त की है। संस्थान के अन्य आवश्यक कार्यों में अत्यधिक व्यस्त रहते हुए भी उन्होंने मुझे जो सहयोग दिया है, वह मैं नहीं जानता कि किन शब्दों में व्यक्त करूं। ऐतिहासिक स्थलों के स्पष्टीकरण और तत्सम्बन्धी टिप्पणियों को तैयार करने में इतिहास के प्रसिद्ध विद्वान् महाराजकुमार डा० रघुबीरसिंहजी, सीतामऊ का मुझे महत्वपूर्ण सहयोग मिला है। महाराजकुमार साहब की कृपा को भी मैं धन्यवाद अर्पण करने जैसी आज की चलती परम्परा से प्रकट करना नहीं चाहता। कवि-वंश-परिचय की सामग्री कवि के वंशज गोवर्द्धनसिंहजी राव और स्वर्गीय कविराव मोहनसिंहजी की विदुषी धर्मपत्नी माजी मानकुंवरीजी के यहां से प्राप्त हुई है। कठिन शब्दों के शब्दार्थ निर्णय में राजस्थानी के विद्वान् श्री सीतारामजी लाळस का मुझे सहयोग मिला है।

पूज्यचरण पद्मश्री मुनिजी महाराज और श्रद्धेय गोपालनारायण जी बहुरा की तो कृपा का यह फल ही है कि प्रतिष्ठान से यह ग्रंथ प्रकाशित हुआ। मुझे यह कार्य सम्पन्न करने का उन्होंने जो अवसर प्रदान किया उसके लिए मैं उन दोनों विद्वानों का विनम्रतापूर्वक आभार मानता हूँ। साथ ही साधना प्रेस के साहित्यानुरागी विद्वान् व्यवस्थापक श्री हरिप्रसादजी पारीक के प्रकाशन-सहयोग के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करना भी मैं अपना कर्तव्य समझता हूँ।

राजस्थानी शोध संस्थान
जोधपुर
३१ दिसम्बर, १९६५

—सौभाग्यसिंह शेखावत

महेसदास राव कृत

बिन्हैरासो

(शाहजहाँ बादशाह के शाहजादों का उज्जयिनी, धौलपुर एवं पूर्व का युद्ध वर्णन)

श्री गणेशाय नमः ।। अथ महेसदासराव कृत बिन्हैरासो लिख्यते ।।

छंद साटिक

श्वेताम्रमर वैयसिता मुक्तासिरा मंगता
श्वेताम्रमर सोभ लंबज चिहुर सोभ सजिता
रुक्मासिता रामनो श्वेता हंस अरुढ़िता
जगजिता श्वेता गुना सारिनी
वीना पुस्तक धारिता सरस्वती विद्या वर कारिनी ।। १ ।।

छंद दोहा

देहु बुद्धि वर उक्तिका, रूपक जुक्ति बताय ।
पूत पिता दळ द्वै जुड़े, भिन भिन बरणौं ताय ।। २ ।।

छंद साटिक

सूंडादंड सिंदूर सोभ सिरसा देवादन अग्रिता ।
लंबोदर भुज चारि आयुध जुता पादांब लहु पीनता ।।
घूघर मेखळ घोर भौंर भमित्ता मुकटाभिर भोजिटा ।
वन्दौं श्रीनाथ सुधि बुधि करा काव्येन कारायना ।। ३ ।।

छंद दोहा

गणनायक घायक बिघन, सुधि बुधि नायक जांणि ।
मैं बंदौं सिर नाय कै, कारण सूर बखांणि ।। ४ ।।

छंद छप्पय

श्री गुरु परम दयाल, गुरु गुण सागर जांणै ।
गुरु गोविंद तैं अधिक, गुरु ऋत ईस मिलाणै ।।

---

१. छन्द संख्या एक त्रुटित है।

२. रूपक – काव्य वर्णन । जुक्ति – युक्ति । दळ द्व – बादशाह शाहजहाँ और उसके पुत्रों का दल । बरणौं – वर्णन करूँ ।

३. मेखळ – मेखला । घोर – ध्वनि । श्रीनाथ – भगवान् कृष्ण ।

४. घायक – नष्ट करने वाले । नाय कै – नमन कर के ।

गुरु देवै पद अभय, गुरु मति ज्ञान दिढ़ावै ।
गुरु करवै अप जेमि, गुरु लघु हूंत बढ़ावै ।।
गुरु हूंत मिळै जे व्है सफळ, गुरु बिन अफळ बखाणियै ।
गुरु चरण कंज वंदित कर, कारण गुरु कवि आंणियै ।। ५ ।।

छंद दोहा

गुरु दाता द्याता गुरु, गुरु ज्ञाता सब्र जांणि ।
परम गुरु दीजै ऊकति, वरणौं सूर बखांणि ।। ६ ।।

चगतां हूं चगता जुटै, खितपति हुवौ सिंघार ।
गुरु आखौ मौहूं उकति, जंपौं गल्ह बिथार ।। ७ ।।

छंद पद्धरी

'अकबर जलालदीनह' दिलीस ।
सो तपै गयौ नव खंड सीस ।।
'नूरदी साहि जहांगीर' नूर ।
प्रथमादि सिरै तिण तेजपूर ।।
'साहिजिहान' साहिब्ब दीन ।
चहुं चक्क जेर समसेर कीन ।।
सह मिळै आय दिल्ली सपांण ।
रस मिळै नहीं 'राजसीं' रांण ।। ८ ।।

छंद छप्पय

'साहिजिहां' पतिसाह, राह दहुंवै सिर रज्जै ।
बाजा पूरब दिखण, उतर पछिम दिस बज्जै ।।
पूत सपूत स च्यारि, यळा चहुंवै ज्यां अप्पि ।
ठावां ठौहड़ां ठौहड़, उथउ थांणां करि थप्पि ।।

---

५. दिढ़ावै – दृढ़ करता है । अप जेमि – आप जैसा ही । हूंत – से । अफळ – निष्फल । चरण कंज – चरण कमल ।

६. द्याता – वन्दनीय । ऊकति – काव्य रचना की सूझ ।

७. चगता – मुसलमान । खितपति – पृथ्वीपति । सिंघार – संहार । आखौ – कहो, प्रदान करो । जंपौ – कहूं । गल्ह – कथा । बिथार – विस्तार सहित ।

८. तेजपूर – पूर्ण शक्तिवान् । साहिजिहान – शाहजहां । चहुं चक्क – चारों खण्डों को । जेर – परास्त, अधीनस्थ । रस मिळै नहीं – पूर्णरूप से घुले मिले नहीं ।

९. राह दहुवै – हिन्दू और मुसलमान । यळा – पृथ्वी । ठावा – मुख्य । थांणां – सैनिक

जाजुळी तेज जग चख्खि जिम, दुनियां ऊपरि देखियै ।
नव खंड सप्त दीपह नरिंद, लोह गहै कुण लेखियै ।। ६ ।।

छंद पद्धरी

थिरं ऊतरं 'साहिदारा' स थप्पै ।
यळा पूरवं साहि 'सूजा' स अप्पै ।।
जरा दिखिणां साहि 'अवरंग' जाणौं ।
वळ पछिम साहि 'मुरियाद' बखांणी ।।
चहूं देस अच्चाळ च्यारौं चगत्ता ।
करै च्यारहु येमि चौ वेद कथ्था ।।
दिली 'साहिजिहान' बैठौ दुबाहं ।
येकं पांय सेवै जींह दोय राहं ।।
जीयप्पउ जहमत्ति जांणी जगत्तं ।
खाली हुवौ तखत्तं नै आतपत्तं ।।
मही मंडळं हूहळं कूक मांचै ।
वळां च्यारि वाका दहाका स बांचै ।। १० ।।

छंद दोहा

'सूजे' पूरब सांभळे, वाका ढ़िल्ली येह ।
प्रारंभ जुध परठ्ठियौ, आरंभ कीध स येह ।। ११ ।।

छंद त्रिभंगी

'सूजा' सुलिताणं ओह अमाणं जांणि जवाणं जमराणं ।
आरंभ उमंगे अंगसु अंगे तंग तुरंगे ताणाणं ।।

थाने । जाजुळी – ज्वाजल्यमान । जग चख्खि – सूर्य । दीपह – द्वीप । लोह – शस्त्र ।

१०. थिरं – स्थिर । थप्पै – नियुक्त किया । अप्पै – प्रदान कीं । बळ – बल, फिर । अच्चाळ – अविचल, दृढ़ । दुबाहं – श्रेष्ठ वीर । येकं पांय – एक पैर पर खड़े होकर । जीह – जिसकी । जीयप्पउ – जिन्दा ही । जहमत्ति – जहमत, कष्ट, मौत । आतपत्तं – छत्र । वळां च्यारि – चारों शाहजादों की ताकतें, चारों ओर, चारों दिशाओं में ।

११ सूजे – शाहजादा शुजा । सांभळे – सुन कर । ढिल्ली – दिल्ली । जुध – युद्ध ।

पखराळ पमंगां नाग सनग्गां बाहि बिहंगा बाणासं ।
गज झंप स जग्गां धारै धज्जां ऊड़ि सरज्जा आकासं ।।
खंड खंड स खड़िया आभि स अड़िया जोधा जड़ियां जरदाळं ।
रत्थांह उचड़िया खिझिदळ खड़िया अनड़ां नड़िया योहाळं ।।
दिल्लीसर दावं चित्त स चावं राजा रावं उमरावं ।
पुणि सैद पठांणं तांणि कमांणं गिड़िकं धाएं गुमरावं ।।
पौहमी पालट्टं थट्ट सुथट्टं बहै बिहट्टं पूरबयं ।
सूजासाहि आया असा अधाया साहिजिहांन सुणे सबयं ।। १२ ।।

छंद छप्पय

सुणियौ 'साहिजिहांन', येमि 'सूजा साहि' आया ।
पट्टण हंदा तौड़ि, पाट द्रहबट्ट लुटाया ।।
असी सहस असवार, पार पैदळ कुण पावै ।
मेक सहस मातंग, अरि गढ़ मूळ ऊचावै ।।
गज नाळि गजां सुत्रनाळि गणि, तोप जमूर जंगळा तई ।
सीसांण बांण सौरांण सजि, दीयण विधी फतै दई ।। १३ ।।

छंद दोहा

'साहिजिहां' 'दारा' सुणै, 'सूजा' आया साहि ।
कोके तोके कांमरा, दहु राह रा दुबाहि ।। १४ ।।

---

१२. पखराळ – घोड़ों के कवच । पमंगां – घोड़े । नाग – हाथी । बाहि – चलाते हैं । झंप – तीव्र चाल । जग्गां – दुनिया में, युद्ध में । खड़िया – पयान किया । आभि – आसमान । अड़िया – लग गए । जोधा – योद्धा । जरदाळं – कवच युक्त । अनड़ां नड़िया – बंधन में न आने वालों को बंधन में लिया । योहाळं – जाल (राजनीति) बिछा कर । दावं – दावा, दांव । गिड़ि – योद्धा । पौहमी – पृथ्वी । बिहट्टं – बिना राह के ही । अधाया – राज्य का भूखा, गति से ।

१३. पट्टण – शहर । पाट – कपाट । द्रहबट्ट – द्रव्य । मेक सहस – एक हजार । मूळ – जड़ से । गजनाळि – हाथियों द्वारा ढोई जाने वाली तोपें । सुत्रनाळि – ऊँटों द्वारा ढोई जाने वाली तोपें । जमूर – छोटी तोप । जंगळा तई – एक प्रकार की बड़ी तोप । सीसांण – शीशा । सौरांण – बारूद ।

१४. कोके तोके – सूचना देकर इस अवसर पर बुलाया । दुबाहि – श्रेष्ठ योद्धा, दोनों हाथों से प्रहार करने वाला ।

छंद छप्पय

दिली थंभ भड़ दूठ, कमध कूरंमं कहाणां ।
गणि हाडा बळि गौड़, मोहरै पड़ी मंडाणां ।।
'जसमंत' नै 'जैसींघ', 'सत्तौ' दखि दीड़ सोहैं ।
धींगराज 'अनुरुद्ध', लाख लाखां दळ लोहै ।।
'दल्लेलखान' जेहादुरत्त, दळ प्रणाम तांमें दुजां ।
सिरदार 'साहिसल्लेमसा', भार सार 'रासा' भुजं ।।१५।।

छंद त्रोटक

भुज भार यतां सिरदार भणैं ।
पति 'साहिजिहांन' तिता प्रभणै ।।
दिस पूरब दुंद पड़ै दहलं ।
हुय कंपिय भू द्रगपाळ हलं ।।
दर कूच खड़ें 'जैसींघ' दिली ।
मह अंमर डंमर रैण मिळी ।।
तिण ऊपरि फौज उरैस तंई ।
गलवाज दिसौ दिसी फूटि गई ।।
सरदार 'सलेमा साह' जिसा ।
उमराव 'जैसिंघ' 'रायसिंघ' असा ।।
'अनिरुद्ध' जोधार हरोळ अणी ।
धरि पांण भुजां अजमेरि धणी ।।
कविलापति जोध विदा स किया ।
गज हैंवर अंमर कोटि दिया ।। १६ ।।

छंद वेली भुजंगी

सजै साहि सल्लेम सेना सपाणं ।
प्रथमादि पूरब्ब कीधो पयाणं ।।

---

१५. भड़दूठ – प्रचण्ड योद्धा । मोहरै पड़ी – सबसे आगे होकर । सत्तौ – शत्रुशाल हाडा । दीड़ – (धीठ) योद्धा । धींग – बलवान् । राज अनुरुद्ध – राजा अनिरुद्ध गौड़ । लोहै – लोहा लेता है ।

१६. दुंद – द्वन्द्व, युद्ध । हय कंपिय – कम्पायमान हुई । उरैस – तीव्र गति से चलायमान की । गलवाज – अफवाह । हरोळअणी – फौज के आगे का हिस्सा । कविलापति – बादशाह ने ।

१७. सपाणं – दल बल सहित । कीधो पयाणं – प्रस्थान किया ।

बजै सद्द नद्दं छतीसं बिहद्दं ।
पुणै मेघ अग्राज तैं भाद्रपद्दं ।।
चढ़ै सींघ 'जैंसिघ' राजा सचाळौ ।
सदा आतपत्तं दिली रख्खवाळौ ।।
वळै चढै 'रायसिंघ' राजा बड़ेरौ ।
भुजा जेमि मौजां गजां सीस फेरौ ।।
'अनौ' चढ़ै राजा धणी अज्जमेरौ ।
सिहां पाखती झालियां संमसेरौ ।।
'जसौ' चढ़ै गिरंमेर राजा बिजाई ।
भुजां बणै 'अनुरुद्ध' रै जिसौ भाई ।।
'उदैभाण' जंमराण चढ़ियौ अकूणौ ।
दळां रीठ बागां मारुराव दूणौ ।।
'भोजौ' चढ़ै 'खंगार' रौ लोध भारां ।
लखां भांजणां जोध चढ़ै स लारां ।।
भड़ां 'भावसी' चढ़ै 'रिणछोड़' भाई ।
पमाड़ा घणा खाटणां सिद्धि पाई ।।
दळां 'खांन दल्लेल' चढ़ै दुहेला ।
रुड़ा साथि चढ़ै रुहेला रुहेला ।।
वळै सैद 'बादर' चढ़ै स बेगं ।
तिको बाहणौ मैंगळां सीस तेगं ।।
मुणै 'जाफरं मीर' चढ्ढ़ै मरद्दं ।
सत्रं कौंण चंपै जियांरी सरद्दं ।।
कड़ा-भीड़ चढ़ै घड़ा सैद 'कासूं' ।
बड़ा बाहरौ आणियो जिको बासूं ।।

नद्दं – नाद । छतीसं – छत्तीस प्रकार के वाद्य । सचाळौ – युद्ध के लिए तत्पर । आतपत्तं – छत्र । बिजाई – दूसरा । अकूणौ – पूर्ण ताकत रखने वाला । रीठ – शस्त्रों की झड़ी । बागां – वजने पर । लारां – पीछे । पमाड़ा घणा खाटणां – वीरोचित कीर्त्ति-गाथाओं का विजेता । रुहेला – मुसलमानों की जाति विशेष । सबेगं – शीघ्रता से । मैंगळां – हाथियों के । चंपै – दबा सकें । कड़ा-भीड़ – कवच आदि से पूरी तरह सज्जित । घड़ा – फौज । बाहरौ – हथवाह करने वाला, प्रहार करने वाला ।

हलक्कं दळं जमनां नीर वावं ।
सतंबीव जोधां तणां हूहरावं ।। १७ ।।

वचनिका

दिली के कासीद दक्षिण को धाये ।
जिहांनाबाद सेती रोज च्यारि में औरंगावाद आये ।
फजरि का बखत था साहि 'औरंग' मिस करते थे ।
पातिसाहों के अंदेसे दिल के बीच धरते थे ।
येते दरम्यान अरजबेगों अरज पौंहोचाई ।
साहिब आलम हजरति की खबरि आई ।
कासीदों है अंदरि बुलावो ये फुरमाया ।
तबै कासीद हज़ूरि आया ।
सरजा करि ऊकील नै निबस्ता गुदराया ।
तिस निस्ते मे ये ये खबरि आई ।
'साहिजिहां' पातिसाहि बफाति पाई।। १८ ।।

छंद दंडमाळी

'अवरंग' साहस ऊससै ।
केवाण दिल्ली सिर कसै ।।
जमराण जेहा जग्गिया ।
लख दळां मेळण लग्गिया ।।
फुरमाण बळ बळ फट्टिया ।
थिर थाट येहा थट्टिया ।।
किरनाट बीजापुर कहै ।
यळ गोळकुंडा उल्लहै ।।

बासूं – पीछे। दळं – सैन्य दल से। वावं – हवा से। सतंबीव – चौदह प्रमुख योद्धा। हूहरावं – कोलाहल।

१८. कासीद – कासिद, हरकारा। धाये – शीघ्रता से चले। मिस – दत्तौन, प्रातःकर्म। सरजाकरि – सिज्दः, विशेष प्रकार से सलाम कर। निबस्ता – नविश्तः, लेखपत्र। गुदराया – निवेदन किया। निस्ते – नविश्तः। बफ़ाति – मौत। ऊससं – अत्यधिक जोश में आया। केवाण – तलवार। थाट – समूह। उल्लहै – उल्लसित होकर।

दिखणीस दिखण देसरा ।
नर मेळि नेस स नेसरा ।।
सामान कीधौ समर रौ ।
चित चाव छत्र चमर रौ ।।
भरि सोर बाण भराविया ।
केइ लक्षि लक्षि कराविया ।।
हथनाळि तोपां रत्थयं ।
सुत्रनाळि नाळि समथ्थयं ।।
जंबूर तोपां जेतली ।
यळ मधि भेळी येतली ।।
गोळीयं गोळा गंज्जियं ।
भरि लोह सीसा भंज्जियं ।।
मसहद्द बळी मुलतानये।
केई कौटि मेळि कबानये ।।
तीरां स बीरा ते हुवा ।
जे रिण सवारि गजे हुवा ।।
सिरोहियं समसेरयं ।
ऊना जनब्बी वेरयं ।।
असल्ली असल्ली आणिये ।
खग चाढ़ि जे खुरसाणिये ।।
जमदाढ़ जिमा जम्म री ।
सार मे सार स संभरी ।।
साबळां कीजै सांतरा ।
भूथाण भांतिस भांति रा ।।
चाठां बगतर चाढ़िजै ।
केइ रांग घूघी काढ़िजै ।।

मेळि – शामिल कर नेसरा – देश देश के, गाँव गाँव के। जेतली – जितनी। भेळी – शामिल कीं। येतली – इतनी। मसहद्द – ईरान देश के निवासी, ईरान के तूस नामक नगर वाले। सिरोहियं समसेरयं – सिरोही की (प्रसिद्ध) तलवारें। ऊना – तलवार। जनब्बी – जेनब, विशेष प्रकार की तलवार। जमदाढ़ – कटारी। सार में सार – श्रेष्ठ लोहे। संभरी – सांभर की। साबळां – भाला विशेष। कीजं सांतरा– धार लगवा कर तैयार किये हुए। भूथाण – भाथा। चाठां – (?) राग – जंघाओं का कवच। घूघी – सिर के कवच के लिए पहिना जाने वाला टोप विशेष।

पाखरां अबरा दीजिये ।
केकाण गज्जां कीजिये ।।
वडफर अपारण वंधिये ।
सुचिते अपारण संचिये ।।
सरियाह ओप सुधारिजे ।
धू काज सार उधारिजे ।।
मनसूब वांधे ऊमरा ।
खित मुगल हिंदू खूमरा ।।
सह वधै आघ सिपाहियां ।
अदभूत मन ऊमाहियां ।।
बोहो मोल चढ़ियौ हैंमरां ।
गिणजे समंव्वड़ गैमरां ।।
पीलांह मोल अपारये ।
हद बीस तीस हजारये ।।
यम साहि 'औरंग' सज्जवे ।
बीरांण नौवति वज्जवे ।।१६।।

छंद नीसांणी

यण समय 'औरंग' साहि ये मता ऊपाये ।
जके विचक्षण जांणिया जासूस वुलाये ।।
मह दिल्ली गुजरात री मह खबरि मंगाये ।
केइ अहमंदाबाद दिस केइ दिल्ली आये ।।
जासूसी लगा लियण ठीक ठौहड़ा ठाये ।
वैरागी जोगी तणा घण संप बणाये ।।
जिम लगा खबरे लियण तिम तिम फुरमाये ।।२०।।

अबरा – पाखरों के ऊपर का कपड़ा । केकाण – घोड़े । वड़फर – ढ़ाल । सरियाह – तीर, श्री । ओप सुधारिजे – नुकीले व चमकदार किये जा रहे हैं । ऊमरा – उमराव । खूमरा – शाही सेवक । ऊमाहिया – उत्साह । बोहो – अत्यधिक । हैमरां – घोड़ों का । समव्वड़ – समान । गैमरां – हाथियों के । पीलांह – हाथियों ।

२०. मता ऊपाये – विचार किया । ठोहड़ा – स्थान । ठाये – टिक कर । संप – मेल-जोल ।

छंद कवित्त

'औरंग' रा जासूस लीय, जासूसी दिल्लो ।
यते खबरि गुजरात, तणी जोगणिपुर हल्ली ।।
सुणं बिलंद ये बात, साहि 'दारा' ये बत्तं ।
मुरड़े साहि 'मुराद', सीस धारे आतपत्तं ।।
जिण सीस बिरसि दिल्ली धणी, येहा मता उपाइया ।
मन सूध तोकि भड़ कामरा, 'जसमंतसिंघ' बुलाइया ।।२१।।

दोहा

येहा मता उपाइया, साहि 'दारा' सिरताज ।
दळांनाथ करिबा बिदा, जिण कोके 'जसराज' ।।२२।।

छंद नीसांणी

महाराजा 'जसमंतसिंघ' यण काज बुलाये ।
धजावंध जोधा धणी ऊससता आये ।।
करि सलाम ऊभा, कमंध तेहा अद तावे ।
यम 'साहिदारा' ऊचरै हजरति फुरमाये ।।
तेंज भुजां दिल्ली तखत 'गजपत्ती' जाये ।
पंच हजारी हूंता पहलि मनसूभ बधाये ।।
सपत हजारी करी सही तिण कीध सवाये ।
सौ बाजिद गज पंच गणि सिरपाव मंगाये ।।
दिस उजेणि कीधा बिदा पोहो यौं पहराये ।
भारथ मूळ स भारथां यण बिधि ऊपाये ।।२३।।

छंद दोहा

किया बिदा राजा कमध, अनि कोके उमराव ।
महि 'अरजण' 'मुकंदेस' सा, भारथ पारथ भाव ।।२४।।

---

२१. जोगणिपुर – दिल्ली । मुरड़े – जबरदस्ती करके लौटे । बिरसि – नाराज होकर ।
२२. कोके – बुलाया । जसराज – यशवन्तसिंह ।
२३. धजाबंध – अपना ध्वज रखने वाला । जोधा धणी – जोधपुर का स्वामी । ऊससता – उद्यत होकर । कमंध – राठौड़ । गजपत्ती जाये – गजसिंह का पुत्र । बाजिंद – घोड़े । सिरपाव – सिरोपाव । पोहो – राजा ।
२४. अरजण – अर्जुन गौड़ । मुकंदेस – मुकन्दसिंह हाडा कोटा का स्वामी । पारथ – अर्जुन ।

छंद नीसांणी

बिदा किया उमराव बळि असुरेस अपारं ।
'मुकंदसिंह' 'अजमाल' मुणि सारा सिरदारं ।।
'वीरभद्र' भद्रबीर सा येही अवतारं ।
'मोहण सिंघ' अरोड़ महि 'जूझार' जूझारं ।।
सूर 'किसोवरसिंघ' सा रिणधींग मंडारं ।
'कन्हीराम' वरियाम कहि बढ़ि वार उबारं ।।
'रतनागर' राठौड़ सा भुवडंडा भारं ।
राजा 'रायासिघ' सा जोधां जोधारं ।।
'दलथंभ' झालो जेहवा धज थंभ धरारं ।
सीसोदीयो 'सूजाण सिंघ' जमरूप जसारं ।।
'बैरीसिघ' सेखा धणी येख अधियारं ।
'गोवरधन' 'चंद्रह' तणौ अणियां भमरारं ।।
सगतावत 'केहरि' जिसा गज फौज प्रहारं ।
बळि 'रुकमांगद' बेखिये आरण अहंकारं ।।
'राघवदे' जाहर गजां नाहर निहारं ।
चंद्रावत 'अमरेस' सा आमंद उधारं ।।
बळि 'अमरेस' नरेस सा कूरम करारं ।
जुध 'वेळू' 'परसु' जिसा दक्षिण दुरतारं ।।
'देबीसिंघ' 'सूजांणसिंघ' बुंदेल वडारं ।
बळि राजा 'छत्रमणि' बणै जादम जीं वारं ।।
बळि हाडा 'बळिराम' सा आडा जुध बारं ।
भड़ मारू 'पातल' भुजां आकास अधारं ।।
'सबळसिंघ' बाघाहरौ दीपै उदियारं ।

---

२५. मुणि – कहे जाने वाले । अरौड़ – न रुकने वाला । जूझार – जूझारसिंह हाडा । किसोवरसिंघ – किशोरसिंह हाडा । धींग – जबरदस्त । वरियाम – श्रेष्ठ वीर । वार – प्रहार । रतनागर – रत्नसिंह । भुवडंडा – भुजदंडों पर । रायासिंघ – रायसिंह । जेहवा – जैसे । धज – वीर । थंभ – स्तम्भ । अधियारं – वीर । अणिया भमरारं – सेना की शोभा बढाने वाले । केहरि – केशरीसिंह शक्तावत । बळि – फिर । बेखिये – देखिये । आरण – युद्ध में । जाहर – प्रकट । कूरम – कछवाहा वंशीय । करारं – बलवान् । बेळू परसु – दो मरहठा सरदार । बाघाहरौ – बाघा का वंशज ।

वळि जखमी उजबकं जिसा ग्रणखामि ग्रथारं ।।
कवला मांझी कांमरा तवि 'खां ग्रफितारं' ।
'कासिम खांन' ग्रमान सा मुणि फौज मदारं ।।
ग्रनि उमराव ग्रपार सो बरणंता वारं ।।२५।।

छंद दोहा

यों दिल्ली दळ उल्लहे, ग्राया खड़े उजेणि ।
कुर खेतर करु पंडवां, जुध रचसी विध्वि जेणि ।।२६।।
जो राजा 'सिवपति' जिसा, मंडिया मांडौ मंड ।
धर दखिण गुजरात धर, भड़ ग्रागळि भुव डंड ।।२७।।
मांडौ गढ़ 'सिवपति' जिसा, येमि 'मान' ग्रासेर ।
गाज करैं बेऊ गवड़, ग्राज लाज ग्रजमेर ।।२८।।

छंद छप्पय

महाराजा 'सिवपति', मंड मांडो गढ़ मंडं ।
बाबाड़े ग्रणबीह, खाग धूणें नव खंडं ।
थट्ट जेणि 'गोपाळ', ग्रनै 'वळिराम' सुथट्टं ।
सूर धीर सामंत, बिरद लग्गा कुळ बट्टं ।।
ग्रजमेर नाथ पारथ्थ यम, महि स भारथ मंडसी ।
छंडसी माण बीजा सपौ, छळगढ़ गौड़ न छंडसी ।।२९।।

वचनिका

ग्रहमदाबाद के जासूस जासूसी लाये ।
साह 'मुराद' की खबरि ले साह 'ग्रौरंग' पासि ग्राये ।।
जिण जासूसे ये खबरि कही ।

---

२५. ग्रणखामि – वंधन में न ग्राने वाले । मांझी – मुखिया ।

२७. सिवपति – शिवराम गौड़ । मंडिया – युद्ध प्रारंभ किया । मांडौ – मांडू का दुर्ग। ग्रागळि – ग्रर्गल।।

२८. मान – मानसिंह गौड़ । ग्रासेर – ग्रासेर का किला । बेऊ – दोनों ।

२९. बाबाड़े – ललकारते हैं । ग्रणबीह – निर्भय । खाग धूणें – तलवार तोल कर । गोपाळ – गोपालदास गौड़ । बळिराम – वलिराम गौड़ । कुळबट्टं – कुल की परम्परा के ग्रनुकूल । माण – मान । सपौ – योद्धा । छळ – युद्ध ।

साहि 'मुराद' पातिसाही बैठा सही ।।
तिस ऊपरि दिल्ली की फौजे उजेणि आई ।
हाथ जोड़ि ये खबरि कहाई ।।३०।।

छंद त्रोटक

कुलि साह सुणे 'अवरंग' कथं ।
मंडिया दळ खेति उजेणी मथं ।।
बद कोकिय साह 'मुराद' गजे ।
सह झूझ तणौ तिण साज सजे ।।
सुरत्ति खमावच कच्छ सहं ।
महि सौरठ ईडर मेळि महं ।।
असवार हजार पचास पुणै ।
सिरदार मंही अणपार सुणै ।।
गिरराज बिराज स राज गिरं ।
थपि दीयण राज 'मुराद' थिरं ।।
कुतवं 'समसंवे खांन' कहै ।
मुणियै बळि 'खां मनसूर' मुहै ।।
हथनाळि पचास उभै हथियं ।
दुयसै दहनाळि रथां कथियं ।।
पंचसै सुत्रनाळि सुत्रा परठै ।
करबा यम जूध महा कठठै ।।
तुपकं पंचसै सह दोय तवै ।
भर वाण कबाण अपार भवै ।।
अणपार स आउध उधरियं ।
बरनीन नवीन्ह बथरियं ।।
गयंदं मदमत्त असी गरजै ।
भड़ फौज गढ़ां अनड़ां समजै ।।

---

३१. कुलि – सभी । खेति – रणक्षेत्र । पुणै – चले, कहे । पचास उभै – एक सौ । दुयसै – दो सौ । दहनाळि – दस नालों वाली तोपें । सुत्रा – ऊँटों पर । परठे – रख कर । कठठे – जोश के साथ चले । तुपकं – तोपें । आउध – आयुध । विथरियं – (?) । असी – इस प्रकार । अनड़ां – अजयी, पर्वतों ।

तिण ऊपर पाखर ढाल दिपै ।
जुधवार प्रथीतळि कौण जिपै ।।
चगथां चतुरंगिय सेन चली ।
हलहल्ल नदी गिरमेर हलो ।।
अवघट्ट घट्टां सिर बट्ट हुयं ।
धरपत्ति तियां नह मेळ धुयं ।।
पर बाज जिसा अवगाज पड़ै ।
जुध रावळ संमरसेनि जुड़ै ।।
यण रूपं साह 'मुराद' अयं ।
भणिये 'अवरंग' उछाह हुयं ।।३१।।

छंद दोहा

दळ मिळिया साहां दहूं, कळमळिया कूरम्म ।
सळसळिया बळ सेस रा, रळमळिया मन रम्भ ।।३२।

छंद छप्पय

मिळिया साह 'मुराद', साह 'अवरंग' सपाणे ।
कोधा कौल करार, बीच दीधा रहिमाणे ।।
दहुं साहा चित येक, करै मसलति दुबाहं ।
दिली सीस दौड़िया, धरा चहुवै पड़ि धाहं ।।
मरिजाद लोपि सातों महण, बारै इन्द्र महाबळी ।
तवि येमि दहु साहां तणी, चमू येहि विधि ऊ चली ।।३३।।

जिपै – जीतें । चगथां – मुगलों की । गिरमेर – सुमेरु पर्वत । अवघट्ट – दुर्गम । बट्ट – राह । परबाज – बाज पक्षी के पंखों के समान । रावल संमरसेनि – रावल समरसिंह के समान । भणिये – कहने पर ।

३२. कळमळिया – विचलित हुआ । कूरम्म – कच्छप । सळसळिया – व्याकुल हो गया । सेस रा – शेषनाग का । रळमळिया – रागानुरंजित हुए । रंभ – रम्भा, अप्सरा ।

३३. मसलति – सलाह । धाहं – हाहाकार । मरिजाद – मर्यादा । लोपि – छोड़ कर । महण – समुद्र ।

चमू साहि चल्लाय, येमि मसलत्ति उपाये ।
राण पांण राखिया, कत्थ हिंदवाण कहाये ।।
आजि ऊह ऊरड़ै, सुजड़ गहि समा विसंमा ।
साहिजादा साहि रा, दिली बैठमा दुगंमा ।।
लखि येह खास कलमो लखो, पेखि खत्रवट पांण नै ।
जवहार बाज करि जरजरी, दीधौ पेस दिवांण नै ।।३४।।

वचनिका

'औरंगसाह' 'मुरादसाह' ये लिक्षा किया ।
दिली का तखत पातिसाहों कौ राणों का दिया ।।
साह दिली वैठे तिसें राणा बिठलावै ।
सोही दिली का पातिसाह कहावै ।।
जिस रवेस आगै राणा 'करण' 'साहिजिहा' कौ पातिसाही लै दीनी
सो साहिनामौं में दाखलि कीनी ।
अब दिवान की टुकेक यमदादि पावें ।।
तो दिली कों फौजे सौं लड़ने कौ आवें ।
यस बात का अदेसा कीजो ।।
उदियापुर 'औरंगसाह' 'मुरादसाह' की मदति कीजो ।।३५।।

छंद झमाळि

हय गय रथ पैदल हले, सहस फटै फण सेस ।
उड़ि गिरद मंडल अड़ो, भाण थयौ सम भेस ।।
भाण थयौ सम भेस, असा दळ ऊलटै ।
प्रळैकार रा पूर, पुहमी पालटै ।।
लगथा जूथ बिरूथ, लडंगा चल्लये ।
कसमस पीठि कमठ, हेमगिर हल्लये ।।३६।।

---

३४. ऊपाये – उपाय निकाला । ऊह – वह । ऊरड़ै – शीघ्रता से आये । सुजड़ – तलवार । समाविसंमा – विषम परिस्थति में । दुगंमा – कठिन । खास कलमो – खासा रुक्का । दिवांण नै – उदयपुर के महाराणा राजसिंह को ।

३५. रवेस – रीति से । टुकेक – थोड़ी भी । यमदाद्रि – मदद । अंदेसा – अन्देशः, विचार ।

३६. हले – चले । गरद – गर्द । भाण – सूर्य । पुहमी – पृथ्वी । जूथ बिरूथ – समूह के समूह । लड़ंगा – पंक्तियाँ । हेमगिर – हिमालय, सुमेरु पहाड़ ।

हेमगिरी सा हल्लये, ग्रनड़ बळी कहि ग्रोर ।
दह द्रिगपाल दहकिया, ठंभै न दिग्गज ठोर ।।
ठंभै न दिग्गज ठौड़, तटाका तूटिया ।
पट्टण हट्ट पह, छंछाळा छूटिया ।।
गज......... हरवल्ल, लगै पै लंगरां ।
पुळतां जाणि पहाड़, समंद संगरां ।।३७।।

ग्रैराखी ग्ररबियां, तवी ताता तोखारां ।
कई तुरकी ताजी कच्छि, सेराजी सिरदारां ।।
सेराजी सिरदार, परट्ठै पाखरां ।
बळि सिरया सिर वंद्धि, लहै सोइ लाखरां ।।
घूघर चंमर घोर, मजीठां मंडिये ।
तबल बंध तोखार, तिके बैतंडये ।।३८।।

पायक बरकंदार पुणि, बांणदार बेपार ।
कमणैता मांझी किता, हेक लख्ख ग्रसवार ।।
हेक लख्ख ग्रसवार, बगतर बांधियां ।
जिरहा जूसण जेमि, सिलांरा सांधियां ।।
मुणि चिलखंतो मंडि, हजारां मेखिये ।
घण घूघी सिर घंति, दुगम्मो देखिये ।।३९।।

रांगां दसतां मोरचे, नख सिक ढकि निराट ।
काळाकीट स कांमरा, घड़्या येरसै घाट ।।

---

३७. ग्रनड़ – पहाड़ । द्रिगपाल – दिक्पाल । दहकिया – दहल गए । तटाका – तड़क कर । छंछाळा – हाथी । लंगरां – कतारें । पुळतां – चलते हुए । समंद संगरां – समुद्र (सैन्य) को साथ लिए हुए ।

३८. ताता – चंचल, तेज चाल वाले । तोखारां – घोड़े । परट्ठै पाखरां – जिरहबख्तरों से सजे हुए । सिरया – श्री, जालीदार ग्राभूषण । घोर – ध्वनि । मंजीठां मंडिये – मजिष्ठ से चर्चित । तबल बंध – पायगाहों में बंधे रहने वाले । बैतंडये – बलवान् ।

३९. पायक – पैदल । बरकंदार – बरकंदाज, वन्दूकधारी सैनिक । बांणदार – तीरन्दाज । कमणैता – कमानधारी । जिरहा जूसण – जिरहबख्तर । सिलांरा – सिलह । सांधियां – बांधे हुए । चिलखंतो – चिल्कत कवच विशेष । मंडि – मंडित । घंति – पहनाई हुई । दुगम्मा – भयानक ।

४०. रांगां – जंघाग्रों के कवच । दसतां – दस्ताने । निराट – पूर्णतया । काळाकीट – काले नाग के बच्चे के समान । येरसै – ऐसे ।

घडचा येरसै घाट रवद्दां रूपयं ।
रातंबर मुख रंग जंम बड़ी जू पयं ।।
चाचर थूर स्कंध तुच्छि चसम्मयं ।
भाभड़ भूत भराड़ि अगमांगम्मयं ।।४०।।

बहौ काळा कज्जळवणै निरखंता नैण ।
बाहूदंड प्रचंडउ जे बोल अबूझै बैण ।।
बोल अबूझै बैण अरब्बी ऊचरै ।
पस्तो जंपि पठाण कई तुरकी करै ।।
कोलाहळ बहौ कथ्थि तेणि बिधि तक्किये ।
बहौ पंथां बहौ बोल सुणै तर पक्खिये ।।४१।।

सौ सौ तीर तरकसा करड़ी कट्ठ कबांण ।
दोड़ै यक दोय दोय दुमौ जेहा सेर जवांण ।।
जेहा सेर जवांण चगत्ता चावरा ।
पुणियै संद पठाण दुबाहा दावरा ।।
खोखर भख्खर नख्खि खरै खुरसांणियां ।
कक्कड़ लक्कड़ कथ्थि पुणै पीरांणियां ।।४२।।

कट्ठ भट्टी करगची कायमखांनी केह ।
गूंग अतगी बलितंगा साहि कदम्मा सेह ।।
साहि कदम्मा सेह मिराणी मांमरा ।
कंबोणी उजबक्क निहाणी नांमरा ।।

घाट – शरीर । रवद्दां – मुसलमान योद्धा । जंम बड़ी जू – जंबुक के मुख की आकृति जैसे । चाचर – मस्तक । थूर – स्थूल । तुच्छ चसम्मयं – छोटी आँखों वाले । भाभड़ भूत – विकराल भूत । भराड़ि – भरे हुए । अगमा गम्मयं –अगम्य स्थान पर भी जाने वाले ।

४१. बहौ – अत्यधिक । कज्जळ – काजल । अबूझै – समझ में न आने वाले । बैण – वचन । अरब्बी – अरबी भाषा । ऊचरै – बोलते हैं । पस्तो – पश्तो भाषा । तुरकी – तुर्किस्तान की भाषा । बहौ पंथां – विभिन्न प्रकार के पंथों वाले । तर – तरफ । पक्खिये – पक्षों के ।

४२. करड़ी कट्ठ – अत्यधिक कठोर । दोय दुमौ – दो कमानों को एक साथ मोड़ने वाले । दुबाहा – दोनों हाथों से प्रहार करने वाले । नख्खि – शाखा के ।

४३. केह – कितने ही । साहि कदम्मा सेह – बादशाह की सेवा में रहने वाले । मांमरा – सेवक ।

गुररानी तुकमान गिणै फिरंगियां ।
चचवांणी चहुंवाण चसती चंगियां ।।४३।।
बंग तिलंगी हबसियां मखमलि मखियांण ।
मुलतानी कसमेर का बैतंडी बाखांण ।।
बैतंडी बाखांण कुलची कनंड़ा ।
उलचो जुलची अक्खि अैराकी अनंड़ा ।।
जकबा चकबा जूथ भयाणां मारका ।
बूखारी अणबीह खंधारी खारका ।।४४।।
लहूवांणी ऊबिलंग ऊमर खूमर अपार ।
गूझांनी पैनी मुगल सिरजानी सिरदार ।।
सिरजांनी सिरदार बलेचो बलखियां ।
गख्खड़ बंबी गथ्थि रुहेला रक्खियां ।।
मसहद्दी मसहद्दी बदकरी बावळा ।
खूरेसी खीरेभ इसपई आवळा ।।४५।।
समरकंदि गोरी सही बांणै कज्जळ बास ।
हजारौं हुसन्निया कहि मसदलि कलांस ।।
कहि मसदलि कलांस मकी बहौ रूमिया ।
ऊरकजई अमौड़ बिहुरवे हूमियां ।।
जोया मिरजा जंपि बळि वे बंचियां ।
तेहा सेर तीन स हूनी संचियां ।।४६।।
बगदादी पंजाबियां दखिणी टकड्या दक्खि ।
कीधा येता वरनि कवि और हजारे दक्खि ।।४७।।

चसती – चिश्ती खानदान वाले । चंगियां – जोरावर ।

४४. बंग – बंगाल के । मखियांण – मकवाना गोत्र के । बैतंडी – बलवान । कनंड़ा – क़नयान नगर के निवासी । अैराकी – ईराक के । अनंड़ा – अनम्र ।

४५. बलेचो – बलुचिस्तान के । बलखियां – बल्ख देश के । बावळा – वीर । खूरेसी – कुरेशी । आवळा – बांकुरे, टेढ़े कार्य करने वाले ।

४६. मकी – मक्का के निवासी । बहौ – बहुत से । अमौड़ – पीछे न मुड़ने वाले । जोया – जोहिया वंश के । जंपि – कहे । तेहा – प्रचण्ड, ऐसे । हूनी – कुशल ।

४७. दखिणी – दक्षिण के । येता – इतने । और – और भी । दक्खि – इसके स्थान पर अक्खि पाठ होना चाहिए ।

छंद दोहा

येहा दळ आलोमलां, आय लगा आसेर।
मांन न छंडै 'मांनड़ो', उजवाळै अजमेर ।।४८।।

छंद छप्पय

'औरंगसाहि' अबीह, कोप करि येमि कहाये।
गढ़ छंडौ भड़ गौड़, मिळो बोहळा मौ आये ।।
बहौ देसां मनसूभ, बिन मिळया गढ़चढ़िमारां।
आज न ल्या आसेर, धरा दिली किम धारां ।।
असुरेस बिसेठी उल्लहे, हठी साहि 'अकबर' हरो।
'गिरमेर' तणौ गाढ़ौ गुरु, मान नही........हमरो ।।४६।।

मुणै येमि भड़ 'मांन', सुणौ 'अवरंग' सुलिताणं।
'साहिजिहां' पतिसाह, जांणि राखै जमिराणं ।।
दूठ जेणि मौ दियौ, दुरंग जिण रीतिस देस्यां।
दूजां सो गहि दुजड़, येमि खळखट्ट रचेस्यां ।।
जिण बात फेरि जाणौ रखे, जुद्ध बळाबळ जूटसी।
तूटिसी सीस असुरां तणा, तवि आसेर न तूटसी ।।५०।।

छंद चौपाई

गौड़ अरौड़ देखि गढ़ गाढ़ौ।
ठंभे असुर मेळियौ ठाढ़ौ।

---

४८. **आलोमलां** – चारों ओर। **आसेर** – आसेर नाम का दुर्ग। **मानड़ो** – मानसिंह गौड़। **उजवाळै** – उज्वल करे।

४६. **अबीह** – निर्भीकता से। **येमि** – इस प्रकार। **बोहळा** – बहुत से। **मनसूभ** – मनसबदारी। **मिळ्या** – मिले। **गढ़ चढ़ि मारां** – उनके गढ़ों को घेर कर मार दिये, अधिकार में ले लिए। **ल्या** – लें। **किम धारा** – किस प्रकार अधिकार में लें। **बिसेठी** – मध्यस्थ, बीच-बचाव करने वाला। **गिरमेर तणो** – गोपालदास का वंशज। **गाढ़ौ गुरु** – दृढ़ वीर, श्रेष्ठ वीर।

५०. **जांणि** – जान कर। **दूठ** – वीर। **जेणि** – जिसने। **देस्यां** – देंगे। **दूजां** – अन्यथा। **दुजड़** – तलवार। **खळ खट्ट रचेस्या** – युद्ध लड़ेंगे। **रखे** – निश्चय। **बळाबळ** – भयानक। **तवि** – तब भी।

५१. **ठंभे** – ठहर गए, छोड़ दिये। **मेळियौ ठाढ़ौ** – यों खड़ा छोड़ कर।

दावा पहली दिल्ली देस्यां ।
लड़ि पाछै ग्रासेर स लेस्यां ।।५१।।

छंद दोहा

उलट्टि दळ ग्रासेर हूं, सपता मांड़ी सार ।
गढ़ ऊपरि राजा गवड़, जूंझारां जूंझार ।।५२।।

छंद छप्पय

'ग्रवरंग' साहि 'मुराद', येखि मांडौ गढ़ येहौ ।
करि बीजौ कयळास, जकौ हेमाचळ जेहौ ।।
रुद्र रूप 'सिवराम', रुद्र जेहौ रीसांणौ ।
नेत्र-डाळ किरमाळ, प्रळै कारण पहिचांणौ ।।
ग्रसुरेस क्रोध करि ऊचरै, मौ सों हठ न मंडिये ।
लुळि ग्राय वेगि पावां लगौ, छंछाळा गढ़ छंडिये ।।५३।।

छंद रसावळा

ग्रसपत्ति उच्चरै, मत्ति हिंदू मरै ।
काय जौहर करैं, सौ कहूं संभरै ।।
मिळौ मौ मभ्भरै, करै सौह तैं सिरै ।
तिम करूं तुभ्भिरै, भिलौ ति भूभरै ।।
साहि जंपै यरै, धजवंध गौड़ मांडौ धरै ।
बिसटाळी······ कहब करै ।।

---

५२. उलट्टि – लौट कर, उमड़ कर । सपता (सं. सपत् = सपदि) – शीघ्रता से । गवड़ – गौड़ ।

५३. येखि – देखा, जान कर । येहौ – ऐसा । करि – मानों । बीजौ – दूसरा । जकौ – जो, ज्यों । जेहौ – जैसा । सिवराम – शिवराम गौड़ । रीसाणौ – कुपित हुग्रा । नेत्र-डाळ किरमाळ – शिव के नेत्र के समान तलवार की धार । लुळि – नम्र बन कर । पावां लगौ – सेवा स्वीकार करो, ग्रधीन बनो । छंछाळा – हाथी, दीर्घकाय योद्धा ।

५४. काय – क्यों । संभरै – सुन । मौ मझ्झरै – मेरे शामिल । सौह – सब । सिरै – सिरह, ऊपर । तिम – उसी प्रकार । भिलौ – मरने को तैयार । यरै – ग्ररे । धजबंध – ध्वजधारी । बिसटाळी – मध्यस्थ, दूत । कहब – कहना ।

पाण झल्लै पथं, कहै राजा कथं।
मंडि मांडौ मथं, साहि सेना सथं।।
आय लागा अथं, हथ्थ तेगं हथं।
रच्चसी भारथं, रंभ खड़िया रथं।।
बीर लौथि बथं, तेणि आजै तथं।।५४।।

छंद दोहा

जो राजा 'सिवपति' जिसा, मंडिया मांडौ मंड।
धर दखिण गुजरात धर, भड़ आगळि भुवडंड।।५५।।

छंद छप्पय

महाराजा 'सिवपति', मंड मांडौ गढ़ मंडं।
बाबाड़ै अणबीह, खाग धूणै नवखंडं।।
थट्ट जेमि 'गोपाळ', अनै 'बळिराम' सुथट्टं।
सूर धीर सामंत, विरद लग्गै कुळवट्टं।।
अजमेरि नाथ पाराथ जिम, महाभारथ सम मंडसी।
छंडसी मांण वीजा सपोह, छळ गढ़ गोड़ न छंडसी।।५६।।

छंद दोहा

विसटाळी सुरताण हूं, आय कही आरोड़।
सो देखौ राजा 'सिवौ', गाढै मतै स गोड़।।५७।।

---

५५. पाण – तलवार। झल्लै – पकड़े हुए। पथं – मार्ग में। मथं – पर, सिर पर। सथं – साथ में। अथं – यहाँ। तेग – तलवार। हथं – हाथ में। भारथं – युद्ध। रंभ – अप्सराएँ। खड़िया – चलाए। लौथि-बथं – गुत्थमगुत्थ। तथं – वहाँ, उसी प्रकार।

५६. जिसा – जैसा। आगळि – अर्गला। भुवडंड – भुजदण्ड।

५७. मंड – युद्ध। मंडं – लड़ने को उद्यत हुआ। बाबाड़ै – ललकारे। खाग धूणै – तलवार तोले हुए। थट्ट – समूह, दल। जेमि – जैसा। सुथट्टं – श्रेष्ठ समूह, प्रबल दल। कुळवट्टं – कुल की परम्परा, कुल मार्ग। पाराथ अर्जुन। बीजा – दूसरे। सपोह – राजा, योद्धा। छळ – युद्ध से।

५८. विसटाळी – बीच-बचाव करने वाला, दूत। आय – आकर के। सिवौ – शिवराम गोड़। गाढ़ै मतै – दृढ़ निश्चयी। स – वह।

तातो ठंढी सब कही, लगी न चित्त लगार ।
सो दीठो 'बळिराम' सुत, सारधार सिरदार ।।५८।।

छंद बेअखरी

साह कहै 'अवरंग' सपाणौ ।
काळजवन जेहौ कोपाणौ ।।
कितौ गौड़ मांडौ गढ़ केतौ ।
अम्हां हूंत कहियो बळ येतौ ।।
आजि दुरंग द्रहबट्ट उड़ाड़ौं ।
प्रात सूध जड़ हूंता पाड़ौं ।।
करै कोप साहि हला कीधा ।
दावा भड़ां सूं अग्या दीधा ।।
सुलिताणं 'महमूद' सिंघाळौ ।
लाख फौज लीधां लंकाळौ ।।
'खांन निजाबति' हरवल खड़िया ।
येण रूप आय मांडौ अड़िया ।।
गढ़े राजा 'सिवपतो' गाढ़ौ ।
ठौर दिया त्रामांगळा ठाढ़ौ ।।
दरवाजां मंडिया आय दावा ।
चावा नृपति भड़ां अनचावा ।।
'पोहकरदास' जिसा बंध पासै ।
तिण री धाक खळां उर त्रासै ।।

---

५९. ताती ठंढ़ी – गर्म-नर्म । लगार – तनिक प्रभाव नहीं हुआ ।

६०. काळजवन – कालयवन ! कोपाणौ – कुपित हुआ । कितौ – कितना सा । केतौ – कितना । अम्हां हूंत – हम से । बळ – शक्ति । द्रहबट्ट – ध्वस्त कर । उड़ाड़ौं – समाप्त कर दूं, उड़ा दूं । प्रात सूध – प्रातःकाल होते ही । पाड़ौं – गिरा दूं, उखाड़ डालूं । हला – आक्रमण । दावा – दावा रखने वाले, गढ़ पर अधिकार करने की उत्कण्ठा वाले । अग्या – आज्ञा । दीधा – दिया, दी । सिंघाळौ – श्रेष्ठ । लीधां – लेकर, लिए हुए । लंकाळौ – सिंह । हरवल – हरावल, सेना की अग्रिम पंक्ति । खड़िया – चला कर । येण रूप – इस रूप में, इस तरह । मांडौ – माण्डूगढ़, माण्डव का किला । अड़िया – जुड़े , आकर लग गये । गाढ़ौ – दृढ़ वीर । ठौर – चोट, प्रहार । त्रामांगळ – ताम्बे के पेंदे वाले नक्कारे । बंध – बांधव, भाई । पासै – पास में, पार्श्व में । तिणरी – उसकी । खळां – शत्रुओं के ।

मार करै हथनाळि कमाणां ।
वळे बन्दूक बाण बरसाणां ।।
दळां असुर आय लग्गा दौळां ।
गौड़ तणां छूटै यम गौळा ।।
तचियौ साह दुरंग न तूटै ।
जिकौ गौड़ आरोड़ स जूटै ।।
कहै साह हव कूच स कीजै ।
लै दिल्ली सिर मांडौ लीजै ।।
'सिवपति' बात रही जग सारै ।
चंद सूर भी नाम उचारै ।।
खड़िया साह बिन्है खड़ि खाथा ।
सकल सेन पड़िया खड़ि साथा ।।
जग सूर अहि नर कौतिग जोसी ।
हव भारत ऊजेणि स होसी ।।५९।।

अथ अवन्तिकापुरी महातम

छंद छप्पय

विस्वेसर महाकाळ, तट्टि गंगा सिफरह तट ।
मनिकनिका मोचन्न, पिसाच घट ऊभय घट ।।
उमासिद्ध हरिसिद्ध, अऊंक्षिर अहंक्षर कही !
प्रातकाल मध्यान, ध्यान सुर धरत संझ्या तंही ।।
कासी ऊजेणि मुकत पुर, काळस नर बिरळो करय ।
द्वादस कोस मधि पसु पक्षी, मरै सोही फिर नामरय ।।६०।।

मार करै – प्रहार करे । हथनाळी – छोटी तोपों । कमाणां कमानों । वळे – फिर । दौळा – चारों तरफ । तचियौ – प्रयत्न कर के थक गया, तप गया । दुरंग न तूटै – किला नहीं टूटता, किले पर अधिकार नहीं हुआ । जूटै – जुड़ा । हव – अब । कूच – प्रयाण । लै दिल्ली – दिल्ली को हस्तगत कर, दिल्ली लेकर । सारै – समस्त, समूचे । चंद सूर – चंद्र-सूर्य तक । खाथा – तीव्र गति से, तेज चाल से । अहि – नाग लोक । कौतिग – कौतूहल । जोसी – देख सी । भारत – युद्ध । होसी – होगा । अवन्तिकापुरी – उज्जैन ।

६१. तटि – किनारे । सिफरह – क्षिप्रा नदी । मनिकनिका – मणिकर्णिका । संझ्या – संध्या । तंही – वहां पर, त्रिकाल । मुकत – मुक्ति । काळ – मृत्यु । बिरळो – बिरल, कोई सा । ना मरय – नहीं मरते, मोक्ष को प्राप्त कर लेने से उनका जीवन-मरण छूट जाता है ।

छंद लघु निराज

कमंध ये सुणी कथं ।
सुमेळ सुभटं सथं ।।
करै बिचार काम रै ।
नरिंद इंद नाम रै ।।
'औरंग' ही आवियौ ।
धैंधींग मत्त धावियौ ।।
'मुरादसाह' मंझ ले ।
सिरै ऊजेणि सालुळै ।।
अपार सेनि आविया ।
सपार निद्ध पाविया ।।
उजेणि हूंत ऊ चले ।
कमंध सूर सकळे ।।
खुमाण बंस खीचियं ।
नवै न अंखि नीचयं ।।
गणै स गौड़ गाढ़ रा ।
व्रजागि खाग बाढ रा ।।
चहुांण पांण चाव रा ।
दखै पमार दाव रा ।।
हाला झाला हूळसै ।
केवांण देवड़ा कसै ।।
कुरंम भींच भाटियं ।
खगे स व्रद खाटियं ।।

---

६२. धैधींग – हाथी, प्रचण्ड वीर । मत्त – मस्त, उन्मत्त । धावियौ – चल कर आया । मंझ – में, मध्य । सिरै – पर, सिर पर । सालुळै – उमड़ कर आए । आविया – आया, आई । निद्ध – नदी, शिप्रा, क्षिप्रा । सकळे – समस्त । नवै न – नमते नहीं । अंखि – आंख । व्रजागि – वज्राग्नि । बाढ़ रा – प्रहार करने वाले, तीक्ष्ण धार को । चावरा – चाह वाले, चालुक्य वंशी । दाव रा – दांव देने वाले । हूळसै – उल्लसित होते हैं । केवांण – तलवार । कसै – बांधे । कुरंम – कछवाहे । भींच – योद्धा । व्रद – विरुद । खाटियं – प्राप्त करने वाले, उपार्जित कर्ता ।

चाहिलं मौहिलं चवै ।
खंभे अकास ते खवै ।।

जाड़ेच जेठवा जिता ।
पुंडीर धीर पं पिता ।।

सौळंख सूमरं सजै ।
गहीर तूंवरं गजै ।।

पुणं स पढ़ियार यं ।
सीसोध जोध सारयं ।।

सांखूळ हूल सैंगरं ।
भदौड़ ठौड़ ते भरं ।।

कठोड़ जौड़ धाकड़ं ।
लखे स लोह लाकड़ं ।।

गोहील पव्त्रिया गणैं ।
रूपै स अंगदं रणैं ।।

ऊमटं थटं वौवचं ।
पुणै नूबाण पौवचं ।।

बडं स गूजरं वरं ।
सुभट्ट व्रद्धि सूधरं ।।

रावत्त चंदरावतं ।
अपार ते सेखावतं ।।

खैराड़ डौडिया खड़े ।
अकास सीस तें अड़े ।।

चवै – कहे । खवै – कंधे । जिता – जितने । पुंडीरधीर – धीर पुंडीर के वंशज । सूमरं – सूमरे, जाति विशेष । गहीर – धाव, गम्भीर । गजै – गर्जना करे । पढ़ियार – पड़िहार । सांखूळ – सांखले । हूल – जाति विशेष । सैगरं – सैंगर-वंशीय । भदौड़ – भदौरिये । ठौड़ – स्थान । भरं – भरा पूरा । गोहील – गोहिल, गुहिल । अंगदं – अंगद के सदृश्य । थटं – समूह । वौवचं – जाति विशेष । नूबाण – निर्वाण वंश के । बडं स गूजरं – बड़गूजर, क्षत्रियों की जाति विशेष । व्रद्धि – विरुद । चंदरावतं – चन्द्रावत रामपुरा के शासक । खैराड़ – खैराड़े । डौडिया – डोडिया राजपूत ।

कटोछ मोछ टाकयं ।
धरा असीस धाकयं ।।

बढ़ेल बाघैला बळी ।
रहै स झूझ री रळी ।।

देवत्त तन्न दांहिवां ।
गयंद फौज गाहिवां ।।

सम्हलवास मंझ रै ।
सुणैल जादवा सिरै ।।

चवै चंदेल चूगड़ा ।
दळां खळां स द्रगड़ा ।।

सौढ़ा दौडा सोनंगरा ।
खड़ग हथ्थ ते खरा ।।

दह्या स जौहिया दखे ।
प्रमांण चाढणां पखे ।।

बाळेस गोहिलं बहं ।
मुड़ै न खग्ग ते मुहं ।।

हाडा आडा पैंडै हठी ।
करै स्कंध कंठठी ।।

तवै स भीच तावरा ।
चवै अंगद चावरा ।।

बणै छतीस बंसयं ।
अबीह ते असंसयं ।।

टाकयं – टाक क्षत्रिय । थाकयं – जिनका रौब है । बढ़ेल – बाढ़ेला, राठौड़ों की एक शाखा । रळी – खेल, आनन्द । दांहिवां – दाहिमा । गाहिवां – नष्ट करने वाले । सम्हलवास – (?) । सुणैल – क्षत्रियों की एक जाति । द्रगड़ा – दुर्ग, किला । दह्या – दहिया । पखे – पक्षों के, कुल के । बाळेस – बालेचा । बहं – वंश विशेष । मुहं – सामने से । हाडा – कोटा-बूंदी के शासक, चौहानों की एक शाखा । आडा – टेढे, मार्ग रोक कर । पैंडै – मार्ग । कंठठी – प्रस्थान, कठठ की ध्वनि । तावरा – तेज वाले, दूसरों के आतंक न सहने वाले । चवै – कहे । चावरा – चावड़ा, चाह वाले । अबीह – निडर । ते – वे । असंसयं – असंशय, निश्चयी ।

चढ़ै इती चमू चली ।
हैकंपि प्रथमी हली ।।
पंछीन मग्ग पाबिया ।
खाचरोद आविया ।।६१।।

छंद गाथा

उलटि दळ अणभंगो, आय खाचरोद पड़ै येखै ।
जुड़सी सुरंदन् जंगो, खड़सी रथ नथ जाम मुर मानौ ।।६२।।

छंद छप्पय

इतैं गल महि उल्लही, उभै साहां दळ आया ।
सांभळिये 'जसवंत', बीर नीसांण बज़ाया ।।
कियौ कटक सह कूच, गिणै सर ऊसर गाहं ।
दूठ अकूठ दुबाह, अनै सूरां ऊमाहं ।।
खाचरौद आय दळ खंमिया, पेखै भड़ां पटंतरौ ।
दळ 'औरंग' 'साहिजिहांन', उभै कोस दस अंतरौ ।।६३।।

अथ जुध आगम
छंद भुजंगीप्रियात

पळं बीर बैताल भाराथ पूक्षे ।
भये ते जगै आजि होय भूक्षे ।।
पिसाचं स प्रेतं स भूतं भयानं ।
गिनं गीध ते गीध गूदं गियानं ।।

इती – इतनी । मग्ग – राह । पाबिया – पाया, मिला । खाचरोद – मालवे का एक नगर ।

६२. अणभंगो – एक समान क्रम से, अटूट क्रम । आय – आ कर । सुरंदन् – रविवार के दिन । जंगो – युद्ध । नथ – नहीं । जाममुर – तीन प्रहर ।

६३. गल – अफवाह, चर्चा । सांभळिये – सुनकर । कटक – सेना । कूच – प्रस्थान । सर – उपजाऊ भूमि । ऊसर – बंजड़ भूमि । गाहं – ध्वंश करते हुए । दूठ – वीर । अकूठ – अपार, अपरिमित । खंमिया – रुके, ठहरे । पटंतरौ – दूरी, फासला । अंतरौ – अन्तर, दूरी ।

६४. पळं – मांस । पूक्षे – पोषण के लिए, तृप्ति के लिए । भूक्षे – भूखे । भयानं – भयानक । गिनं – निगलते । गीध – गृद्ध । गूदं – मांस, मज्जा । गियानं – ज्ञान, ध्यान ।

चवसट्ठि ते जुग्गनां तत्थ जानी ।
अनै डाकिनी साकिनी सेनि आनी ।।
गुमायं गुमायं तत्ती संगि डोलैं ।
बहौ फ्योकरी फैंन तैं मद्धि बोलैं ।।
हरं रुण्डमाळं बरं सूर रंभं ।
मनो बावनं बीर आये अचंभं ।।
नृतं नारदं प्रोय तै ब्रह्मपूतं ।
तहां तंड नंदीगन महामत्तं ।।
डमं डंम तै बाजि डोरू डहक्कं ।
करै काळ भैरों तहां यौ किलक्कं ।।
खिळं खेचरं भूचरं मद्धि खेळा ।
भये जुद्ध आगमं येते सु भेळा ।।६४।।

छंद दोहा

निमधै चौरनरायणौ, 'जसवंत' डेरा जाय ।
ऊगन्तै दिन दीखसी, लगसी सीसो लाय ।।६५।।

छंद छप्पय

अष्टम तिथि गुरवार, पुणै बयसाख कृष्ण पक्षि ।
रविये स्रवण नक्षित्र, रचै सोइ जोग सुकल रक्षि ।।
बालवकरण बखांणि, संवत नौ सत बळि ऐकं ।
पंद्रै तणौ प्रमांणि, बिढ़ण आराणि विसेकं ।।
कांमरा भड़ां आरंभ कियौ, बहसि सूर अबरी बरौ ।
चाव गुर मद्धि धारां चढ़ौ, लीजै सुख सुरलोक रौ ।।६६।।

कर । जुग्गनां – योगिनियाँ । तत्थ – वहाँ । अनै – और, अन्य । सेनि – सेना में । आनी – आई । गुमायं – गोमायु । डोलै – घूमें, फिरे । बहौ – बहुतेरी । फ्योकरी – लोमड़ी विशेष, फैं फैं की ध्वनि । हरं – शिव । बावन बीर – बावन भैरव । ब्रह्मपूतं – ब्रह्मा के पुत्र । तंड – गंभीर घोष । नंदीगन – नंदिगण । महामत्तं – अत्यधिक मस्ती में । डोरू – डैरव, शिव का वाद्य, डमरू । डहक्कं – बजना, ध्वनि होना । काळ भैरों – काला भैरव, यमराज । किलक्कं – किलकारी । खिळं – खेल । खेळा – युद्ध । भेळा – शामिल ।

६५. निमधै – विचार किया । जसवंत – जसवंतसिंह । डेरा – पड़ाव, खेमे । दीखसी – दीखेगा । लगसी – लगेगी । सीसो – सीसा । लाय – अग्नि ।

छंद नीसांणी

दळ वेळा पैलां दळां, मोरचा मंडाणां ।
बळा वळी बन्दूकची, बळ भरिया बाणां ।।
गजनाळया पंगति गिणै, निधसे नीसांणां ।
गोळा मण नव नव भिळै, बड़ तोप बखाणां ।।
निमधे यक यक नाळि नख, गोळा गंजाणां ।
सौ सौ भरिया सीधड़ा, दारू दरसाणां ।।
सूत पलीता जामगी अणपार स आणां ।
मंडिये केइक मोरचे, बुरज्यौ बिचाणां ।।
तरकस बंध अपार तवि, कर झल्लि कमाणां ।
केइक ऊभा असवार, होय चढ़िया केकाणां ।।
केइक बगत्तर पहरिया, सिर टोप सुभाणां ।
केइक चिलकत पहरियां, मेखे सहनाणां ।।
केइक समाहा पहरियां, जिरहा जूसाणां ।
केइक रोछड़ पख, मूंचलो टोप सुभाणां ।।
मंडिया सूरां मोरचा, आये अप्रमाणां ।।६७।।

छंद छप्पय

दळ दहुंवन घन घोर, सौर नीसांन स वज्जहि ।
दळ दहुंवन सूरन, सनाह पक्खर गज सज्जहि ।।
दळ दहुंवन मोरचा, बिचे पायक्क करारे ।
दळ दहुंवन रही चढ़ी, अनो भवित्तबि सम्हारे ।।
दळ दहुंवन आजि दुंदन भयौ, कवि 'महेस' कविता कही ।
यह भाय तदिन दिन आंथियो, दळ दहुंवै आसर रही ।।६८।।

---

६७. **वेळा** – इधर वाले । **पैलां** – उधर वाले, पहिले । **बळ** – ताकत से । **निधसे** – बजे । **गिळै** – गटके, खाये । **निमधै** – विचार कर । **नाळि** – नालें, तोपें । **नख** – समीप । **गंजाणां** – गर्जने वाले, गजों से, लोहे की छड़ों से । **सीधड़ा** – बारूद रखने के चमड़े के थैले । **दारू** – बारुद । **पलीता** – तोपों के आग लगाने की सूत की बत्ती । **जामगी** – तोप या बन्दूक का पलीता । **अणपार** – अपरिमित । **आणा** – आना, लाए गए । **बुरज्यौ** – बुर्जें । **बिचाणां** – मध्य में । **कर** – हाथ । **झल्लि** – लिए हुए । **केकाणां** – घोड़ों पर । **सुभाणां** – सुहावने, शोभित । **चिलकत** – कवच । **मेखे** – कांटा, हुक । **समाहा** – कवच । **जिरहा जूसाणां** – जिरहबख्तर । **रीछड़** – रींछ जैसे । **पख** – पक्ष । **मूचली** – मूंछों वाले ।

६८. **पायक्क** – पैदल सैनिक, पदाति । **करारे** – प्रबल । **अनी** – फौज । **भवित्तबि** – भविष्य, होनहार । **भाय** – प्रकार । **तदिन** – उस दिन । **आथियौ** – अस्त हुआ । **आसर** – आशा, इच्छा ।

बासुर भयौ बितीति, अस्त थियो अरक उजासं ।
तिण खवास कौकियो, पुणै जा 'जसमत' पासं ।।
कह्या जूझ मति करौ, हबे दिल्ली दिस हल्लौ ।
येकण बळ दळ अम्हां, चढ़ा बळ हेकण चल्लौ ।।
पित पूत सपूत मिळतां प्रथी, रहसी केमि स राखिया ।
सिरदार ज्यार भ्रत साहि रै, यों 'जसमत' सों आखिया ।।६६।।

छंद नीसांणी

जोधपुरो यम जंपियौ राजा रोसाणौं ।
पकड़ो 'औरंग' दिखणी कर घंति कबाणौं ।।
वळे 'मुरादसाहि' दस्यौ रसवादि रचाणौं ।
पतिसाहा धरि पूतनों कीमति कहाणौं ।।
हलि हों 'साहिजिहान' नखि झलौ फुरमाणौं ।
लारै पंच हजार लै असवार तुम्हांणौं ।।
तो दिल्ली पतसाह रै परठीयो पयाणौं ।
जूह बड़ा दळ जौड़ियां मसलत्ति न जाणौं ।।
खरी मसलति यम रक्खिहो पति हुकम प्रमाणौं ।
मंडो तो गजगाह मंडि ऊगीये बिहांणौं ।।७०।।

छंद छप्पय

रटियौ जे 'जसराज', सुणै बाहुड़चौ बसीठी ।
'अवरंग' हूं की अरज, तवि सोइ कमध नतीठी ।।
साहि घणो रोसियौ, काळ जेहो कुदरत्ति ।
यते राति अधरात, नाद घूरिया नौबत्ति ।।

---

६६. बासुर – दिवस । भयौ – हुआ । थियौ – हुआ । उजासं – प्रकाश । खवास – निजी सेवक । कौकियो – भेजा । पुणै – कहो । जूझ – युद्ध । हबे - अभी, इस समय । हल्लौ – चलो । अम्हां – अपना । रहसी – रहेंगे । केमि – किस प्रकार, कैसे । ज्यार – जाकर । भ्रत – सेवक । आखिया – कहा ।

७०. जंपियौ – कहा, बोला । घंति – डाल कर । रसवादि – प्रेमभाव । हलिहों – चलेंगे, जायेंगे । नखि – पास । झलौ – मानो, स्वीकार करो । लारै – पीछे, साथ में । तुम्हाणौं – तुम्हारा अपना । पयाणौं – प्रस्थान । जूह – समूह । मसलत्ति – गुप्त मत्रणा कर । न जाणौं – नहीं जाना । पति – स्वामी ।

७१. रटियौ – कहा । जसराज – जसवंतसिंह । बाहुड़चौ – लौटा । बसीठी – दूत । नतीठी – कठोर बात, चुभते वचन । घूरिया – बजे ।

कमधज्ज फौज ऊपरि कहर, कह्यौ मार बाणां करो।
ऊगंत दीत रवि रै अवसि, राड़ि धाड़ि मसलति धरो ।।७१।।

सतरासै संमत्त, ब्रख पंद्रमौ स जाणैं।
नवमी बदि बैसाख, वार भ्रगवार बखाणैं ।।
सो नक्षित्र धनिष्ठ, जोग ब्रह्म नाम स जग्गे।
तइतल नामह करण, करण आराण उमग्गे ।।
सुरताण बिन्है घमसाण सिर, कड़ाभीड़ चढ़सी कड़ै।
कफराण जके ऊजू करै, सुर नर देव संसं पड़ै ।।७२।।

जाम येक जामनी, रही अस्टमी सुमद्धि।
तिह समय सब जगै, सूर सामंत सुबुद्धि ।।
मुख मंजन आदि दै, विविध देह क्रम कीनौ।
करि संनान ध्रम ध्यांन, दान विप्रन बहौ दीनौ ।।
असवार ततसार निज, नितक्रम जे इहि विधि करै।
मुर फौज आजि हळमळ हुई, यष्ट यष्ट सब उच्चरै ।।७३।।

छंद दोहा

जाम येक रहीं जामनी, मधि अस्टमि उनमान।
जगै सूर सामंत सब, करहि दान संनांन ।।७४।।

बीर सिंगार

छंद पधरी

यत करही सूर संनांन दान।
उत रंभ करही मंजन बिधान ।।

कहर – कोप। दीत – सूर्य। राड़ि-धाड़ि – मार-काट, युद्ध-विग्रह।

७२. सतरासै संमत्तब्रख पंद्रमो – संवत् १७१५ का वर्ष। भ्रगवार – शुक्रवार। धनिष्ठ – धनिष्ठा। जोगब्रह्म – ब्रह्मयोग। तइतल नामह करण – तैतिल नामका करण। आराण – युद्ध। कड़ाभीड़ – कटिबद्ध होकर। कड़ै – निकट, समीप। कफराण – मुसलमान। ऊजू – विशेष प्रकार से वन्दना, नमस्कार। संसं – संशय।

७३. जामनी – रात्रि। कीनौ – किया। दीनौ – दिया। ततसार – तत्वसार। मुर – तीन। हळमळ – हलचल। यष्ट यष्ट – अपने अपने इष्टदेव।

७४. उनमान – अनुमान। जगै – जागे। संनान – स्नान।

७५. यत – इधर। उत – उधर। बिधान – आयोजन।

यत सूर रांग बंधै असंकि ।
उत सूर सजै लंहगानि लंकि ।।
पहरैं सु सूर मोजन सु पांय ।
उत नूपरनि रंभ पहरि बनाय ।।
यत सूर कमरि बंधै कसाय ।
उत रंभ सजै कटि-मेखळाय ।।
यत सूर कवचि पहरै सुहेत ।
उत रंभ कंचुकि तनी देत ।।
यत सूर पाघ बंधै सुवीर ।
उत रंग चीर पहरै सुधीर ।।
यत सूर टोप बंधै अतूल ।
उत रंभ दहै सिर सीसफूल ।।
यत सूर ढाल बंधै अमान ।
उत रंभ तरौंना पहरि कान ।।
यत दस्तान सूर बंधै अभंग ।
उत रंभ करत महदीन रंग ।।
कर सूर खाग मंजै कराळ ।
बहो रंभ नैन अंजै विसाल ।।
पहरै सु सूर तुळछी सु माळ ।
सुभ रंभ हार पहरै सुढ़ाळ ।।
सूर रंभ बरनै समान ।
उन सजै बाज उन सजि विमान ।।७५।।

सूर – हूरें, अप्सराएँ । लंकि – कमर । कसाय – कस कर । कटिमेखळाय – करधनी । कवचि – कवच । सुहेत – प्रीतिपूर्वक । तनी – कसना, कंचुकी की डोरी । अतूल – अतुल्य, बहुत प्रकार के । दहै – देती हैं, लगाती हैं, पहिनती हैं । सीसफूल – सिर का आभूषण । अमान – बहुत । तरौंना – कर्ण-भूषण । दस्तान – दस्तानें, हाथों के कवच । अभंग – निश्चयी । महदीन – मेंहदी, महावर । खाग – तलवार । मंजे – मांज कर पैनी करें, धार सुधारे । कराळ – भयानक । बहो – बहुत । अंजै – काजल डालें, कज्जल लगावें । माळ – माला । सुढ़ाळ – सुन्दर । बाज – घोड़े ।

छंद अलिला

जिण वेळां 'अजमाल' स जग्गै ।
जगि-हथ जैतखंभ रण जग्गै ।।
जूह बिडाळ खळां सिर जग्गै ।
जुड़तां जुद्ध सनांनन जग्गै ।।७६।।

छंद दोहा

मरदन कारण मंगियौ, फौजां बींद फुलेल ।
अजमेरा 'अजमाल' नै, तेल चढ़ै करि तेल ।।७७।।

छंद त्रोटक

करि अदन अंग सु अदन यं ।
बिहु बाहु अजान सु व्रनयं ।।
जंघ पींडिय अदन पांय करै ।
भर भूप सु अंगद रूप धरै ।।
करि अदन अंग सुबारि मंगै ।
हरद्वारि जटाहर तें उमंगै ।।
हर कै चरचा रस व्रदन तैं ।
व्रहमा कै कमंडळ मंडळ तैं ।।
गंग कै जळ कैक निकासु कितै ।
कहि भंजति कौटिक पाप कितै ।।
हिम-आसन आसन भूप कियं ।
करि सनांन संकल्प सु लियं ।।

---

७६. जगिहथ – दिग्विजय की क्रिया का भाव, सूर्य । जैतखंभ – विजय के लिए स्तम्भ-तुल्य । बिड़ाळ – संहार करने ।

७७. बींद – दूल्हा । फुलेल – इत्र । तेल चढ़ै – विवाह के लिए तेल चढ़ा कर दूल्हा बनाते हैं उसी प्रकार सज कर तैयार हुए ।

७८. करि – कर के । बिहु बाहु – दोनों भुजाओं । सुव्रनयं – सुन्दर वर्ण, रंग । पींडिय – पिंडली । पांय – पैरों के । सुबारि – पवित्र जल । जटाहर तैं – शिव की जटा से । व्रदन – देवताओं । मंडळ – घेरा, वृत्त । निकासु – निकलने के स्थान । भंजति – नाश करती । कितै – कितने ही । हिम आसन – स्वर्ण के सिंहा-सन पर ।

कळसा जु गंगा बारि भरै ।
करि छाय सु दान सनांन करै ।।
सहधारि जनेउ अचन्न लियं ।
रिखराज मनौ रिख ब्रह्म भयं ।।
द्विज भारथ वेद उचार करै ।
मनु देव सभा मधि तैं बिच्छुरै ।।
नूप धारि पितंबर बंधि सिखं ।
मनु देवन में दिवराज दिखं ।।
तिलकं करि केसरि द्वादसयं ।
द्विज बौलिय जुद्ध सदा जसयं ।।
अरकं अरघं मुर अंजुळियं ।
पढ़ि वेद सुमंत्रन भेद दियं ।।
हर पूजन कारन कौ हुळसै ।
मन मांझ रहै नित प्रति बसै ।।
येकादस अतक सिंभु कियं ।
जिण काज सुपारि सुगंध लियं ।।
चरचै हर केसरि चंदन तैं ।
अनखंडित अक्षित बंदन तैं ।।
कुसमं कमळं अरकं बिविधं ।
दुरबं मंजरि धारि सिधं ।।
करि धूपं दीपं नइवैद करै ।
गुर मंत्र स जोउ ध्यान धरै ।।
यतनौ करि कै किये आरतियं ।
सबदं धुनि वेद स स्वारथियं ।।

कळसा – कलश, जलपात्र । छाय सु दांन – छायादान, तेल या घृत में मुख देख कर स्वर्ण का दान देने की क्रिया छायादान कहलाती है। अचनं – आचमन। रिखराज – ऋषिराज । रिखब्रह्म – ब्रह्मर्षि । भयं – हुए । भारथ – महाभारत ग्रंथ । पितंबर – पीत वस्त्र । सिखं – शिखा, चोटी । दिवराज – देवराज, सूर्य। जसयं – विजय, यश । अरघं – अर्घ्य । मुर – तीन । हर – शिव । चरचै – चर्चित किया । अक्षित – अक्षत, चावल । बंदन – वन्दना । कुसमं कमळं – कमल पुष्प । अरकं – आक के फूल, मंदार के फूल । दुरबं – दुर्वा । नइवेद – नैवेद्य । स्वारथियं – अपने कल्याण के हेतु ।

करि जाप सुपात्र दान दियं ।
हिमथाळ सु द्विजन बांटि दियं ।।
भणि छंद सु त्रोटिक मांहि सुयं ।
जग-हत्थ 'अज्जमल' तै जसयं ।।७८।।

छंद दोहा

करि नित-क्रम सुध्रम किय, जोध 'अजण' जिण वार ।
यम बगसी सौं अक्खिये, तवै भीछ हो त्यार ।।७९।।

छंद छप्पय

महाराजा 'अजमाळ', येह गलां उचारी ।
चवै सकळ चाकरां, तवै ठाकुरां तयारी ।।
मंजि बड़ा हैमरां, जीण पाखर सुमंडौ ।
जड़ौ भड़ां जूसणां, बिजड़ बे घड़ा विहंडौ ।।
सिरदार ज्यार मंगी सिलह, सिलेदार बुलावियो ।
जिण सिलह जैत भग्गा म जुध, वाहि सिलह लै आवियो ।।८०।।

बिप्र सिलह बरदार, सिलह सामंत स्त्रिगारे ।
निमधै 'श्रोमणि' नाम, पासि ऊभो पौतारे ।।
आज काज येरसी, पाज ध्रम स्याम परक्खो ।
समरि धसौ सामहां, बळे पाछमां न दक्खो ।।
आटौ काटौ धारां अणी, 'अजण' साथि अहंकारिया ।
ब्राह्मण ब्रजागि रिण बंकड़ौ, ब्रह्म तेज बाधारिया ।।८१।।
आखै येमि नकीब, सिलह बंधौ सामंतां ।
मांगी सिलह महाराज, दुजड़ भंजौ गजदंतां ।।

हिमथाळ – स्वर्ण के थाल । द्विजन – ब्राह्मणों को । मांहि – में ।

७९. अजण – अर्जुन । जिण वार – उस समय । बगसी सौं–फौजबक्षी से । त्यार–तैयार ।

८०. मंजि – मञ्जन करा के, स्नान करा के । जीण – ज़ीन, पलांण । जूसणां – कवचें । बिजड़ – तलवार । बे – दोनों, दो । घड़ा – सेना । जैत – जीत । म – नहीं । वाहि – वही ।

८१. सिलह बरदार – सिलहखाने का अधिकारी । श्रोमणि – शिवमणि । ध्रमस्याम – स्वामिधर्म । धसौ – प्रवेश करो । पाछमां – पीछे । दक्खो – देखो । आटौ-काटौ – संहार करो, नमक हलाल बनो ।

८२. दुजड़ – वीर, तलवार ।

रचो भीछ जुध रूप, जड़ौ रांगां सनांहां ।
जड़ौ टोप सिरदार, दळां जो भीछ दुबाहां ।।
कइ करै आजि भड़ केसरचां, थंभ भुजां गज थाट रा ।
'अजमाल' तणा भड़ येरसा, बणै रूप बैराट रा ।।८२।।

छंद दोहा

पाकौ मतौ परठियौ, काकौ पासि कंठीर ।
साकौ राखण जग सिरै, वणै 'बीरभद्र' बीर ।।८३।।

छंद बीराज

बणै 'बीरभद्दं' । जड़ै तै जरद्दं ।।
दियं सीस टोपं । अरक्केस वोपं ।।
जड़ै रांग जोधा । अकासे स वोधा ।।
दस्तान दख्खै । अड़ा-जूण अख्खै ।।
कड़ा-भीड़ काळं । बंधै प्रत्तमाळं ।।
बळै खग्ग बंधै । सरं चाप संधै ।।
भळक्केस भालं । ढळक्केस ढालं ।।८४।।

छंद छप्पय

बणै 'बीरभद्र' बीर, भड़ां सिरदार भुजाळं ।
अड़ा - भीड़ अख्खै, कड़ा भीड़ै छकड़ाळं ।।
करि सनांन ध्रम ध्यान, पूजि हर रूप पहल्लां ।
केकाणां ऊकढ़ौ, विढ़ौ सुरतांण बहल्लां ।।

भीछ – योद्धा । कइ – कई । भड़ – भट, वीर । केसरचा – केशरिया वस्त्र धारण करें । गजथाट रा – गज-समूह के । बैराट रा – विराट का ।

८३. पाकौ – दृढ़ । मतौ – निश्चय । परठियौ – किया । कंठीर – सिंह । साकौ राखण – कीर्ति रखने । जगसिरै – जगत में श्रेष्ठ, संसार में ।

८४. जरद्दं – कवच । अरक्केस – सूर्य । वोपं – शोभा । रांग – पींडली के कवच । अकासे – आकास । स वोधा – ज्ञान वाले । अड़ाजूण – भिड़ाकर । कड़ाभीड़ – कवच कस कर । प्रत्तमाळं – कटार । सरं – तीर । चाप – धनुष । संधै – संधान किये । भळक्केस – चमकते हैं । भालं – भाले । ढळक्केस – लुढ़कती है । ढालं – ढालें ।

८५. भुजाळ – बलवान, प्रचण्ड बाहु । अड़ाभीड़ – जमघट्ट, भीड़ । छकडाळं – कवच । ऊकढ़ौ – बाहर निकालो । विढ़ौ – लड़ो, युद्ध करो । बहल्लां – जोशीले ।

'पाळ' रौ जोध लंकाळपति, भीछां कहै सु भल्ल रै ।
पड़ियां भ्रकुट आघा पड़ौ, लड़ौ साथि 'अजमल्ल' रै ।।८५।।

छंद दोहा

सूरां गुर बंधी सिलह, मेर सरूप 'मुरारि' ।
आखाड़ां आखाड़ सिध, अंगद रै अवतारि ।।८६।।

छंद बेली भुजंगी

रचै सिल्लह येम जोधा 'मुरारी' ।
यळा राड़ि जाती स खाटे उधारी ।।
सनानं जपं ध्यान कीधा स सूरं ।
हियं जुद्ध काजै स बाधै हिलूरं ।।
भड़ां नाथ भाराथ पाराथ भेखे ।
भुजां भीम अंगदं पायै स पेखे ।।
दरजोधनं माण जेहा दुबाहं ।
रिमं सूर चंदं ग्रहै जेमि राहं ।।
भ्रकुटं दियं टोप सन्नाह सज्जे ।
बळै बांधिया दसतानां सु बज्जे ।।
रांगां बांधिया रांग मौजा सु मंडै ।
बिन्है आजि सुरताण सेना बिहंडै ।।
कम्मरे बांधिया बांदि बूंदी कटारी ।
सिरोही बळै तेग बंधै संवारी ।।

पाळ रौ – गोपालदास का । जोध – पुत्र । लंकाळपति – सिंहराज । भ्रकुट – मस्तक । आघा – आगे, दुश्मनों की ओर ।

८६. सूरांगुर – शूर श्रेष्ठ । मेर – सुमेरु गिरि । आखाड़ां – युद्ध में । आखाड़सिध – युद्धवीर, अनेक युद्धों का विजेता ।

८७. सिल्लह – सिलह, अस्त्र-शस्त्र । यळा – पृथ्वी पर । राड़ि जाती – जाते हुए युद्ध को, दूसरों की लड़ाई को । खाटै उधारी – उधारी मोल लेता है । हियं – हृदय में । बाधै – बढ़े । हिलूरं – हिलोर, लहर । भड़ांनाथ – योद्धाओं का स्वामी । भाराथ – युद्ध में । भेखे – भेष में । पायै – पैर । सपेखे – दीखते हैं । दुबाहं – वीर । रिमं – शत्रुओं को । राहं – राहु । भ्रकुटं – मस्तक पर । बळै – फिर । सुबज्जे – सुन्दर बाजुओं पर । रागां – जंघाएँ । मौजा – जुराब । बिन्है – दोनों । बिहंडै – विनष्ट करें । बूंदी कटारी – बूंदो स्थान की बनी हुई कटार । संवारी – पैनी की हुई ।

तुरसं अलीबंद बंधै स चावं।
बणै रूप जोगिंद्रं राड़ रावं ।।
बळै तौन बंधै सिलीमुख्ख सज्जे।
धनंखं बळै धारिया वाम कज्जे ।।
भड़ां आपरा चालिका मद्धि भेळो।
खळां फौज गाढ़ा सु बाढ़ा उखेळो ।।
भड़ां आपरा कहै भारी 'मुरारी'।
ततौ हुई सेना तयारी तयारी ।।
खत्री माल 'अजमाल' रौ घणौ खायो।
लड़ौ आजि मोटौ परबे सु पायो ।।
परब येरसो फेर नौ कदे पावो।
अड़ौ आजि सोहड़ो भड़ो कांमि आवो ।।
चढ़ै गौड़ राजा तियं साथि चढ्ढ़।
विढ़ो सेनि साहां बळै गात बढ्ढ़ो ।।८७।।

छंद छप्पय

'प्रथीराज' सामंत, बंस रावतां बिरद्दं।
जेणि भुजां जोधार, दूठ 'आसक्रन' मरद्दं ।।
प्रथी मौड़ परचंड, सूर जुध काज उमाहे।
केसरियां रण कीध, अंग सिलहे नहीं लाहे ।।
मन जाणि मरण कीधा अमल, परी बरी नौ पावस्यां।
आवस्यां कांमि 'अजमाल' रै, आवागवणि न आवस्यां ।।८८।।

तुरसं – ढाल। अलीबंद – ऊपर का लपेटा, ऊपर का वस्त्र। सचावं – चाह सहित। जोगिन्द्रं – शिव। राड़रावं – युद्ध में रावत। तौन – तर्कश। सिलीमुख्ख – बाण। वाम – बांए तरफ। चालिका – समान वीरों के। खत्री – क्षत्रिय। माल – धन, खाद्य आदि। अजमाल रौ – अर्जुन गौड़ को। घणौ – बहुत अधिक। परबे सु – पर्व। येरसो – ऐसा। कदे – कब। सोहड़ो – योद्धाओं। भड़ो – सुभट्टों। कामि आवो – युद्ध में वीर गति प्राप्त करो। तियं – उसके। विढ़ो – लड़ो। गात – शरीर। बढ्ढ़ो – कटवाओ।

८८. दूठ – दुर्घर्ष वीर। मौड़ – मुकट, मोर। उमाहे – उमंगित। केसरियां – केशर के रंग में रंगे हुए वस्त्र। लाहे – धारण की, लगाई। अमल – अफीम। परी – अप्सरा। पावस्यां – प्राप्त करोगे। आवस्यां – आयेंगे।

छंद चौपई

'प्रथियराज' सामंत सिंघाळौ, 'आसकरन' बंधव अड़साळौ ।
'लिखमीदास' सुतन लंकाळौ, अजमेरा अजमेरि उजाळौ ।।८९।।

छंद छप्पय

'राजसिंघ' रिमराह, सूर 'केहलण' सिंधाळौ ।
यसें रूप पेखियै, भीछ करि भीम बडाळौ ।।
करि बागा केसरचा, सजै नौ अंग सनाहं ।
पेखि मरम पाधरौ, येमि मन बधै उमाहं ।।
बर येह कवर अबरी बरै, बरै न अपछर जो बरी ।
'परताप' सुतण भेदण पतंग, ध्यान जोति मनसा धरी ।।९०।।

'मानसिंघ' तरसिंघ, 'जोध' हर जोध जनम्मे ।
भड़ कमंध भूजाळ, अंग अवतार अनम्मे ।।
आजि गौड़ ऊससौ, बीर बहसो जुध बेळां ।
ऊखेळा आवधां, भड़ां गज फौज स भेळां ।।
लंकाळ कहै 'केहलण' हरो, लाख फौज हूंतां लडूं ।
'अजमाल' फौज मुंह आगळे, पड़ियां सिर आघौ पडूं ।।९१।।

'भाखर' भाखर भीछ, सार बोढ़ण सिरदारां ।
दीपै 'सांईदास', भिड़ै भंजण गज भारां ।।
सुत 'जसराज' सकाज, आज अजमेरि उजाळौ ।
खत्रवट बट पूरियौ, चितचाळौ धमचाळौ ।।

---

८९ सिंघाळौ – श्रेष्ठ । अड़साळौ – अरियों के लिए शल्य स्वरूप । लंकाळौ – सिंह । उजाळौ – उज्ज्वल करने वाला ।

९०. भीछ – योद्धा । बड़ाळौ – बड़ा । नौ – नूतन । पाधरौ – सीधा, प्रत्यक्ष । अबरी – कुमारी । पतंग – सूर्य । मनसाधरी – मन में निश्चित की ।

९१. ऊससो – उत्साहित हो । बहसो – प्रवेश करो । बेळां – समय । ऊखेळां – युद्ध में । भेळां – नाश करें, शामिल हों । हूंतां – से । आगळे – सामने । आघौ– आगे ।

९२. भाखर – पर्वत तुल्य । भाखर – भाखरसिंह । सार बोढ़ण – तलवार से काटने वाला । भंजण गज भारां – गज सेनाओं का विनाश करने के लिए । खत्रवटबट – क्षत्रियत्व के बल से । पूरियौ – परिपूर्ण । चितचाळौ – मनचला । धमचाळौ – युद्ध में ।

बरजागि आगि खग बांधियां, अड़ाजूड़ लागौ अरसि ।
'अजमाल' सुछळि भड़ अज्जरौ, आजि कांमि आवै अवसि ।।६२।।

'कुसळसिंघ' रण धींग, अक्खि अक्खो अणबीह ।
गौड़ी रव गैमरां, सुणै किरि भूखो सीहं ।।
'भाखर' हर भैभीत, सदा मुहरी सिरदारां ।
हेठ हेठ अविनास, झूझ मचतै झूझारां ।।
महारथी जोध जोधां मंहि, रिढ़ रावण ची राखतौ ।
भिड़बा आज मोहरे भिड़ज, आजि घणौ भड़ आखतौ ।।६३।।

'इंद्रभाण' जमराण, किसूं बाखांण कहीजै ।
आजि अंत ऊपरै, लड़ै गज दंत स लीजै ।।
कंवर सूरां हुय कंत, मंत येहो भड़ मंडै ।
अवसि काम आविजै, छोह बंधि मोह स छंडै ।।
'सुंदर' सुजाव अहिराव सिर, ऊहस यों पण दाखियौ ।
पांण गहि गवड़ सारा पहलि, पांणे भड़ उपड़ांखियौ ।।६४।।

'पातळ' बंस प्रमाण, सिद्ध अवसांण सदा ही ।
सूर धीर सामंत, जकौ भगवाट न जाही ।।
पाट धणी आगळे, भुजां गज थाट स थंभै ।
आजि सूर उल्लहे, आजि कायरां अचंभै ।।

बरजागि आगि – वज्रागिन तुल्य । अड़ाजूड़ – भिड़े हुए । अरसि – आकास । सुछळि – युद्ध में, लिए । अज्जरौ – अजयी, काबू में न आने वाला ।

६३. रणधींग – युद्ध वीर । अणबीह – अभीरु, निडर । गौड़ीरव–गर्जना, ध्वनि । गैमरां – हाथियों । मुहरी – मुखाग्र । हेठहेठ – (?) । झूझ – जूझते समय । मंहि – में । रिढ़ – प्रण, हठ । ची – की । राखतौ – रखता था । मोहरे भिड़ज – आगे की पंक्ति के घोड़ों, वीरों से । आखतौ – उतावला ।

६४. जमराण – यमराज । किसूं – किससे, कैसे । बाखांण – बखान । अंत ऊपरै – मृत्यु पर । मंत – मंत्रणा, विचार । छोह – उत्साह । सुन्दर सुजाव – सुन्दरदास का पुत्र । अहिराव – शेष नाग । ऊहस – जोश में भर कर । उपड़ांखियौ – जोशीला वीर, आक्रमणार्थ तैयार ।

६५. पातळ – प्रतापसिंह का । सिद्ध अवसाण – अवसर सिद्ध । जकौ – वह । भगवाट – भागने के मार्ग । न जाही – नहीं जायेगा । पाटधणी – गद्दी के स्वामी । थाट – समूह । थंभै – रोके ।

तिण बार स 'राघवदास' तण, 'किसनदास' बाधै कळा ।
'अजमाल' लूण ऊजळ करां, आजि लड़ां मुंह आगळा ॥९६॥

मौड़ गौड़ मारोठ, ठवै आरौड़ ठिकांणो ।
तै वांकी तरवारि, सिर सारे सुरितांणो ॥
दौमजि 'नरहरदास', गांस बळ सांस गमाड़ै ।
'जसमंत' तणो जड़ागि, आगि पाड़ै आखाड़ै ॥

बाड़ै न खाग उभौ अबीह, सीमाड़ै दळ साहरो ।
बरजागि जोध 'बाहड़' हरो, निज पोतारै नाहरो ॥९७॥

नर नाहर भर समर, अडर गैमर आखाड़ै ।
छर किरमर छड़ियाळ, झूळ बंकी अवझाड़ै ॥
बाबाड़ै दळ बिखम, अन्न महारोठ उधारै ।
सो दीठां 'नरसींघ', धींग मोटा ब्रद धारै ॥

कोटां किमाड़ अजमेरि का, आजि स मुहरै पेखियो ।
'मानसिंघ' तणो धरियां मछर, दळ दहुवै बळ देखियो ॥९८॥

भिड़ी सिलह 'अगभांण', पांण दइवाण प्रमांणै ।
जैत खंभ जमरांण, तको मूंछा बळ तांणै ॥
सुतण 'दीपचंद' सूर, नूर खत्रवाट निमंधे ।
प्रतिमाळी पंडीर, हबसि भूथाण स बंधे ॥

तिण बार – उस समय । तण – तनय, पुत्र । बाधै कळा – कान्ति बढ़ी । लूण – नमक ।

९७. मारोठ – मारवाड़ के गोड़ावाटी परगने का केन्द्र स्थान । ठवै – मान्यता प्राप्त । सारे – खेंची । दौमजि – युद्ध में । गांसबळ – तीर की ताकत से । गमाड़ै – नाश करता है । जड़ागि – पुत्र । आग पाड़ै – अग्नि प्रज्वलित करे । बाड़ै न खाग – तलवार को म्यांन (कोश) नही करता । उभौ – खड़ा । सीमाड़ै – सीमा पर, पास में । बाहड़ हरो – बाहड़ का पौत्र, वंशज । पोतारै – उत्साहित करने पर ।

९८. गैमर – हाथी । आखाडै – युद्ध-स्थल में । छर – कटार । किरमर – तलवार । छड़ियाळ – बल्लम, भाला । झूळ – समूह । अवझाड़ै – पछाड़ता है, हटकारता है । बाबाड़ै – ललकारता है । बिखम – विकट । उधारै – उज्ज्वल करे ।

९९. भिड़ी सिलह – सिलह सनद्ध हुआ । जैतखंभ – विजय के लिए स्तभ स्वरूप । तको– वह । नूर – कांति । निमंधे – निमित्त किया हुआ । प्रतिमाळी – कटार । पंडीर – तलवार । हबसि – हब्शी, अफगानी, उत्साह सहित ।

स्यांम रै कांमि आखाड़ सिध, खैराड़ो धाड़ खळां ।
गौड़ छळि आजि चढ़ अणी, बाजि लड़ैसी बीजळां ।।९९।।

रिणवट क्रूरमराव, चाव आंमैरि चढ़ावण ।
धाड़ि धाड़ि रजपूत, राड़ि दिढ़ दूजौ रावण ।।
सती तणौ नारेळ, तिकौ बेहड़ौ उंताळी ।
कहियौ नांम 'किसोर', जोर भरियौ जंभाळी ।।
'क्रमसीह' तणौ अणबीह कहि, रूपक सो राजा धरा ।
'अजमाल' मुहरि आपायतौ, आज लड़ैसी अज्जरा ।।१००।।

छंद त्रोटिक

तविये भड़ येह 'मुरारि' तणां । घण घाय बिभाड़ण फौज घणां ।।
सजि सूर सनाह सनाह सजै । रणरूप जिसा नवनाथ रजै ।।
द्रुयणां घण घालण दूंद दळां । बळि 'बैरियसाल' जिसा सबळा ।।
यळ खींचिय खंड स आभरणं । मन सूध तके दियणं मरणं ।।
'कुंभक्रन्न' जिसा जुध क्रन्न तणां । 'भगवांन' हरा अदभूत भणां ।।
महि 'मोहणदास' गहे मरटं । भणिये सुत 'केहरि' रौ सुभटं ।।
पत चाढ़ण आजि स जाजपुरं । 'द्रुगभांण' हरौ गिणि सूरगुरं ।।
'जयरांम' जिसा वरियांम जगे । पड़ि खाटण जग्गिस ध्रम जगे ।।
'कलियांण' तणौ रिणराव कथं । भणि 'भैरवदास' हरौ समथं ।।

अणी – सेना । बीजळां – तलवारों से ।

१००. रिणवट–युद्ध मार्ग में । धाड़ि धाड़ि – धन्य-धन्य । राड़ि – युद्ध में । सती तणौ नारेळ – सती के हाथ का नारियल, नष्ट होने को उद्यत । बेहड़ौ – द्विघट । ऊताळी – अधीर । जोर भरियौ – बल से परिपूर्ण । जंभाळी – जम्भासुर । क्रमसीह तणौ– कर्मसिंह का तनय । रूपक – शृङ्गार । राजाधरा – राजावाटी, भूतपूर्व जयपुर राज्य का एक परगना । आपायतौ – अपनापन रखने वाला ।

१०१. तविये – कहे, कहलाते हैं । घाय – घाव लगा कर । बिभाड़ण – नष्ट करने । घणा – बहुत । रजै – शोभा पाते हैं । द्रुयणां–दुश्मनों को । घालण – नष्ट करने वाले । दूंद – द्वन्द्व । खींचिय खंड – खीचीवाड़ा । भणां – कहे, कहलाते हैं । महि – पृथ्वी पर । गहे – ग्रहण किए हुए, लिए हुए । मरटं – मरोड़, ऐंठ । भणिये – कहिए । पत – प्रतिष्ठा, आब । सूरगुरं – शूर गुरु, वीरों में श्रेष्ठ । वरियाम – ... पड़ि – युद्ध में । ... समथं – समर्थ ।

खयराड़ पहाड़ बराड़ खत्री । खत्रियां मणि 'राघवदास' खत्री ।।
'खेतसीह' तणौ जुधसीह खरौ । हद हद्द मरद्द 'कल्यांण' हरौ ।।
'मनरांम' पमार स धार महं । गजगाह खळां दळ जोध गहं ।।
'बुधसेणि' तणौ अबरी स बरं । घण नीर चढ़ावण हार घरं ।।
द्रभराज पतीवत गौड़ दखै । अजमेरि स खोखर बंस अखै ।।
'भीमेणि' सु कवरं बे सुभड़ं । पति पूत पिता पति माथि पड़ं ।।
'तजखांन' हरौ सिरताज तवै । भखि भारथ कौपणहार खवै ।।
थट भांजण 'चौंड' तणौ सु तमै । 'कुंभक्रन' खवास स पास खमै ।।
सुधि ये तिण जाति अभंग सही । कवि भारथ कथ्थ 'महेस' कही ।।१०१।।

छंद पद्धरी

सजि सूर अने सामंत सार । येखियै जोध येहा उदार ।।
आकास भुजां तोलण अबीह । सो जड़ै पांव पायाळ सीह ।।
ऊगिया भांण पेखै प्रभाति । भड़ हुवा येकठा येणि भांति ।।
नीधसै येमि दूजौ निसांण । दीपिया जोध मांझी दिवांण ।।
बरजागि आगि खट तीस बंस । वोपिया रथी महारथी अंस ।।
नख सिखा सिलह सज्जै निराट । घण मिळै जांणि जोगिंद्र घाट ।।
भड़ केइक जाफरां रंग भीन । लड़ि जौति मद्धि है बास लीन ।।

खयराड़ – खैराड़ प्रान्त । बराड़ खत्री – विकट क्षत्रिय । मणि–सिरमौर, मणि तुल्य । खत्री – क्षत्रिय । जुधसीह खरौ – युद्ध में खरा सिंह । हद हद्द मरद्द – मर्दानगी की सीमा । धार महं – धारा महि, मालवे का धार प्रान्त । गजगाह – युद्ध । गहं – गहरा, समूह । बरं – वरने वाला । नीर – जल, आब, कीर्ति । घरं – कुल के, घर के । द्रभराज – (?) । बे – दो । सुभड़ं – सुभट । तवै – कहिये, कहें । भखि – कहिये । खवै – कहलाता है । थट – समूह । चौंड – चूंडा । खवास – सदा निकट रहने वाला सेवक । खमै – बिल्कुल समीप । येतिण – इतनी । कथ्थ – वर्णन कर । महेस – महेशदास कवि ।

१०२. सार – लोह, शस्त्र-अस्त्र । येखियै – कहिये, देखिये । येहा – ऐसे । तोलण – तोलने वाले । पायाळ – पाताल लोक । ऊगिया – उदय होते । भांण –भानु, सूर्य । पेखै – देख कर । येकठा – एकत्रित । येणि – इस । नीधसै – बजे । येमि – इस प्रकार । निसांण – वाद्य, नक्कारे । दीपिया – देदीप्यमान हुए । मांझी – मध्य में, मुखिया । खट तीस बंस – छत्तीस वंशों के । वोपिया – सुशोभित हुए । निराट– बिल्कुल, पूर्ण । घण – गण, रुद्र के सैनिक. बहुत से । केइक – कतिपय । जाफरां – केशर । रंगभीन – रंग से भींगे हुए, रंग से सराबोर । बास – निवास ।

जांणिजै जांन कारण जगीस। सह बंधि सेहरौ टोप सीस ।।
सिरदार अबै सज्जै सनाह। बर गौड़ 'अजमल' वाह वाह ।।१०२।।

छंद दोहा

कबि बेदे दे…कहीं, यह गल्लां सो अच्छ।
पीछै सिलह परठीयै, पहली कीजै कच्छ।।१०३।।

छंद भुजंगी

कछे काछ जोधार मेवास वाछं। सरूपं मनौ मल्ल तैं भल्ल साछं ।।
बिहू बाहुवै दंड परचंड वीरं। मनौ भीम आकास सूवनं सरीरं ।।
द्रगं राजंत तेज तै सूर वारं। अरी फौज फारांन तै अधियारं ।।
यहं भाय देखै यते चक्खि भोनं। मनौ नवौ नाथांन पाराथ वीनं ।।
करै काछ पहरै उभै पांय जांमं। यकं पट्टं दुतियं अगछाळ नांमं ।।
जड़ै रांग भूजा अड़ै आसमांनं। जड़ै पांय मौजा सचौजा जवानं ।।
विपदं हरै स्वेदकं बाय बीरं। बधै छोह पंचाळिका जांनि चीरं ।।
जरद्दं तसं ऊपरं बांधि जेहा। तस्समां तणौ तांणि जूवांणि तेहा ।।
दस्सतां बळै बांधिया दस्सतांनां। बहै आजि फौजां गजां तणां बानां ।।
धरै टोप तै सीस ये वोप पूगै। अरक्कं जिका ऊदिया सीस ऊगै ।।

जान – बारात। जगीस – जगदीश, शिव। बर – वर, दूल्हा। अजमल – अर्जुन।

१०३. बेदे – विग्रह, युद्ध। गल्लां – कथा। परठीयै – दीजिए, भेजिए। कच्छ – कच्छा।

१०४. कछे – कसे, कच्छे। मेवास – रक्षा का स्थान। वाछं – वास, इच्छा। साछं – सच्चे। बिहु – दोनों। बाहुवै – भुजा। सूवनं – स्वर्ण का। द्रगं – नेत्र। राजंत – शोभा। तै – वे। वारं – समय। फरांन – फाड़ने के लिए, विदीर्ण करने के लिए। अधियारं – अधीर, उतावले। भाय – भांति। चक्खि – चक्षु, नेत्र। नवौ नाथांन – नव नाथों में, नव सिद्धों में। पाराथ – अर्जुन गौड़। वीनं – दूल्हा। उभै – दोनों। पांय – पैरों। पांय जांमं – पजामा। यकं – एक। पट्टं – वस्त्र। रांग – जंघाओं का कवच। अड़ै – स्पर्श करे। सचौज – उत्साह सहित। बाय बीरं – हनुमान (?)। छोह – जोश। पंचाळिका – द्रौपदी। जरद्दं – कवच। तसं – तश्में, उस पर। तस्समां – तश्में। तणै – के। तांणि – खींच कर। दस्सतां – हाथों के। बळै – फिर। बानां – भेष। वोप पूगै – शोभा को प्राप्त हुए। अरक्कं – सूर्य। ऊदिया – उदयाचल।

वंधै गाढ़ मे वाढ़ जमदाढ़ गाढ़ं । वहै खाबळं डाडरा आंणि बाढ़ं ।।
असै खड़ग बंधै अंगजे अगंजै । गुमरं जेणि दरगै 'अमर' राव भंजै ।।
बळै बांधि भूथाण में भरै बाणां । करां झालि गांजीव जेही कबांणां ।।
अलीबंद वांमी भुजा भल्लि धारै । प्रथीनाथ कीरत्ति काजै पवारै ।।
पुणै छंद येतौ भुजंगीप्रियातं । छत्री बंस खटतीस 'अजमाल' छातं ।।१०४।।

छंद छप्पय

सिलहबंध सिरदार, सूर सामंत सिंघाळौ ।
येक येक आगमै, लाख लाखां लंकाळौ ।।
जुड़िया भड़ जोगिंद्र, जांणि सिवराति स जग्गे ।
क्रम क्रम जुद्ध ज···करै, बरै अपछर बर मंगै ।।
'अजमाल' गउड़ि मधि वोपियौ, सिधि गोरख चंद्रसेख सा ।
येखियै जोध भेखै यसा, आजि अलेख अलेख सा ।।१०५।।

छंद दोहा

आजि अलेख अलेख सा, भड़ांनाथ यण भंति ।
'अजमल' हैमर मंगियौ, गैमर जेहौ गंति ।।१०६।।

छंद ऊधोर

गैमर जिसै हैमर गात । पेखै सूर रंग प्रभात ।।
साकुर बालिनौ सिरदार । ऊचिस्रवा नौ अवतार ।।

जमदाढ़ – तलवार, कटार । खाबळं – नाले, टेढ़े चलने वाले । डाडरा – वक्षस्थल की हड्डी । बाढ़ं – बाढ़, प्रहार । असै – इस प्रकार के । अगंजै – अजयी । गुमरं – गर्व । जेणि – जिसने । दरगै – दरगाह में, दरबार में, आमखास में । अमर राव – राव अमरसिंह को । भंजै – मारा । गांजीव – गांडीव धनुष । जेही – जैसी । पवारै – प्रवाड़े, प्रशस्ति । छातं – छत्र, शीर्षस्थ ।

१०५. येक येक आगमै – एक से एक आगे । जोगिंद्र – योगिराज, शिव । सिवराति – शिवरात्रि । क्रमक्रम – क्रमशः । मंगै – मांग कर । गउड़ि – गौड़ । मधि – मध्य में । सिधि गोरख – सिद्ध गोरक्षनाथ । चंद्रसेख सा – शिव जैसा । भेखै – भेष में । यसा – ऐसे । अलेख – अलक्ष्य ।

१०६. हैमर – घोड़ा । मंगियौ – मंगवाया, मागां । गैमर – हाथी । जेहौ – जैसा । गंति – गात्र वाला, चाल वाला ।

१०७. सूर – सूर्य । रंग प्रभात – लाल वर्ण । साकुर – घोड़ा । बालिनौ – बालिनो राजा या बादशाहों की ओर से सामंतों को सम्मानपूर्वक दिया जाने वाला घोड़ा जो उन्हीं की ओर से सदा चारा दाना आदि पाता था । ऊचिस्रवा नौ – उच्चैश्रवा का, इन्द्र के घोड़ेका ।

असली थेट धर अैराक । हुवै बिळंद बागां हाक ।।
जिए रौ बहै येहो जांणि । मेक हजार मुहरि प्रमांणि ।।
पंडव आय चहुंवै पासि । बिफर पेखियौ बरहासि ।।
छोड़ै भूल तंगी छोड़ि । लीधा खुरहरा कर लौड़ि ।।
करि करि खांति भांति कुमाय । परचंड कंध पूठीय पांय ।।
दूजां फेरियौ दुसमाल । लागौ आजि आभा लाल ।।
मांडै पीठि गदिय पलांण । येहो दीध मुख अहलांण ।।
तांणै तेज तंग दुतंग । आंणै कड़ा - भीड़ै अंग ।।
सोवन गात में सिंणगार । येहो पेखि लूण उतार ।।
चंमर स्याह पक्खर चाढ़ि । बहळौ आजि बढ़सी बाढ़ि ।।
उतमंग सिरी वोपै येह । जे झळकंत मुकरं जेह ।।
बहळै कहै अखता बेगि । त्रहसौ बांधि भूप स तेगि ।।
उलटा बाटका सुम अेह । जड़िया नाळ चंद्रस जेह ।।
पांये उडंतौ पंखराज । येहो तुरि नकौ आज ।।
वितंड उवर जे बाजोट । कळहरिए पाड़णौ धसि कोट ।।
बेफर जांणि वडफर बंध । कंध बिळंद अनमी कंध ।।
बाजै बिन्है नासा वंस । स्वासा गिरणै तेज असंस ।।

थेट – ठेठ । **धर** – धरा । **अैराक** – ईराक देश । **बिळंद** – बुलंद, बड़ी । **बागां हाक** – हाक बजने पर । **मेक** – एक । **मुहरि** – मोहरें, स्वर्ण मुद्राएं । **पंडव** – साईस । **बिफर** – जोश में उतावला । **बरहासि** – घोड़ा । **छोड़ै** – उतार कर । **भूल** – पाखर । **तंगी** – तंग, जीन का कसना । **खुरहरा**- खुर्रा ब्रश । **खांति** – ध्यान दे दे कर । **कुमाय** – अच्छी प्रकार मालिश कर तैयार किया । **पूठीय** – पीठ । **दुसमाल** – घोड़े को पोंछने का कपड़ा । **आभा**–कांति, आकाश । **पलांण** – जीन । **दुतंग** – दो तंग । **आंणै** – मिलाए । **कड़ा-भीड़ै** – कस कर कड़े जड़े । **बहळौ** – जोशीला, उतावला । **उतमंग** – सिर । **सिरी** – श्री, मस्तक का जालीदार आभूषण । **मुकर** – शीशा । **अखता** – उतावला, तेज । **त्रहसौ** – तरह से, विधि से (?) । **बाटका** – कटोरे । **सुम** – खुर । **नाळ चंद्र** – चंद्राकार लोहे का नाल । **पंखराज** – पक्षीराज, गरुड़ । **नकौ** – कोई नहीं । **बितंड** – घोड़े का, विशाल । **उवर** – उर । **बाजोट** – बड़ी चौकी । **कळहणि** – युद्ध में । **पाड़णौ** – गिराने वाला । **धसि** – प्रवेश कर । **कोट** – दुर्ग । **बेफर** – दोनों बाजू, घोड़े के अगले दोनों कंधे । **बड़फर** – ढालें । **अनमी** – अनम्र, उत्तुंग । **बाजै** – बजते हैं । **नासा** – नासिका । **बंस** – बांसुरी । **असंस** – बहुत ।

पीवै अंजुळी जळ पांणि। घाये घातणौ घमसांणि॥
नयणे येह सोभा नाम। रचिया जांणि साळिगराम॥
श्रवणे जौति सारंग सूध। धज बिळंद जीपण जूध॥
पूठी येह में परमांण। समरथ गात में सोभाण॥
चंमर जेमि चंमर चार। डंमर दाखणौ जुध बार॥
जंघे नूत नटवा जांणि। पेखै फाळ अग प्रमांणि॥
खंजन जेमि चंचळ खांति। भर वौ झांप मक्कड़ भांति॥
छैड़ि बाळि हूंत उछाह। रेसम डोरि लेतौ लाह॥
यण आरूढ़ि सी 'अजमाल'। ढाहण आजि गयंदां ढ़ाल॥
रचि उधौर छंद कविराज। बुधि प्रमाण वरण्यौ बाज॥१०७॥

छंद छप्पय

ढाल गजां ढ़ाहसी, आजि बेगागळ येहौ।
लालबे वाहा नाम, तिकौ उच्चिस्रवा तेहौ॥
लखि धूप खेवजं, पमंग येहौ पाखरियौ।
जुधि वेळां जाणिजै, अरस हूंता ऊतरियौ॥
यम आय दरोगै अग्गळै, कही अरज जोड़ै करां।
कासा अन बारीगरां, हुई तैयारी हैमरां॥१०८॥

घाये – घाव। घातणै – करने वाला। घमसांणि – युद्ध, संहार। सारंग – हरिण। धज – घोड़ा। जीपण – जीतने वाला। पूठी – पीठ। गात – गात्र। सोभाण – शोभित। चंमर – पूंछ, दुम। चार – चारु, सुंदर। डंमर – ठाटबाट, आडम्बर। नटवा – नट। फाळ – छलांग। चंचळ – चपल। खांति – सावधान। झांप – छलांग। मक्कड़ – बन्दर। छैड़ि – छेड़ने पर। बाळि – (?) उछाह – उत्साह। लाह – लाभ, आनन्द। आरूढिसी – चढेगा। ढाहण – ध्वंस करने। गयंदां – हाथियों के। ढाल – रक्षकों को। बाज – घोड़ा।

१०८. बेगागळ – तीव्र गति वाला। लालबे – लालवेग, घोड़े का नाम। बाहा – वाहन। तेहौ – जैसा, समान। धूप खेवजै – धूप आदि खेने योग्य। पमंग - घोड़ा। पाखरियौ – जिरह से सज्जित। अरस – आकाश। दरोगै – दरोगा, रावणा जाति का सेवक। अग्गळै – आगे, सामने। करां – हाथ। कासा – खासा। बारीगरां – बारगीर, साधारण।

अबरी वर 'अजमाल', चढ़ै नरइंद सचावौ ।
तीन बांधि तरवारि, दोय सुलिताणां दावौ ।।
लालबे बाहा नाम, तुरी चढ़िया रिण तावै ।
लख घाव लागियां, बळै लख घाव बहावै ।।
सिरदार सूर चढ़िया सकौ, सार कोट वंधि सिली ।
तिण बार सींह अरजण' तणी, मूंछ जाय भौंहां मिळी ।।१०९।।

छंद भुजंगी

असवारी अरजनजी की बरनन

चढ़ै गौड़ पीड़ी तणा धणा चावा । दळां ऊपरां हांकबा तणै दावा ।।
चढ़ै 'बीरभद्रं' बीर काकौ करारौ । सकौ बाज आरूढ़ जेहौ सिरारौ ।।
जियं रंग कूमैंत अैराक जाती । छिलै वाग ढीली पड़ै कोट छाती ।।
अणी राव तिणं वोपै अभंगे । करां माळ घल्लं तजितौ कुरंगे ।।
जिहं ऊपरां पाखरं सिरी जाणै । बड़ा सामंत बड़ौ घोड़ो बखाणै ।।
असौ आज दंतां घड़ा नै उखेळै । मुंहामूंह सूलिताण नै मूंह मेळै ।।
जियं पाखती भीच अेहा जगीसै । दळां ऊपरां पार रा सिरै दीसै ।।
जियं पाखती दसौंधी 'स्याम' जांणै । तियं अणी बाणी तणा ब्रद तांणै ।।
'केसौदास' रौ खौहरी तणौ खाटै । बहै लोह बहतौ जकै अध्ध वांटै ।।

---

१०९. **अबरीबर** – विना लड़ी हुई फौज को वरने वाला । **नरइन्द** – नरेन्द्र । **चावौ** – प्रसिद्ध । **दावौ** – युद्ध, दांव । **तुरी** – घोड़ा । **रिणतावै** – रण के लिए । **सकौ** – सब कोई । **सार कोट** – लोह दुर्ग । **सिली** – सिलह । **भौंहां मिळी** – भौंहों के जा लगी ।

११०. **पीड़ी** – युद्ध । **सिरारौ** – सिरह, श्रेष्ठ । **जियं** – जिसका । **कूमैंत** – लाखी, स्याही लिए लाल रंग । **छिलै** – छलकती । **बाग** – रास । **ढीली** – बिना खींची हुई । **करां माळ** – हाथ में माला । **घल्लं** – लिए । **तजितौ** – झोंका । **कुरंगे** – कुमेत रंग का, मृग । **दंतां घड़ा नै** – गजसेना को । **उखेळै** – उखाड़े, उखाड़ने की क्रिया का भाव । **मुंहामूंह** – मुंह के आगे । **मुंह मेळै** – मुंह मिलावे । **जगीसै** – इच्छा वाले, युद्ध में । **पार रा** – पराये, दूसरों के, विपक्ष के । **सिरै** – श्रेष्ठ, सिर के ऊपर से । **पाखती** – पार्श्व में, बगल में । **दसौंधी** – राव, भाट, दान का दशमांश लेने वाला । **स्याम** – श्याम नाम का । **अणी बाणी** – सेना और काव्य । **खौहरी** – खोरी स्थान । **बहै** – बहते हुए । **जकै** – वह, जो ।

बिया जेमि नह बाट भगवाट लहसी। राजा गौड़ री मीढ़ राखै सु रहसी ॥
महीराव खैराड़ चढ़ियौ 'मुरारो'। असौ सूर घोड़ौ असौ आसवारी ॥
जियं रंग नीलौ घणौ स्वेत जांणै। बड़ा मोल रौ बड़ौ मोती बखांणै ॥
सुणै नाम हंसं सरस घणौ सूरौ। पूर क्यावरं जे बळै गात पूरौ ॥
उड़ै वोयणां नै नही कमी आंणै। बड़ा सूर देखै तिकौ ही बखांणै ॥
'प्रथीराज' कूमैत चढ़ियां पमंगे। अड़ै सीस ब्रहमंड हूंता उमंगे ॥
तवै गात उतमंग नै तेज तातौ। कटारां तणा घाव वाहे करातौ ॥
गवड़ 'राजसी' चढ़ै तिणै बार गहरौ। पुणै गौड़ राजा सनाहां स पहरौ ॥
जिकै सिल्लहां जेयणै काज जड़जै। घणां पाड़ बैरी घणां बीच पड़जै ॥
कहै कंवर 'केलण' हरो सिलह केही। दूणा जतन कीधा नकौ रहै देही ॥
रहै नहीं देही परम रांम रहसी। कळहां तणी जो जगै बात रहसी ॥
सुणै बात - रजपूत री अजै सारौ। कहै भीछ भीछां स हूंता करारौ ॥
चढ़ै तुरी नीलै खुरी खूम चालै। घणां घाव लागां पछै घाव घालै ॥
वळै 'मानसी' चढ़ै 'केलण' बिजाई। भाई भलै जोड़ै खड़ा भलां भाई ॥
लड़े आजि वेऊ सुरां थांन लेसी। दळां आज रै मोहरै मरण देसी ॥
चढ़ै 'आसकन्न' जोधां जोध चाळौ। मुणै बीस बीरं मरै मच्छराळौ ॥
जकौ भांजण खळां खग 'धीर' जायौ। उछाटे तुरी 'अजा' री गोढ़ि आयौ ॥

अध बांटै – आधा बांट लेता है। बाट – मार्ग। भगवाट – युद्ध से भागने का। लहसी – लेगा। मीढ़ – बराबरी। असौ – ऐसा। मोल रौ – मूल्य का। हंसं – हंस नाम का घोड़ा। पूर – पूर्ण। क्यावरं – श्रेष्ठ कार्य, बड़ा कार्य। गात पूरौ – पूरे शरीर का, लंबे-चौड़े कद का। वोयणां – पैरों से। अड़ै – स्पर्श करे। ब्रहमंड – ब्रह्माण्ड। उतमंग – सिर। तेज तातौ – चाल और मिजाज का तेज। वाहे करातौ – प्रहार कराते हुए। जेयणै – दाहिनी ओर। जड़जै – बाँधे। पाड़ – गिरा कर। केही – कैसी। दूणा – द्विगुना। नकौ – नहीं। देही – देह, शरीर। रहसी – रहेगा। कळहां तणी – युद्धों की। जगै – संसार में। अजै – आज तक। सारौ – सब। खुरी – सुम, खुर। खूम – रोंदता हुआ। पछै – पश्चात्। घाव घालै – शत्रुओं के घाव लगावे। मानसी – मानसिंह। बिजाई – दूसरा। भलै – अच्छे। जोड़ै – युग्म। वेऊ – दोनों। सुरांथांन – स्वर्ग, देवताओं का स्थान। देसी – देंगे। आसकनै – आशकर्ण। चाळौ – युद्ध। मुणै – कहता हुआ, ललकारता हुआ। मच्छराळौ – वीर। जकौ – वह, जो। धीर जायौ – धीर का पुत्र। उछाटे – उछाल कर, कूदा कर। अजा री–अर्जुन की। गोढि – पास।

समर चढ़ै 'सांईदास' आयो स पांणै । 'जसा' रौ यसो वोपियौ जंमराणै ॥
जको आजि साहां बिन्है हूंत जूटै । तिकौ पांव आडिग सो सीस तूटै ॥
'कुसळसिंघ' रणधींग चढ़ियौ करारौ । सदा भाखरां पौतरां मांहि सूरौ ॥
चढ़ै भाण 'इंद्रभाण' आयौ भुजाळौ । राजा गौड़ री पाखती रख्खवाळौ ॥
'किसनदास' चढ़ियौ असौ सूर कोपै । अणी बींद पातळौत रैं बंस ओपै ॥
चढ़ै गौड़ मारौठ रा घणां गाढ़ा । ठिकाणैं ठिकाणैं रहै जोध ठाढ़ा ॥
नरांनाथ 'नरहर' इसौ कहर निरखे । पुणै घात पाती अंग नी काढ़ि परखे ॥
बळै सीह 'नरसीह' चढ़ियौ बहस्सै । कसै बाग केकाण केवाण कस्सै ॥
बळै चढै 'जगभाण' दइवाण बांकौ । यळा ऊपरां राखबा बात आंकौ ॥
कहर चढ़ै कूरम्म मांझी 'किसोरौ' । तकौ तांणियां सीस आमैरि तोरौ ॥
हबे चढ़ियौ विप्र 'श्रीमणि' दुबाहौ । बडौ 'खेम' जोसी तणौ खग्ग बाहौ ॥
बिढ़ैवा जकौ नहीं आणै बिचारं । द्विजं 'सोमदत्तं' चढ़ै सत्त सारं ॥
बळै 'तेजसी' भाट चढ़ियौ विकट्टे । घणां भांजणो गांजणो घाघरट्टे ॥
'हरज्जी' जियं बंध दूजौ हठीहं । सिंधू बाजियां पाधरौ तकौ सीहं ॥
बळै दरोगो रसोई तणौ बारी । कहो नाम 'मेघौ' घणौ यत्तबारी ॥
'नरो' चढ़ै नाई खरो ही नजीकी । जकौ जांणतौ बात आघात जोकी ॥

आयो – आया । जसा रौ – जसवंत का पुत्र । आडिग – अडिग । भाखरां – भाखरसिंह के । पौतरां – पौत्रों में । भुजाळौ – बलवान, बलिष्ठ बाहु । अणी बींद – सेना का दूल्हा । पातळौत रैं – प्रतापसिंह के बंस – कुल में । ओपै – शोभा पाते हैं । घणा – बहुत । ठिकाणैं ठिकाणैं – स्थान-स्थान पर रहने वाले । जोध – योद्धा । ठाढ़ा – प्रबल । नरांनाथ – सेनानायक, स्वामी । इसौ – ऐसा । कहर – कड़वा, आपत्तिकारी, युद्ध । घात-पाती – तलवार के दांवपेंच । काढ़ि – निकाल कर । बहस्सै – जोश से । केकाण – घोड़ा । केवाण – तलवार । कस्सै – बांधे हुए, बांध कर । दइवाण – राजा, वीर । बांकौ – बांकुरा । यळा – पृथ्वी । राखबा – रखने हेतु । आंकौ – अङ्क, निशान, प्रसिद्धि की वार्त्ता । मांझी – मुखिया । किसोरौ – किशोरसिंह । तांणियां – तनाये हुए, ऊपर उठाए हुए । आमैरि तोरौ – आमेर का गर्व । श्रीमणि – शिवमणि । दुबाहौ – वीर । खेम जोसी तणौ – खेमराज जोशी का पुत्र । बाहौ – चलाने वाला । बिढ़ै – युद्ध । आणै – लाता । सत्त – वीर, बलवान्, सबके । सारं – तलवार, साथ में । तेजसी – तेजसिंह । भाट – राव, भाट जाति का । घाघरट्टै – युद्ध में । हरज्जी – हरजी, हरि नाम का । दूजौ – दूसरा । हठीहं– हठीला । सिंधू – सैंधव । पाधरौ – सीधा, प्रत्यक्ष । बारी – जाति विशेष । मेघौ – मेघराज । यत्तबारी – विश्वास का । नरो – नरो नाम का ।

वरणिया सरीकी मरण रा यता आछा । पुळै आवसी ओर ते घणां पाछा ।।
सूरा जकै पंचसै लार सज्जे । बीरारस्स री तीसरी नाद बज्जै ।।
चमू सांमतां येमि हल्ली सुचल्ली । भोळानाथ री जांणि जंम्माति भल्ली ।।
सिलहदारियां सेल सूरं स पांणे । पुणै सूर झाले यतां सूळपाणे ।।
बड़े तोबची मोहरै दोय खासा । पछै पाखती ओर खवास पासा ।।
खड़े कौतिल मोहरै करै खूंदा । फबै रेसमी डौरि झिलंमेस फूंदा ।।
जियां सोवनी जीन नै तेसौ जगीसं । दूजा सूर जांणै तुरचां पीठ दीसं ।।
दियां सीस टोपं सिफर बणै दौळां । दिपै हूंदादारं ढिगे चमरं ढौळां ।।
खड़े एक हूं एक भड़ खड़े आगां । बळै कह्यो राजा खड़ौ जौड़ि बागां ।।
धीरा खड़ौ हो रावतो धीर धारो । बड़ा ठाकुरे बात मोटी विचारो ।।
जड़ौ मारुवां दुसारां बोचि जाडी । अबै मरण री घड़ी दो तीन आडी ।।
चमूनाथ 'अजमाल' सांमां चलाया । अवै आपरा मोरछां बीचि आया ।।
बड़ौ मोरछौ···हरवल्ल बांमी । नरांनाथ ऊभौ स पाराथ नांमी ।।११०

सरीकी – भागीदार। यता – इतने । पुळै – दौड़ कर, चल कर । आवसी – आयेंगे । पाछा – लौट कर । जकै – वे । पंचसै – पांच सौ । लार – पीछे । नाद – वाद्य । सांमतां – सांमन्ता, योद्धा । भोळानाथ री – शिव की । जंमाति – समूह, सेना । सेल – भाले । पांणे – हाथों में । झाले – लिए हुए, पकड़े हुए । सूळपांणे – त्रिशूल हाथ में लिए । तोबची – तोपची । मोहरै – आगे । दोय – दो । पछै – उनके पीछे । पाखती – बगल में । ओर – अन्य, तरफ । खवास-पासा – सदैव पास रहने वाले सेवक । कौतिल – जलूसी घोड़ा, विना सवार का घोड़ा जो आवश्यकता पर योद्धा काम में लेते थे । खूंदा – पैरों से धरती को पीटतें हैं । झिलंमे – चमकती है । जीन – घोड़े का चारजामा । सिफर – ढाल । दौळां – चहुँ ओर । हूंदादारं – सेवक (?) । ढिगे – पास में । चमरं ढौळां – चमर ढुलाने वाले । खड़ौ – चलो । रावतो – योद्धाओं, सांमन्तों । मोटी – बड़ी । जड़ौ – प्रहार करो, कसो । मरुवां – राठोड़ों । दुसारां – तलवारें । जाडी – गहरी, घनी, बहुत । आडी – बाकी । चमूनाथ – सेनापति । सांमां – सामने । चलाया – चल कर गया । मोरछां – मोरचा । ऊभौ – खड़ा । पाराथ – अर्जुन । नामी – नाम का, प्रसिद्ध ।

छंद दोहा

'अजण' बसीठी उल्लहे, दळ 'मुकंदेस' दुबाह ।
'जसमंत' अजै न जागियौ, सिर लग्गा पतिसाह ॥१११॥

छंद त्रोटक

मुणै 'अजमाल' 'मुकंदेस' हूंतां मरद्दं । साहिजादा बिन्है आय चढ़िया सरद्दं ॥
मारुवै राव काचौ मतौ मंडियौ । तिजड़ गही बिन्है फौजां सिरै तांडियौ ॥
पहर राति हूंतां गहर बाणां पड़ै । असुर दिल्ली तणौ राज लेबा अड़ै ॥
'सूर' हर देखिये नकौ झाझो सम्मरां । दाखवै यता ऊपरी खाली डम्मरां ॥
जुड़ण री बात जांणै खित्री जेतला । आणिया नहीं मसलत्ति में येतला ॥
जीतिया जूध ये जकौही जीतसी । बिजड़ धारा गहर तिता सिर बीतसी ॥
आजि मोटी भुजां भार पड़ियौ असौ । केकाण केवाण सिलहां कसौ ॥
मारकौ तुंड कहियै पिता 'मधुकरौ' । हुबे दळ भांजियौ 'खुरम्म' 'अकबर'हरौ ॥
फतै राव 'रतनं' बुरहानपुर फबांणी । कळू भारथ कथा मांझल कहांणी ॥
'भोज'राव त्रोजं दोय राह सिर भुजाळी । लाख लाखां खळां भांजणौ लंकाळी ॥
राखियो नीर जिण हीर हिंदवांण रौ । खिजै रहियौ मने धणी खुरसांण रौ ॥

---

१११. अजण – अर्जुन गौड़। बसीठी – दूत। उल्लहे – उमंग युक्त। मुकंदेस – मुकन्दसिंह हाडा । दुबाह – वीर। सिरलागा – सिर पर आ लगे, समीप आ गए।

११२. सरद्दं – सीमा पर। मारुवै राव – महाराजा जसवन्तसिह ने । काचौ मतौ – अधूरा विचार, कायरतापूर्ण निश्चय। मांडियौ – किया। तिजड़ गही – तलवार पकड़ कर। सिरै – सिर पर। तांडियौ – गर्जा। गहर – सघन, गहरी। राजलेवा – राज्य लेने के लिए। अड़ै – भिड़े, हठपूर्वक सामने खड़े, रुपे। सूरहर– महाराजा शूरसिंह का पौत्र, जसवन्तसिंह। झाझो – अधिक, तत्पर। सम्मरां – समर में। खाली डम्मरां – ख़ाली आडम्बर। आणिया नहीं – आए नहीं। जीतिया – जिन्होंने जीते हैं। जकौ ही – वेही। जीतसी – जीतेंगे। बिजड़ धारा – तलवारों की धारें। तिता – उन्हीं के। बीतसी – पड़ेगी। भार – वजन, दायित्व। असौ – ऐसा। कसौ – बांधो, जड़ो। मारकौ तुंड – महापराक्रमी, हाथी को मारने वाला। मधुकरौ – माधवसिंह। हुबे – भिड़ कर। खुरम्म – बादशाह शाहजहां का शाहजादे पने का नाम। अकबर हरौ – अकबर का पौत्र। फतै – फतह। फबांण– फबी। मांझल – मध्य, में। चोजं – विनोद में। दोय राह – हिन्दू-मुसलमान दोनों धर्मवालों में। नीर – कान्ति, जल। हीर – चमक, आभ। खिजै – नाराज होकर। रहियौ – रह गया। मने – मन में। धणी खुरसाण रौ – बादशाह।

'दूदरज' अड़ीलौ रहे अनमी दुभल्लं । हूह पड़ सीकरी जेण दीधी हमल्लं ।।
सूर 'रतनेस' सूवर अणी साभियौ । वाभिया घाव तिण घाव सिर वाभियौ ।।
आजि चहूवांण हाडा बिरदं उजाळै । सुतण 'मधुसाह' फौजां सिरै सिंघाळै ।।
आजि पतिसाही रै कांमि यण आवस्यां । पटै सुरलोक बळि मुकतिबा पावस्यां ।।११२

छंद नीसांणी

बिसठाळी 'मुकंदेस' हूं भणिये कथ भारी ।
'अजमल' जेती ऊचरी सो दक्खी सारी ।।
येहा हाडा देखिये तेहा अवतारी ।
सजिया रांग सनाह सजि ध्रुव टोप सुधारी ।।
बीजळ बीजळ बांधियां कड़ि बंद कटारी ।
बळैस वडफर बांधियां आरणि अहंकारी ।।
ठावा स भूखण ठौड़ ठौड़ सह देह सिंगारी ।
मुकता माळ बिसाल मंडि नगहार निहारी ।।
मणि माणिक पनां अमोल बोहौ मोल जुहारी ।
आजि अंत देवा अवसि करि मंत करारी ।।

दूदरज – राव दूदा हाडा बूंदीपति । अड़ीलौ – हठीला । दुभल्लं – वीर । हूह – (?) । सीकरी – फतहपुर सीकरी स्थान । जेण – जिसने । रतनेस – राव रतन हाडा ने । अणी साभियौ – भाले की नोंक से मार दिया । वाभिया घाव – घाव होने पर । वाभियौ – दूसरों पर हुए । सुतण मधुसाह – माधवसिंह का पुत्र । यण – इस । पटै सुरलोक – स्वर्ग का पट्टा, स्वर्ग का राज्य ।

११३. बिसठाळी – आपस में सन्देश लाने ले जाने वाले ने । मुकंदेस हूं – मुकन्दसिंह से । भणिये – कही । कथ – कथन, बात, समाचार । जेती ऊचरी – जितनी कही । सो – वह । दक्खी सारी – समस्त कही । येहा – ऐसे । तेहा – जैसे । ध्रुव-टोप – शिरस्त्राण । बीजळ बीजळ – बिजली जैसी तलवारें । कड़िबंद – कटिबद्ध कटि पर । बळैस – फिर । वडफर – ढाल । आरणि – युद्ध । ठावा – चुने हुए । ठौड़ ठौड़ – स्थान स्थान पर, अंग अंग पर । मुकतामाळ – मोतियों की माला । नगहार – जवाहिरातों के हार, नगीनों के हार । मणि माणिक पनां – मणि- माणिक्य पन्ना । अमोल – बहुमूल्य । बोहौमोल – बेशकीमती । जुहारी– जवाहिरात । अंतदेवा – मृत्यु प्राप्त करने । करि – कर के । मंत – मंत्रणा, निश्चय ।

हाडा आडा लोहड़ां झंडां झूझारी ।
भाई सुभटां भाहरां तवि सेनि तयारी ।।
धज निसांण बाणां धरे गजदंत प्रहारी ।
गवड़ राव दक्खी गलां तेती अवधारी ।।११३।।

छंद छप्पय

मुणै येम 'मुकंदेस', भड़ां भाइयां स भेळौ ।
सिर लग्गा पतिसाह, आजि घर दिली उखेळौ ।।
गवड़ राव यह गल्ल, कहै सोइ भीछ करारां ।
येह अंत आघात, बात जुग च्यार उबारां ।।
कवचट्ट बट्ट भरियौ कहर, अणियां बींद स अग्गरी ।
कळि अकळि येह नामौ करौ, बरौ धड़ा सो अब्बरो ।।११४।।

छंद सागर

'मोहणसिंघ' हाडौ अमोड़ं । रोड़वै कौंण जोधा अरोड़ं ।।
कांम रौ कोट कहिये 'किसोरं' । जिको जांणि भाराथ पाराथ जोरं ।।
कहै सूर झूझार 'झूझारसिंघं' । धजा बंधि धंधींगरां मारि धींगं ।।
'कन्हीरांम' बरियांम मांझी करारो । भिडै काजि ब्रदां तणौ बांधि भारी ।।

आडा लोहड़ां – तलवारों की आडी धाराओं में । झंडा झूझारी – सेनापतियों के झण्डों तक पहुंच कर जूझने वाले । भाहरां– भाई बंधुओं । धज– ध्वज, घोड़े । तेती – उतनी । अवधारी – निश्चय कीं ।

११४. भेळौ – मिलाओ, भिड़ाओ । उखेळौ – युद्ध । सोइ – वही । आघात – युद्ध, प्रहार । जुग च्यार – चारों युगों में । उबारां – प्रसिद्ध करें, बचाए रखें । कवचट्ट – कवच, कवच से जुड़ा हुआ । बट्ट – बल, ऐंठ । भरियौ – भरा हुआ । अणियां – सेनाओं का । स – सबसे, वह । अग्गरी – अगाड़ी । कळि अकळि – युद्ध और बिना युद्ध, कलियुग में सत्य युग । नामौ करौ – नाम करो ।

११५. अमोडं – नही मुड़ने वाला । रोड़वै – रोके । कौंण – कौन । अरोड़ं – नहीं रुकने वाले को । कांम रौ कोट – कार्य के लिए दुर्ग जैसा दृढ़ । किसोरं – किशोरसिंह हाडा । भाराथ – युद्ध में । पाराथ जोरं – अर्जुन की भांति पराक्रमी । झूझारसिंघ – जूझारसिंह हाडा । धजाबंधि – ध्वजधारी । धंधीगरां – हाथियों की सेना । धींगं – वीर । बरियाम – वीर । ब्रदां – बिरुदों । भारौ – समूह ।

चवै सांमंत मंत जोधा चव्हाणं । अड़ी आजि सुरतांण सेना अग्राणं ।।
दिलो साहि रै कामि बरियाम दूठं । अड़ा-जूड़ सिलहांण बंधै अकूठं ।।
कही गौड़ 'अजमाल' बातां करारी । भिदी तकौ हाडां तणै मंत भारी ।।११५

छंद छप्पय

दळांनाथ चढ़ै तै, 'मुकंद' नीघस्स निगारां ।
खळि भळिया खरहंड़ा, हंसि जोधा तिण बारां ।।
खळकंतां बखतरां, रौड़ पड़तां पखराळां ।
अंधारी ऊघड़ी, सिरी गज झंप सूंडाळां ।।

बाणां निसांण पीतव बरणि, गजां धजां फरके गयण ।
'दूदरज' चढ़ै राव 'भोज' दळां, राव किनां चढ़ियौ 'रयण' ।।११६।।

छंद नीसांणी

'मोहनसिंघ' चढ़िये अमोड़ घण डोहण घावां ।
सीझोवण दळ सामठां दावानळ दावां ।।

चव्हाणं – चौहान वंश के । अग्राणं – अगाड़ी । दूठं – दुधर्ष वीर । अड़ाजूड़– भीड़े हुए । अकूठं – बहुत । करारी – जबर्दस्त । भिदी – भेद कर गई, मन में बैठ गई । तकौ – वे, जो । हाडां तणै – हाडाओं के ।

नोट :—इस छन्द में राव मुकन्दसिंह और उसके अन्य चारों भाइयों के युद्धार्थ सजने का वर्णन है ।

११६. दळांनाथ – दलपति, सेनाध्यक्ष । नीघस्स – बजा कर । खळिभळिया – आंदोलित हुए । खरहंडा – मुसलमान । हंसि – प्राण, हंसे । बारां – समय । खळकंतां – छलकते हुए, ध्वनि करते हुए । रौड़ – प्रहार । पखराळां – हाथी, घोड़े, पक्खरधारी । अंधारी – हाथियों और घोड़ों की आंखों का आभूषण । ऊघड़ी – खुली । सिरी – हाथियों का आभूषण, श्री । गजझंप – आभूषण विशेष । सूंडाळां – हाथियों । पीतव बरणि – पीले रंग के । धजां फरके गयण – ध्वजाएं आकाश में उड़ी । दूदरज – राव दूदा । भोजं – राव भोज । किनां – अथवा । रयण – राव रतन हाडा ।

नोट :—ये तीनों राव मुकन्दसिंह हाडा बूंदी-कोटा वाले के पूर्वज थे ।

११७. अमौड़ – पीछे न हटने वाला, वीर । घणा – बहुत । डोहण – मंथन करने वाला । सीझोवण – संहार करने के लिए । सामठां – बहुत ।

बळ बळ सूरा बहसिया अणकळ उमरावां ।
हूंकळ कळहळ हैमरां चलिया दळ चावा ।।
सिलहां झळहळ साबळां भळहळि भळकावां ।
बिसरे टामंक बाजिया सिंधू सहनावां ।।
मिळिया दळ 'मुकंदस' रै बंधव बहसावा ।
जांणे लछिमण राम जिम बांणे भुज बांवा ।।११७।।

छंद दोहा

भुज बामां बणिया भुजां, भाई च्यार सुभट्ट ।
सूर चढ़े 'झूझारसिंघ', बाजे नद्द विकट्ट ।।११८।।

छंद नीसांणी

सूर चढ़े 'झूझारसिंघ' रिणधींग स रत्तां ।
मद्द दुरद्दां मारवा मद खत्रवट मत्तां ।।
सूरां सिरदारां सजे तोखारां तत्ता ।
गढ़ बूंदी अजमेर गढ़ पख बेऊ प्रभत्ता ।।
अनड़ां जड़ां उखेळ वड़ बेछाड़ै वत्तां ।
आखाड़ां आखाड़ सिद्ध चवि ढाल चगत्तां ।।
भाई मिळिया भाहरा बर बीर बिरत्ता ।।११९।।

बहसिया – उत्साहित हुए। अणकळ – वीर। हूंकळ – घोड़ों की आवाजें। कळहळ – युद्ध में। चावा – प्रसिद्ध। झळहळ – चमकते। साबळां – भालों के। भळहळि – चमक। भळकावां – झरलाट। बिसरे – भयावने, युद्ध-सूचक, अप्रिय। टामंक – नक्कारे। सहनावां – शहनाइयां। बहसावा – जोशीले। बांवा – चलाने वाले, बांयी भुजा।

११८. भुजबामां – बांयी भुजा पर, सहायक। नद्द – वाद्य, ध्वनि।

११९. रत्तां – अनुरक्त, लीन। दुरद्दां – हाथियों का। मद खत्रवट मत्तां – क्षत्रियत्व के मद में मस्त। तोखारां – घोड़े। तत्ता – तेज, तीव्रगामी। पख – पक्ष। प्रभत्ता – प्रभुत्व सम्पन्न। अनड़ा जड़ां उखेळ – पहाड़ों को जड़मूल से उखाड़ने वाले। बेछाड़ै वत्तां – भयानककर्मा, दुर्धर्ष वीर। आखाड़ां – युद्धों में। चगत्तां – मुसलमान। मिळिया – मिले। भाहरा – बांधव (?)। बिरत्ता – विकराल, भयावह, अनुरक्त।

छंद दोहा

बर बीरां मिळिया बहसि, मन धोरां मन मोट ।
'कन्हीरांम' चढ़िया कहर, काळो मेवट कोट ।।१२०।।

छंद निसांणी

'कन्हीरांम' चढ़िया करूर सत सूर सपांणं ।
मन बसिया सुरलोक कंमधि कसिया केकाणं ।।
चाव बिरद्दां चाढ़िबा संभरि चहुंवाणं ।
गजगाहां आगळि गरीठ साहां सुलिताणं ।।
बे बाहा वणिया बिरद बेहद बाखाणं ।
'दूदा' लक्कड़खांन सा दळ भीछ बिपाणं ।।
पहलां बहलां पाड़सी सैदां पाठाणं ।।१२१।।

छंद दोहा

सैदां पाठांणां सही, पड़सी ऊही ठांण ।
'कीसोवर' चढ़िया कहर, निधसियां नीसांण ।।१२२।।

छंद नीसांणी

चहुवांणे नीसांण बीर बीरारस बग्गा ।
'कीसोवर' चढ़िया कंठीर आरणि उमग्गा ।।

---

१२०. बहसि – जोशीले । मन मोट – विशाल मन वाले । कहर – युद्ध, आपत्ति । काळो – वीर, सर्प । मेवट कोट – मरोड़, अत्यंत बलवान ।

१२१. सपांणं – बलवान् । केकाणं – घोड़े । चाव – इच्छुक । संभरि – सांभर के, सांभर राजधानी के कारण संभरी कहलाने वाले चौहान । गजगाहां – युद्ध के । गरीठ – बलवान् । बे बाहा – योद्धा, दोनों भुजाएँ । बेहद – असीम । दूदा – कन्हीराम हाडा का पूर्वज दूदा । लक्खड़खांन सा – दूदा हाडा का पिता लक्कड़खांन हाडा जैसा । बिपाणं – (?) बहळां – तेजी से बढ़ कर । सैदां – सैयदों ।

१२२. ऊही ठांण – उसी स्थान पर । कीसोवर – किशोरसिंह । निधसियां – बजे, ध्वनित हुए ।

१२३. नीसांण – वाद्य विशेष, नक्कारे । बग्गा – बजे । कंठीर – सिंह । आरणि – युद्ध ।

काळजिमन सिर कोपियौ जिम मुचकंद जग्गा ।
पग जड़िया सिर पनंग रा गयणे सिर लग्गा ।।
भड़ जीता कइ भारथौं भड़ि कदे न भग्गा ।
सुत 'मधसाह' दुबाह सोइ यम खड़िया अग्गा ।।
खग झाळां बिकराळ खित दळ दोयण दग्गा ।।१२३।।

छंद दोहा

दळ दग्गा द्रोयण दुरत्त, सिर लग्गा पतिसाह ।
'मुकंदसिंघ' 'मधुसाह' सुत, रिण चढ़िया रिम राह ।।१२४।।

छंद छप्पय

दळ चढ़तै 'मुकंदेस', बीर चढ़िया खग-बाहा ।
सीसोदा परमार, कमध चढ़िया कछवाहा ।।
चहुवाणां चावड़ा, गौड़ भाटियां गहीरा ।
तवि चाळक तूंबरां, धाड़ि दहिया रणधीरा ।।
गोहिल्ल चढ़ै वड़गूजरां, हैकंपे प्रथमी हली ।
रवदांण सीस चहुवांण री, चतुरंगी सेन्या चली ।।१२५।।

छंद नीसांणी

चतुरंगी सेना चली यम संभरि वारं ।
सहस येक भड़ सज्जिया वोपै असवारं ।।

काळजमन – कालयवन । जिम – जिस प्रकार । मुचकंद – मुचुकंद । जग्गा – जाग कर, जगने पर । पनंग रा – शेष नाग का । गयणे – आकाश । लग्गा – लग गया । भारथौं – युद्धों । कदे न – कभी नहीं, कभी भी । मधसाह – माधवसिंह का । खित – क्षिति । दोयण – शत्रु ।

१२४. दग्गा – जलने लगा । दुरत – प्रचण्ड ।

१२५. खगबाहा – तलवार चलाने वाले । कमध – राठौड़ । चाळक – चालुक्य । धाड़ि – वीर । हली – विचलित हुई । रवदांण – मुसलमानों के । सेन्या – सेना ।

१२६. संभरि – चौहानों की । वारं – समय वालों । वोपै – शोभा पाते हैं ।

जड़िया टोप सनाह जड़ि जड़ि रांग जियारं ।
टोपां ऊपरि बांधिया फैंटा जरतारं ।।
बळै मौरचंद्र बांधिया सूरां सिरदारं ।
द्वादस तिलक बणाविया विध वेद विचारं ।।
सिलहां झळमळ सामतां भळहळ भालारं ।
सहस किरण धरि ऊगियो किरि सूर सवारं ।।
दूजा दणियर दीपिया 'मुकंदेस' मझारं ।
गज मोहरै अग्राजतां बाजतां नगारं ।।
पैदल पायक धायकां नायकां निहारं ।
बांणदार तौबच्चियां येखै अणपारं ।।
ताता आगळि कौतिला खिलता खूंदारं ।
साज झळंबे सोवनी फबिया फूंदारं ।।
पांणे डौरि सपाट में धरिया पर धारं ।
जंग ठणंकै बाजतां ठवि तेठी मारं ।।
सुत्रनाळि गजनाळि रथां रथनाळि निहारं ।
हड़वड़ मांची हैवरां धर पुड़ धूजारं ।।
उड़ि गिरद मंडळ अड़ि येखे अंधियारं ।
मंडिया आपज मौरछां करि मंत करारं ।।१२६।।

फैंटा जरतारं – जरी के धागों के साफे । मौरचंद्र – चंद्राकृति जैसे आभूषण । विध – विधि से । भालारं – भाले । सहस किरण – सहस्र किरण, सूर्य । धरि – धरा पर । ऊगियो – उदय हुआ । सवारं – प्रातःकालीन । दूजा दणियर – दूसरा सूर्य । दीपिया – देदीप्यमान हुआ । मझारं – मध्य में । अग्राजतां – गर्जना करते समय । धायकां – धावा मारने वाले । येखै – देखे । ताता – तेज, तीव्रगामी । कौतिला – आवश्यकता के लिए सज्जित रिजर्व घोड़े । खिलता खूंदारं – मस्ती में पैरों की टाप मारते हुए । झळंबे – चमके । सोवनी – स्वर्णमयी । फूंदारं – फूंदे । पाणे डौरि – हाथ में लगाम लिए हुए, सूत की दो डोरों के बल । सपाट में – चाल विशेष । धरिया पर धारं – शत्रु सेना पर झोंके । ठणंकै – ठणणं ठणण की ध्वनि । ठवि तेठी मारं – वैसे ही प्रहार । हड़वड़ मांची हैमरां – घोड़ों की हड़-वड़ाहट हुई । धरपुड़ – पृथ्वी तल । धूजारं – कंपायमान हो गया । मंडळ – आकाश । अड़ि – जा लगी । आपज – अपने अपने, अपने आप । मंत – निश्चय, सलाह । करारं – करारी ।

छंद छप्पय

कहो स हाडा कथ्थ, सुणे बाहुड़चो बसीठी ।
आच जौड़ि की अरज, मुणै कथ भारथ मोठी ।।
मन ये धार 'मुकंद', इंद जेहा व्रत धारी ।
छत्रपति बूंदी छात, बात आघात बिचारी ।।
पंच आत जिसा सुत पंड रा, भारथ स्वारथ भारियां ।
सुतण 'मधुसाह' 'बीठळ' सुतण, विसठाळे ऊबारियां ।।१२७।।
यम आखै 'अजमाल', भड़ां कमधां अड़सालां ।
खळे खेत पाधरै, नेत बांधियां निहालां ।।
किसूं धरम रजपूत, पांण सिर सहै परायौ ।
जोवै कीं 'जसमंत', उलटि दळ अणसिख आयौ ।।
चितराव चढ़ै उहि लोक नै, करेस गौड़ करारवां ।
कळह साही चढ़ीया कड़ै, मसलति मांडी मारुवां ।।१२८।।

छन्द नीसांणी

मारू केइक मोट मन येहा अड़साला ।
'जसमंतसींघ' बुलाविया मसलति मंझाला ।।
'बीठळ' जेहा बांकुड़ा अणियां भमराळा ।
जे चांपा व्रद चाढ़णां आगा अजुवाळा ।।

---

१२७. सुणे – सुन कर । आच जौड़ि – हाथ जोड़ कर । मुणै – कहे । कथ – कथन । मीठी – मधुर, प्रिय । इंद जेहा – इन्द्र जैसा । बूंदी छात – बूंदी राज्य का स्वामी । आघात – भिड़ने की, आक्रमण करने की । पंड रा – पाण्डु के । भारियां – भारी, प्रबल । सुतण मधुसाह – राव माधवसिंह के पुत्र । बीठळ सुतण – राजा विट्ठलदास के पुत्र ।

१२८. अड़सालां – अरिशल्यों, हठीले वीरों । खळे – शत्रु । खेत पाधरै – सीधे रणक्षेत्र में । नेत – ध्वजाएं, बाना विशेष । निहालां – (?) । पांण – पराक्रम, हाथ । परायौ – अन्यों का, दूसरों का । कीं – क्या । अणसिख – असंख्य, जिसका सिरा न हो । चितराव – राव मुकंदसिंह का मन । उहि लोक – उस लोक, परलोक । मांडी – रची, विचारी । मारुवां – राठौड़ वीरों ने ।

१२९. मारू – मारवाड़ वाले, राठौड़ । मंझाला – मध्य में, मुखिया । बीठळ – विट्ठलदास चांपावत । अणियां भमराळा – सेना के भंवर, सेना के दूल्हे । आगा – भविष्य को ।

'गोवरधन' 'चंदह' तणौ कूंपा किरनाळा ।
महि देणा अरि मारणां बेऊ विरदाळा ।।
जोधा रिणमल चोंड रा बीका बाहाळा ।
सळखा बीरम जैमला धूहल धज्जाळा ।।
जैंता ऊदा सिंधला चंदेल सचाळा ।
मेड़तिया जैतारण्या यळ सोभ्रित याळा ।।
मंडौवर कनवज्ज का धांधळ विगताळा ।
चांदां ईसर बरसिंघा कहिया कांधाळा ।।
चाचिग बीदा राहणा रणधींग रढ़ाळा ।
ईडरिया राड़ेद्रहा छपन्या छतराळा ।।
बाढ़ेला रणधीर का भारमल भुजाळा ।
ऊहड़वां पातावतां बाहड़मेराळा ।।
कोटड़िया जळखेड़िया माहेछ मूंछाळा ।
पौहोकरणा रांगड़ पुणां पौहौ करणा चाळा ।।
कमध मिळे नवकोट का करि कोट स काळा ।।१२९।।

छंद छप्पय

दाखै 'बीठळदास', राजि सुणिजै महाराजा ।
जैंसे मरण जीव, असौ आयौ प्रब आजा ।।

चंदह तणौ – चंद्र का पुत्र । कूंपा – कूंपावत । किरनाळा – सूर्य । महि देणा– दातार । मारणा – मारने वाले । धज्जाळा – ध्वज पताका वाले । सचाळा – योद्धा । जैतारण्या – जैतारण वाले, राठौड़ों की शाखा विशेष । यळ – पृथ्वी । सोभ्रित – सोजत स्थान के । याळा – वाले । विगताळा – विगत वाले । कांधाळा – कांधलोत, बड़े कंधेवाले, बलवान । रढ़ाळा – हठधारी वीर । छतराळा – छत्रधारी । भुजाळा – प्रचण्ड बाहु, वीर । मूंछाळा – मूंछों वाले । चाळा – युद्ध, छेड़छाड़ । करि कोट स काळा – क्रुद्ध काले हाथियों जैसे, मानों यमराज के समूह हों ।

नोट :—इस निशानी छंद में राठौड़ क्षत्रियों की विभिन्न उपशाखाओं के नामोल्लेख हैं ।

१३०. राजि – श्रीमान् । महाराजा – जसवंतसिंह के प्रति । असौ – ऐसा । प्रब – पर्व ।

किसू ढील कीजिये, मिळै भंजौ खत्रवाटां ।
साहि बिन्है सपत में, ऊह करि जूह उलाटां ।।
सिरदार सूर बंधौ सिलह, तवौ तयारी जुध तणी ।
हरवल्ल गौळ चंदौळ भुज, यसैं रूप वंटौ अणी ।।१३०।।

छंद किलकिला

जसमंतसिंघजी की असवारी को बरनन

सजै यम मारुव सैनि सपांण । निघस्सिय कस्सिय डंक निसांण ।।
उस्सिय जोध यसा अवनाड़ । बंधै सिलहांण बराड़ बराड़ ।।
सजै गज हैमर पक्खर साज । पलट्टियै जांणि महोदध पाज ।।
मिळै घण घोर क भाद्रव मास । वणै दळ बद्दळ जेमि बिकास ।।
चमंकिय अग्गीय अग्र छड़ाळ । दमंकिय दामणि धज्ज दीठाळ ।।
बजै गज घंट सदद्धर बांणि । बळै बुग पंक्ति सदंत बखांणि ।।
झरैं मदमत्त स अंब झरंत । कुळाहळ हैमर पीक करंत ।।
सपीह सपीह बजे सहनाय । बळे अभ्र जेमि पयद्दळ पाय ।।
सजै यम मारुव सैनि सिघाळ । गजैं नद घोर बजै किरनाळ ।।१३१।।

छंद कवित्त

चढ़ै रतन कमधज्ज, जतन जीव रौ न जांणै ।
दुसासण दईवांण, पांण जमरांण प्रमांणै ।।

ढील – विलम्ब । मिळै – भिड़ कर । खत्रवाटां – क्षत्रिय मार्ग से । सपत में – शीघ्रता से । ऊह – विचार । जूह – समूह, युद्ध । चंदौळ – सेना की पृष्ठ रक्षक पंक्ति । वंटौ अणी – सेना को विभाजित करो ।

१३१. निघस्सिय – बजे । कस्सिय – कसे, बांधे । डंक – डंके, दण्डक । निसांण – नक्कारे, वाद्य । उस्सिय – जोश में आए । बराड़ बराड़ – बड़ें जबर्दस्त । पलट्टिये– उमड़ पड़ा हो । जांणि – मानो । महोदध – महासागर । पाज – सीमा, मर्यादा । घण – बादल । दळ-बद्दल – सेना रूपी बादल । अग्गीय – अग्नि, आगे । छड़ाळ – भाले । दामणि – बिजली । धज्ज – तलवार । दीठाळ – दिखाई पड़ी । सदद्धर – ध्वनि । बुग – बगुले, बक । दंत – हाथियों के दन्त । अंब – बादल । पीक – संभवतया पील-हाथी । सपीह सपीह – शहनाई वाद्य की ध्वनि । अभ्र – बादल । सिघाळ – श्रेष्ठ । गजैं नद – वाद्य गर्जे । किरनाळ – वाद्य विशेष ।

१३२. दुसासण – दुशासन । दईवांण – योद्धा । पांण – बल, शक्ति ।

संजे घड़ा सांवळी, तजे माया संहसारी ।
जुध माचंत यसौ, जिसौ रावण ग्रहंकारी ॥

चावगुर राव बहळौ चढ़ै, सिर फट्टै फण सेस रौ ।
दिनपती खुरां खेहां दुड़ै, मुड़ै नहीं 'माहेस' रौ ॥१३२॥

छंद पद्धरी

'दळथंभ' चढ़ै झालो दुझल्ल । होय गौम वौम बे हल्लमल्ल ॥
सामंत मंत रावत्त सूर । केवांण पांण झल्ले करूर ॥
बंधवै 'राघवोदे' ग्रजागि । खळ खंड तिकौ परचंड खागि ॥
रसबीर रंगै पाट्ड़ीय रांण । भळहळै जेमि रत प्रात भांण ॥
पक्खर सबह सज्जे प्रचंड । मारका भड़ां भिड़जां स मंड ॥
सार का कोट येही सबोध । जगहथ्थ पथ्थ सायक्क जोध ॥
भारथ्थ कथ्थ राखण भुजाळ । समरथ्थ जिसा मांझी सिघाळ ॥
कथ येह सुणी चढ़ै कमंध । बरजागि चढ़ै बेऊ बंधबंध ॥१३३॥

छंद छप्पय

सकतावत सिरदार, कोट चित्रकोट कपाटं ।
मुड़ै नहीं माम रा, थूर पड़तां गज थाटं ॥
हरवल्लां हरवल्ल, लगौ चंदौळ सुगंठी ।
समरि धसै सामहां, (ग्ररी) नह दियै ग्रपूठी ॥

घड़ा सांवळी – श्यामल घटा, हाथियों की सेना । बहळौ – उतावला, जोशीला । फणसेस रौ – शेषनाग का सिर । दिनपती – सूर्य । खुरां खेहां दुड़ै – घोड़ों के पैरों से उड़ी हुई रजराशि से छिप गया । माहेस रौ – महेशदास का पुत्र, राव रतनसिंह ।

१३३. गौम वौम – पृथ्वी और आकाश । बे – दोनों । रसबीर – वीर रस । पाटड़ीय – पाटन नगर का । रांण – स्वामी, राणा । रत – लालिमायुक्त । भांण – सूर्य । मारका – वीर । भिड़जां – घोड़ों । जगहथ्थ – दिग्विजयी वीर । पथ्थ – अर्जुन । सायक्क – सहायक, बाण । बेऊ – दोनों । बंधबंध – बंधु, बढ़ कर भाई, हठपूर्वक (दोनों) भाई ।

१३४. कोट – किला । चित्रकोट – चित्तौड़ दुर्ग । कपाटं – किंवाड़ । मुड़ै नहीं – पीछे नहीं हटे । माम रा – प्रतिष्ठा वाले । थूर – बड़ी, विशाल । थाटं – सेना । सुगंठी – सुगठित सुदृढ़ । धसै – प्रवेश करें । ग्ररी – बैरी । ग्रपूठी – पीठ ।

सादूळ मेह गाज न सुणै, बणै बि्रद बेछाड़ रा।
प्राझीस कथ्थ राखण प्रथी, मांझी थंभ मेवाड़ रा ॥१३४॥

सीसोदिया 'सुजाण', मरण कारण ऊमाहै।
भाण मंडळ भेदवा, चित्त येहा सह चाहै॥
कड़ा-भीड़ कग्गळां, गलां राखण अगंजी।
खग चाढ़ै खरसांण, मेटि मटसांण समंजी॥
चीतौड़ नीर चाढ़ण चढ़ै, चालै केमि अचल्ल री।
सिरदार बिन्है फौजां सिरै, मुणियै सूरजमल्ल री ॥१३५॥

खग बाहौ 'अफितार,-खांन' मुगलांण स मांझी।
हूर पूर हूळसै, दूर घण पिसण स दाझी॥
चिळखंतो दसतांन, घट्ट पग्गे सिर घूघी।
कसि तरकस कमांण, लडंत दीसै अनि लूघी॥
भाभड़ा भूत अनि भूत जम, (गमन) भिस्ती मारिग गही।
बिढ़ण रा सबब जैत बळ, आजि सैद होसी सही ॥१३६॥

छंद दोहा

खंभ उजेणी खंभ यों, असुरां सुरां आराण।
'साहिजहां' पतिसाहि रा, जुड़िया भड़ जमरांण ॥१३७॥

सादूळ – सिंह, केशरी सिंह शक्तावत। मेह – मेघ की। गाज – गर्जना। बेछाड़ रा – जबरदस्ती का। प्राझीस – गहरी, मोटी, बड़ी। थंभ – स्तम्भ।

१३५. सुजाण – सुजानसिंह शाहपुरा का स्वामी। भाण मंडळ – सूर्य लोक। कड़ाभीड़–कड़ियां कस कर। कग्गळां – कवचों की। गलां – कहानी। अगंजी – अजेय। खरसांण – सान यंत्र। मटसांण – जर्रे, शान मिटाने वाला, गर्व मिटाने वाला। समंजी – बरावरी के, मांज कर। नीर चाढ़ण – कान्ति चढाने के लिए।

१३६. खगबाहौ – तलवार चलाने वाला। हूर – अप्सरा। पिसण – शत्रु। दाझी – जलने लगी। चिळखंतो दसतान – हाथों का कवच। घट्ट – शरीर। दीसै – दिखाई पड़े। लूघी – लुब्ध। भाभड़ा भूत – विकराल प्रेत जैसा। भिस्ती – वहिस्त। सैद होसी – शहीद होगा।

१३७. असुरां – मुसलमानों। सुरां – हिन्दुओं। आराण – युद्ध।

छंद रेड़की

जोधा मारका जवांण जम्मरांण मिळै जोधां जोध,
खागां तणा डांडीहड़ां घड़ां खेलणं ।
बाघळा छत्तीस वंस वोपै महारथ्थी अंस,
केवाणां हंदा स काट झाट झेलणं ॥

कमधज्ज घड़ां काळ वोपै सिलहां ऊजाळ,
बरच्छियां छळे वाळ भाले भूवणं ।
सोभे मांझी 'जस्सराज' ऊससै चढ़ै स आज,
'सूर' राजा हरो 'गाजीसाहि' सूवणं ॥

'माधाणी' हाडौ 'मुकंद' मैंगळां खळां मयंद,
महारथ्थी जेम संद भारथं भणं ।
'अजण' जेहा अजण रचेवा सु महारण,
बाणां री सोकां बहण कळे करणं ॥

भणे भद्र 'बीरभद्र' रीसाणौ जेहौ स रुद्र,
मौजां स फौजां समद्र मथे महणं ।
'रतन' जोधाणो राव चाळ-बंधि चढ़ै चाव,
धूमाड़ै त्रबद्धि घाव अड़े गयणं ॥

---

१३८. जोधा – योद्धा । मारका – प्रहार करने वाले । मिळै – मिले, भिड़े । तणा – का । डांहीहड़ां – डंडों, दण्डकों । घड़ां – सेनाओं से । खेलणं – खेलने वाले । बाघळा – वीर, सिंह । वोपे – शोभित होते हैं । हंदा – का । झाट झेलणं– प्रहार झेलने वाले । कमधज्ज – राठौड़ । घड़ां काळ – सेनाओं के संहारक । छळे वाळ – प्रहार करने वाले, छल्लेदार । भाले सूवणं – भाले घुमाने वाले । जस्स-राज – महाराजा जसवन्तसिंह । ऊससै – जोश में आकर । सूरराजाहरो – राजा शूरसिंह का पौत्र । गाजीसाहि सूवणं – गजसिंह का पुत्र । माधाणी – माधव-सिंह का । मुकंद – मुकंदसिंह । मैंगळां खळां मयंद – शत्रुओं रूपी हाथियों के लिए सिंह । संद – (?) । अजण जेहा अजण – अर्जुन पाण्डव जैसा अर्जुन गौड़ । सोकां बहण – अनवरत प्रहारकर्ता । कळे करणं – युद्ध करने के लिए । रीसाणौ – रोषान्वित । महणं – समुद्र । रतन – राजा रतन सिंह । चाळ-बंधि – कटिबद्ध होकर । त्रबद्धि – तीन प्रकार के । अड़े गयणं – आकाश को स्पर्श करे ।

दुबाहो झालो 'दयाळ' केवी हंदी घड़ां काळ,
लोहां जो बोहां लंकाळ ज्वाळ जग्गणं ।
दूजो बंध 'राघोदास' तांणे खित्री ध्रम तास,
रचेबा जोगणी रास रणे अंग्गणं ।।
सीसोदो 'सुजाणसींघ' धार बाहां खित्री धींग,
उभै कांधै अरडींग रीध राखणं ।
'भीमांणी' रासो' भयंक साबळां वोपै असंक,
दीवाड़ै निसांण डंक लंक लेयणं ।।
वोपै बेऊ 'अम्मरेस' आमंद अंबा नरेस,
देसपत्ती देस देस दाव देयणं ।
'बैरीसींघ' सेखाउत्त धाड़ि धाड़ि रज्जपूत,
देखे अद्‌भूत घाय मेळणं घणं ।।
'गोरधन्न' चंदरावतं सूर बीर भरे सतं,
धारी याये ध्यान धूत अंत दीयणं ।
'मोहण' 'झूझार' मंड पहाड़ां जेहा प्रचंड,
भूवडंड मंड ब्रहमंड वोडणं ।।
'कन्हीराम' तेहो काळ भारथां मांझी भुजाळ,
बेऊ पक्खां बिरद्दाळ खळे खंडणं ।
असुर येहा अमांन खागे 'अफितार खांन',
दंताळां ज्यूं छोडै क्षान गज्जे गयणं ।।१३८।।

दुबाहो – वीर । दयाळ – दयालदास । केवी हंदी – बैरियों की । घड़ा काळ– सेना का काल । लोहां – शस्त्रों । बोहां – बहुत-बहुत । तांणे – ऊपर बढ़ाता है । तास – उसके । रचेबा – रचने के लिए । जोगणी रास – योगिनियों की क्रीड़ा । अंग्गणं – आंगन में, अगाड़ी । धार बाहां – शस्त्र प्रहार करने वालों में । धींग – वीर । उभै कांधे – दोनों कंधे, उन्नत-कंध । अरडींग – दुर्जयी वीर । रीध – ऋद्धि । भीमाणी रासो – भीमसिंह का पुत्र रायसिंह । सावळां – भालों से । दीवाड़े – ढिलवाता है । डंक – डंके, चोट । लंक – लंका । बेऊ अम्मरेस – दोनों अमरसिंह । आमंद – आए हुए । अंबा नरेश – आमेर के स्वामी । धाड़ि-धाड़ि – धन्य धन्य । भरे सतं – शौर्य से परिपूर्ण । धूत – योद्धा । अंत-दीयणं – अंत देने के लिए, मरने के लिए उद्यत । मोहण झूझार – मोहनसिंह और जझारसिंह । वोडणं – धारण करने वाले । भुजाळ – वीर । पक्खां – पक्षों । अमांन – अतुलनीय, अविचल । दंताळा – राक्षसों, हाथियों । क्षान – (?) । गयणं – आकाश ।

छंद छप्पय

तत्त काम यम तुरी, पटा सोहि लहै उपट्टा ।
तत्त काम यम तुरी, घाव भंजै गज घट्टा ।
तत्त काम यम तुरी, तुरी बड करी न आवै ।
तत्त काम यम तुरी, बरां तोरण बंदावै ।
दरबार स मंडण दहुवळां, खट सवाद लीधां खुरी ।
सामंत मंत राखो सकौ, तंत काम पहले तुरी ।।१३६।।

छंद रोमकंध

सजि सूर सुभट्टं थूरण थट्टं थट्ट गरट्टं तेथइया ।
वीरारस बट्टं ऊपट पट्टं ऊभट भट्टं ऊलहिया ।।
जमराव जसारं क्रोध करारं बेढ़ि बिचारं फौजबरं ।
असवार अपारं पक्खर सारं भूभ भूभारं मद्दभरं ।।
पुणिये रजपूतं भाभड़ भूतं धीरज धूतं मजेज धरं ।
खटतीसं बंसं ईसुर अंसं सीस असंसं बुद्धिसरं ।।
बरणौं अब बाजं साज सजाजं कंदळ काजं जे कसियं ।
रिण सारति रागं बेऊ वागं ऊपट आगं ते असियं ।।
अैराक अरब्बिय सूरती सब्बिय काबि सु कब्बिय ते कथियं ।
तुरकी कहि ताजिय सूध सिराजिय सूरिज बाजिय ते सथयं ।।

---

१३९. तत्त – सारयुक्त, महत्वपूर्ण । पटा – एक शस्त्र, चाल विशेष । लहै – लेते हैं । उपट्टा – छलांग । घाव – रोंद कर । भंजै – नाश करें । गज घट्टा – गज सेना । बरां – दूल्हों । तोरण बंदावै – विवाह में तोरण पर वन्दना करवाये । दरबार – राज सभा । मंडण – शोभा । खट सवाद – पूर्ण अघाया हुआ । खुरी – पैर की टाप मारता हुआ । मंत – श्रीमन्त, मित्र । सकौ – सब कोई । तंत काम – तत्व कार्य, महत्त्वपूर्ण कार्य ।

१४०. थूरण – नाश करने के लिए । गरट्टं – समूह, सेना । तेथइया – तत्थेई । बट्टं – मार्ग । ऊपट पट्टं – शस्त्र प्रहारों पर । ऊभट भट्टं – विकट प्रहारों का मुकाबिला । जसारं – जैसे । बेढ़ि – युद्ध । मद्दभरं – हाथी । पुणिये – कहिये । भाभड़ भूतं–भाभरा प्रेत की भांति विकराल । मजेजधरं–मिजाज वाले । खटतीसं – छत्तीस । ईसुर अंसं – ईश्वर के अंश । असंसं – असंशय । बाजं – घोड़े । कंदळ – युद्ध । सारति – खेंचते ही । रागं – जंघाएँ । असियं – घोड़े ।

खंधार खंधारिय ब्रनि बुखारिय मोल हजारिय तोल मिळं ।
कुहि कोही सु कच्छिय ऊभति अच्छिय गोन सपच्छिय पौन गिळं ।।
बलख्खिय भुजक्किय कयकि लक्किय लक्षि सु लंक्किय लाह लियं ।
अणपार उरग्गिय लक्खि दुरग्गिय गत्ति गुरग्गिय जाति जियं ।।
घुरघ्घिय करि चिग्गिय नृत सु नच्चिय मारुव मच्चिय जंगयं ।
जंगळा सिंध वालिय बद्दकसानिय गच्छि गुमांनिय ते वड यमं ।।
बहो बाळसमंदिय संमरकंदिय फाळ सु फंदिय ते फररं ।
घन घूंघट वारिय तेज तुखारिय घूघर चंमर ते धररं ।।
कवि जाति कहांनिय बुद्धि प्रमांनिय ऊकति आंनिय ते अमरं ।
बरणौं अब रंगिय चाल सु चंगिय माळ सु मंडिय ते समरं ।।१४०।।

छंद बेअक्खरी

घोड़ों का रंग बरनन

बाजां बरण बरण बणावं । जेज मजेज भरै सोइ तावं ।।
प्रथम स्याह रंग स्याम परख्खे । दुतिय रंग गंगाजळ दख्खे ।।
अबलख अंबर सुरंग अनूपं । भिड़ज कुमैत चढ़ै बड भूपं ।।
सुरख संज्याब समंद सुरंगा । काळी गांठि कुमैत कुरंगा ।।

ब्रनि – वर्ण। कुहि कोही – कोई एक। ऊभति – ऊभ करते। कयकि – कैकेय देश के। लक्किय – लक्खी रंग के। सुलंक्किय – सुन्दर कटि वाले, कबूतर की भाँति। लाह – आनन्द उरग्गिय – सर्प की भाँति सीधे चलने वाले। दुरग्गिय – दूरगामी। गत्ति–गति, चाल। गुरग्गिय – गरुड़। जियं – जिन की। चिग्गिय–(?) । फाळ –छलांग। फंदीय – कूदने वाले। घन घूंघट वारिय– बिजली की गति वाले। समरं – युद्ध।

नोट :–इस छंद में देशों के नामों एवं उन उन स्थानों में उत्पन्न घोड़ों का वर्णन किया हुआ है।

१४१. बाजां – घोड़े। बरण-बरण – रंगरंग के। बणावं – बने ठने, सजे हुए। जे जम जेज – धीरे और मिजाज के साथ। तावं – तेजी से। स्याह – श्यामलता लिए हुए। अबलख – रंग विशेष। अंबर – आसमानी। सुरंग – लाल। भिड़ज – घोड़ा। कुमैत – रंग विशेष। सुरख – सुर्ख। संज्याब – एक रंग विशेष। समंद – समुद्री रंग। काळि गांठि – रंग विशेष का। कुरंगा – रंग विशेष का घोड़ा। तरता – (?) । लखी – लाखी रंग के। करड़ा – रंग विशेष। पंच कल्यांण – चारों पैर और मस्तक पर सफेद टीके वाला घोड़ा।

तरता लाल लखी बोह तावं । करड़ा पंच कल्यांण कहावं ।।
सुरंगा बळे समंद स सेली । बहता घाव निबाहै बेली ।।
जरद्दां काळिस गांठि स जांणै । बळि केइ ऊजळ पांव बखांणै ।।
चपरा केइ गुलदार स चीनी । भारी फुलवारी रंग भीनी ।।
नीले सुरखे केई नीले । ढहै कोट दे बाग स ढीले ।।
रंग जड़ाव पनां पीरोजा । मटवा नीले रंग समोजा ।।
प्रथम रहवाळ येबिया धामं । बीक रा कहि ग्रोर दुगामं ।।१४ ।।

छंद दोहा

जाति रंग बर चालि जे, बरणी कबी बणाय ।
जो दीठा नह संभळै, ते बरणै नंह जाय ।।१४२।।

हुइ तैयारी हैमरां, जड़िया सेर जवांण ।
दावौ दिली दूजौ 'मुकंद', चावौ गुर चहुवांण ।।१४३।।

छंद छप्पय

'मुकंदसिंघ' 'ग्रजमाळ', ग्राय मोरछां ग्रटक्के ।
चाय-दाय चालणां, खळां उर सीस खटक्के ।।

बळे – पुनः । सेली – रंग विशेष का घोड़ा । बहता घाव – घावों से लहू बहते हुए । बेली – सहायक, स्वामी । जरद्दां – पीत वर्ण के । काळिस गांठिस – घोड़े का रंग विशेष । केइ – कई । पांव – पैर । चपरा – चपरे रंग का घोड़ा । गुलदार – रंग विशेष का घोड़ा । चीनी–चीनी रंग का घोड़ा । रंगभीनी – रंग से परिपूर्ण । बाग – रास, वल्गा । ढीले – ढीली । पीरोजा – पिरोजी रंग । मटवा – मटियाले, मिट्टी जैसे रंग के । रहवाळ – घोड़े की चाल विशेष । येबिया धामं – ऐविया ग्रोर धाम नामकी चालें । बीक रा – बीक नाम की चाल । दुगामं – घोड़े की चाल का नाम ।

१४२. बर – श्रेष्ठ । संभळै – सुने । ते – वे । नंह – नहीं ।

१४३. जड़िया – जड़े हुए । जवांण – तरुण, योद्धा । दावो – हक, दाव । चावौ गुर – प्रसिद्ध वीर ।

१४४. ग्रटक्के – ठहरे, रुके । चायदाय – इच्छानुगामी । चालणां – चलने वाले । उर – हृदय । खटक्के – खटकें, खटकते हैं ।

सांभळियौ 'जसमंत', भिड़ण दोय भीछ बहल्लां ।
चावा पहली चढ़ै, करेसी भूझ पहल्लां ।।
कनवज्जनाथ चढ़ियो कहर, पहर दीत चढ़ियौ परै ।
केई नकीब हो ठाकुरो, चढ़ौ चढ़ौ यम ऊचरै ।।१४४।।

छंद त्रोटक
असवारी जसोतसीघजी की को बरनन

'जसराज' चढ़ै महाराज जरैं । तिहुंवै पड़ि हैकंपि धूजि तरैं ।।
बियडांण कसेस नीसांण बजै । गति मेघ किना महरांण गजै ।।
ध्रह ध्रह धौंसारव धूहलयं । करनाळि स भेरिय कूहलयं ।।
तुरही रिण तूरस तें त्रहियं । बरघू सहनाइय सु बज्जहियं ।।
झिणकार झिंगार स झंझरयं । पड़िसाद स नाद गि(रां)पड़ियं ।।
गजझंप गजांगज कोर गिणै । बहता पंच बीस हरोळ बणै ।।
हरवल्लह 'कासिमखांन' हुवै । दळनाथ दिली पड़ि झाळि दुवै ।।
तिण साथि यता उमराव तवै । चतुरंगिय नाथ स पाथ चवै ।।
गजनाळि गजां सय दोय गिणैं । बणि ऊपरि नाळि उभैस बणैं ।।
बणि बैरख च्यारि हरे बरणं । बणिया गिर सिख्खर केळि बणं ।।
बहौ रंग गजां सिर धज्ज बणै । रिण रावत पक्खर सार रणै ।।

सांभळियौ – सुना । बहल्लां – अधीर, उत्कंठित । चावा – प्रसिद्ध । भूझ – युद्ध । कनवज्जनाथ – कन्नौजपति, जसवंतसिंह । कहर – युद्ध, आपत्ति में । दीत – सूर्य । परै – ऊपर । नकीब – राजा महाराजाओं के आगे आवाज लगाते हुए चलने वाला चोबदार ।

१४५. जरैं – जब । तिहुंवै – तीनों सेनाओं में । हैकंपि – कंपकंपी । तरैं – तब । बियडांण – हाथियों पर । कसेस – कसे हुए । नीसांण – वाद्य नक्कारे । किनां – किंवा, अथवा । महराण – समुद्र । ध्रह ध्रह धौंसारव – धूंसे वाद्य की ध्वनि । धूहलयं – ध्रुव को विचलित करते हुए । कूहलयं – कोलाहल, वाद्य विशेष । तूर – तूर वाद्य, तुरही । त्रहियं – बजे । बरघू – वाद्य विशेष । झिंगार – झिंगुर । झंझरयं – झाझरें, आभूषण । पड़िसाद – प्रति शब्द । नाद – ध्वनि । गजझंप – लम्बी छलांग । गज कोर – हाथियों की पंक्ति । पंचबीस – पच्चीस, एक सौ । पड़ि – युद्ध । झाळि दुवै – दूसरी अग्नि । तिण – उसके । तवै – कहे । नाथ – स्वामी । पाथ – अर्जुन । चवै – कहे । सय दोय – दो सौ । बणि – उन पर । नाळि – तोपें । ऊभैस – द्विगुनी । बैरख – पताकाएं । हरे बरणं – हरे रंग की । गिर सिख्खर – गिरि शिखर । केळिबणं – कदली वन । धज्ज – ध्वजाएं । सार – लोहा, शस्त्र-अस्त्र ।

गउनाळि उभैसय दोय गिरीठ। रिम सेनि सिरा दिय गोळिय रीठ॥
बाणां भरिया लंबग्रीव बणै। सीसांण सोरांण अपार सुणै॥
सुत्रनाळि सुत्रा सयतीन सजै। गौड़ीरव कार गजां गरजै॥
खड़ि खूर खंधार अपार खड़े। पखराळ गजाय हरौळ पड़ै॥
असवार पचीस हजार हरौळ। गरीठ सु युद्धि 'जसमंतह' गोळ॥
हरोळह 'रत्तन' मारुव राव। दिढ़ै पग अंगद रै सोहि दाव॥
हरोलह 'गोवरधन्न हठीह। बजावै आप तणै वह जीह॥
हरोल 'दयाल' धणी हळवद्द। वहै सोइ रावत कंध बिड़द्द॥
हरवल्लह 'राघवदास' हुयं। भणियं जिण सो नहीं कोय भुयं॥
हरवल्ल 'किसनह' रांवत हेक। टळै किम आजि चित्रागढ़ टेक॥
बसेस कसेस चढ़ाड़न बांन। जकें बंध पाचस सेर जवांन॥
वळे हरवल्लह 'देबियसींग'। रखै मन मांहि स मोटिय रीग॥
सुणै हरवल्लह 'सिंघ सुजाण'। बुंदेल स खंडण खंड बखांण॥
तवै हरवल्लह 'खां अफितार'। बणै बड रूप स ते रिण बार॥
मुगलांण पठांण सैदांण मुणै। गहि बाण कमाण स दीघ गुणै॥
खड़ि आइय मोरछां मांझ खंभे। थट सायर फुट्टस केमि थंभे॥

गउनाळि – बैलों से धकेली जाने वाली तोपें। **उभै सय दोय** – चार सौ। **गिरीठ**– जबरदस्त, अति भारी। **रिम** – शत्रु। **रीठ** – प्रहार। **लंबग्रीव** – ऊँट, क्रमेलक। **सीसाण सोराण** – सीसा और बारूद। **सुत्रनाळि** – ऊँटों पर ले जाने वाली तोपें। **सीयतीन** – तीन सौ। **गौड़ीरवकार** – समुद्र के गर्जने की ध्वनि। **खड़ि** – चलकर। **खूर** – घोड़े। **पखराळ** – पाखरें। **गजाय** – हाथियों के। **गरीठ** – समूह, सेना, वीर। **पुट्ठि** – पृष्ठ भाग पर। **गोळ** – मध्य भाग की सेना। **मारुव** – राठौड़, मारवाड़ के। **दिढ़ै** – दृढ़। **सोहि** – वह, जो। **दाव** – युद्ध, दांव। **बजावै** – बजवाता है। **आप तणी** – आपके, स्वयं के। **जीह** – जीव में आये, इच्छानुसार। **धणी** – स्वामी। **हळवद्द** – हलवद राज्य का। **बिड़द्द** – विरुद। **हुयं** – हुआ। **जिण सो** – जिसके सदृश्य। **कोय** – कोई। **भुयं** – पृथ्वी पर। **हेक** – एक। **टळै** – व्यर्थ, चूके। **किम** – कैसे। **चित्रागढ़** – चित्तौड़ गढ़। **बसेस कसेस** – विशेष रूप से खींच कर। **बांन** – बाण, तीर। **जके** – जो, जिनके। **बंध** – बन्धु। **रीग** – ऋद्धि। **खंड** – भूमि। **तवै** – कहे। **बणै** – बनें। **वड रूप** – विशाल रूप। **ते** – वह। **रिणबार** – युद्ध समय। **मुगलांण** – मुगल। **पठांण** – पठान। **सैदांण** – सैय्यद। **मुणै** – कहे। **गहि** – पकड़ कर। **गुणै** – प्रत्यंचा, धनुष की डोरी। **खड़ि आइये** – चल कर आये। **मांझ** – में। **खंभे** – ठहरे। **थट** – समूह, तट। **सायर** – समुद्र। **फुट्टस** – फूटने पर, टूटने पर। **केमि** – कैसे। **थंभे** – रुके, ठहरे।

बरंगाळ बळे 'रायसिंघ' बणै । सुत 'भीम'तणौ खत्रि स्याम सुणै ।।
बरंगाळ बळे 'सबळेस' अबीह । 'सुरतांण' सुतो सुरतांणं रीह ।।
'फतो' नखि कुंवर येमि फबंत । दुबाहो आजि भंजं गजदंत ।।
तरंगाळ बळे 'वरसींघ' असीग । धधूणै आजि छडाळां धींग ।।
अनै तरंगाळ उभै 'अमरं' । गहवंत भरै गुमरं गुमरं ।।
चरावत कूरम जोध चढ़ै । गढ़ राम नूपं नरवल्ल गढ़ै ।।
तरंगाळ बळे 'खेलु' 'मालु' तवै । बळि राव 'छत्रमणि' गौ धस वै ।। १४५ ।।

छंद दोहा

करि अजू निवाजय(करी), ले सांई दे नांम ।
'औरंगसाहि' 'मुरादस्या', वे चढ़िया बरियांम ।। १४६ ।।

छंद पद्धरी

औरंगसाहि मुरादसाहि की असवारी को बरनन

सुरितांण बिन्है चढ़िया सपांण । निधसे गजां कसिया निसांण ।।
निरखिये गजां चाली स नद्द । बहौ रूप बजे बाजा बिहद्द ।।
करनाळि भेरि बरघू ऋहाळ । सहनाय नफीरी बजिय सुढ़ाळ ।।
त्रह त्रहे त्यार रण-तूर तूर । सुणि सुणै नाद बळ भरे सूर ।।

बरंगाळ – दाहिने वाजू की सेना । बळे – फिर । तणौ – का । खत्रि स्याम – क्षत्रियों का स्वामी । अबीह – निडर । सुतो – पुत्र । सुरतांणां – सुल्तानों, शाहजादों । रीह – कोप । नखि – पास में । फबंत – फबता है । दुबाहो – बड़ा वीर । आजि – आज युद्ध में । भंजं – नाश करने । तरंगाळ – बाएं पार्श्व की सेना । असींग – वीर । धधूणै – घूमावे । छड़ाळां – भाले । धींग – दुर्धर्ष वीर । अनै – अन्य । उभै – दोनों । अमरं – अमरसिंह । गहवंत – गर्व जबरदस्त । भरै – पूरित । गुमरं – गर्व पूरित । चरावत – चरा के वंशज (?)। नरवल्ल गढ़ै – नरवरगढ़ के । गौ – गया, चला । धसवै – प्रवेश करने ।

१४६. अजू – वजू । निवाजय – नमाज पढ़ी । बे – दोनों । बरियाम – वीरश्रेष्ठ । सपांण – बल पूर्वक । निधसे – बजे । निसांण – नक्कारे । नद्द – नदी । बहौ रूप – विभिन्न रूप से, विविध आकृति के । विहद्द – बेहद, अपार । ऋहाळ – वाद्य का नाम, विशेष प्रकार का वाद्य । सुढ़ाल – सुन्दर ढाल में । त्रह त्रहे – बजे । त्यार – तैयार । रणतूर – रण वाद्य विशेष । तूर – तुरही । बळ भरे – जोश में आए ।

सिंधुरां सिरी पाखर सुसंधि । बरदार बळे भाला सुबंधि ।।
ढुळि काळो पीळी गजां ढाल । लखिये बरन केइ लाल लाल ।।
दोय सै गयंद येहास दखि । वोयणां चलत अवनाड़ अक्खि ।।
झरनाळि जेमि दांनां झरंत । तन काळा अनै ऊजळा दंत ।।
तळ तोड़ लगै परनाळ तक्क । खायाळ जेमि आदू खळक्क ।।
हूलिया गयंद मोहरै बिहद्द । सांभळे गयण गाजे समद्द ।।
धगड़ै पड़ी सहस तोपां उधंम । जांणिजै येह परिवार जंम ।।
सुत्रनाळि सुत्रा दोय सहस सज्जि । ऊधड़ी राड़ि जीपसी अज्जि ।।
असवार सहस दस दोय चीय । लड़ि जिकां किलांणी मारि लीय ।।
खंधार तीस हज्जार खूर । पाकड़े बंदूकां करां पूर ।।
?ौपिया तो……..ह अनंत । पैदळ अपार आवै न पंत ।।
बाणां निसांण (नाना) बरन्न । वेखिये जांणि कदळीस वन्न ।।
बाण येक लक्ष आगि ले बणाय । जांमगी पलीतां ते जगाय ।।
हरवल्ल 'निजाबति खांन' हेक । आरंत कांम येहा अनेक ।।
सुणियै हरौळ 'भगवंत सींग'। धूहळां बगां रिणवार धींग ।।

सिंधुरां – हाथियों। सिरी – श्री, आभूषण विशेष। सु संधि – भली प्रकार संधी हुई। बरदार – रखने वाले। ढुळी – लुढ़की। काळी-पीळी – श्याम व पीत वर्णीय। येहास – ऐसे। वोयणां – पैरों से। अवनाड़ – अनम्र, न नमने वाले। अक्खि – कहे, आँखें। झरनाळि – निर्झर। दांनां – मद। झरंत – बहता है। अनै – और। तळ तोड़ – जड़मूल से उखाड़ने वाले, पाताल तोड़। परनाळ – पनाला। तक्क – तलक, तक। खायाळ – बड़ा नाला। आदू – प्रारंभ, मूल से। खळक्क – वेग से बहा। हुलिया – आक्रमणार्थ झोके। समद्द – समुद्र। धगड़े – मैदान में। उधंम – उत्पात, युद्ध। जंम – यमराज। सुत्रां – ऊंटों पर। ऊधड़ी – मैदान का। राड़ि – युद्ध। जीपसी – जीतेंगे, विजय करेंगे। अज्जि – आज। सहस दस दोय – बीस हजार, बारह हजार। चीय – की, पहिचाने जाने वाले। जिकां – जिन्होंने। किलाणी – कल्याणी स्थान। मारि-लीय – विजय कर लिया। खूर – घोड़े, अश्व सैनिक। चौपिया – सुशोभित हुए। पंत – पंथ, मार्ग, पंक्ति। बरन्न – रंग, वर्णन। वेखिये – देखिए। जांणि – मानो। कदळीस वन्न – कदली वन। जांमगी – सूत की रस्सियों का बना हुआ तोप या बंदूक का पलीता। पलीतां – तोप की बत्ती। ते – से, वे। जगाय – प्रज्वलित कर। हेक – एक। आरंत कांम – ध्वंश करने वाला, आर्त्तकाम। धूहळां – तोपें। बगां – बजने पर, गजंने पर। धींग – वीर।

'केसरी सिंघ' हरवळ कमंध । बांधणौ तिकौ ऊबंध बंध ।।
खड़ियौ हरौळ स 'चिकन खांन' । अवनाड़ दळां दीठौ अमांन ।।
हरवल्ल 'बहादर खां' हठीह । वेछाड़ कंध ऊभो अबीह ।।
हरवल्ल 'अलया खांन' हूव । धज येमि टळै तो टळै धूव ।।
हरवल्ल रांण दूजौ 'हमीर' । गिरमेर दळां आगळि गहीर ।।
'मंनसूर खांन' हरवल्ल मंड । खंभणो खहे ब्रहमंड खंड ।।
हरवल्ल 'सेख मीरक' हठाळ । केवियां दळां पाधरौ काळ ।।१४७।।

छंद छप्पय

चवि हजार चाळीस, हुवौ असवार हरौळह ।
खड़ि येतो आरबौ, गणे वै साहस गौळह ।।
तरंगाळ बरंगाळ, चवै चंदौळ स तेता ।
सो दीठां संभळै, बरणै कबी येता ।।
जोधार जकै जुधवार रा, धार मार जीपण घरा ।
सिरदार खरा चढ़िया सिरै, दळ 'अवरंग' 'मुराद' रा ।।१४८।।

कमंध – राठौड़ । बांधणौ – बांधने वाला, बंधन में लेने वाला । तिकौ – वह । ऊबंध-बंध – निर्बन्धों को बंधन में लेने वाला । खड़ियौ – चला । अवनाड़ – न झुकने वाला । दळां – सेना में । दीठौ – दिखाई पड़ा, जान पड़ा । अमांन – अतुल्य । वेछाड़ – विकट वीर, किसी के आतंक को न मानने वाला । ऊभो – खड़ा । अबीह – अभीरु, निर्भय । हूव – हुआ । धज – वीर । टळै – डिगे, चले, किनारा काटें । धूव – ध्रुव । दूजौ – दूसरा, अन्य । गिरमेर – सुमेरु गिरि, गिरिशिखर । आगळि – अगाड़ी, अर्गला । गहीर – जबर्दस्त, बाँकुरा, भारी । मंड – शोभित हुआ । खंभणो खहे – रोक दे, युद्ध करके स्थिर करदे । हठाळ – हठी । केवियां – शत्रुओं के । दळां – समूहों के । पाधरौ काळ – सीधा यमराज, प्रत्यक्ष मृत्यु ।

१४८. चवि – कहे । खड़ि – प्रस्थान कर । ये तो – इतना । आरबौ – तोपखाना । गोळह – सेना का मध्य भाग । चंदौळ – चंदावल, सेना का पीठ रक्षक सैन्य दल, पृष्ठ भाग । तेता – उतने ही । येता – इतना । जोधार – योद्धा । जकै – वे, जो । धार मार – युद्ध में शस्त्र धाराओं से मार कर । जीपण घरा – पृथ्वी को जीतने वाले । खरा – दृढ़ वीर, पक्के । सिरै – सिरह, आगे, श्रेष्ठ । दळ – सेना । मुराद रा – मुराद के ।

छंद पद्धरी

असवार गौळ चंदौळ अखि। दहुं दळ तरंगाळ बरंगाळ दखि ।।
गौळ मधि साहि बेऊ गरीठ। सहु सीस छत्र चामर स दीठ ।।
गजरूढ़ बिन्है गजखंभ गात। बेछाड़ बिन्है औनाड़ बात ।।
चहूबच्चा गदेला गजां चाव। बेखिये मेघ-डंमर बणाव ।।
डोरि रा गजां नीसांण डंम। झळमळै सूर किरणां झिलंम ।।
आलंम तोग पंजा सु अखि। दहुं दळां सिरै सोभांण दखि ।।
गजनाळि गजां दोय सहस गंजि। सोइ धरे आगळी येमि संजि ।।
पाखर अपार कोतिळ पमंगि। वोपिया जांणि नटवा नरंग ।।
नरजान बळे तखतरेबांन। छांहांगीर जांणि रच्चे स मांन ।।
अ्रड बहल अनै खड़सल वहल। मांडिया रथं चळळवा महल ।।
वे सहस बाण भरिया गुराब। अणपार सोर सीसा अराब ।।
गणिये हजार पंचास गौळ। चविये हजार थकसठि चंदौळ ।।
बरगाळ बीस हजार विखि। तरंगाळ सहस उगणीस लखि ।।
पेखिये लख येक सिलह पोस। सुलतांण बिन्है सहता स रोस ।।

असवार – अश्वारोही। गौळ – सेना के मध्य भाग की टुकड़ी। चंदौळ – सेना के पृष्ठ भाग की टुकड़ी। दहुं – दोनों। तरंगाळ – बाएँ पार्श्व की सेना। बेऊ – दोनों। गरीठ – वीर। सह – सहित। चामर – चँवर। गजरूढ़ – गजारोही। बिन्है – दोनों। गात – गात्र, शरीर के। बेछाड़ – विकट। औनाड़ बात – अपनी बात पर अटल। चहबच्चा – चारजामा, हौदा। गदेला – गद्दियाँ। चाव – चाह, उत्साह। बेखिये – देखिये। मेघडंमर – बड़ा छत्र। डोरि – रस्सी। डंम – ध्वनि। झळमळै – चमकते हैं। किरणां – रश्मियाँ, किरणों वाली छतरी। झिलंम – चमकते। तोग – ध्वज विशेष। पंजा – पंज्जा। सोभांण – शोभित। गंजि – समूह, विशेष। आगळी – अगाड़ी। संजि – सारे सामान से सज्जित। पमंगि – घोड़े। नटवानरंग – (?)। नरजान – पालकी। तखतरेबांन – (?)। अ्रड बहल – रथ विशेष। खड़सल बहल – रथाकृति वाहन। चळळवा महल – चलते हुए महल। गुराब – छोटी तोपें। सोर – बारूद। अराब – बड़ी तोपें। हजार पंचास – पच्चास हजार। गौळ – मध्य में स्थित सेना। चंदौल – पीठ भाग की सेना। बरंगाळ – दाहिने पार्श्व की सेना। विखि – देखी गई। तरंगाळ – वाम पार्श्व की सेना। लखि – लक्षित करें। पेखिये – देखिए। सिलहपोस – सिलहधारी, सिलहयुक्त। सहता – साथ में। सरोस – रोश में, सकोप।

येखिये धजा बहरख अपार। अति रंग रंग नाना प्रकार ।।
वोपिया गजां ऊपरि अनंत। बन-मास अनै फूलै बसंत ।।१४९।।

छंद छप्पय

साहि बिन्है दळ साजि, खड़ा रहिया खळ खंडण ।
रचिये किण विधि राड़ि, मने मसलत्ति मंडण ।।
मुणियौ 'साहि मुराद', मंडो बे फौज मरद्दां ।
दिली बेध दखिखया, राड़ि (य)हि वार रवद्दां ।।
पेखिये गाति पूरा प्रचंड, सूरा पूत सिपाहिका ।
रीस री आजि इजति रखो, अखो नाम अल्लाहिका ।।१५०।।

वचनिका

'औरंगसाहि' 'मुरादसाहि' येसौं फुरमाया ।
जंग की बखत नजीक आया ।।
येते सिताब दिन की खबरि मंगाई ।
केतेक दोड़ीया सिपाई ।।
सो घड़ावळो पास सै खबरि लाये ।
'औरंग साहि' की हजूरि आये ।।
सो खबरिदारों यों अरज कीनी ।
सात घड़ी दिन चढ़िया ये खबरि दीनी ।।१५१।।

येखिये – देखिए। धजा – ध्वज। बहरख – पताकाएँ। बनमास – चैत्र मास, वन में। फूलै – पुष्पित। बसंत – वसन्त ऋतु।

१५०. बिन्है – दोनों। खळ खंडण – शत्रुओं के नाश के लिए। किणविधि – किस विधि से। राड़ि – युद्ध। मने – मन में, चित्त में। मसलत्ति – गुप्त सलाह। मुणियौ – कहा। मंडो – रचो, विरचित करो। बेध – युद्ध। रवद्दां – मुसलमानों। गाति पूरा – भरे पूरे पुष्ट शरीर वाले। रीस री – क्रोध की। अखो – कहो, उच्चारण करो।

१५१. येसौं – ऐसा, इस प्रकार। फुरमाया – कहा। जंग – युद्ध। बखत – वक्त, समय। येते – इतने में। सिताब – शीघ्रता से। केतेक – कतिपय। घड़ावळो – समय सूचक घड़ियालें बजाने वालों से। कीनी – की। चढ़िया – चढ़ गया, बीत गया। दीनी – दी।

छंद दोहा

येकण बळ 'मुरादस्या', बळ येकण 'अवरंग'।
उभै अणी करि हल्लिया, जीपण आजिस जंग ॥१५२॥

छंद नीसांणी

फौज गजां धजां फरकि दहुवां दीठाळा।
वैळां पैलां येखिये करि कोट स काळा॥
सदी दुसदी मुर सदी चौ सदी चाळा।
पंच सदी खट सदियां सत सदी सम्हाळा॥
उभै हजारी ऊमरा मांझी मछराळा।
तीन हजारी तावरा केइक कांधाळा॥
च्यार हजारी चालिया भालिया भुजाळा।
पंच हजारी पेखिये सिरदार सिंघाळा॥
छोटा मोटा ऊमरा त्रहसें त्रंमाळा।
वाजीतर रसवीर का बाजै बिसराळा॥
असुरां सुरां आराण का तिण आजि न टाळा ॥१५३॥

छंद भुजंगी

जुध समय

रटै हिंदवां नांम सिव रांम रांम। दळां दख्खि बेहुवे बाजै दमांम॥
अला अला ऊचार कीधौ अभंगा। रवद्दां मरद्दां मुखे रब्ब रंगा॥

---

१५२. येकण बळ – एक ओर, एक सेना। अवरंग – औरंगजेब। उभै अणी – दो सेनाएँ। हल्लिया – चले, रवाना हुए। जीपण – जीतने।

१५३. फौज गजां धजां – गज सेनाओं की ध्वजाएँ। फरकि – फहराती हुई। दहुवां – दोनों पक्षों ने, औरंगजेब, मुराद और दारा शिकोह के पक्ष। दीठाळा – दिखाई दी, देखी गई। वैळां – इधर। पैलां – उधर। करि कोट – हाथियों के दुर्ग। सदी – ओहदे विशेष वाले। चाळा – उमंग वाले, युद्ध। सम्हाळा – शामिल। ऊमरा – उमराव। मछराळा – मत्सर वाले, योद्धा। कांधाळा – बलिष्ठ स्कंध, वीर। भुजाळा – बलवान् भुज वाले वीर। सिंघाळा – श्रेष्ठ वीर। त्रहसें – बजे। त्रंमाळा – नक्कारे, ताँबे के पैंदे वाले नक्कारे। बाजीतर – वाद्ययंत्र। रसबीर – वीर रस। बिसराळा – भयावह। असुरां-सुरां – हिन्दू-मुसलमानों। आराण – युद्ध। न टाळा – न टलने वाले।

१५४. दख्खि – देखकर। बेहुवे – दोनों पक्षों में। दमांम – ढ़ोल वाद्य। अभंगा – अभंग, निर्भय। रब्ब – ईश्वर।

ग्रसां बाण बेऊ दळां तणा ऊड़ै । बंबे भांण धूवांण मझ्झेस बूडं ।।
पलीता जगे नाळि सुत्रनाळि पग्गै । लगे पाखरां ऊपरै ऊक लग्गं ।।
दगे मग्ग पक्षी स ग्राकास दाहं । हुवे येमि ग्राकास खंडे उलाहं ।।
ग्रई तोप छूटै बडी व्है ग्रवाजं । गोई धमक्कै मेघ गयणाग गाजं ।।
ग्रनै गज खोटां स खौली ग्रंधारी । भणौ ग्रादुवां लंगरां खोलि भारी ।।
बजै राग सिंधूव जोधा बहस्सै । तटां कायरां सायरां ते तरस्सै ।।
छितं गीध पंखी(स) गयणाग छाये । ग्रनै ग्रच्छरी बैठि बीमांण ग्राये ।।
पड़ै गोळियां मार गोळां प्रहारं । तुटै बाण ग्रसमांण हूं जाणि तारं ।।
तीरां मार मांची सही दुतरफ्फां । फुटै कट्टि छाती स मौरां फरक्कां ।।
धमंधंम सेलां बहै व्है धमंका । चवं धारवारां स पारां चमंका ।।
सेलां बाहि ऊपाड़ता तेवि सूरां । पूरा जोध वेहरी गाते स पूरां ।।
सेलां घाव हू स्रोण री धार छूटै । फव्वारा बांध मद्धे ऊपटै ।।
खांपां छेक कीधी कितां जोध खग्गं । मिलै गूदरी जाणि बाजार मग्गं ।।
तुरक्कां कढ़ीस तेग मूठी स मेल्है । खेलै पूर ते रोज दाहाज खेल्है ।।
मुणे भीड़ भाराथ मत्ते स मच्ची । भड़ां ढाल खड़क्कै पड़ी ग्राणि पच्ची ।।

ग्रसां – इस तरह के । **बंबे** – ग्रमित, विम्ब । **भांण** – सूर्य । **धूवांण** – धुग्राँ । **बूडं** – डूबे, छिपे । **जगे** – जलें । **ऊक** – ग्रग्नि । **दगे** – जले । **मग्ग** – मार्ग । **ग्रई** – ऐसी । **गोई** – पृथ्वी । **गयणाग** – गगन । **खोटां** – खूटों से । **ग्रंधारी** – ग्राँखों की जाली । **ग्रादुवां** – प्रारम्भ की । **लंगरां** – हाथी के पदाभूषण । **बहस्सै** – उत्साहित हुए । **तटां** – किनारे । **सायरां** – समुद्रों के । **तरस्सै** – प्यासें, डरें । **छितं** – क्षिति, पृथ्वी । **गीध पंखी** – गृद्ध पक्षी । **गयणाग छाये** – ग्राकाश में फैल गए, ग्राकाश छा गया । **ग्रच्छरी** – ग्रप्सरा । **बीमांण** – विमान । **तुटै** – टूटें । **जाणि** – मानों । **तारं** – तारे, नक्षत्र । **मार माची** – प्रहारों की झड़ी लग गई । **कट्टि** – कटकर । **मौरां** – पीठ का शरीर । **फरक्कां** – बाजू, पार्श्व भाग । **धमंधमं** – ग्रावाज । **सेलां** – भाले । **बहै** – चले । **चवधार** – चार धार वाले भाले । **पारां** – उस ग्रोर, इधर से उधर । **ऊपाड़ता** – उठाते ही । **तेमि** – तैसे । **वेहरी** – (?) । **गाते स पूरां** – परिपूर्ण देह । **स्रोणरी** – लहू की । **छटै** – तेजी से चले । **ऊपटै**– बहे. चले । **खांपां छेक** – (मु०) लड़ने मरने को तत्पर, म्यान से बाहर । **खग्गं** – तलवारें । **गूदरी** – झंडियाँ, छोटी पताकाएँ । **कढ़ीस** – निकाली । **मूठी** – मूठ पर, मुष्टिका में । **समेल्है** – लें, पकड़ें । **रोजदाहाज** – रोजः, मुहर्रम पर । **खड़क्कै** – ध्वनि करे । **पच्ची** – (?) ।

झिलै सूर सामंत बाहै झटक्का । घड़ां ढ़ंग कुढ़ंग रा लै घटक्का ।।
गजां तणा कुंभाथळां सेल लग्गै । बळे धार हूं धार डंकार बग्गै ।।
कड़ी झड़ै जरद्दां तणी जोध कट्टै । झटक्का केइ ढाल हूंता उभट्टै ।।
बाहै येमि जमदाढ़ जोधा बिरत्ता । हुवै वार-हूपार हाथां सहत्ता ।।
बहै येमि गुरज्जां फरस्यां गुपत्ति । ढ़हैं जोध असवार जाये धरत्ति ।।
वहै येमि चूगा चपेटा स बाहं । गजां टूक पड़िया मचै गज्जगाहं ।।
बहै हूल धूपां जियानं बुगद्दां । गमा-गम माचै ही मार गद्दां ।।
नचे नारदं बीर वैताळ नच्चं । महाखेत ऊजेणि भाराथ मच्चै ।।
झड़ै सार हूं सार अणपार झड़िया । प्रथम पांच सै खेत राठौड़ पड़िया ।।
खरी बार जदि कायरां हुई खाटी । भड़ै तीन सै पड़े संग्राम भाटी ।।
पड़ै मोरछां ऊपरां भार पूरा । सिरदार रिणराव लड़ै सूरा ।।
'गाजिसाहिरौ' येमि 'जसराज' आयो । धके 'साहिमुराद' 'अवरंग' धायो ।।
दहूं अणी जुदी दहूं साहिजादा । बहैं बाण वे लाख मांचै स बादा ।।
हल्ला करै सुरताण बे चढ़ै हाथी । सूर सैद पाठांण मुगलांण साथी ।।
उरां करै 'जसराज' हल्ला करारौ । मुणै स ग्रहौ साहि सेना संधारौ ।।

झिलै – शोभा पा रहे हैं । झटक्का – प्रबल आघात । घटक्का – आनन्द, शरीर । तणा – का । कुंभाथळां – कुंभस्थल । सेल – भाले । बळे – फिर । धार हूं धार – शस्त्रों की धाराओं से धाराएँ । डंकार बग्गै – ध्वनि हुए । कड़ी झड़ै जरद्दां – कवचों की लोह कड़ियां गिर कर । झटक्का – प्रबल वार । उभटै – उछलें । जमदाढ़ – कटार । बिरत्ता – वीरतायुक्त, लीन । हाथा सहत्ता – हत्थे सहित । गुरज्जा – गुर्ज, मुग्दराकृति शस्त्र । फरस्यां – परशु शस्त्र । गुपत्ति – गुप्ति शस्त्र । ढ़हैं – गिर पड़ते हैं । जाये – जा कर । चूगा – चुग्गा नामक तलवार । चपेटा स बाहं – भुजाओं की थप्पड़ें । गज्जगाहं – युद्ध । हूल – तलवार का प्रहार विशेष । धूपां – तलवारें । जियानं – जिस प्रकार । बुगद्दां – शस्त्र विशेष । गमागम – घमाघम की ध्वनि, अनवरत । गद्दां – गदा नाम का शस्त्र । भाराथ – युद्ध । झड़ै – टकराकर गिरें । सार हूं सार – लोहे से लोहा । खेत – रणक्षेत्र । खरी बार – परीक्षा के असली समय । जदि – जब । हुई खाटी – खट्टापन आ गया, संकटापन्न । संग्राम – युद्ध में । भाटी – भाटी राजपूत । भारपूरां – जबरदस्त वजन, पूरी आपत्ति । गाजिसाहिरौ – महाराजा गजसिंह का पुत्र । धके – सामने । धायो – वढ़ा, चला । दहू-अणी – दोनों सेना । जुदी – अलग-अलग । बहैं – चलते हैं । सबादा – विशेष विवाद । हल्ला करै – हमल्ला करके, वीरोत्तेजक घोष कर । बे – दो । उरां – इस ओर, इधर । ग्रहौ – पकड़ो । संधारौ – संहार करो ।

चमंरे ढुळंताव साम्हां चलाया । अनै ऊरड़ै बेऊ साहि आया ।।
प्रळैकार रा जांणि सामुद्र पूरां । हूवै सेनि गरगाफ मांझे हिलूरां ।।
हुवै हाथियां हूंत चवदंत हाथी । पड़ै चाचरा फुट्टि दांतां परांथी ।।
लड़ै येक भग्गै यकं लार लग्गै । अड़ै बज्र हूं जाय मैनाक अग्गै ।।
कटैं केई भरसूंडि मारै चिकारं । पड़ै पीलवानं धजां अपारं ।।
गजे बाण गोळा आराबां स गज्जे । भद्रं-जातियां स किते मद्द भंज्जे ।।
महा जोध जोधां मिळै माचि मारं । घड़ां बेहड़ां तेहड़ां तूटि धारं ।।
धरा बासतां धूवळां नाद ढंक्के । झिलै झिल्लरी देवद्वारे झणंक्के ।।
पड़ै जूजुवा टूक यूं हाथ पावं । बहै श्रोणितं नाळ खाळं बहावं ।।
पड़ै सीस रुंडं नचै रुंड प्रेतं । खिलै जुग्गनी खप्र लै मझे खेतं ।।
पड़ै लंक हूं टूटि जोधा अनंतं । कलेजं स बूकं बिसथरी अंतं ।।
पड़ै फेफरं गूद नै मेद फूटै । तिनं ऊपरां गिभझणी झूंड तूटै ।।
घटां घाव लग्गा स घूमै घुरक्कै । फटा सीस फूटा स केई फरक्कै ।।
उड़ी खोपरी मझिझ भेजो स येखी । दहेड़ी जांणै ढांकणी खोलि देखी ।।

चमंरे ढुळंताव – चँवर झलते हुए। **साम्हां चलाया** – सामने बढ़े। **ऊरड़ै** – उत्साहित हो, साहसकर। **प्रळैकार रा** – प्रलयकाल का। **जांणि** – मानो। **सामुद्र पूरां** – पूर्ण तूफान पर आए हुए समुद्र। **गरगाफ** – गर्क। **हिलूरां** – लहरें। **हूंत** – से। **चवदंत** – चार दांत, मुकाबिला, टक्कर। **चाचरा** – मस्तक। **फुट्टि** – विदीर्ण होकर। **दांतां परांथी** – दन्तों से अलग, दन्तों से ऊपर। **लार** – पीछे। **बज्रहूं जाय** – वज्रास्त्र से जाकर। **भरसूंडि** – अशुण्ड। **मारै चिकारं** – चिंग्घाड़ करते हैं। **पीलवानं** – महावत। **धजा अपारं** – असंख्य ध्वजाएँ। **गजे** – गर्जती हैं। **आराबां** – तोपें। **भद्रजातियां** – हाथी। **किते** – कितने ही। **मद्द भंज्जै** – मद नष्ट हो जाता हैं। **मिळै** – मिले, भिड़े। **माचि मारं** – अनवरत प्रहार। **धड़ां** – शरीरों। **बेहड़ा तेहड़ां** – दुगुनी-तिगनी। **तूटि धारं** – शस्त्रों की धारें टूट कर। **धूवळा** – तोपें। **ढंकै** – छिपे। **झिलै** – बजे। **झिल्लरी** – झालर। **देवद्वारे** – देव मन्दिर। **झणंके** – बजे। **जूजुवा** – अलग हो कर, अलग-अलग। **यूं** – यों। **नाळ खाळं** – नाले-खाले। **बहावं** – बहते हैं। **रुंडं** – धड़। **खिलं** – खेले, प्रसन्नता प्रकट करे। **खप्र** – खप्पर, पात्र। **मझे खेतं** – रणक्षेत्र में। **लंक** – कटि, कमर। **फेफरं** – फेंफड़े। **गूद** – मज्जा युक्त मांस। **मेद** – चर्बी। **तिनं** – उन। **गिद्धझणी झूंड** – गृद्ध समूह। **तूटै** – टूट पड़ते हैं। **घटां** – शरीरों पर। **घुरक्कै** – घुरघुर की आवाज करें। **फरक्कै** – फांके, टुकड़े। **भेजो** – मस्तक की मज्जा। **दहेड़ी** – दधि की मटकी। **ढांकणी** – ढक्कन।

अनै छातियां घाव केतां स आगे। पुळैबा लजे जोध लंकाळ पागे।।
कितां छातियां घाव लागे कटारी। बणै राज आवास जाणै स बारी।।
सूरा पड़ै ऊठै लोह साहैं। बड़ां मैंगळां रिणगळां सीस बाहैं।।
पड़ै हैमरां पाखरां तूटि पासै। निजोड़ै पगां फीच ते केई नासै।।
अबै पड़ै नाहीं कमंध पांव आघा। भड़ां राचतां कायरां धीर भागा।।
अबै कांमि आया तियां नामं आखूं। भड़ै जोध भागा जियां नाम भाखूं।।
ठिकाणे ठिकाणे रहे जुद्ध ठाढ़ा। गाढ़ा पांव रोपै अनै आप गाढ़ा।।१५४।।

छन्द दोहा

भड़ि भागा कमधज्ज भड़, लागा साहि स लार।
पग मांडे रहिया स पग, सल हूं जे सिरदार।।१५५।।

छन्द सोरठा

'रायसिंघ' 'जसराज', चंदरावत कूरम चले।
'अजण' न भाजै आज, बढ़ि पड़सी बानैत उत।।१५६।।

आखाड़ै अवनाड़, बाबाड़ै ऊभो बिकट।
पुळै न 'अजण' पहाड़, बढ़ि पड़सी बानैत उत।।१५७।

केतां स – कितने ही के। पुळैबा – भागने में। लंकाळ पागे – सिंह की भांति स्थिर पैर, सिंह की तरह अडिग। राज आवास – राजप्रासाद। बारी – मोरी, खिड़की। लोह साहैं – शस्त्र उठाते हैं। मैंगळां – हाथियों के। रिणगळां – रणमस्त। बाहैं – प्रहार करते हैं। हैमरां पाखरां – घोड़ों के कवच। पासै – पार्श्व में, पास में। निजोड़ै – कटे हुए। फींच – जंघा का पिछला भाग। कमंध – राठौड़, महाराजा जसवन्तसिंह के। आघा – अगाड़ी। राचतां – अनुरक्त होते। धीर – धैर्य, स्थिरता। कांमि आया – मारे गये। तियां – उनके। जियां – जिनके। ठाढ़ा – दृढ़, स्थिर, खड़े। गाढ़ा – दृढ़ता से। रोपै – स्थिर किये। आप – स्वयं।

१५५. लागा – लगे। साहि – शाहजादे। लार – पीछे। पग मांडे – पैर रोपे। सल – असल, दृढ़ वीर। जे – जो, वे।

१५६. अजण – अर्जुन गौड़। बढ़ि – आगे बढ़, कट कर। बानैत – वीरता का चिन्ह विशेष।

१५७. आखाड़ै – युद्ध में। अवनाड़ – अनम्र। बाबाड़ै – ललकारे। ऊभो – खड़ा। पुळै न – चले नहीं। बानैत – वीरता सूचक चिन्ह। उत – वहाँ, पुत्र।

छन्द छप्पय

भड़ै आजि भांजियां, भाग मो आजि भ्रकुटं ।
आजि कांमि आवस्यां, आजि थूरण गज थट्टं ।।
आजि दिल्ली ऊथळी, आजि 'अवरंग' उमंगे ।
आजि आणंद अपछरां, पतंग खड़ै न पंगे ।।
अबरी आजि बरस्यां अवसि, सूर कंवरि नौ संचरां ।
रवि मंडळ भेदि अति लोक तजि, क्रस्ण लोक क्रीड़ा करां ।।१५८।।

बाप स बामी-बंध, कंध अवकंध कहांणो ।
'खांनजिहां' भंजियो, पच्छधर बलख पछांणो ।।
येह सीख ऊचरै, भिड़ै कुळ रीति न भज्जण ।
परखे पूत सपूत, जये मो नाम अरज्जण ।।
ऊजेणि करूं कुरखेत जिम, धारा-तीरथ ऊधरूं ।
हिवाळै गळू नहीं हमरकै, ध्यांन जोति मनसा धरूं ।।१५९।।

गज केसरि ब्रद गौड़, अहळ ब्रद गौड़ बखांणै ।
गिणे सूर ब्रद गौड़, करण ब्रद गौड़ कहांणै ।।
गढ़ राखण ब्रद गौड़, गढ़ां गाहण ब्रद गौड़ं ।
गहर धीर ब्रद गौड़, अनै ब्रद गौड़ अरोड़ं ।।

---

१५८. भ्रकुटं – मस्तक । आवस्यां – आयेंगे । थूरण – नाश कर । गजथट्टं – गज सेना । ऊथळी – डगमगा गई, उलट-पलट हो गई । उमंगे – उत्साह बढ़ा । अपछरां – अप्सराएँ । पतंग – सूर्य । खड़ै – चलावे । पंगे – अरुण, सूर्य का सारथी जो पंगु है । अबरी – अविवाहित, अविजित । बरस्यां – वरेंगे । नौ – नहीं । संचरां – जायेंगे । रविमंडळ – रविमण्डल । भेदि – भेद कर । क्रस्ण-लोक – वैकुण्ठ लोक । क्रीड़ा – केलि ।

१५९. बामी बंध – बाँए ओर पेच लगा कर पगड़ी बाँधने वाला वीर । अवकंध – दृढ़ स्कन्ध वीर । कहांणो – कहा जाने वाला । भंजियो – नाश कर दिया । पच्छ-धर – पक्षधर । बलख – बल्खराज्य । भज्जण – भागने की । परखे – परीक्षा कर । जये – जन्मसे ही । अरज्जण – अर्जुन । कुरखेत – कुरुक्षेत्र । धारा तीरथ – तलवार धारा रूपी तीर्थ, युद्ध । हिवाळै – हिमालय । गळू – गलने की क्रिया का भाव । हमरकै – इस बार ।

१६०. ब्रद – विरुद । अहळ – अविचल, युद्ध में स्थिर । करण – दानदाता का, कर्ण का । गाहण – ध्वस्त करने वाला । अरोड़ं – न रुकने वाला, बलवान् ।

ओहट्टमाल ब्रद गौड़ कहि येक, बळ गौड़ समत्थ कहै।
कवित्त मांहि ब्रद आंणियां, 'बीरभद्र' येता बहै ॥१६०॥

छन्द दोहा

अणहळ करां उदार, खैराड़ो अणहळ खत्री।
मेर सरूप 'मुरारि', जुध मचियां 'जसराज' उत ॥१६१॥

छन्द नीसांणी

पग मंडै रहिया सपौह अणभंग असंका।
'रतनागर' राठौड़ सा बढ़ि कमळे बंका ॥
दढ़ियां पांव दयाळदास लूटावण लंका।
सुणि भाजै न 'सुजाणसिंघ' धूवाळ धमंक्का ॥
फबियो नखि कुंवर 'फतो' मांझी माझरक्का।
सकतावत 'केहरी' सुथिर आराणि अढ़ंका ॥
'रुकमांगद' सुरताण रै जुद्ध रूप जमंका।
'राघवदे' झालो रणे उपजै न अतंका ॥
'गोवरधन' गळियार रिण उबारण अंका।
भड़ि 'बीठळ' भाजै नहीं पुणि जोधपुरंका ॥
खगबाहो 'अफितारखांन' मोहो मौड़ मतंका ॥१६२॥

छन्द त्रोटक

सह जुद्ध पड़ै खत्रवाट सतं। मंडि मांडण पांव तितां परतं ॥

ओहट्टमाल – अविचल वीर। समत्थ – समर्थ। आंणियां – लाया, कहे गए। येता बहै – इतने ग्रहण कर चले।

१६१. अणहळ – अटल। करां – हाथों का। मेर सरूप – सुमेरुगिरि सदृश्य।

१६२. सपौह – राजा। रतनागर – रतनसिंह। कमळे – मस्तक। दढ़ियां पांव – दृढ़ पैर, अडिग। धूवाळ – धूम्रमाला, तोपें। धमंक्का – आवाज। नखि – समीप। माझरक्कां – गर्वधारी। आराणि – युद्ध। अढ़ंका – जबरदस्त। जमंका – यम का। अतंका – आतंक। गळियार – उन्मत्त, मस्त। अंकां – अक्षर, अंक, कीर्ति। पुणि – कहो। खगबाहो – तलवार चलाने वाला। मोहो मौड़ – मुंह फिराने वाला। मतंका – हाथियों का।

१६३. खत्रवाट – क्षत्रियत्व। सतं – शौर्य वाले। परतं – प्रत्यक्ष, सप्रतिज्ञ।

बस तेणि स धारिय ते बिरथं । 'मुकंदेस' मंडे पग सेस मथं ।।
मंडिया पग 'मोहणसिंघ' मंडं । छळि साहि अनै ध्रम केमि छडं ।।
मंडिया पग 'सिंघ जूझार' महं । दळ लाकड़ पावक जेमि दहं ।।
'कन्हीरांम' मंडे पग जोध कन्हं । बिरचे करि सींह गयंद बन्हं ।।
पिड़ि मंडि 'किसोवर सिंघ' पगं । खित मारं झालिये जोध खगं ।।१६३।।

छन्द छप्पय

'मुकंदसिंघ' पग मंडे, अनै चहुँवै भड़ आगै ।
पुणि 'कलियांण' पमार, बणै केसरिये बागै ।।
रिण 'दळथंभ' राठौड़, जिसौ राव निडर स जाणै ।
बणि 'हरियंद' राव भाट, विमळ बौल व्रद बांणै ।।
सामंत अवर 'मुकंदेस' रा, करण आजि अंगद कळा ।
बरणाव जियां बेह बेह करो, येक येक सौं आगळा ।।१६४।।

छन्द दोहा

पग हाडा जड़िया पनंग, अड़िया सिर असमांण ।
ऊपड़िया कर आवधां, खड़िया दळ खुरसांण ।।१६५।।

बिरथं – (?) । सेस मथं – शेषनाग के सिर पर । छळि – युद्ध । केमि – किस प्रकार । छडं – त्यागें । लाकड़ – लकड़ी । पावक – अग्नि । दहं – जलती है । कन्हं – पास, वीर कन्ह की भाँति । बिरचे – कोप कर के विचरण करे । करि – हाथी । गयंद बन्हं – कदली बन में । पिड़ि – युद्ध में । खितमारं – राजा, पृथ्वी को जीतने वाला । झालिये – लिए हुए । खगं – तलवार ।

१६४. पुणि – पुनः, फिर । केसरिये बागै – केशर के रंग में रंगा बागा वस्त्र । जिसौ – जैसा । राव भाट – राजाओं महाराजाओं तथा क्षत्रिय मात्र के विरुद वर्णन करने वाली जाति विशेष । बौल – बोलने वाली । व्रद बांणै – विरुद वाणी, प्रशंसा-काव्य । जियां – जिनके । बेह बेह – तरह तरह से, बार-बार । आगळा – बढ़चढ़ कर, आगे ।

१६५. पनंग – शेष नाग । अड़िया – लगे हुए । ऊपड़िया – उठाए हुए । आवधां – हथियारों से । खड़िया – चले । खुरसांण – मुसलमान ।

छंद ताटंक

खड़ि सेन अपार अंधार, खरंडा मांझी साहि 'मुराद' ।
धखि बीरर धोर बजे रण धूहळ, बेऊ दळां मचि बाद ॥
मिळि घोर नगार हींसार तुरंगां, मांची अमेळा मेळ ।
मिळि बाण कवाण गुणांथिय मेळा, खग खांपां हूं ऊखेळ ॥१६६॥

छंद दोहा

खग खांपा हूं ऊखेळ, अड़े अराब अपार ।
बाण मुराड़ अंगार बड़, धूंवा रै अंधार ॥१६७॥

छंद ताटंक

धूंवा रै अंधार धिखाणां, गोळा नाळि गरज्जि ।
पहाड़ ऊजाड़ बिभाड़ परद्दळ, गौम मिळै धज गज्जि ॥
तड़ मार तड़क्क भड़क्क तुपकां, गोळीयां गणणांव ।
फर पत्त जहीं नर पाखर फूटै, बाज सरभ्भळ बाव ॥१६८॥

छंद दोहा

बाव सरभ्भल बाजतां, मचियौ रिण घमसांण ।
गुड़ै सिलारां गौड़ियां, पड़ै सैद पाठांण ॥१६९॥

छंद ताटंक

पड़ै सैद पाठांण जवांण अपार, सेल सुरंगा साथ ।
रिण हाडो राव दुबाह रचतां, हाथियां पड़ि हाथ ॥

---

१६६. खरंडा – घोड़ा, मुसलमान, सेना । धखि – धधकते हुए । धूहळ – (?) । बाद – युद्ध, विवाद । नगार – नगारे । हींसार – हिनहिनाहट । गुणांथिय – प्रत्यंचाएं । खांपां हूं – म्यानों से । ऊखेळ – युद्ध ।

१६७. अराब – तोपों के । मुराड़ – इंधन आदि का ढ़ेर । धूंवा रै – धुएं के ।

१६८. धिखाणा – प्रज्वलित । नाळि – तोपें । बिभाड़ – नाश कर । गौम – आकाश में, पृथ्वी पर । धज गज्जि – ध्वजाएं और गर्जन । तड़ मार – तड़ तड़ प्रहार ध्वनि । सरझ्झल – तीरों का समूह । बाव – वायु ।

१६९. गुड़ै सिलारां गौड़िया – हाथियों के जोड़े लुढ़कते हैं, सिलह से सजे हुए हाथी गिरते हैं ।

१७०. सेल – भाले । दुबाह – वीर । रचतां – करते ।

कुंभाथळ ऊजळदंत कटाणां, डोलैह सूंडा डंड ।
पग नेवर घूघर चंमर पाखर, खंड किया बिब खंड ।।१७०।।

छंद दोहा

खंड खंड पड़िया खळां, रण भौमे रळियाह ।
धड़ हूं धड़ बागा धका, भड़ हूं भड़ भिड़ियाह ।।१७१।।

छंद ताटंक

भिड़िया भड़ हूं भड़ भंभड़ भाहर, धज्जबड़ां वहिधार ।
बढ़ि कोपर टोपर कंध बग्गत्तर, अस्सि अनै असवार ।।
तड़फत्त भड़ां धड़ टूटै तंडळ, बढ़ि संधाण बंधाण ।
फबिया रत घट जांणै फूटा, रंग मजीठ मंचाण ।।१७२।।

छंद दोहा

रंग मजीठे रळतळे, ऊकळियौ आराण ।
बंधव पांचौं बौळिया, काळेजळि केकाण ।।१७३।।

छंद ताटंक

केकाण जवांण धसै जळ काळे, मांझी सूर 'मुकंद' ।
महरांण 'झूझार' 'कन्हीरांम' जेहा, रण केहरि राजंद ।।
अवनाड़ बिछाड़ पछाड़ असग्गां, सूर बखांणै सांच ।
खळ खंडण मंडण बीर अखाड़े, पांडव जेहा पांच ।।१७४।।

डोलैह – डोलते हैं, चलायमान होते हैं । सूंडा डंड – शुण्डा दण्ड । बिब – दो दो ।
१७१. रळियाह – मिल गए । बागा – बजा, लगा । भिड़ियाह – भिड़े ।
१७२. भंभड़ भाहर – बड़े और विकट । धज्ज बड़ां – बड़ी तलवारें, खांडे । बढ़ि – कट कर । कोपर – कोहनी । टोपर – लोहे का टोप । अस्सि – अश्व । तंडळ – टुकड़े । संधाण – संधि-स्थलों के । बंधाण – बन्धन, जोड़ । रत – रक्त । मजीठे – मजिष्ठ ।
१७३. रळतळ – फैल गया । ऊकळियौ – तेज होने से । बौळिया – डुबा दिये । काळेजळि – रक्त में । केकाण – घोड़े ।
१७४. धसै – घुसे, पैठे । सूर – शूर । महरांण – महार्णव, महासागर । जेहा – जैसे । अवनाड़ – अवनत । बिछाड़ – भयंकर वीर । असग्गां – असम्बन्धी, वैरी । अखाड़े – युद्धस्थल । जेहा – जैसे, सदृश ।

छंद दोहा

पांडव जेहा पांच पुणि, जाडै दळ जाडाह ।
लड़िया आडै लोहड़ै, हैवै सो हाडाह ।।१७५।।

छंद ताटंक

हैवै पति हाडा मांडी हुचक, जांगी खंभ उजेण ।
महि साहि 'मुराद' कंठीरण माता, ताता हैहय तेण ।।
मुड़ता आफेळ उछाळ भिड़ज्जां, भाभे बाह ऊभेल ।
गज ठेल गया, अणठेल गुड़ावै, सूर समाहें सेल ।।१७६।।

छंद छप्पय

अध फौज मुंह अग्गै, पड़ि अध फौज स पूठी ।
अध फौज आखती, अध पाखती स ऊठी ।।
निडर बीच संभरी, नरेस हैवै पति हेरै ।
बंधि रोहियौ बराह, घड़ा दसहौं दिस घेरै ।।
लागै तिम तिम लोहड़ा, लोयण नह बिमना लसै ।
मंछार जंहीं हाडौ 'मुकंद', सार धार साम्हौ घसै ।।१७७।।

---

१७५. जाडै दळ – घने दल में । जाडाह – मजबूत, घनें । आडै लोहड़ै – तिरछी धाराओं में, विकट प्रहारों में । हैवै – बादशाह के लिए, अश्वपति ।

१७६. मांडी – कीं, रची । हुचक – युद्ध, टक्कर । जांगी – युद्ध, वाद्य । कंठीरण – सिंह । माता-ताता – मोटे ताजे, पुष्ट और तेज । हैहय – घोड़े । आफेळ – आस्फाल, टक्कर । उलाळ – उलट कर, पछाड़ कर । भिड़ज्जां – घोड़े । भाभे – बहुत, अधिक । बाह – भुजा । ऊभेल – उभेल, पकड़ कर । गजठेल – शक्तिशाली, हाथियों को धकेल कर । अणठेल – जो धकेले नहीं जा सकते थे । गुड़ावै – गुड़का दिये । समाहें – उठा कर, सम्हाल कर ।

१७७. अध फौज – आधी सेना । अग्गै – अगाड़ी । पूठी – पीठ पीछे । आखती – अगल । पाखती – पार्श्व, बगल । ऊठी – उधर, उस ओर । संभरी नरेस – राव मुकंदसिंह । हेरै – तलाश करे । बंधि – बंधन में । रोहियौ – रोका गया । बराह – शूकर । घड़ा – सेना । घेरै – घेरा, मण्डल । तिमतिम – जैसे जैसे, त्यों त्यों । लोहड़ा – शस्त्र । लोयण – नेत्र । मंछार जंहीं – बड़े मच्छ की तरह ।

छंद बिराज

धसे सार धारं। मुखे मार मारं ॥
बकारै बहस्सै। धका मारि धस्सै ॥
झड़ै धू झटक्कां। बटक्कां बटक्कां ॥
जमंदाढ़ जोरै। फरां ऊर फोरै ॥
गुरज्जां गंमकां। धमंकां धमंकां ॥
लपेटा स लग्गै। बळां मार बग्गै ॥
चमू मार चावा। दळां मांचि दावा ॥
फरस्सी फबंती। गदावै गुपत्ती ॥
करां वै करद्दां। मरद्दां मरद्दां ॥
पड़े लट्ट-चट्टं। बिकट्टं बिकट्टं ॥
गळे बांह गथ्थं। बढ़ैं लोथि बथ्थं ॥
कचं आच रख्खं। बणे दाव बख्खं ॥
मंडे मत्तिवाळं। क ग्रहे कलाळं ॥
'मुकदे' मरट्टं। ठेलै गज थट्टं ॥
'मुरादं' स मंडे। झाझा रोपि झंडे ॥
घणै घट्ट घावं। असे रूप आवं ॥
हठी रूप हाडो। जाडि सेनि जाडो ॥
मुंहामूंह मेळै। भिड़ज्जा स भेळै ॥
सेलां सूर साहैं। गड़ां घड़ां गाहैं ॥
किरम्माळ काटं। पड़ै तूटि पाटं ॥
आवधे अपारं। सहै बाहि सारं ॥१७८॥

---

१७८. सार धारं – शस्त्रों की धाराओं में। बहस्सै – उत्साहित होकर। झड़ै – गिरें। धू – मस्तक। झटक्कां – प्रहारों से। बटक्का – टुकड़े। फरां ऊर – हृदय और बाहु का भाग। गुरज्जां – गदाओं के। करद्दां – तलवारों के। लट्ट चट्टं – गुत्थमगुत्थ होकर। गळे बांह गथ्थं – गल बांह डाल कर, कण्ठालिंगन होकर। बढ़ैं – कटे। लोथिबथ्थं – लथोपथ होकर। कचं आच – काछ में हाथ डाल कर, सिर के केश पकड़ कर। बख्खं – काबू में। क – मानों। कलाळं – कलाल, शराब विक्रेता। मरट्टं – गर्व, झुण्ड। ठेलै – धकेलें। झाझा – दृढ़, गहरे। झंडे – ध्वज। घणै – बहुत। घट्ट – शरीर। असे – ऐसे। जाडि – धनी। मुंहामंह – मुंह से मुंह, सामने आकर। भेळै – भिड़ाये, मिलाये। गड़ां घड़ां – सेनाओं से सेनाओं को किरम्माळ – तलवार। सार – शस्त्रा-घात, तलवार।

छंद नीसांणी

सह आवध बाहैं सहैं भड़ पांच भुजाळा ।
तण 'मधकर' नाहर जिसा थाहर रखवाळा ।।
बाहर दिली बहसिया जाहर जम जाळा ।
पंचाहर पाड़ै पिसण साथ सूंडाळा ।।
मांहों मिळि 'साह मुराद' सों बदि बाद वडाळा ।
कनड़ा पायक कचरिया केइ बहसे काळा ।।
च्यार पहर नहिं चालिया रथ दणियर वाळा ।
भागे दळ भागा नहीं चहुंवाण सचाळा ।।
वो 'मुकंदा' 'मधुसाह' रा पड़िया पांचाळा ।।१७९।।

छंद नीसांणी

'मोहणसीघ' पड़िया मरद भड़ पाड़ि भयंकर ।
मांझी 'साहि मुराद' गाळे रिण गूमर ।।
उजवाळे व्रद आप रा बाप रा बरंबर ।
अते आखती आवती उमाही अपछर ।।
नारद आवै नाचता सिर कारण संकर ।
केइ बरमाळ बणावती केइ करती चंमर ।।
चौसठि रुहिर चाखती पीती भरि खप्पर ।
अंत तंत ले उडंती यम ग्रीझणि अंमर ।।

---

१७९. बाहैं – चलाते । सहैं – सहन करते । भड़ – भट । तण – तनय, पुत्र । मधकर – माधवसिंह के । थाहर – सिंह कन्दरा । बाहर – रक्षार्थ । बहसिया – जोश में आए । जाहर – प्रकट । पंचाहर – सिंह । पाड़ै – गिरावें । पिसण – वैरी । सूंडाळा – हाथी । बदि बाद – जबरदस्ती, विवाद कर, बढ़चढ़कर । कनड़ा – पास रहने वाला । पायक – सेवक, पदाति । कचरिया – नष्ट किए । काळा – वीर । दणियर वाळा – सूर्य का । सचाळा – सच्चे वीर । मधुसाह रा – माधवसिंह का । पांचाळा – पांचोंभाई ।

१८०. पाड़ि – गिरा कर । गाळे – गलाये, मिटाएं । गूमर – घमण्ड, गर्व । आप रा – अपना । बाप रा – पिता के । बरंबर – बराबर । अते – इतने में । आखती– अधीर, कहती हुई । उमाही – उत्साह युक्त, उल्लासमय । बरमाळ – वर-माला । बणावती – बनाती हुई, पिरोती । चौसठि – चौसठ युद्ध देवियाँ । रुहिर – रुधिर । चाखती – चखती हुई, स्वाद लेती हुई । पीती – पान करती । अंत तंत – आंतों के तन्तु । ग्रीझणि – गृद्धनी । अंमर – आकाश में ।

जाणै अजब खिलाड़ की गुड़ि उड़ि अदोफर ।
वड़ौ तमासौ बिसथरें विच समरे वंमर ।।
मिळिया 'मोहणसिंघ' मधि अमरायण अंमर ।।१८०।।

छंद दोहा

अमरायण भिळिया अमर, अमरां किय अधिकार ।
झाड़ै खग जाडा झंडां, उड़ि पड़िया 'भूझार' ।।१८१।।

छंद नीसांणी

झड़ि पड़तै 'भूझारसिंघ' अड़िया भूझारं ।
है भड़ गजां चागाहट पड़िया अणपारं ।।
धारां कुंतारां धिपै बढ़ि पड़ै बगारं ।
वरांपारां येखिजै वारा चौबारं ।।
धाव सूरां पूरां घटां नटां उणिहारं ।
विधि करि भगळ वणावियो बहो रूप बंबारं ।।
धड़ माथा तवि जूजुवा धड़ वाहैं धारं ।
वोयण लारां आवतां आंतां उळझारं ।।
जड़िया जांणि जंजीर गति खुटिया खंभारं ।
तंत मंत पंचै तणा सिर झल्ले सारं ।।

गुड़ी – पतंग । अदोफर – मध्य आकाश में । विसथरें – फैले । समरे–समर में । वंमर – महादेव । अमरायण – अमरपुर में । अंमर – देवता, सुरगण, आकाश में ।

१८१. अमरां – सुरों पर । झाड़ै – पछाटें, प्रहार कर । जाड़ा – घनें, गहरे ।

१८२. झड़ि – झड़ कर, कट कर । अड़िया – अड़े, सामने रुपे । है – घोड़े । चागाहट – चगताई वंश के मुसलमानों के, मंथन किए हुए । कुंतारां – भालों से । धिपै – लड़-खड़ाते । बगारं – बड़े छेद, मोटे घाव । वारां पारां – इधर से उधर पार । वारां – प्रहारों से, द्वार । चौंबारं – चार द्वारे । घटां – शरीरों । नटां – नटों के । उणिहारं – समान आकृति । विधि करि – विधाता के हाथ से, विधि सहित । भगळ – इन्द्रजाल, भगल विद्या । बंबारं – घाव, छेद । तवि – कह, तब । वोयण – पैर । लारां – पीछे । आंतां – आंतें । उळझारं – उलझती । खुटिया – खुले । खंभारां – खंभों से, स्तंभों से । तंत मंत – ठीक समय । पंचै तणा – पांचों के । झल्ले – झेलने की क्रिया का भाव । सारं – अस्त्र-शस्त्र ।

बाकारे माथा बहसि राता बबकारं ।
तत्ता जांणि मजीठ का रण ढुळे रंगारं ।।
सुत 'मधुसाह' दुबाह सुज सैंफळि सिरदारं ।
जुड़ी मूकेती जोरवर ले लाडो लारं ।।
मांडो हाडां मांणवी मिळि जोति मझारं ।।१८२।।

छंद दोहा

जोति मझारें जोरवर, झळमळियौ 'झूझार' ।
जड़े ध्यान जिण जोति री, सिव ब्रह्मा मुनिसार ।।१८३।।

बटका बटका बीथरैं, तटकां झटकां तांन ।
घटका बिढ़ि पड़िया घणां, कुटका कुटका 'कांन' ।।१८४।।

घटका बिढ़ि पड़िया घणां, बटका वोपै बीस ।
कुटका कुटका 'केहरी', जोड़वियौ जगदीस ।।१८५।।

जुध अरजनजी गौड़ को

छंद भाखड़ी

'अरजन' उरड़ै जीक, 'औरंग' आहुड़ै ।
बजे न बाहुड़ै जी, घाव त्रबधि घड़ै ।।

राता – लाल । बबकारं – बड़े छिद्र, गहरे लाल । ढुळे – लुढ़क कर, बहे । रंगारं – रंगरेज । सैंफळि – युद्ध । जुड़ी मूकेती – बहुतेरी एकत्रित हुई । लाडी – दुल्हिन, अप्सरा । लारं – पीछे, साथ । मांडो – जबरदस्ती से । मांणवी – उपभोग की, मानवी । मिळि – मिली । मंझारं – में, मध्य ।

१८३. झळमळियौ – दैदिप्यमान हुआ । मुनिसार – श्रेष्ठ मुनि ।

१८४. बीथरैं – फैले । तटकां – तट तट की ध्वनि । झटकां – प्रहार । घटका – शरीर का । बिढ़ – कट कर, लड़ कर । कुटका कुटका – छोटे छोटे टुकड़े । कान – कन्हीराम के ।

१८५. बटका – टुकड़े । वोपै – शोभा पाते हैं । जोड़वियौ – जोड़े ।

१८६. अरजन – अर्जुन गौड़ । उरड़े – जोश करे, उत्साह से आगे बढ़े । औरंग – औरंगजेब । बजे न बाहुड़ै – न भागे, न पीछे मुड़े । त्रबधि – तीन विधि से ।

घड़ बहै ग्रबधि येमि, घावां सार झड़ि सोंक ।
धड़ होय खंड बिहंड धारां, लह सके मुर लोक ।।
चवधार बाह दुबाह चवरंग, झिलै बाहै झोक ।
ऊपटै चळवळ धार येहो, करे जोगणि वोक ।।

'ग्ररजन' उरड़ै जीक, 'ग्रोरंग' ग्राहुड़ै ।
बजे न बाहुड़ै जी, घाव ग्रवधि घड़ै ।।

बेबाह लाल दुझाळ बजियौ, वोरतौ 'ग्रजमाल' ।
पाड़तौ सैदां पठांणां, ढ़ाहतौ गज ढ़ाल ।।
मुख चढ़ैं जेतां पड़ै माथा, दूठ कूठ दुडाळ ।
धैंधींग माता जेमि धसियौ, साहिजादां साल ।।

'ग्ररजन' उरड़ै जीक, 'ग्रोरंग' ग्राहुड़ै ।
बजे न बाहुड़ै जी, घाव ग्रवधि घड़ै ।।

जुध 'बीरभद्र' बीर जेहो, धसे साम्ही धार ।
झूझार रिण वाहतौ झटका, संपेखि सिरदार ।।
ग्रसवार ग्रसि परिहार ग्रावध, मैंगळां सिरमार ।
तिण बार ग्रछर ग्रपार राती, हिंडूळै गळिहार ।।

'ग्ररजन' उरड़ै जीक, 'ग्रोरंग' ग्राहुड़ै ।
बजे न बाहुड़ै जी, घाव ग्रवधि घड़ै ।।

सोंक – ग्रावाज । **मुरलोक** – तीन लोक । **चवधार** – भाला । **चवरंग** – सेना । **झिलै** – झेलते हैं, सहन करते हैं । **झोक** – जोश में, प्रहार करते हैं । **ऊपटै** – वेग से बहे । **चळवळ** – रक्त, खून । **येहो** – ऐसा । **जोगणि** – योगिनी । **वोक** – हाथ की ग्रंजुलि । **बेबाह लाल** – लाल वेग नाम का ग्रश्व । **दुझाल** – वीर । **वोरतौ** – झोंकता । **पाड़तौ** – गिरता हुग्रा । **सैदां** – सैयद जाति के मुसलमानों को । **ढ़ाहतौ** – गिराता । **जेतां** – जितने । **दूठ** – वीर, दुष्ट । **कूठ** – वृक्ष, कुटिल । **दुड़ाळ** – दो टुकड़े होकर, द्वि खण्ड, दो चीर । **धैंधीग माता** – मस्त हाथी । **धसियौ** – घुसा, प्रवेश किया हुग्रा । **साल** – चुभने वाला, शल्य । **जेहो** – जैसा । **बाहतौ** – बहाता, चलाता । **झटका** – प्रहार । **ग्रसि** – घोड़ा । **परिहार** – निवारण कर के, हटा कर । **मैंगळां** – हाथियों के । **तिण बार** – उस समय । **ग्रछर** – ग्रप्सराएं । **राती** – ग्रनुरक्त । **हिंडूळै** – लहराये, हिंडोले लें । **गळिहार** – कण्ठाभूषण, घायलों से लिपट कर ।

मांझिया जोध 'मुरारि' मुहियड़, बधै करतो बाह ।
पाड़तो आदूठ पिसणां, रचे केत्तर राह ।।
भेदितो गयंदां येमि भाले, लेयतो असिलाह ।
वाह जी वाह सराह जंपै, नरिंद सेन्या नाह ।।
'अरजन' उरड़ै जोक, 'औरंग' आहुड़ै ।
बजे न बाहुड़ै जी, घाव त्रवधि घड़ै ।।

'प्रथिराज' सूर सकाज पाहड़, दुजड़ अरियां दाट ।
घट घाट फूल फलास धाये, कंगळां सिर काट ।।
कंधाळ धड़ जंघाळ 'पीहकर', बढ़ व्है द्रहबाट ।
झट डाट वडफर सिर स ऊझट, निहसि बाह निराट ।।
'अरजन' उरड़ै जोक, 'औरंग' आहुड़ै ।
बजे न बाहुड़ै जी, घाव त्रवधि घड़ै ।।

'राजसी' रीध सधींग राखण, सार हथ्थो सीह ।
सैद गौड़ां झूझ मचियौ, बिरचियौ अणबीह ।।
गाजिया बहौ बाण गोळां, बाजिया बाजीह ।
आजिरौ सिरदार आगै, हणु जेमि हठीह ।।
'अरजन' उरड़ै जोक, 'औरंग' आहुड़ै ।
बजे न बाहुड़ै जी, घाव त्रवधि घड़ै ।।

मुहियड़ – अगुआ, मुंह आगे । बधै – बढ़ कर । बाह – प्रहार । आदूठ – आदि दुश्मन, बलवान् शत्रुओं को । पिसणां – शत्रुओं को । रचे केत्तर राह – राहु और केतु की तरह, एक ओर माथा और एक ओर धड़ । येमि – इस प्रकार । लेयतो – लेता हुआ । असि लाह – तलवार का लाभ, तलवार का आनन्द । जंपै – कहे । सेन्या नाह – सेनापति । दुजड़ – तलवार । दाट – रोक कर । घट-घाट – शरीर की आकृति । फूल फळास – पलास वृक्ष के पुष्प । कंगळां – कवचों, तलवारों से । कंधाळ – स्कंध । जंघाळ – जंघाएं । द्रहबाट – ध्वस्त । झट डाट – प्रहार रोक कर, चोट झेल कर । वडफर – ढ़ाल । ऊझट – उछल कर । निहसि – मार कर, संहार कर । निराट – अधिक । रीध – ऋद्धि । सधींग–वीर । सार हथ्थो सींह – अस्त्र शस्त्र हाथ में धारण किया हुआ सिंह । झूझ – युद्ध । बिरचियौ – रचा, किया । अणबीह – अभय । बाजीह – युद्ध वाद्य । हणु – वीर हनुमान ।

भैंभीत जोध अभीत भारथ, 'मांनसी' मन मोट ।
भड़ वोट राखण जिको भिड़तां, कहै मैवट कोट ।।
सिर हणै येकणि चोट सामंत, दुजड़ खेलै दोट ।
केइ लोट खाता फिरै कुंजर, अरि घड़ा अणबोट ।।

'अरजन' उरड़ै जीक, 'औरंग' आहुड़ै ।
वजे न बाहुड़ै जी, घाव त्रबधि घड़ै ।।

'सांईदास' 'भाखर' हर सूरो, बढ़ जोबराड़ि ।
गज ब्यूह गाहण गौड़ गहवंत, झूळ है भड़ झाड़ि ।।
पाधरै पाधर लोह पैठो, फौज द्रोयण फाड़ि ।
धाड़ि जी धाड़ि बजाड़ि धजवड़, अनड़ लेय ऊपाड़ि ।।

'अरजन' उरड़ै जीक, 'औरंग' आहुड़ै ।
बजे न वाहुड़ै जी, घाव त्रबधि घड़ै ।।

'कुसळेस' जोध कळेस कारण, राखियां अवरेस ।
लधु बेस गौड़ लंकाळ लाजै, सिर जड़ै पग सेस ।।
आहणौ रवदां येमि असमर, कहर रूप कहेस ।
चवसट्ठि चंड चड़ रुहिर चाखै, माळ भर माहेस ।।

'अरजन' उरड़ै जीक, 'औरंग' आहुड़ै ।
बजे न बाहुड़ै जी, घाव त्रबधि घड़ै ।।

भैंभीत – भयातुर । अभीत – निडर । भारथ – युद्ध में । मोट – विशाल, बड़ा । वोट – ओट, रक्षा । जिको – वह । मेवट कोट – शरणागत रक्षक । हणै – काटे । येकणि – एक ही । चोट – वार । दुजड़ – तलवार । दोट – दोटे मार कर, बल्ले के प्रहार की भांति प्रहार कर । लोट – गुलांचे । कुंजर– हाथी । अणबोट – बिना कटी, अक्षत । जोबराड़ि – जोशीला, उत्साही । झूळ– समूह । है – घोड़े । झाड़ि – गिराकर । पाधरै – सीधा, खुला मैदान । द्रोयण – दुर्जन, दुश्मन । फाड़ि – चीर कर, विदीर्ण कर । धाड़ि जी धाड़ि – धन्य है, धन्य है । बजाड़ि – बजा कर, चला कर । धजवड़ – तलवार । अनड़ – पर्वत । कळेस – युद्ध । अवरेस – प्रतिज्ञाबद्ध होकर । बेस – आयु । लंकाळ– सिंह । जड़ै – रोपे । सेस – शेष नाग । आहणो – मारने वाला । रवदां – मुसलमानों । असमर – तलवार । कहर – भयंकर । कहेस – कहे । चवसट्ठि चंड – चोसठ चण्डिकाएं । चड़ – पीने की ध्वनि । रुहिर – लहू, रक्त । चाखै – स्वाद ले, चखे । माळ – माला । भर – पूर्ण कर, पिरोकर ।

'इंद्रभांण' सिर असमांण अड़ियौ, आछटै केवांण।
निजूड़ै जोधा पड़ैं निरळंग, मांडियौ घमसांण ॥
'केहरी' जोध जवांरा कहियौ, पातळौत प्रमांण।
बप रूप बहसै सेल बाहै, पैं सराहै पांण ॥

'अरजन' उरड़ै जीक, 'औरंग' आहुड़ै।
बजे न बाहुड़ै जी, घाव त्रबधि घड़ै ॥

'नरपाळ' जूह स ढाळ नागां, धसै येही ढाळ।
पखराळ भड़ जरदाळ पंमंगां, नड़ैं घड निरवाळ ॥
नरसींघ रूप भयांन भाळे, लागूवा लंकाळ।
गाहिया गोपदंत गैमर, डोळिया तर डाळ ॥

'अरजन' उरड़ै जीक, 'औरंग' आहुड़ै।
बजे न बाहुड़ै जी, घाव त्रबधि घड़ै ॥

'जगभांण' भीम समांरा जांणै, दोयणां दूसास।
चमू साह री हींडोळि चलियौ, करै अंतक पास ॥
कूरंम राव 'किसौर' कटियौ, अछर पूरी आस।
बढ़ै 'श्रोमणि' विप्र बढ़ियौ, बसे सुरपुर वास ॥

'अरजन' उरड़ै जीक, 'औरंग' आहुड़ै।
बजे न बाहुड़ै जी, घाव त्रबधि घड़ै ॥

अड़ियौ – जा लगा। **आछटै** – पछाटें, आघात करे। **केवांण** – तलवार। **निजूड़ै** – कटे हुए। **निरळंग** – सीधे। **घमसांण** – युद्ध। **पातळौत** – प्रताप-सिंहोत। **बहसै** – उत्साह करके। **पांण** – हाथ, बल। **जूह** – समूह, यूथ। **ढाळ** – गिरा। **नागां** – हाथियों। **येही ढाळ** – ऐसे तरीके से। **पखराळ** – पाखरधारी। **जरदाळ** – कवचधारी। **पंमंगां** – घोड़ों। **नड़ैं** – बंधे हुए, निकट। **निरवाळ** – अलग। **भयांन** – भयावह। **भाळे** – दिखाई पड़े। **लागूवा** – शत्रुओं। **गाहिया** – नष्ट किये हुए। **गोपदंत** – पृथ्वी पर हाथी दांत। **गैमर** – हाथी। **डोळिया** – काट छांग कर, छिन्न किए हुए। **तर डाळ** – तरुशाखा। **दोयणां** – दुश्मनों को। **दूसास** – दुस्साहस, दुःशासन। **चमू** – सेना। **हींडोळि** – आन्दोलित कर, विचलित कर। **अंतक** – यमराज, अन्तकर। **अछर** – अप्सरा। **पूरी आस** – आशा पूर्ण कर। **बढ़ियौ** – कट गया। **बसे** – निवास किया।

'सोमदत्त' 'जेहा' हरो 'सुंदर', मंडे खेत मरद्द ।
पुळि घरे नहीं आविया पाछा, बजाड़ै बम हद्द ।।
अमस्याम छळि तूटिया धारां, दाखियौ न दरद्द ।
धुव जेमि राखै नांम धज्जां, गजां मेळि गरद्द ।।१८६।।

छंद छप्पय

उरड़ि उरड़ि 'अजमाल', फौज सुलतांणी फाड़ै ।
कुंत बांण कब्बांण, अनै असमर अवझाड़ै ।।
चुगला रा चाचरा, फाड़ि फाचरा फटाणां ।
वार पार आवधां, बबकि कर बार बहाणां ।।
अंतार तार चीहर उळझि, धार मार वाजी धरा ।
सामंतां सहित आखाड़सिध, आच बहै 'अजमाल' रा ।।१८७।।
येक फौज आहुटे, कटै आवटे कितांहीं ।
लटें-चटें लूबटें, रटैं ऊपटैं रतां हीं ।।
घाव घटे घूमटे, झीक खागां अवझट्टै ।
खत्रवटे खेलियां, चाव थट्टै कवचट्टै ।।
गट गटे गीध पळ गटकिया, धड़ हूं धड़ चाढ़ै घटे ।
अए घटे बटे ऊभौ 'अजण', परां साहि दळ पालटे ।।१८८।।

जेहा हरो – जैसा का पौत्र । पुळे – भग कर । बजाड़ै – बजवाये । बम – वाद्य, नगारा । छळि – लिए, युद्ध । धारां – शस्त्रों की धाराओं में । दाखियौ – कहा । न दरद्द – दर्द नहीं । धुव जेमि – ध्रुव की भांति, अमर, अटल । धज्जां – वीरों ने । मेळि – मिला कर । गरद्द – मिट्टी में, भूमि में ।

१८७. फाड़ै – फाड़े, विदीर्ण करे । कुंत – बर्छा, भाला । अवझाड़ै – चोटें मारें, तिरछे प्रहार करें । चुगला रा – मुसलमानों के । चाचरां – माथे । फाचरा – चीरे हुए काष्ठ-खण्ड । फटाणां – फटे हुए, फट गए । बबकि – उमड़ कर । बार – बाहर । अंतार तार – आंतों के तन्तु । चीहर – केश, बाल । आच – हाथ ।

१८८. आहुटे – युद्ध करे । आवटे – संहार करे, क्रोध करे । कितां ही – कितने ही । लटें-चटें – बाहुयुद्ध । लूबटें – गुत्थमगुत्थी । ऊपटैं – उछल, बहे । रतांही – रक्त धाराएं । घटे – शरीर । घूमटे – चक्कर काटे, घूमे । झीक – प्रहार । अवझट्टै – पछांटे । खत्रवटे – क्षत्रियत्व वाले । कवचट्टै – कवच में आबद्ध । गट गटे – गटगट की ध्वनि के साथ । पळ – मांस । गटकिया – गटकें, खाती हैं । घटे – शस्त्रों के घाट । अणघटे – इस प्रकार, इस घाट से । बटे – मार्ग । ऊभो – खड़ा । परां – दूर से ही, उधर का ।

गज फौजां बेहंडि, हठी हरवळ बंगाळां ।
खग बाहै हौलाळ, खूंदि ढौहिया बढ़ाळां ॥
भड़ां चौळ बंबाळ, घटां पूरै कस घावां ।
मुणि 'वीरभद्र' 'मुरारि', 'किसू' 'पीथळळ' कहावां ॥
'सांईदास' 'राजसी' 'मांनसी', हद्द मरद 'कुसळौ' हठी ।
'क्रनग्रास' 'भांण' बेऊ कहैं, कहो बाग लोजै कठी ॥१८९॥

दसहुं दिसन दिस नगज, घुरिघ द्वंदभि निसांन घन ।
दसहुं दिसन झूझे सुभट, कटत सन्नाह तन ॥
दसहुं दिसन ऊचार मार, मारंत बीर घन ।
दसहुं दिसन ध्वजा पताक, बिचरंत फौज बन ॥
धूंधरिय भान दसहूं दिसन, दिसहूं दिस किरमर बहै ।
हंकीय तुरी अब कीं दिसन, कहां साहि 'अज्जन' कहै ॥१९०॥

छंद छप्पय अजण बाक्य

आजि छत्र औरठी, साहि औरठी स जाणौ ।
आजि धरै जौछ, बात आघात बखाणौ ॥
केइ जोध कांमरा, झूल गज फौजां झाड़ै ।
मेघ डंमर अर छत्र, अवसि पाड़ै ही पाड़ै ॥
...., ... ।
'अजमाल' कहै 'मूरारि' हूं, खित कारण रण खत्रियां ॥१९१॥

---

१८९. **बेहंडी** – नाश कर। **हरवळ बंगाळां** – हरावल के मुसलमान योद्धाओं को। **हौलाळ** – तलवार का वार। **खूंदि** – रोंद कर। **ढौहिया** – उठा दिये, मथ दिए। **बढ़ाळां** – बढ़ने वाले, बड़े योद्धाओं को। **चौळ बंबाळ** – मजीठ जैसे लाल। **बेऊ** – दोनों। **बाग** – लगाम। **कठी** – किस तरफ।

१९०. **नगज** – दिशाओं के हाथी। **घुरिघ** – घुर घुर की आवाज हुई। **घन** – मेघ, गम्भीर। **घन** – बहुत। **धूंधरिय** – धुंधला होकर। **किरमर** – तलवारें। **कीं दिसन** – किस दिशा में।

१९१. **औरठी** – अन्य स्थान, दूसरी जगह। **जौछ** – जोश। **आघात** – भयंकर, आक्रमण। **झूळ** – गजों की झूल, समूह। **मेघडंमर** – बड़ा छत्र। **पाड़ै ही पाड़ै** – गिरावें ही गिरावें। **हूं** – से। **खित** – पृथ्वी। **कारण** – लिए। **खत्रियां** – क्षत्रियों।

छंद दोहा

यम 'वीरभद्र' स ऊचरै, प्रतिवै 'अजण' दुबाह ।
कुण निसांण झंडा किसा, समझावौ कहि राह ।।१९२।।

छंद भुजंगी

जितं साह सन्नाह तें सूर सज्जे । जितं गजंति नाळि गजं-बान गज्जे ।।
जितं सूधरं पक्खरं बाज सारे । जितं सैद पाठांन सेखं सेलारे ।।
जितं पायकं नगीयां झळकंती । झिलं माळ ते तोय झना झिलंती ।।
जितं गूर्जिबरदार तें मीर बंदे । जितं द्वंदंभि घोर बाजंत द्वंदे ।।
जितं नादरी लाल खंधार लक्खं । जितं हब्बसी दक्षिणी भाल दक्खं ।।
जितं गजं मेकं रदं दक्खिणावं । तसं ऊपरां लोह संदूक लावं ।।
दिढ़ै गाढ़ मांझीस बैठो दुबाहं । सही जांणजै वोह अवरंग साहं ।।
लिये रांम रो नांम अब बाग लीजै । दिढ़ावौ जठी ही तठी ही दाव दीजै ।।१९३।।

छंद छप्पय

जांहंनवी जळ पूर, हेक सीसी असि हांनै ।
पोह कीधौ तति पानि, कवल भड़ छूंटै कांनै ।।

---

१९२. प्रतिवै – उसके प्रति, उसके लिए । दुबाह – वीर । कुण – कौन । किसा – कैसा । कहि – कह कर । राह – मार्ग, रुख ।

१९३. जितं – जिस ओर । तें – मे, वे । नाळि – तोपें । गजं-बांन – बन्दूक विशेष । सूधरं – सुन्दर । बाज – घोड़े । सारे – सब, खेंचे । सेलारे – भाला धारी । पायकं – पदाति । नगीयां – नगीनें, नग्न । झळकंती – चमकती । झना – करणिया, छतरी विशेष । गूर्जिबरदार – गदाधारी । द्वदंभि – दुंदुभि वाद्य । नादरी – नादिर शाह के वंशज, मुसलमान । खंधार – कंधार के । भाल – ललाट । दक्खं – दिखते हैं । मेकंरदं – एक दंत वाले । दक्खिणावं – दक्षिण से आए हुए, दक्षिण के । तसं – उन । लोह संदूक – लोहे का संदूक, लोहे का हौदा । दिढ़ै – दृढ़ । गाढ़ – मजबूत । मांझीस – मुखिया । दुबाहं – वीर । वोह – वही, वह । बाग – वल्गा । जठी ही – उसी ओर । तठी ही – उधर ही, वहीं पर ।

१९४. जांहंनवी – गंगा । जळपूर – जल से परिपूर्ण । हेक – एक । सीसी – शीशे का पात्र । असि हांनै – घोड़े के जीन के आगे के भाग पर । पोह – राजा । तति – तभी । कवल – कुल्ला । छूंटै – थूका, फेंका । कांनै – तरफ, एक ओर ।

दूजां अमल दिढ़ाय, घाय भंजण गज घट्टे।
उलट्टे अजमाल, अरक्क भेदबा अघट्टे॥
थट थाट सूर पूर थटे, पाथ थाट लागौ पटे।
आळ करि काळ खग ऊझटे, रांम रांम मुख्खां रटे॥१९४॥

छंद रसावळो

रांम रांम रटे, 'अजणं' उल्लटे।
द्रुजणं दाबटे, झीक खागां झटे॥
कंधवाळा कटे, घाव घूमे घटे।
छींछ रत्तं छटे, फिफराळं फटे॥
मंजि ढाळं मटे, घड़ा चाढ़े घटे।
लोथि लोथि लुट्टै, गूद गीधां गटे॥
हुवा चागाहटे, के पड़े कुलट्टे।
उलथ्थे उलट्टे, नृतं जाण नट्टे॥
थाट गौड़ां थटे, पेलि बहतां पटे।
महा भयं मेवटे, अवरंग अटे॥
घाव गजं घटे, ... ॥१९५॥

छंद छप्पय

घाव कियो गज घटे, असुर ऊलटे अपारां।
बीर 'अजण' बांकुड़े, सार मेळै सिरदारां॥
पिसण तिता पाड़िया, जिता आवध सिर तुट्टा।
पड़ियौ खेत पहाड़, करै गज आवट कुट्टा॥

दूजां – दूसरी बार, अन्य लोगों को। अमल – अफ़ीम। अरक्क – सूर्य, रवि – मण्डल। पाथ – पथ, अर्जुन। पटे – अधिकार। आळ करि काळ – काल से छेड़ कर।

१९५. द्रुजणं – शत्रुओं को। दाबटे – दबाये। झीक – प्रहार। छींछ रत्तं – खून के फव्वारे, छींछड़े। गूद – मज्जा। गीधां – गृद्ध पक्षी। गटे – निगलें। कुलटे – कुलांचें खाकर, नीच। उलथ्थे – उथल कर। उलट्टे – उलटें, औंधे। नट्टे – नट। मेवटे – मेरवाड़ा वाले, अजमेर मेरवाड़ा के अधिपति, गर्व वाले।

१९६. सार – लोहा। पिसण – शत्रु। तिता – उतने, वहाँ। जितां – जितने। आवट कुट्टा – संहार, युद्ध।

क्रांमति सूर आलम कहै, छिप किम रहें छिपाइयौ ।
सुरति गात 'अजमाल' रौ, 'औरंग' देखण आइयौ ॥१६६॥

पेखि साहि 'अवरंग', भड़ां अंत भेख भयांनह ।
देव जांणि उदबुद्द, मुणै जक्षि किन्नर मानह ॥
आसि पासि उमराव, पड़ै पाड़िया पंचाहर ।
बाहिर बहलायता रहे, नाहर नखि नाहर ॥
रिण भौम सेज 'अजमाळ' रचि, अंबर अंबर वौडियौ ।
जुति खंभ खेत ऊजेणि रै, पैतासां बिचि पौढ़ियौ ॥१६७॥

छंद भुजंगी

पड़ै खेत 'बीरभद्र' भूझि पड़ै । पड़ै खेत 'मुरारी' पूरे पमड़े ॥
'प्रथीराज' जेऊ 'आसक्रन' पासै । तठें देव दाणव्व आयै तमासै ॥
पड़ै 'राजसी' 'मांनसी' बंध पूरा । सपेड़ै 'सांईदास' 'कुसळेस' सूरा ॥
पड़ै 'किसनदास' पातळौत पाटं । भड़ पड़ै 'स्यामदास' अजमेरि भाटं ॥
पड़ै 'इंद्रभांण' 'जगभांण' पाथं । नरांपाळ 'नरसिंघ' मारौठ नाथं ॥
पड़ै 'किसोवरि' 'सिरोमणि' वाहिपाणां । अड़ै भाट तीनूं पड़े जी अमाणां ॥
पड़ै 'मलौ' बाघावतं 'सोमदत्तं' । सुणै बारि'मेघौ' पड़े जी समत्तं ॥
नौऊं पड़ै 'मुरारि' रा जोध नीड़ा । बधै आखता लेयता तकै बीड़ा ॥
पड़ै जोध 'अजमाल' रा यता पासै । तठै साहि 'अवरंग' आयै तमासै ॥१६८॥

क्रांमति – कांति, चमत्कारी । सुरति – सूरत ।

१६७. भेख – भेष । उदबुद्द – अद्‌भुत । मानह – मानव । आसि पासि – आस पास । पंचाहर – सिंह । बहलायत – अत्यधिक वीर, उतावले वीर । नखि – निकट, नाखून । अंबर – आकाश । अंबर – वस्त्र । जुति – जुड़ कर । पैतासां – (?)।

१६८. खेत – रणक्षेत्र । पूरे पमड़े – प्रसिद्ध वीर, पूरे प्रवाड़ों वाला । जेऊ – जैसे, जिसके । पासै – पार्श्व में, पास में । तठें – वहाँ । दाणव्व– दानव । सपेड़ै – सगोत्री । पाटं – पाट का अधिकारी, सिंहासनाधिकारी । भाटं – भट्ट, राव जाति के । पाथं – अर्जुन की तरह, पथ । मारौठ नाथं – मारोठ ठिकाने का स्वामी । वाहि पाणां – हाथों से प्रहार करते । अड़ै – अड़कर । अमाणां – मान धनी । बारि मेघौ – बारी जाति का मेघराज । समत्तं – समर्थ, बलवान् । नौंऊ – नौ, नव । नीड़ा – पास में । बधै – आगे बढ़े । आखता – अधीरतापूर्वक । लेयता – लेते थे । तकै – वे । यता – इतने । पासै – निकट में, पार्श्व में । तठै – तहाँ, वहाँ ।

छंद पद्धरी

बीभछ बरनन

कहुं परै बीर खंडह बिहंड। कहुं परै सुण्ड दण्डह प्रचंड ॥
कहुं परै दंत अंतह उळझिझ। मसिहार फिरै तिंह बार मझिझ ॥
कहुं परै रुण्ड मुण्डह भ्रसुण्ड। कहुं परै तुंग कहुं परै झुण्ड ॥
कहुं परै लुथ्थि ऊपरि सुलुथ्थि। कहुं परै मंस कहु परै बुथ्थि ॥
खळकंत श्रोण तवि नाळ खाळ। तहां तीर बीर भैंरू विताळ ॥
चवसट्ठि तहां भरि पीवै पत्त। सारद्द तंड नारद्द नृत्त ॥
तहां लिये ईस सीसह सुभट्ट। किरमार धार धड़ हूं बिछुट्ट ॥
कहुं झुकै सूर ऊठै कमंध। कहुं परै संध कहुं परै बंध ॥
कहुं परै सूर आघाय घाय। कहुं परै हाथ कहुं परै पांय ॥
कहुं परै जिरह पाखर जवान। कहुं परै ढ़ाल बरछी कमांन ॥
कहुं परै सूर सिरदार सार। असि परै कहुं परै येसवार।
तरफंत कहूं मछ तुच्छ तोय। कहुं परै येक कहुं परै दोय ॥
कहुं परै बांह गळबांह गथ्थ। कहुं परै चक्र कहुं परै रथ्थ ॥
कहुं परै नेज धज्जह निसांन। कहुं परै द्रव्य अनगनत जान ॥१६६॥

---

१६६. बीभछ – बीभत्स। खंडह बिहंड – खण्ड विहण्ड हुए। सुण्ड दण्डह – शुण्डा-दण्ड। अंतह – आँतें, अंत्र। उळझिझ – उलझ कर। मसिहार – मांसाहारी। तिंह बार – उस समय। मझिझ – बीच बीच में। भ्रसुण्ड – हाथियों के भ्रशुण्ड। तुंग-टुकड़ी, सिर। लुथ्थि – लोथें। बुथ्थि – मांस की बूथें, मांस-पिण्ड। खळकंत – बहते हैं, सवेगप्रवाह। तवि – कहो। नाळ खाळ – नाले-खाले। तीर – किनारे। बीर – शंकर के बावन गण, वीर। विताळ – वैताल। पत्त – पात्र, खप्पर। सारद्द – शारदा, दुर्गा। ईस – शंकर। किरमार धार– तलवार की धारा। बिछुट्ट – अलग होकर। कमंध – कबन्ध, शीश रहित धड़। संध – अस्थियों के जोड़, संधिस्थल। बंध – बंधन, जोड़ने वाली हड्डियाँ। आघाय – दूर, चक्कर खाए हुए। घाय – घायल होकर। पांय – पैर। जिरह – कवच। असि – घोड़े। येसवार – अश्व सैनिक। तरफंत – तड़फते हैं। मछ – मछली। तुच्छ – थोड़े। तोय – जल। येक – एक। बांह – भुजदण्ड। गळबांह – कण्ठों में भुजा। गथ्थ – डाले हुए। चक्र – पहिये। नेज – नेजे, रस्से। धज्जह – ध्वजाएँ। निसांन – निशान, चिन्ह।

छंद छप्पय

साहि खेत सम्हाळि, बीच दस कौस स बड्डु ।
हुकम हुवौ हिंदू, जळाय मेछ्छन गहौ गड्डु ।।
सार अंग सम्हाळि, जितां घायळा उचावौ ।
केइ डौळियां पालखी, केइ डौळियां बणावौ ।।
केइ धिकौ गडौ बड़ खेत बिचि, जुध भयांनक जांणिजै ।
डौळियां झौळियां झूलता, ऊपाड़ै केइ आंणिजै ।।२००।।

येमि साहि 'अवरंग', सकळ आरांण सम्हारे ।
लूटि कूटि लसकरां, बीचि डेरा बिसतारे ।।
सैदानां बाजाड़ि, जैति हुंदा जौराई ।
जुद्ध यण हि जांणि जै, दिल्ली फेरसी दौहाई ।।
मुर पहर जूप थइयौ मह्रा, अस्त थियौ रवि अंठियौ ।
घायलां सूरां सांमंतां घटां, पाटा पीड़ि परठ्ठियौ ।।२०१।।

कितां घाव सेंकीजै, कितां धाव बांधीजै ।
बळे नींब बांधि, कितां लापरियां लगीजै ।।
कितां कंध खोपरी, कितां छाती पसवाड़ां ।
सनमुख मुख केतला, सोभ चा चढ़ै सवाड़ां ।।

---

२००. **बड्डु** – बड़ा, बढ़े । **मेछ्छन** – म्लेच्छों, मुसलमानों को । **गड्डु** – गड्ढे में, दफनाओ । **सार** – तलवार या लोहे के घावों को । **उचावौ** – ऊपर उठा कर सिर पर लो । **डौळियां** – एक किस्म की पालखी । **झौळियां** – कपड़े की झोली, जो कमर के बांध कर बनाई जाती है, झूलों में ।

२०१. **येमि** – इस प्रकार । **आरांण** – युद्ध । **लूटि कूटि** – लूट मार कर । **लसकरां** – सेना, खेमे । **डेरा** – तम्बू विशेष । **सैदानां** – विजय की खुशी के वाद्य । **बाजाड़ि** – बजवा कर । **जैति हुंदा** – विजय के । **जौराई** – प्रबलता के । **फेरसी** – फिरायेंगे, फेरेंगे । **जूप** – जुड़ा हुआ । **थइयौ** – रहा । **अंठियौ** – खिन्नचित्त हो । **पाटा पीड़ि** – मरहम पट्टी । **परठ्ठियौ** – भेजो, प्रारंभ करो ।

२०२. **कितां** – कितने ही के । **सेंकीजै** – सेंक किये जाते हैं । **बळे** – फिर । **नींब** – नीम वृक्ष के पत्तों के रस में बनी हुई पट्टियाँ । **लापरियां** – आटे को पानी में पका कर बनाई गई पुल्टिश । **पसवाड़ां** – पार्श्व । **केतला** – कितने ही । **सोभ चा** – कीर्तिका । **सवाड़ां** – सवाये, विशेष ।

येमि करत दिन ऊगीयौ, बिसरि प्रात नौबति बजी।
कवि कहे 'महेस' दसमी दिवसि, रात्तंम्म ऊड़ी रजी ॥२०२॥

छंद भुजंगी

धरा गाहि ऊजेणि 'अवरंग' धायौ।
अवैं चालिवै आगरा सीस आयौ॥
चढै चालियौ 'साहि मुरयाद' चावौ।
दिल्ली तखत्त रौ राखियौ मने दावौ॥
चला चली जीह बेर सैदां पठांणां।
मारिकां भड़ां हिंदुवे मुसल्लमाणां॥
बळे हूलिया मौहरै मद्द बहता।
खड़े आपणो छांवळी हूंत खहता॥
फतै पाय मोटी बिन्है साहि फूलै।
हबै कौंण आवै हमैं सम्मतूलै॥
सुणै 'साहिजिहांन' 'दारा स साहं'।
दहूं साहि आये नतीठा दुबाहं॥
कळह जीति ऊजेणि हूं कूच कीधौ।
दिल्ली आगरा ऊपरां दाव दीधौ॥२०३॥

॥ इति श्रीमहेसदास राव कृत ऊजेणि-भारथ संपूरणं ॥

बिसरि – शोक सूचक, भयावने। रात्तंम – रक्तिम, लाल रंग की। रजी – धूलि।

२०३. गाहि – रौंद, युद्ध। धायो – आगे बढ़ा। चावौ – प्रसिद्ध, चाह वाला। दावौ – हक, अधिकार। मारिकां – प्रहार करने वाले। हूलिया – चलाये, ढकेले। मौहरै – सबसे आगे। मद्द बहता – मद बहते हाथी। खड़े – चले। छांवळी– छाया। खहता – कसते, टक्कर लेते, रगड़ खाते। हबैं – अब। समतूलै – समतुल्य। नतीठा – उतावले, अधीर बनें। कळह – युद्ध। कूच – प्रस्थान। दाव दीधौ – घात लगाई।

अथ धौलपुर भारथ द्वुतीय संग्राम लिख्यते

छंद निसांणी

वाका येह ऊजेणि रा आगरेस आया।
असपति आगळ ऊघड़े बंद खोलि बंचाया ।।
भागां 'जसमंत' 'रायसिंघ' प्रम हुकम स पाया।
'अमरसिंघ' भागा उभै गणि 'बरसिंघ' गाया ।।
भ्रुमिया 'कासिमखांन' कहि लडंता ललचाया।
'बेळू' 'परसू' बलखिया कारिमा कहाया ।।
सुज 'देवी' 'सुजाणसिंघ' मिळिया मुरझाया।
'सबळसिंघ' 'बळिराम' सा यामौह ऊपाया ।।
जुध 'छत्रमणि' जादम जिसा घड़ मिळै न घाया ।। १ ।।

छंद वीजूमाळ

ऊघड़े वाका येह। उजेणि रा अणछेह ।।
'मोहण' 'भूझार' मसंद (मुकंद)। रण बे रहे राजिंद ।।
'वीरभद्र' 'कान्ह' बिहद्द। मंडि रहे खेत मरद्द ।।
'रतनेस' 'गोवरधन्न'। तिजड़ेस तूटा तन्न ।।
'दळथंभ' 'राघवदेव'। भड़ रहे पिड़ि अणभेव ।।
'राघवे' 'केसरि सींघ'। सुजड़ां खिरचा त्रसींघ ।।
'सूजाण' 'फती' सुचाळ। ढ़हिया रणे ढींचाळ ।।

---

१. वाका – घटना, वाकियात। आगळ – आगे, सामने। ऊघड़े – प्रकट हुए। प्रम – परम, पवित्र। उभै – दोनों। भ्रुमिया – चला गया। बलखिया – व्याकुल हो। कारिमा – कायर। यामौह – व्यामोह। घड़ – सेना। मिळै – मिलते समय, भिड़ते समय।

२. अणछेह – अपार। अबीह – अभय। समहरे – युद्ध में। मसंद – संभवतः राव मुकुन्दसिंह। बे – वे। रहे खेत – खेत रहे, युद्ध क्षेत्र में काम आये। तिजड़ेस – तलवारों से। तूटा – टूटा, कट गए। तन्न – तन, शरीर। पिड़ि – युद्ध, पड़कर। अणभेव – निर्भय, वीर। सुजड़ां – तलवारों से। खिरचा – कट कर गिर पड़े, टुकड़े होकर गिर गये। त्रसींघ – विकट वीर। ढ़हिया – ढह पड़े, गिराकर मार दिए। ढींचाळ – हाथी।

पड़ियौ स 'खां अफितार'। झंडां तणौ झूझार ॥
'बीठळौ' रहियो बढ़्ढ़। चवरंग धारां चढ़्ढ़ ॥
'रुकम' 'किसोवर' राड़ि। पाड़े गजां धज पाड़ि ॥
आघाय घाय असंक। ऊपाड़िया अवरंक ॥२॥

छंद छप्पय

येता कांमि आविया, भिड़े येता भड़ भागा।
जाणै 'साहिजिहान', दिली 'दारासाहि' दागा ॥
अवर भीछ कोकिया, अवर मन मता उपाये।
'दारासाहि' दुबाह, लड़ण सिर अंमर लाये ॥
जुध राव जिसा 'रुसतम जमा', जंपि राजा 'सिवपति' जुवा।
फुरमांण यतां जोधां दिसे, हुवै हुकम सादर हुवा ॥३॥

बूंदी राज बिराज, चाव येहा चहुवांणं।
विढ़ि गयंद बावळा, घुरै नौबत्ति निसांणं ॥
लाख पटा दीजिये, लाख दीजै कवि लाखां।
मौज गजां सासणां, सिरै खटतीस स साखां ॥
तिण काज दिली सुरतांण री, अहदी लेबा आइयो।
येकंत चित अत भाव सौं, राव सीस चढ़ि लाइयो ॥४॥

चवरंग – सेना। धारां चढ़्ढ़ – शस्त्र धारा में चढ़ कर। राड़ि – युद्ध। धज – घोड़े, वीर। आघाय घाय – घायल करके। अवरंक – (?) ।

३. दागा – दाग लगा, धोखा हुआ। अवर – अन्य। भीछ – योद्धा। कोकिया – बुलवाये। दुबाह – वीर, योद्धा। राव – राव पदधारी शत्रुशाल हाड़ा बूंदी का स्वामी। सिवपति – शिवराम गौड़। जुवा – भिन्न, पृथक, दूसरा। फुरमाण – फरमान, आदेश। दिसे – तरफ।

४. विढ़ि – युद्ध। बावळा – उन्मत्त। घुरै – बजते समय। लाख – लक्ष द्रव्य। सासणां – चारण आदि कवियों को दिये जाने वाले गांव, शासनिक ग्राम। सिरै, – श्रेष्ठ। खटतीस – छत्तीस, क्षत्रियों के छत्तीस प्रसिद्ध कुल। साखां – शाखाएँ, उपजातियाँ। अहदी – बादशाह का वह सेवक जो किसी राजा या सामंत को बुलाने के लिए भेजा जाता था और बुलाने वाले को साथ लेकर आता था। लेबा– लेने के लिए।

बांचि राव फुरमांण, कियै पायांण रिसांणं ।
घर लंका धूजियौ, निहसि डंके नीसांणं ।।
बांधै जूथ बिरूथ, कीट काळा कुदरत्ती ।
दिली मदति दौड़िया, पांण धरी बूंदी पत्ती ।।
जळ थळां थळां जळ थबकिया, झूझ बिरद्दां झालियां ।
जाडा बिभाड़ दळ जोरवर, हाडा राव यम हालियां ।।५।।

आय राव आगरै, पांव देखै असपत्ती ।
आदर कीध अनंत, पूर चाढ़ै परभत्ती ।।
हय गय हीर कटार, तेग झळअंम रतन्ना ।
जग मग सोन ज हार, परठि मणी नग्गसु पन्ना ।।
असुरेस राव यम अरछियौ, हुवै त्यार ठढ्ढ़ौ हियौ ।
दियौ सिरपाव बीड़ो दियौ, दिली भार भुज्जां दियौ ।।६।।

छंद भुजंगप्रयात

मिळै संभरी नाथ हाडा अमानं । गरू गाहरे मल्ल पूरै गुमांनं ।।
जिनैं बंस धारै बिरुद्दं उजारै । बिरद्दं जित्तानैं सुरक्षा पगारै ।।

---

५. बाँचि – पढ़ कर । पायांण – प्रमाण, प्रस्थान । रिसांणं – क्रुद्ध हो । घर लंका – दक्षिण की धरा तक । निहसि – ध्वनि । नीसांणं – नक्कारे । जूथ – समूह । बिरूथ – योद्धा, सेना । कीट काळा – श्याम वर्ण, सर्प के बच्चे जैसे, हाथी । कुदरत्ती – स्वभाव से ही । पांण धरि – शक्तिशाली । थबकिया – प्रकट हो गया । झूझ – युद्ध में, झूझने के । झालियां – लिए हुए । बिभाड़ – नाश करने वाले । हालियां – चला ।

६. असपत्ती – अश्वपति, बादशाह । पूर – पूरी, अधिक । परभत्ती – प्रभुता, सम्मान । हीर कटार – हीरों से जड़ी हुई कटार । तेग – तलवार । झळअंम – चमकती । सोन ज – स्वर्ण का । परठि – लगाये हुए भेजकर । नग – नगीने, जवाहिरात । अरछियौ – सम्मानित किया । ठढ्ढ़ौ – बड़ा । हियौ – हृदय । सिरपाव – सिरोपाव । भार – दायित्व (रक्षा) का भार ।

७. संभरी नाथ – राव शत्रुशाल । नोट :—चौहानों का सांभर क्षेत्र पर बहुत समय तक राज्य रहने के कारण चौहानों के लिए संभरीनाथ जातीय सम्बोधन रूढ़ हो गया था । गरू गाहरे – गंभीर या बड़े योद्धा । पगारै – मार्ग, परकोटे ।

अरी राय तारां मयंकं सतुल्लं। लुभीराय माथै गजां अंक सुल्लं ।।
बळावंध रै पातिसाहं बखानं। चिरं राज बूंदी गढ़ं चाहुवांनं ।।
दळे राय बीजापुरं साहि दंडा। जंगं हेम नग्गं लिये गोळकुंडा ।।
गढ़ं लियं सो दौलताबाद गाढ़ै। ठंभै और दूजै गढ़ं कौन ठाढ़े ।।
लियं राय नागं गढ़ं बंगलाना। टोरे बिंद रोहे तुटे तिलंगांना ।।
गुढ़ी भांय ज्यौं राय गढ़ं उड़ाये। लरै राय दक्षिन ढ़िल्ली सु लाये ।।
खिचीखंड ज्यौ राय खप्पाय खग्गं। मिळै केइ मारै परै केइ पग्गं ।।
धरै उत्तरं राय खग्गं धपाये। खळं मूगळं कज्जलं बाज खाये ।।
मरोरंत लख्खं दुवै राह नांमी। कहे भारथं कथ्थ कथ्था कहानी ।।
पुणीजै कहांलौं 'सता' के पंवारे। तितं अमरं मद्धि ऊदोत तारे ।।७।।

छंद छप्पय

असपत्ति हूं मिळी, राव आप डेरां पाधारे।
बड़ो क्षत्री वट बीज, वळे पतसाह बधारे ।।
हट्ठ राव 'हम्मीर', दळां दूभर राव दारुण।
दिली थंभ राव दूठ, अवर राव बोट उबारण ।।
हिंदवांण राव खुरसांण हद्द, मंडै राव ऊंडो मतो।
राव 'महेस' बाखांण किये, 'सुंदर' राव जेहो 'सतो' ।।८।।

अरी – शत्रु। **मयंकं** – चन्द्र। **अंक सुल्लं** – अंकुश। **बळाबंध** – पहाड़ आडावाला के कारण बूंदी नरेशों को बलाबंध कहते हैं। **दळे** – नाश किया, दबाया। **जंगं** – युद्ध में। **हेम नग्गं** – स्वर्ण और जवाहिरात। **गाढ़ै** – सुदृढ़। **ठंभै** – ठहरे। **ठाढ़ै** – दृढ़ता पकड़ कर। **नागंगढ़ं** – नागपुर। **टोरे** – तोड़े, विजय किये। **बिंदरोहे** – बीदर का दुर्ग। **गुढ़ी भांय** – पतंग की भांति। **खिचीखंड** – खीचीवाड़ा। **खप्पाय** – नाश कर। **खग्गं** – तलवार से। **मिळै**– मिल गए, अधीनता मान गए। **मारै** – मारे गये। **पग्गं** – पैरों में, शरण में। **धपाये** – तृप्त कीं। **कज्जळ** – हाथी। **बाज** – घोड़े। **खायं** – नाश किये। **दुवै राह** – हिन्दू और मुसलमान दोनों धर्मों के मानने वालों में। **नांमी**–विख्यात। **भारथ्थं** – युद्धों की। **पुणीजै** – कहे जावें। **कहांलौं** – कहाँ तक। **सता के** – राव शत्रुशाल के। **पंवारे** – प्रवाड़े, कीर्तिगाथाएं। **अमरं** – आकाश। **ऊदोत** – उदयमान्। **तारे** – नक्षत्र, सितारे।

८. **बड़ो क्षत्रीवट बीज** – क्षत्रियत्व का अंश। **वळे** – पुनः, फिर। **बधारे** – सम्मान देकर बढ़ा दिया, उत्साह दिलवाया। **दूभर** – कठिन, प्रबल। **दारुण** – दारुण, भयंकर। **दूठ** – महान् वीर। **बोट** – ओट, रक्षक। **हद्द** – सीमा। **ऊडो मतो** – गहरा विचार।

अथ वचनिका

तखत निमा स्याम का दिवान दिवानी किया ।
कुलि लोग हजूरि दरवानों को हुकम दिया ।।
चिराकों की जलूसि आई सब ठौर रोंसनाई हुई ।
बड़े बड़े ठाकुर लोग आये बैठे हैं बड़े बड़े ठाकुर आवते हैं ।

तिनकी ताजीम होती है । पांन आगू धरते हैं । और खवास पासवांन सब हुदादार आपणे आपणे हुदे लिये खड़े हैं। इतने में मतिवाळै हाथी बेड़ी झाड़ि लड़ लहसकर में सौर हुवा । दिवांन कह्या सौर किसका । कह्या दिवांन के हार्था लड़े जिसका । गड़दारों चरखीदारों को हुकम हुवा । हाथी ठांन लगावो । बंधनै सौं बंधावो । फिरते हैं निजरि के घोड़े । ऊचिश्रवा के सें जोड़े । लाख-लाख रूपइयों के काज । सिरताजाँ सिरताज । असे हाथी घोड़े ब्रह्मरण भाट चारणां कौं दीजै तो राव की क्या तारीफ कीजै ।।९।।

छंद चांमर

बीचि राव तखत विराज हीं । सिर छत्र चांमर साज हीं ।।
छत्रीस बंस छत्तीस के । अवतार सारस ईस के ।।
चावकं बिरद्द स चोज के । भड़ 'रतन' 'दूदा' 'भोज' के ।।
भाराथ सिंघ अभंग सा । पव्वै स आरणि पमंग सा ।।

---

९. निमा – (?) । दरवानों – द्वारपालों । चिराकों – चिरागों । जलूसि – जलूस । रोंसनाई – रोशनी, प्रकाश । तिनकी – उनकी । ताजीम–सम्मानार्थ उठ कर आदर करने को ताजीम कहा जाता है । आगू – सन्मुख । हुदादार – (ओहदेधारी ?) । हुदे – ओहदे । झाड़ि – तोड़ी । लहसकर – सेना । गड़दारों – हाथियों को काबू में करने वाले भालाधारी सैनिक । चरखीदारों – हाथियों को वश में करने के लिए चर्खी नाम के यंत्रधारी सेवक । ठांन – स्थान । बंधनैं – रस्से, बंधन से । निजरि के घोड़े – खासा घोड़े, राजा की सवारी के घोड़े । ऊचिश्रवा – उच्चैःश्रवा, इन्द्र का घोड़ा । जोड़े – समान ।

१०. सारस – सदृश्य, अंश वाले । ईस – ईश्वर । चावकं – इच्छावान् । चोज – आनन्द, खुशी । भाराथ – युद्ध में । अभंग – निडर । पव्वै – पहाड़ । आरणि – अर्णव, समुद्र । पमंग सा – घोड़े जैसा ।

कंवरां स बिरद्द कहाववा। रवि जितै सूर रहाववा ।।
लघु वेस लाज स लोयणं। पति जेमि उत्पळ पोयणं ।।
ब्रख पंच दस सा बूलयं। लहु बांणि जिम सादूळयं ।।
मोहीक्कमं जेहा 'महीक्कमं'। 'नर' 'दूदा' जेहा (नर) अनंम ।।
गुमांन पूर 'गूमांन' रा। ओहट्ठ 'इंदरसाल' रा ।।
'जोरार' 'नाहर' जांणियै। फरमांण तेणि पिछांणियै ।।
जगपत्ति गौड़ उजास रा। दळनाथ 'गोव्यंददास' रा ।।
'सिवरांम' खैराड़ां सिरै। कथ आजि रण बिमगी करै ।।
दळ सोड़ जिता दीवांण रा। पाहड़ां तोल प्रमांण रा ।।
घोड़ां भड़ां घांसारये। पेखै गजां नौं पारये ।।
दुंदभि घौस स द्वंद रा। आखाड़ गाढ़ स इंद रा ।।
यम दिल्ली मदति ऊससै। केवांण सुरताणां कसै ।।
आगरै मिळिया ऊमरा। खंड खंड खूम स खूमरा ।।१०।।

छंद छप्पय

येक साह ईरांन, येक तुरकांन अधारे।
साहि बिन्है धर संधि, कोट कावली करारे ।।

रवि – रवि, सूर्य। **जितै** – जितने, जब तक है। **वेस** – आयु। **लोयणं** – नेत्रों में। **उत्पल पोयणं** – पुष्पों में कमल तुल्य, कमल पुष्प। **ब्रख** – वर्ष। **पंचदस** – पन्द्रह। **बूलयं** – बोला जाता है। **लहुबांणि** – लघु आवाज। **सादूळयं** – शार्दूल जैसे, सिंह सदृश्य। **महीक्कम** – वीर, मोहजित्। **अनंम** – बली, उद्दण्ड। **गुमांन पूर** – गर्व से भरे पूरे। **गूमांन** – गुमानसिंह। **ओहट्ठ** – हठीले। **जोरार** – जोरावरसिंह, बलवान्। **नाहर** – नाहरसिंह, सिंह। **तेणि** – उसके। **दळनाथ** – सेनाध्यक्ष, राजा। **खैराड़ां** – खैराड़ वालों का। **सिरै** – सिरमौर, प्रमुखिया। **बिमगी** – विपरीत। **सोड़** – सुभट, योद्धा। **जिता** – जितने। **दीवांण** – राजा। **घासारये** – सेना। **नौं** – नहीं। **द्वंद** – युद्ध। **आखाड़ गाढ़** – अखाड़े में दृढ़ रहने वाले, मल्ल योद्धा **इंद रा** – इन्द्र के, राजा के। **ऊससै** – जोश में आये। **केवांण** – तलवार। **सुरताणां** – सुल्तानों, शाहजादे मुराद और औरंगजेब के लिए 'सुरताणां' शब्द का प्रयोग किया गया है। **कसै** – बांधे। **ऊमरा** – उमराव। **खूमस खूमरा** – जाति जाति के।

११. **तुरकांन** – तुर्की, टर्की। **अधारे** – आधार, सहायक। **बिन्है** – दोनों।

जहां 'खांन रुसतम', जमांन दिल्ली छळि जग्गै ।
कर झालै किरमाळ, भभकि खुरसांण स भग्गै ।।
बगदाद रूम खंधार बळि, हूनर वे ओदक हुवै ।
यम पहस बलख ऐराक कहि, सू के कौ नर बस हुवै ।।११।।

ले डाक चौकियां, साह फुरमांण स झल्ले ।
अहोराति येकसा, हाथ हाथां केइ हल्ले ।।
तें काबिल पौंतिया, दीह सातमें नतीठा ।
खास कलम 'रुसतम, खांन' दिल बांचि स दीठा ।।
तिण मांहि येह कथ ऊघड़ी, बातां हुई बिरंग री ।
जोधार 'जसौ' भाजे जुड़ै, राड़ि फतै 'अवरंग' री ।।१२।।

'औरंगसाहि' 'मुराद', फतै ऊजेणि फबांणी ।
'अजण' कांमि आवियौ, अनै हाडौ 'माधांणी' ।।
हबै कूच आगरै, सीस कीधौ सुलितांणां ।
काजि तेणि कोकियौ, अभंग 'रुसतम' अमांणां ।।
स्यायत्त तुरत्त देखै सही, उतकंठा धरियां हिया ।
चतुरंग सेनि करि चल्लियै, दर कूंचां डेरा दिया ।।१३।।

खड़ियौ 'रुसतम खांन', लिये सिफरं सेलारं ।
सेर पचास स तोल, भीछ राखै भालारं ।।

छळि–युद्ध । कर झालै – हाथ में लें । किरमाळ – तलवार । भभकि – क्रोध में आकर । खुरसांण – मुसलमान, खुरासान देश । हूनर वे – कला से । ओदक – भय, आतंक । के कौ – किन के ।

१२. डाक चौकियां – पत्र, फरमान आदि लेने जाने वाले व्यक्तियों के ठहरने आदि के निश्चित स्थान, । झल्ले – लिये । अहोराति – रात-दिन । हाथ हाथों – दस्त-बदस्त । काबिल – काबुल । पौंतिया – पहुँचे । दीह – दिन । नतीठा – व्यग्रता से । कथ – कथन, वृत्तान्त । ऊघड़ी – निकला, पढ़ा गया । बिरंग – बिना आनन्द, बिरस । राड़ि – युद्ध में ।

१३. कोकियौ – बुलवाया । अभंग – अभय । स्यायत्त – साक्षी सहित ।

१४. खड़ियौ – चला । सिफरं – ढाल । भालारं – भाला ।

सिफर सेर दस दोय, सिलह मण येक संवारी ।
सत्त सेर समसेर कहै, मुर सेर कटारी ।।
दस सेर टोप अधमण सनाह, रांग सेर दस है रळी ।
भड़ यता सजै ऊभो रहै, कुसम भार लागै कळी ।।१४।।

येक अवलि हलवांन, बिरचि कव्वाब बणावै ।
दोय सेर रोगनी, नान रोगन्न गणावै ।।
सेर तीन सुखदास, बहौत प्रति बास सु बासै ।
और और नाना, प्रकार खाणां अप्रकासै ।।
पंच सै खांन हूंता प्रभति, जीमि जिमावै येतलो ।
जमदूत 'खांन रुसतम' जमां, आप अरोगै जेतलो ।।१५।।

मिळी आयै 'रुसतम खांन' आगरै अगंजी ।
दिली छळि दईवांण, भिड़ै दसही दिस भंजी ।।
पंच सहस तोखार, रूढ़ि बाहण पड़ियाळं ।
गज पचीस मदगळ, ढुळै तिण ऊपरि ढालं ।।
पैदल अपार खंधार पुणि, कर नगो झल्लै किती ।
पायक सहस आगळि पुळै, येमि मिळै सो असपती ।।१६।।

वोपैं सिर अहदियां, बेबै साहां फुरमाणं ।
दूजारै सिर दक्खि, 'साहिदारा' नीसाणं ।।

सिफर – ढ़ाल । संवारी – सजी हुई । मुर – तीन । अधमण – आधे मन वजन की । सनाह – कवच । राग – जंघा के कवच । रळी – अच्छी लगने वाली । कुसम – पुष्प । कळी – कली, पंखुड़ी ।

१५. अवलि – अव्वल, प्रथम, अच्छा । हलवांन – ताजा एवं कोमल बकरा । बिरचि – काट कर । कव्वाब – कबाब, लोह शलाकाओं पर भुना हुआ मांस । रोगनी – स्निग्धता युक्त मांस । सुखदास – मांस विशेष । प्रति बास सु बास – सुगंधि प्रति सुगंधि । खाणां – भोज्य पदार्थ । प्रभति – प्रख्यात, कीर्तिवान् । जिमि – भोजन कर । अरोगै – खाये, जीमें । जेतलो – जितना ।

१६. अगंजी – अविजित । भंजी – नष्ट कीं । तोखार – घोड़े । रूढ़ि – चढे । बाहण – वाहन । पडियाळं – तलवार । मदगळत – मदगलित । ढुळै – ढलकती हुई, ढुलती । किती – तलवार, कितनी । पुळै – चलें ।

१७. वोपैं – शोभित हो । अहदियां – अहदी, मुगलकालीन सेवक विशेष । दूजारै – इसके बाद में, इसके अलावा ।

येमाऊ आविया, पासि राजा 'सिवपत्ती'।
बड़े वेग बोलिया, बात ये हुई बिभत्ती ॥

फरमांण सुणै नर फूलिया, कूच तणा द्वंदभि किया।
गढ़ राखि गौड़ भड़ गाढ़ रा, दिल्ली दिस डेरा दिया ॥१७॥

दियण अदट्टां दाट, पाट अजमेरि उजाळो।
अरी जाड़ ऊबाड़, बिददड़ झालियां बहाळो ॥
अैनथ्थां नाथणो, साहि छळि गौड़ सपांणो।
अबरी घड़ां स बींद, रूक बाजै जमराणो ॥

कवचट्ट बट्ट भरियौ कहर, बिढ़ण आगि बरजागि रै।
आवबा कांमि 'बळिराम' उत, वो भड़ आयौ आगरै ॥१८॥

छन्द नींसाणी

येहा 'सिवपती' आगरै आया ऊलट्टै।
खत्रवट्टै रिण खेलबा थट थाट स थट्टै ॥
पौहमी लियण असपती घण घाट अघट्टै।
असपती भुवदंड अरघिया घोड़ां गजघट्टै ॥
हियौ नयण ठंढ़ा हुवा डर द्रोयण पट्टै।
गढ़ मांडू रख्खै गूमर रख्खै रजत्रट्टै ॥
भाई 'पौहकर' जेहुवा अदभूत अघट्टै।

येमाऊ – उत्साह सहित। बिभत्ती – विविध प्रकार, अद्भुत, अनहोनी। फूलिया– विकसित, फूले, प्रसन्न हुए। कूच तणा – प्रस्थान करने का।

१८. अदट्टां दाट – बेकाबू को रोकने वाला। पाट – सिंहासन। अरी – शत्रु की। जाड़ ऊबाड़ – दंष्टाएँ उखाड़ने का। बहाळो – उतावला। अैनथ्थां नाथणो– काबू में न आने वालों को काबू में लेने वाला। अबरी घड़ा – बिना लड़ी सेना। बींद – दूल्हा। रूक बाजै – तलवारें चलने पर, युद्ध होते। कवचट्ट बट्ट – जोश व कवच में आबद्ध। बिढ़ण – लड़ने को। आगि बरजागि – वज्र की आग।

१९. ऊलट्टै – लौट कर, उमड़ कर। घण – बहुत से। घाट अघट्टै – दुष्कर प्रयत्न या हुए। अरघिया – पूजे, सम्मान प्रकट किया। गजघट्टै – गज-वदन, गज सेना। हियौ नयण – हृदय और नेत्र। उर द्रोयण – शत्रुओं के हृदय। अघट्टै– शरीर वाला।

मौसरां ऊगां मौसरां खग ब्रदां खट्टै ।
जर वंट्टै जिण जाचिगां द्रोयण रिण दट्टै ॥१६॥

छंद निराज डंमर

मिळै स गौड़ 'सिव्वरांम' धांम नांम ऊधरं ।
दिल्ली सथंभ द्रोन दाह ध्रमंस्याम सूधरं ॥
जे राजरिख्ख ध्रमराज सूरता बाखांनियै ।
दिल्ली दिवांन मध्य ग्रान चित्त में न ग्रांनियै ॥
जे लोह लाठ कंध काठ 'साहिजिहां' कौं नवैं ।
ग्राकास पास भ्रूह जास भ्रंगही जहीं भवैं ॥
करूर कट्ठ सूर हट्ठ उभै सीस सै हुवै ।
जे तंब नास ते प्रकास लख्ख लख्ख को खिवैं ॥
कहे 'महेस' भुजा केस जेस कीत्ति कीजियै ।
गयंद बाज सोन साज पूजिये स दीजियै ॥२०॥

छंद छप्पय

ग्रसपत्ति हूं भुज ग्ररधि, सूर राजा 'सिवपत्ती' ।
गौड़ां पाटि गरीठ, थाट भांजण खळ थत्ती ॥
विकट रूप वैराट, कीध जिण घाट भयंकर ।
भुज 'पौहकर' भैंभीत, सुतण 'गोपाळ' ग्रसंकर ॥

मौसरां – मूंछें । ऊगां – निकलते । मौसरां – ग्रवसर । ब्रदां खट्टै – विरुद प्राप्त किये । जर बंट्टै – द्रव्य दान किया । जाचिकां – याचकों को । रिण दट्टै – रण में रोके, कर्ज से मुक्त किए ।

२०. धांम नांम – स्थान व नाम का । ऊधरं – उद्धार करने वाला, धारण करने वाला । द्रोन दाह – द्रोहियों को नष्ट करने । राजरिख्ख – राजर्षि । ध्रमराज – धर्मराज, युधिष्ठर । दिवांन – सभा । ग्रान – ग्रन्य । लोह लाठ – लोह-स्तंभ । कंध काठ – कठोर कंधे, प्रचण्ड कंध । भ्रूह – भ्रकृटि, मस्तक । जास –जिसके । भ्रंगही – भृङ्गी, भौंरा । जहीं – जहाँ पर । भवैं – घूमते हैं । कट्ठ – मजबूत, दृढ़ । तंब नास – ग्रंधकार को नष्ट कर । खिवै – सहते । कीत्ति – कीर्ति । सोन – स्वर्ण ।

२१. गरीठ – वीर । थाट – समूह, ऐश्वर्य । थत्ती – शक्ति, समूह । घाट – ग्राकृति । भैंभीत – निडर, शत्रुग्रों के लिए भयकारी । ग्रसंकर – निर्भय ।

तवि भीछ अवर 'सिवपति' तणा, बैण बधे बधि बोलणां ।
घट भंगन बिये भनि बड़े, ते केहा हस तोलणां ।।२१।।

रहियो नहीं रुके, मिळेय कर साहि 'मुरादं' ।
उरड़ि मुरड़ि आवियौ, बरड़ि दाखै रसवादं ।।
साहि सुणै जीवतो, येमि ऊचरं अमानं ।
जीवै 'साहिजिहांन', तपे तप साहिजिहांनं ।।
नर बियां कंध नावैं नहीं, धजावंध कांधौ धरै ।
दीप-कल्यानह देखिये, जिसी लाय जोध पूरै ।।२२।।

छंद भुजंगी

यसौ 'रामसी' रायठोर स रंजे । भिड़े 'भीम' रावतं जसों न भंजे ।।
करां 'रामसीगं' भंजे करारी । मनै बज्जरं साहि पब्बैस वारी ।।
जियं 'रामसो' चूक जांणै अचूकं । भड़ां लेत हूं मारि कीधं सभूकं ।।
जियं 'रामसी' रोट वंटे जगत्तं । सवैं ऊपरां ऊबरो जेणि वत्तं ।।
लड़े 'रामसी' ईडरं गढ़ं लीधं । कहे तें अगम्म तहां गम्म कीधं ।।
जकौ 'रामसी' 'क्रमसेणे' सु जायो । जिणं साहि 'मूराद' रीझै खिजायो ।।
जकौ 'रामसो' ध्रम स्यामं सनाहं । वदै राह बेऊ जिणं वाह वाह ।।
असौ 'रामसी' आगरै चालि आयो । भड़ां साहि रा कांम रा मनं भायो ।।२३।।

तवि–कहे । भीछ – योद्धा । तणा – का । बैण – वचन । बधेबधि – बढ़ बढ़ कर । बोलणां – बोलने वाले । घट – शरीर । हस – हंस, प्राण । तोलणां – तोलने वाले ।

२२. मिळेय कर – मिल कर । उरड़ि – जोश में आकर । मुरड़ि – नाराज होकर, मुड़ कर । बरड़ि – क्रुद्ध होकर । रसवादं – भेदपूर्ण । जीवतो – जीवित । येमि – इस प्रकार । बिया – अन्य को । नावैं – नमावे । धजाबंध – ध्वजधारी । दीप कल्यानह – (?) । जिसी – जैसी । लाय – प्रचण्ड अग्नि ।

२३. यसौ – ऐसा । रंजे – शोभा पावे । मनै – मानो । बज्जरं – वज्र, इन्द्रायुध । पब्बैस – पहाड़ों पर । अचूकं – न चूकने को, अमोघता । सभूकं – चूर चूर । रोट बंटे – आगतों को भोजन करावे । नोट :—रामसिंह अपने यहां आने वालों को रोटियां देता था, इसलिए वह रामसिंह रोटला के नाम से प्रसिद्ध हुआ । ऊबरी–बची रही । जेणि – जिसकी । बत्तं – बात, प्रसिद्धि । अगम्म – अगमनीय । तहां – वहां । गम्म कीधं – गमन किया । जकौ – वह । जायो – पुत्र । रीझै – प्रसन्न होकर । खिझायो – रुष्ट किया । बदै – कहती है । बेऊ – दोनों । असौ – ऐसा । मनं भायो – पसन्द आया ।

छंद छप्पय

परम नाम अति प्रेम, धरम सोही स्याम उधारै।
करम बाट कुळ बाट, सरम री यों वप धारै ॥
राज रिख ध्रमराज, पाज दिल्ली पतिसाही।
भड़ांनाथ भैभीत, कुळ लागै नहीं काही ॥
'भारमल' तणौ मांझी भुजां, लड़ि रह बाकारि अरि पचै।
भाजियौ सुणे 'जसमंत' भड़, 'रूपसिंघ' ऊंडा रचै ॥२४॥

रूप नरां मुरधरा, रूप सूरां दातारां।
'रूप' दिली साहि रा, कवलि अवलिया करारां ॥
अनड़ रूप अंबखास, पिसण सिंघ रूप सपेखे।
'हणूं' रूप हाथाळ, दिली पति रांम सदेखे ॥
जस रूप जेणि भरियौ जगत, तिजड़ रूप चपळा तणे।
भाजियौ सुणे 'जसवंत' भड़, 'रूप' रूप चढ़ियौ रणे ॥२५॥

अथ भीवजी बीठळदासोत गौड़ में

छंद पद्धरी

अजमेरि धरा आदीत ऊगि। पयनिधी परां परकास पूगि ॥
'भीमाळ' वंस उजवाळ भूप। धर खळां तेज परजाळ धूप ॥

---

२४. परम – परमेश्वर। करम बाट कुळ बाट – कर्त्तव्य और वंश का परम्परागत मार्ग। वप – वपु, शरीर। काही – कलंक, लांछन। बाकारि – ललकार कर। अरि – शत्रु। ऊंडा रचै – गहरा विचार करे।

२५. मुरधरा – मरुधरा, मारवाड़। कवलि – कौल, वचन। अवलिया – उदार, प्रथम दर्जे के। अनड़ रूप – गिरिस्वरूप, पर्वतकाय। पिसण – रिपु। सपेखे – देखते हैं। हणू – हनुमान। हाथाळ – भुजाओं वाला। दिली पती – बादशाह। जस रूप – यश रूप। जेणि – जो, जिसके। भरियौ – भरा है, छाया है। तिजड़ – तलवार। चपळा – बिजली। तणै – के।

२६. आदीत – आदित्य, सूर्य। पयनिधी परां – समुद्र के उस पार तक। पूगि – पहुँचा। भीमाळ – भीमसिंह। परजाळ – जला कर। धूप – तलवार।

सोयणां सोज चंदह सुभाव । रजवट्ट वट्ट अजमेर राव ।।
रिख ब्रंमराज रिख गौड़ राज । परमांण हद्द हिंदवांण पाज ।।
'गोपालमल्ल' दादौ गरीठ । पूरक प्रमाड़ां पीठ पीठ ।।
ता तणै पाटि 'भीमह' त्रसीग । रजवाट रखण कुळवाट रीग ।।
अड़वड़त जोस आभै अधार । जुध लाख दळां जीतण ज-वार ।।
खय लाख दळां भांजण खड़्गि । असपती दळां सिणगार अग्गि ।।
असपती दळां आगळि अमौड़ । गैंढ़ल्लमल्ल गैढ़ल्ल गौड़ ।।
हींसल्ल मल्ल बाहणों हाथ । अनड़ां नड़ां ऊनथां नाथ ।।
गंजीव धरण जेहा अगंज । सायक्क जोध पायक्क संज ।।
'भीम' जिम 'भीम' गयंदां भ्रमाड़ । कळहणे भीछ भीछां किमाड़ ।।
अंगद्द पांव मांडण अबीह । धूवळां तणै सिर बगांध्रीह ।।
वीर जिम वीर जुजिस्ट वाच । ऊपाड़ पहाड़ां जड़ां आच ।।
बांकुड़ां भड़ां बळ काढ़ बढ्ढ़ । गढ़ रखण बिभाड़णहार गढ्ढ ।।
त्रासियां भड़ा तरसींघ वांक । छड़ियाळ भड़ां ऊतार छाक ।।
त्यागियां राय जस तिल्ल तेह । मौजियां राय तेरहों मेह ।।२६।।

सोयणां – सज्जनों। **सोज** – वह। **रजवट्ट वट्ट** – क्षत्रियत्व के मार्ग, क्षत्रियत्व के बल। **गरीठ** – वीर। **पूरक** – पूर्ण। **पीठ पीठ** – पूर्वजों के पिछले। **ता तणै** – उसके। **पाट** – सिंहासन। **त्रसीग** – वीर। **रीग** – वैभव की ऋद्धि। **अड़वड़त** – धक्कमधक्का, भिड़ते हैं। **आभै** – आकाश। **ज-वार** – उस समय में। **खय** – विनाश, क्षय। **खड़्गि** – तलवार से। **अग्गि** – आगे। **आगळि** – अर्गला, अगाड़ी। **अमौड़** – न मोड़ा जाने वाला, अडिग। **गैंढल्ल मल्ल**– हाथियों के रक्षक या गिरने वाले वीर। **हींसल्ल मल्ल** – घोड़े के समान तीव्र गति से आक्रमणकर्त्ता। **बाहणो** – चलाने वाला। **अनड़ां नड़ा** – नहीं झुकने वालों को झुकाने वाला। **ऊनथां नाथ** – स्वच्छंदों को अधिकार में लेने वाला। **गंजीव धरण** – अर्जुन। **जेहा** – जैसा। **अगंज** – अविजयी। **सायक्क** – बाण। **पायक्क संज** – सजे हुए पदाति। **गयंदां** – हाथियों को। **भ्रमाड़** – फिरा कर फेंकने वाला। **कळहणे** – युद्ध में। **भीछां** – योद्धाओं। **किमाड़** – किवाड़। **मांडण** – रोपने, स्थिर करने। **अबीह** – निर्भीक। **धूवळां** – तोपें। **बगां** – बजने, लगने। **ध्रीह** – ध्वनि। **जुजिस्ट** – युधिष्ठिर। **वाच** – वाणी का। **जड़ां** – मूल। **आच** – हाथ। **बळ काढ़ बढ्ढ़** – बढ़ कर ऐंठ निकालने वाला, गर्व को नष्ट करने वाला। **बिभाड़णहार गढ्ढ** – दुर्गों को ध्वस्त करने वाला। **त्रासियां** – डरे हुए, काट दिए। **तरसींघ** – वीर। **वांक** – बांकुरा, टेढ़ापन रखने वालों को। **छड़ियाळ** – भालेधारी। **छाक** – मद, गर्व। **त्यागियां** – दातारों। **जस तिल्ल** – यशरूपी तिलक। **तेह** – वह। **मेह** – मेघ।

वचनिका

मोसाळ की तरफ मेड़ता ददसाळ की तरफ ग्रजमेर।
नानां 'गोपाळदास' दादा 'गिरमेर'।।
बेऊ पखां राजहंस बेऊ पखां बिरदैत।
बेऊ पख गैमर गुड़ै बेऊ पख बानैत।।
ग्रजमेरि का ग्राभरण ग्रजमेरि के पाट।
ग्रजमेरि के दुसमनों के दाट।।
ग्रजमेरि के मेर के राखणहार।
बैर-बराह बिरदौं का भारा।।
जेतै पवाड़े दीजैं जेतै पवाड़े बणैं।
यों यारो मा पूत जणै तो ग्रैसा जणैं।।२७।।

दवावैत

हठ का हमीर। ग्रोहठ माल। भांवतां के भावता। ग्रणभावतां के नाटसाल। सत का समूह। ध्रम की पाज। गदाई का कल्पितरु। जोग की जिहाज। तेज का सूरिज। मूरति का मैंण। दुसमनों के दावानळ। सैंणों का सैंण। दिल का दरियाव। दरियावों सा गहर। दरियावों का फेर। दरियावों की लहर।।२८।।

---

२७. **मोसाळ** – ननिहाल। **ददसाळ** – पितामह के वंश के पक्ष में। **गिरमेर** – गोपालदास गौड़। **बेऊ पखां** – दोनों पक्षों। **राजहंस** – उज्ज्वल। **गैमर** – हाथी। **बानैत** – वीरता सूचक चिन्ह धारण करने वाले। **ग्राभरण** – ग्राभूषण। **पाट** – सिंहासन पर। **दाट** – रोक, बंधन। **मेर** – मर्यादा, सीमा। **बैर-बराह** – बैर लेने वाले। **बिरदौं का भारा** – विरुदों का समूह। **जेतै** – जितने। **पवाड़े**– कीर्ति कथा। **जणैं** – उत्पन्न करे, जन्म दे। **ग्रैसा** – ऐसा।

२८. **हठ का हमीर** – राव हमीर जैसा हठीला। **भांवतां के भावता** – चाहने वालों को चाहने वाला। **ग्रणभावतां** – न चाहने वालों। **नाटसाल** – नाटशल्य, योद्धा। **सत** – सत्य, शौर्य। **गदाई** – राजसिंहासन का वैभव। **जोग** – योग। **मूरति** – मूर्त्ति, सूरत। **मैंण** – कामदेव। **सैंणों** – सयानों, मित्रों। **गहर** – गहरा, गंभीर। **फेर** – घुमाव, चक्र।

छंद पद्धरी

चित येह बिहूं बळ चमर ढाळ । भळहळै दिवाकर जेमि भाल ।।
सिंघासण ग्रासण बणै सोज । जगमगैं बदन जाणैं सरोज ।।
छत्तीस बंस ग्रोळगै छात । पह पढ़ै जितां बिरदाव पात ।।
बिरदाव जिता वोपै ग्रबीह । समहरे जांणि पखहरे सींह ।।
सतबाद जुजिस्टर जेमि सोय । हठवार जांणि जरजोध होय ।।
गंगैव जेमि ग्रणभेव ग्यांन । सरणाय राय राखण स मान ।।
सक-बंध तियागी करण सम्म । पर दुख्ख काजण जिमि बिक्रम्म ।।
भेदगर विद्या जेमि भोज । चाढ़ियां पैंज प्रसरांम चोज ।।
संग्राम राय जगहथ्थ सूर । गहवंत भड़ां भांजण गरूर ।।
भागियां राय जुध जेत-खंभ । थिर रखण गवड़ पतिसाहि थंभ ।।
सूरपण ग्रनै खत्रवाट सींव । भुजां येता बिरद बणैं 'भींव' ।।
ग्रागरै थाट मिळिया उपाट । बीथियां मद्धि लहजे न बाट ।।
घाघरट गजां घोड़ां घमंस । धम धमे धरा रथ्थां धमंस ।।
गहमह दिवांण सुरतांण गाढ़ । बीजळां झेरि खरसांण बाढ़ ।।

---

२६. चमर ढाळ – चँवर ढुलाने वाला । भळहळै – चमके । दिवाकर – सूर्य । जेमि – जैसे । भाल – ललाट । ग्रासण – ग्रासन । सोज – वह । बदन – मुख । जाणैं – मानों । जगमगैं – चमकता है । सरोज – कमल । ग्रोळगै – याद करें, पहिचानें, सेवा करें । छात – राजा, क्षत्रिय । पह – राजा । जितां – जितने । पात – कवि । वोपै – शोभा पावे । ग्रबीह – निडर । समहरे – युद्ध में । पखहरे – कवचादि सज्जित । सतबाद – सत्यवादी । सोय – वह । जरजोध – दुर्योधन । गंगैव – गंगा पुत्र, भीष्म । ग्रणभेव ग्यांन – प्रत्युत्पन्नज्ञानी, निर्भय ज्ञानी । सरणाय – शरणागत । स मान – मान सहित । सकबंध – योद्धा, कीर्त्ति-स्थापित करने वाला । करण – कर्ण दानवीर कर्ण । सम्म – समान । काजण – लिए । बिक्रम्म – विक्रम, विक्रमादित्य । भेदगर – भेद या रहस्य का ज्ञाता । पैंज – प्रण, प्रतिज्ञा, सीमा । चोज – ग्रानन्द, उत्साह । संग्राम – युद्ध । जगहथ्थ – सूर्य, संसार पर हाथ रखने वाला । गहवंत – गर्वीले । गरूर – गर्व । जैतखंभ – विजय-स्तम्भ । सींव – सीमा, हद । येता – इतने । बणैं – बनें, धारण किये हुए । थाट – समूह, सेना । मिळिया – मिले । उपाट – उन्मूलन करने वाले । बीथियां – वीथिकाग्रों, गलियों । बाट – मार्ग । घाघरट – युद्ध । घमंस – समूह । धम धमे – धम धम की ध्वनि । धमंस – ध्वनि । गहमह – भीड़, ग्रधिकता । दिवाण – राजा । बीजळां – तलवारों । झेरि – गिरा कर । खरसांण बाढ़ – खरशान पर धार लगाई हुई, शानचक्र पर धार दी हुई ।

साबळां अणी सायक सळक्क । भळहळै जंमदाढ़ां भळक्क ।।
तेरवा आघ बढिया तयार । वड राव बुलावै बार बार ।।
'सत्रसाल' राव जमराव सोज । भारथ्थ स्वारथो बियो 'भोज' ।।
'रुसतंम खांन' जेहा रवद्द । हिंदवांण अनै खुरसांण हद्द ।।
'सिवरांम' जिसा राजा सधीर । 'बळिरांम' तणो बीराधि-बीर ।।
'रूपसी' जिसा जोधांण राव । घातणौं घड़ां तेवड़ां घाव ।।
'भींवड़ो' जिसो पंडूरो भींव । सात्रवां गढ़ां ऊपाड़ सींव ।।
'पौहकरो' जिसो सूरति पहाड़ । बेछाड़ खळां कंधां ऊखाड़ ।।
राठौड़ 'रामसो' सा अरोड़ । ठिलि ठाठ काट दे ठौड़ ठौड़ ।।
'भाराथसी' कंवरां भयंक । यळ तणा कंवरां सीस अंक ।।
'सत्रसाल' तणो अवतार सूर । गहवंत तिको भरियो गरूर ।।
'मोहकम्मसिंघ' रण धींग मल्ल । 'सत्रसाल' भुजां अरि सालसल्ल ।।
'गूमानसींघ' अम्मान गाढ़ । डांकियो सीह जिम लोह दाढ़ ।।
'जोरार' भुजां अणपार जोर । घट फांटि पड़ैं सुणि बीर घोर ।।
'केसरीसींघ' जेहा कमंध । बांधणो तिको ऊबंध बंध ।।
संदा स नूर 'नाहर' स सैंद । कुळ आप तणो आणै न कैंद ।।

साबळां – भालों की । अणी – नोंक । सायक – बाण । सळक्क – चमक कर । जमदाढ़ां – कटारियां । भळक्क – चमक । तेरवां – बुला कर लाने वालों । आघ – सम्मान । सोज – वह । भारथ्थ – युद्ध । स्वारथी – स्वार्थी, लोभी । बियो – दूसरा । रवद्द – मुसलमान । हिंदवांण – हिन्दू । खुरसांण – मुसलमान । घातणौं – चोट करने वाला, प्रहार करने वाला । घड़ां – सेना । तेवड़ां – तिगुना । भींवड़ो – भीमसिंह । पंडूरो – राजा पण्डु का । सात्रवां – शत्रुओं । ऊपाड़ – उखाड़ । सींव – सीमा, नींव । सूरति – आकृति । बेछाड़ – विकट । खळां – शत्रुओं के । ऊखाड़ – उखाड़ने वाला । अरोड़ – जबरदस्त । ठिलि – ठेलकर, लुढ़का कर । ठाठ – शान-शौकत । काट दे – नष्ट कर दे । ठौड़ ठौड़ – स्थान-स्थान । भयंक – भयानक, वीर । यळ तणा – पृथ्वी के तमाम राजकुमारों का । सीस अंक – सिरोमणि । धींग मल्ल – महान् योद्धा । भुजां – भाई, सहायक । अरि – दुश्मन । साल सल्ल – चुभने वाला कांटा । गाढ़ – दृढ़ । जोर – बल । घट फांटि – शरीर टुकड़े होकर । कमंध – राठौड़ । बांधणो – बांधने वाला । तिको – वह । ऊबंध बंध – निर्बन्धों को बन्धन में । स – का, सहित । नूर – कान्ति, शोभा । आप तणो – अपने का । आणै – लाने देता, जाने देता । कैंद – कारागृह ।

खगबंध जोध 'अलियार खांन' । जुध 'रहमतुला' जेहवा जवांन ।।
'सत्रसाल' अनै 'महासिंघ' साथ । हाथियां नरूके वहण हाथ ।।
'अखैराज' तणा अंकां उजाळ । 'चंद्रभांण' हरा मांझी सचाळ ।।
'नरपाळ' जिसा चहुंवांण नीर । सांचोर बळे चाढ़ण सधीर ।।
'रिणछोड़ि' जिसा राठौड़ राड़ि । धूहळां बगां धाड़ि जी धाड़ि ।।
'सूजांणसींघ' अवसांण-सिद्ध । आज रौ जोध बांधै उदद्ध ।।
जहां 'नाथ' हरौ जुध पाथ जेमि । कुळ अटळ बीर सो टळै केमि ।।
भैरवी जके झांपां भरन्त । आरांणि करै अंत रै अंत ।।
सुज 'रांम' कुंवर 'कीरत्तिसींघ' । राखियां बंस कूरम्म रीध ।।
त्यां तणै मोहर 'कुसळौ' कंठीर । सामंत सूर रिण धीर धीर ।।
कुसळेस तणौ 'कनको' कुमार । अणबरी घड़ा बरवा उदार ।।
खूरेस ईस 'दाऊद खांन' । पयनिधी जिसौ करि जाय पान ।।
'नरपाळ' जिसा भाखरां नाह । सुज जेमि बदै भुज पातिसाह ।।
असपती बिदा कीधा सऊह । सिरदार मांझि 'दारासकूह' ।।
घुरि घोर त्रम्ब ऐहास घट्टि । फंण सहस धरा आकास फट्टि ।।
हाथियां तणा हलका हलंत । ढुळि ढाल अनै नेजा ढ़लंत ।।
ठंकार वीर घंटां ठंमक । घम घमे सिरी पाखर घमंक ।।

खगबंध – खड्गधारी । जेहवा – जैसा । अंकां उजाळ – अक्षरों को उज्ज्वल करने वाले, भाग्य को उज्ज्वल करने वाले । नीर – कान्ति, आब । बळे – फिर से । जिसा – जैसा । राड़ि – लड़ाई, युद्ध । धूहळां बगां – तोपें चलने पर । धाड़ि जी धाड़ि – धन्य है, धन्य है । अवसांण सिद्ध – अवसर सिद्ध, युद्ध निपुण । आजरौ – युद्ध का, आज का । उदद्ध – समुद्र । पाथ – अर्जुन । जेमि – जैसे । टळै – चूके, किनारा काटे । केमि – कैसे । भैरवी जके झांपां भरन्त – भैरव झांप लेते हैं । आरांणि – संग्राम में । अंत रै अंत – मृत्यु पर्यन्त । कूरम्म – कूर्म, कछवाहा । रीध – ऋद्धि, प्रसिद्धि । त्यां तणै – उनकें । मोहर – अगाड़ी । कंठीर – सिंह । अणबरी – बिना लड़ी, अविवाहित । घड़ा – सेना । बरवा – वरने के लिए । खूरेस ईस – कुरेशियों का स्वामी या मुखिया । पयनिधी – सागर । जिसौ – जैसा । सुज – उसके । बदै – कहे, सराहना करे । सऊह – सब । त्रम्ब – नगारे । ऐहास – ऐसे । घट्टि – घाट के, आकृति के । फण सहस – शेषनाग का फन । हलका – समूह । नोट :—सेना में एक सौ हाथियों का समूह एक हलका कहलाता था । हलंत – चलते । ढुळि – लुढ़क कर । नेजा – पताका, भाले । ठंकार – टंकार, ध्वनि । वीर घंटां – वीर घंटों की । ठंमक – आवाज । सिरी – हाथियों का सिरोभूषण, श्री । घमंक – घम घम की अवाज ।

बेड़ियां केई लग्गै पवेड़ि। तावरां लंगरां बंधै सतेड़ि ।।
चम्मरां लगै लगै श्रोतरां चंग। गिरि स्याम हूंत किरि झरै गंग ।।
हैरखां तणा झंकार हद्द। बेलाल ड़ांण भरता बिहद्द ।।
भळकता सैल ऐहैं सुभाय। तारुबी तेज झळकंत लाय ।।
तूंगां लडंग बारूद तत्थ। सावंग रंग बाणी सुसत्थ ।।
गाडियां झरणंक ध्राण गाज। सुत्रनाळि नाळि लाखां समाज ।।
चवि नाळि रथां तोपां चलंत। हाथियां ठेलि बेला हलंत ।।
जे खड़े सहस कइ सहा जौड़ि। कन्नड़ां खड़े पायक करोड़ि ।।
बेपार खड़े गुरजां - ब्रदार। सूंडिया श्रसूंडां मंडे सार ।।
नारंगी हरे पीळे नीसांण। सुरंग स्याम नीले सुभांन ।।
रंग येक दुरंगे तीन रंग। वौपिया चाप पावस्स श्रंग ।।
चौरंग केई पचरंग चित्र। जे जंत्र इस्ट में जंत्र जंत्र ।।
खट रंग सात रंगह खरूंड। फाबिया गजां ऊपरि फरूंड ।।
बारा श्रपार श्रणपार बांण। मूराड़ जेमि बहता मुसांण ।।
धौळपुर राड़ि मंडण उधांम। मांडिया तटै चांबळि मुकांम ।।२६।।

बेड़ियां – हाथियों को रोकने या बाँधने की लोह शृंखलाओं की बेड़ियां। **पबेड़ि** – वेड़ी के ऊपर और वेड़ी, पर-वेड़ी। **तावरां** – तेज स्वभाव के, क्रोधी। **लंगरां**– वेड़ी विशेष, आभूषण। **सतेड़ि** – सावधानीपूर्वक बुला कर। **श्रोतरां** – कानों के। **चंग** – पताकाएँ। **किरि** – मानों। **झरै** – गिरती हो। **गंग** – गंगा। **हैरखां** – पाखर, घोड़ों पर चलने वाले ध्वज। **बेलाल** – वलाल, घोड़े का जाति। **डांण भरता** – चाल विशेष से चलते हुए। **सैल** – भाले, अंकुश। **ऐहै** – ऐसे। **सुभाय** – शोभित होते, स्वभाव से। **तारुबी** – धातु के बंध। **लाय** – दावाग्नि। **तूंगां** – बारूद रखने के पात्र, टुकड़ी, सेना। **लडंग** – पंक्तिबद्ध समूह। **तत्थ** – वहाँ। **सावंग** – चित कबरे। **सुसत्थ** – सहित। **झरणंक** – आवाज। **ध्राण** – नासिका। **ठेलि** – धकेल कर। **बेला** – युग्म, जोड़े। **सहा-जौड़ि** – एक साथ जोते हुए। **गुरजां-ब्रदार** – गुर्जधारी। **सुंडिया** – शुण्डें। **श्रसुंडां** – माथे पर। **मंडे** – बंधे हुए। **सार** – लोह, शस्त्र। **नीसांण** – निशान, पताकाएँ। **दुरंगे** – द्विरंग के। **चाप** – धनुष, इन्द्र धनुष। **पावस्स** – वर्षाकाल। **चौरंग** – चार रंग के। **जंत्र इस्ट** – इष्ट या आराध्य की सानु-कूलता के लिए बने हुए यंत्र। **खरूंड** – घोड़े, सेना। **फरूंड** – झण्डे। **बारा** – भारा, समूह। **मूराड़** – जलता हुआ पुआल। **बहता** – चलते हुए। **मुसांण** – श्मशान। **मांडिया** – कायम किये। **तटै** – किनारे। **चांबळि** – चम्बल नदी।

छंद छप्पय

मंडिया तट चांमळि, मुकाम साह 'दारासकोह' ।
सो दूजै पतिसाहि, जपै तिण तात स जकोह ।।
एक लक्ष असवार, सुणै सत्तरि सहसांणां ।
नौ हजार भर नाग, मिळै कज्जळ बन मांणां ।।
रथनाळि अनै सुत्रां व्रखभ, पैदल पार न पाइयो ।
'अवरंग' सीसि 'दारासकोह', येता दळ सों आइया ।।३०।।

येता दळ अणपारि, दीध चांमळि सिर डेरा ।
तोजी गजां तुरंग, फबै करि सागर फेरा ।।
प्राति राड़ि परठबा, आजि आरंभ अरंभे ।
सिलहदार कोठार, सिलह कढ़वाय असंभे ।।
पड़ि ढेर टोप बखतर पखर, भाखर आकर सांभळे ।
कांम रा भड़ां डेरां कितां, बांटि वांटि दीजै वळे ।।३१।।

पड़ि पाखर हैमरां, जड़ै सिलहांण जवांणां ।
चढ़ै ढाळ गैमरां, अड़ै भूजां असमांणां ।।
'औरंग' साहि 'मुराद', 'साहि दारा' संगरामं ।
रवि ऊगंते रचैं, ठींक ये ठांम स ठामं ।।

---

३०. दूजै – दूसरा । जपै – कहा जाता है । तिण – उसको । तात – पिता । जकोह – जिसको, उसको । सहसांणां – सहस्र । नाग – हाथी । कज्जळ-बन– कदली बन । मांणां – में के, वाले । रथनाळि – रथों पर ढोई जाने वाली तोपें । व्रखभ – बैल । सीसि – सिर, पर । येता – इतने । दळ सों – सेना से । आइया – आया ।

३१. दीध – दिया । डेरा – पड़ाव । तोजी – धनुष, एक विशेष जाति के घोड़े । परठबा – रचने, करने । आरंभ आरंभे – बड़ा कार्य प्रारम्भ किया । कोठार – भण्डार । कढ़वाय – निकलवा कर । असंभे – अपार । ढेर – समूह । भाखर – पर्वत । आकर – आकृति, समूह । डेरां – तम्बुओं में । कितां – कितने ही । दीजै – दिये । वळे – फिर ।

३२. हैमरां – घोड़ों के । जड़ै – बांधे । सिलहांण – सिलह । ढाळ – बैठा कर, ढाल । गैमरां – हाथियों के । अड़ै – छूती, स्पर्श करती । संगरामं – संग्राम, युद्ध । ऊगंते – उगते, प्रातःकाल होते । रचैं – करे । ठांम स ठामं – स्थान-स्थान पर ।

मंडि रहे पहर यक मोरछा, कळह व्योम टीकम हुई।
दसयेक घड़ी चढ़तै दिवस, दळां साहि चढ़िया दुई ॥३२॥

बीर सनाहां बंधि, धीर बंधे रजपूतां।
बांधि चाळ बाजिबा, राड़ि बंधि मजबूतां॥
नद्द सिंधु नीहाव, भाव बीरा रस बीरां।
भवण चहूं भैचक्क, ऊवर अवदक्क अधीरां॥
'सत्रसाल' आदि हिंदू अवर, 'रुसतमखां' आधे रवद॥
तोखार अंग तंगां तणै, बणै सनाहां हद विहद ॥३३॥

अति ही हित 'सिवरांम', मंत मंडियौ ऊमंडे।
छंड सिंगार परठियो, सिलह सामंतां छंडे॥
कपड़दार कोठचार, वेगि तिण बार बुलाये।
मंहगा बहौ-मोल रा, बडां उमराव बंटाये॥
सिरपाव लिया सिर चाढ़ि कै, धनि राजा रजपूत धनि।
प्रहर तें बदन नित पहरता, दसरावा हुंदे स दनि ॥३४॥

कळह – युद्ध। व्यौम – आकाश। टीकम – दौड़, आक्रमण। दसयेक – ग्यारह। दुई – दोनों, एक ओर औरंगजेब व मुराद और दूसरी तरफ दाराशिकोह।

३३. बांधि चाळ – चाल बांध, वस्त्रों के छोर बांध, पंक्ति बद्ध होकर। बाजिबा – लड़ने के लिए। राड़ि – संग्राम। मजबूतां – दृढ़ता से। नद्द सिंधु – सिंधु नाद नीहाव – घोष। भवण चहूं – चारों ओर, चारों दिशाओं में। भैचक्क – भय से चकित, भयभीत। ऊवर – हृदय। अवदक्क – भय, आतंक। अधीरां – अधीरता वालों, कायरों। आधे – अर्द्ध। रवद – मुसलमान। तोखार – घोड़ों के। तंगां – जीन के कसने, तस्मे। तणै – खींचे। बणै – सजे, पहिने।

३४. मंत – विचार। मंडियौ – किया। ऊमंडे – उमड़ कर, जोश में आ कर। छंड – छोड़, त्याग। कपड़दार – वस्त्रभण्डार के अधिकारी को। वेगि – शीघ्र। तिण बार – उस समय। बहौ मौल रा – बहुमूल्य के। चाढ़ि कै – चढ़ा कर। बदन – शरीर। दसरावा – दशहरा, विजयादशमी। हुंदे – के। दनि – दिन।

छंद भुजंगी

जरू साहिजादा स चढ़ै जवानं ।
महा जोध चढ़ै श्रमानं श्रमानं ।।
खरे खेस गीखूं खुमानं खुमानं ।
चढ़ै चाहुवानं चढ़ै चाहुवानं ।।
गरूरं गरूरं चढ़ै गौर गौरं ।
रुरे रायठौरं रुरे रायठौरं ।।
कहे कूरम्म बंस केते स केते ।
जुरे बंस सीसौद जेते स जेते ।।
बड़े वंस सूरिज्ज यों चंद्रबंसी ।
सवै सूर चढ़ै असंसी असंसी ।।
अनै दीन के दीन चढ़ै स केते ।
सबै काफरं वंस चढ़ै स जेते ।।३५।।

छंद छप्पय

वजे बीर बाजि, सजे सेना सुलतांणी ।
गजे मद्द गैमरां, भजे कायर मुखपांणी ।।
बजि रजे रवी बंब, अंब झळहळे सऊहं ।
अधोफर अपच्छरां, सूर मिळिया स समूहं ।।
पाखरां रोळ वगतर पसर, होय कळळ कळ हूंकळां ।
बळ बळां सूर चढ़िया बहसि, दीठाळा दहुंवे दळां ।।३६।।

---

३५. जरू – मजबूत, जब । श्रमानं श्रमानं – मानधनी, असंख्य । खरे खेस – युद्ध में दृढ़ता धारण करने वाले । गरूरं गरूरं – अत्यधिक गरूर वाले । गौर – गौड़ । रुरे – सुंदर, अच्छे, कुलीन । केते स केते – कितने ही । जुरे – जुड़े । जेते स जेते – जितने थे उतने सारे । असंसी – निर्भय, अशंक । अनै – अन्य । दीन – धर्म । काफरं – मुसलमान । जेते – जितने थे ।

३६. बाजि – वाद्य । मद्द गैमरां – मस्त हाथी । मुखपांणी – मुख की कान्ति । रजे – धूलि । रवी बंब – रवि बिम्ब । अंब – आकाश, बादल । सऊहं – समग्र । अधोफर – आकाश और पृथ्वी के मध्य, आधे ऊपर । रोळ – ध्वनि । पसर – फैल कर । कळळ कळ हूंकळां – युद्ध का कोलाहल । बळ बळां – क्रमशः । बहसि – जोश में आकर । दीठाळा – देखने योग्य, दिखाई दिये ।

छंद किलकिला

मिळि दीठि दीठि दहूं दळां मद्धि ।
उलट्टिय फट्टिय सात उदधि ।।
निधस्सिय खोड़ हजार सुनद्ध ।
सुणै मुर-लोक मही पड़ि सद्द ।।
भन्नकिय सद्द नफेरिन भेरि ।
रुन्नकिय डंडन की बजि भेरि ।।
धुन्नै सिर सेस गिरां सिर धूजि ।
हयख्खुर खेह बिभाकर बूजि ।।
करी जिन नाळि करी जिन कोर ।
घटा घहरी जनुं चारोंहि ओर ।।
छटा जिम पावक बान छुटन्त ।
तहां धनु तें मनौं बान छुटन्त ।।
तिती बड़ तोप लगी अररांन ।
परचौ मनौं वज्र फटचौ असमांन ।।
उडी अनपार अराबनि आगि ।
जगी जमगी स जंबूरनि जागि ।।
मनौं गुरमंत्र दियौ सत आनि ।
.... ।।
गरू गुन गोळ रही गुननाय ।
परैं गज कुम्भ दरी परि जाय ।।

---

३७. उलट्टिय – उमड़ कर । फट्टिय – फूट कर । उदधि – समुद्र । निधस्सिय – ध्वनि होकर । खोड़ हजार – सोलह हजार । सुनद्ध – नदियाँ, सुनाद । मुर लोक – तीनों लोक । मही – पृथ्वी । सद्द – आवाज, शब्द । भन्नकिय – भनन की ध्वनि । नफेरिन – नफीरी, वाद्य । भेरि – भेरी वाद्य, । रुन्नकिय – ध्वनि कर । भेरि – चौकड़ी, अनवरत प्रहार । गिरां – पर्वतों । धूजि – कंपित हो कर । हयख्खुर – घोड़ों के पैरों के सुम । खेह – धूलि । बिभाकर – सूर्य । बूजि – प्रकाशहीन हो गया । घहरी – उमड़ी, घहराई । धनु तें– धनुष से । अररांन – तोपों के गर्जने की ध्वनि । वज्र – इन्द्रायुध । अराबनि – तोपों की । आगि – अग्नि । जगी – जली । जमगी – पलीतें । जंबूरनि – छोटी तोपें । गुन गोळ – गुण रूपी गोले, ज्ञान रूपी गोले । गुननाय– गुनगुना, आवाज कर । कुम्भ – हाथी । दरी – नदी, दरारें ।

तुपक्कन ताड़ पड़ै यक तार ।
मनौं बरिखा यह होत अगार ॥
समट्टिय छुट्टिय स्त्रिगनि बान ।
मनौं अहि पक्खि उडै असमान ॥
सफुट्टिय पक्खर और पमंग ।
खनंकिय भौमि संभाळि खतंग ॥
घमंकिय सांगि बहै यक घाय ।
चमंकिय वारस पारस जाय ॥
भमंकिय श्रोनन के भभकार ।
पयो मनि बूडत कुंभ प्रकार ॥
घनैं गय छक्कि परैं घन घाय ।
मनौं दिग मंदिर से ढहि जाय ॥
सनंकिय तेगन की बह सांट ।
कनंकिय कंध बगत्तर काट ॥
बहै पुळिवाद सिरोहिन बाढ़ ।
झरैं तन डार परैं अवगाढ़ ॥
बहैमि सरीर असील बहन्त ।
खिरै नहीं मुक्ख खिरैं गजदन्त ॥
बहै स जनव्बर ऊननि बाह ।
गजं रुण्ड मुण्ड परैं गजगाह ॥

ताड़ – मार । यक तार – एक समान । बरिखा – वर्षा । समट्टिय – सिकुड़ कर । स्त्रिगनि – धनुष विशेष । अहि पक्खि – पंखधर सर्प । पमंग – घोड़े । खन्नकिय – खनन की आवाज कर । खतंग – साहसी, तीर, क्षतांग । सांगि – सांग नाम का शस्त्र । वारस पारस – इधर से उधर, आर-पार । भमंकिय – उमड़ कर । श्रोनन – रक्त के । भभकार – भक् भक् की ध्वनि । पयो – जल में । कुंभ – घड़ा, कलश । घन घाय – घने घावों से । दिग मंदिर – दिशाओं के स्थानों से । सनंकिय – सन् सन् की ध्वनि करते हुए । तेगन की – तलवारों की । सांट – प्रहार, कोरड़े विशेष । कनंकिय – कान के समीप । कंध – कंधे । पुळिवाद – वाद करके, चल कर । सिरोहिन – सिरोही नगर में बनी तलवारें । बाढ़ – धार, पैना भाग । डार – डाल, शाखा, द्विदल । अवगाढ़ – दृढ़ता, बलवान्, युद्ध । बहैमि – बहते हैं । असील – एक प्रकार का शस्त्र । खिरैं – गिरें । जनब्बर – तलवार विशेष । ऊननि – तलवार विशेष । गजगाह – युद्ध, झूलें, समूह ।

गुरज्जन मार परैं गमकार।
मनौं घन कुट्टत लोह लुहार॥
उरै प्रतमाळिय काळिय जांनि।
मुड़ै मुड़कै बंध संध समांनि॥
फटैं उर काळिज फेफर फुट्टि।
कड़ी छकड़ी छकड़ाह बिच्छुट्टि॥
झड़ाझड़ ओझड़सी बढ़ि झेलि।
करैं मनु पायक घायक केळि॥
झरफ्फर पंखनि पंख झुकंत।
तरफ्फत ताखिन ते बिझकंत॥
जुरै बरबत्त स केऊ जवांन।
घटैं जिनके हथियार निदांन॥
करैं रदघातनि खांन पखांन।
जुरैं मनुं बंदर बीदर जांन॥
परैं बिब खंड भये बिब खंड।
नचैं जंह रुण्ड रु रुण्ड बिहंड॥
भयौ अंधकार महा भय रूप।
भिरैं मिरजा रु नबाबनि भूप॥
भिरैं पतिसाहन सों पतिसाह।
महा जूध ऊध भयौ दहुं राह॥३७॥

गुरज्जन – गुर्जों की, गदाओं की। गमकार – गंभीर घोष। घन – मोटा भारी हथौड़ा। लुहार – लोहे का काम करने वाली जाति का व्यक्ति। उरै – हृदयों में। प्रतमाळिय – कटारें। काळिय – सर्पिणी, यमराज की। मुड़ै मुड़कै – मुड़ कर मरोड़ खाए। संध – संधिस्थान। कड़ी छकड़ी – कवचधारियों के कवचों की कड़ियाँ। छकड़ाह – कवच। बिछुट्टि – छूट कर, टूट कर। झड़ाझड़ – लगातार। ओझड़ – भयंकर प्रहार, अपार। पायक – पैदल। घायक – घायल। केळि – क्रीड़ा। झरफ्फर – फड़फड़ाहट। पंखनि – पक्षियों के। तरफ्फत – तड़फते। ताखिन – तत्क्षण। बिझकंत – चौंक कर। बरबत्त – बाहु युद्ध। केऊ – कई। निदांन – अन्त में। रदघातनि – दन्त प्रहार। बीदर – बद्रिकानन के। बिब खंड – दो दो खंड़ हो। बिहंड – क्षत-विक्षत। भिरैं – भिड़े। भूप – राजा। ऊध – बड़ा, भयानक। दहुं राह – हिन्दू और मुसलमानों, दोनों धर्मों वालों में।

छंद दोहा

दोऊ राह दुंदह भयौ, परचौ 'रुस्तमा खांन'।
'दारा' 'नाहर' सैद को, पलो गह्यौ सुलितांन ।।३८।।

छंद छप्पय

परचौ 'केसरी सिंघ', साहि आलम छळ जग्यौ।
'नरहर' परचौ निदान, लरत यक जिसमं लग्यौ ।।
परचौ गौर 'पौहकर', बरत अपछरा स बिख्यौ।
मुरचौ साहि आलम, जुरत जुध आलम दिख्यौ ।।
हळमळी सेनि चल चल भई, सारी सरम सिपाहियां।
'दारा साहि' पल्लौ गह्यौ, 'नाहर' सैद निबाहियां ।।३६।।
'नाहर' किम नीसरै, नांम नाहर किम रख्यौ।
दोइ राह यम कह्यौ, साहि आलम मुख अख्यौ ।।
और मरैं व्है सैद, हम जीवते कहावैं।
सैदों की क्या रहैं, नाजि जो कांम न आवैं ।।
हरवळ तुमैं हम ना किया, मन यह रह्या मजाख रा।
यक चोट लरौं ठढ्ढ़ौ यहाँ, (तुम) गहौ कोट जा आगरा ।।४०।।

छंद दोहा

'नाहर' सैद खरौ रह्यौ, गयो बिलंद गढ़वाल।
आयौ करि तातौ तुरि, जहां राव 'सत्रसाल' ।। ४१ ।।

---

३८. दुंदह – द्वन्द्व, लड़ाई। पलो गह्यौ – सहारा लिया।

३६. छळ जग्यौ – युद्ध लड़ कर। जिसमं लग्यौ – जिस्म के (घाव) लगा। गौर – गौड़। बरत – वरण करते। बिख्यौ – देखा गया। मुरचौ – मुड़ा, लौट चला। जुरत – लड़ते हुए। आलम – संसार ने। हळमळी – हल चल हुई। चल चल – चल-विचल। सरम – लज्जा।

४०. किम – कैसे। नीसरै – निकले, (युद्ध से) हटे। नाहर – सिंह, नाहर खाँन। यम – ऐसे, इस प्रकार। अख्यौ – कहा। और – अन्य। सैद – शहीद। सैदों – सैयदों की। नाजि – आज नहीं। मजाख रा – मजाक का। लरौं – लड़ूं। ठढ्ढ़ौ – खड़ा, दृढ़ता पूर्वक। गहौ – पकड़ो। कोट – दुर्ग। जा – जा कर के।

४१. खरौ – खड़ा, दृढ़। रह्यौ – रहा। बिलंद – बड़े, ऊँचै। गढ़वाल – दुर्ग वाला, शाहजादा दाराशिकोह। तातौ – तेज। तुरी – घोड़ा।

छंद छप्पय

तहां राव 'सत्रसाल', सूर सांमतन सख्खै ।
सो छत्री कुळ सूध, तात मातन दहुं पख्खै ।।
जब कातर कतराए, तहां दूनो बळ दख्खै ।
सिर बोळै जहं साखि, लरत धरर रत लख्खै ।।
कुळि सुनहुं बंस छत्तीस यह, गति गीता सुमरन गहिय ।
संकट्टिय प्रान संचै नहीं, यह वखांन रजउत कहिय ।।४२।।

कहै राव 'सत्रसाल', सुणो सब भीछ कहावं ।
उरध मंडळ भेद तणा, दोइ लैंहैं लहावं ।।
करि इस्टि द्रढ़ दमन, भेदि सह कमळ उचाई ।
स्यांम कांम धरि मनैं, यह पग धरत सवाई ।।
ब्रहमंड फूटि चालै मुतें, जोतिहि जोति मिळाइयां ।
यह धरै पांव असमेद का, दोय मुकति यक्क पाइयां ।।४३।।

राव अनम्मी कंध, सिलह तिण वार न धारिय ।
अमर केसरी कीध, जड़ित मणि मौड़ सवारिय ।।
अती मनैं ऊछाह, झूझ कारण खगबंधी ।
वज्रपात री गढ़ी, पांण हाळाहळ दध्धी ।।

---

४२. **सख्खै** – साथी, सखा । **सूध** – शुद्ध, पवित्र, उज्वल । **पख्खै** – पक्षों में । **कातर** – कायर । **कतराए** – भयभीत हुए । **दूनो** – दुगुना । **बोळै** – खोवे, बोले । **साखि** – साक्षी । **रत** – रक्त, लवलीन । **गहिय** – ग्रहण करें । **संचै**– संचय । **रजउत** – राजपूत के, क्षत्रिय के ।

४३. **भीछ** – योद्धा । **कहावं** – कहे जाने वाले, कहलाने वाले । **उरध मंडळ** – ऊर्ध मण्डल । **भेद तणा** – रहस्य का, भेदने का, पार करने का । **लैंहैं** – लेवेंगे, लेंगे । **लहावं** – लाभ । **इस्टि** – इष्ट । **कमळ** – योग के चक्र । **मनैं** – मन में । **पग** – पैर । **असमेद** – अश्वमेध यज्ञ । **मुकति** – मुक्ति । **यक** – एक, एक साथ । **पाइयां** – प्राप्त करेंगे ।

४४. **अनम्मी** – न नमने वाले । **सिलह** – कवचादि । **तिण वार** – उस समय । **अमर केसरी कीध** – रण में जूझ मरने के सूचक केशर के रंग में रंगे वस्त्र (धारण) किये । **मौड़** – सिरमौर, मुकट । **झूझ** – युद्ध । **खगबंधी** – तलवार बाँधी । **वज्रपात री गढ़ी** – वज्रपात (बिजली) की बनी हुई । **पांण** – आग में तपा कर तीक्ष्ण करने की क्रिया । **हाळाहळ** – हलाहल, विष । **दध्धी** – दी हुई ।

अहलोक सुजस कारण हरखि, स्वांम ध्रम-मन धारियौ ।
चढ़ि तुरी सौहड़ हुंता सहो, साहि 'मुराद' बाकारियौ ।।४४।।

यह बखांन रजपूत, प्रान सुच्छिम करि लेखैं ।
टरै मेर की मेर, टरै नह अरिदळ देखैं ।।
जब पैलाय परत्त, जाय कित ही दरवाजै ।
यतें धारि तुतकारि, हारि दोऊ कुळ लाजै ।।
'सिवराम' 'भीम' नृप 'रूप' सें, यम संभरिपति ऊचरै ।
दळ जुरत मुरत फिर नह मुरैं, यह बखांन कवियन करै ।।४५।।

जितक जोग निग्रहन, जितक इंद्री मन रक्षन ।
जितक नेम सन्यास, जाप जप तप हि परक्षन ।।
जितक जागि सौव्रन्न, तुलन कासी तन छंडन ।
सब अड़सठ असनांन, दान कोड़स अन खंडन ।।
कोटिक ऊपास येकादसी, दळ भंजै जूझै तहां ।
यक हथ्थ सूर 'सत्रसल' सुनत, वह मन्न अदभूत कहां ।।४६।।

ये ठाढ़ै रजपूत, पांव गाढ़ै सोइ मंडिय ।
राव तुरी आरूढ़ि, गयंद आरूढ़ि स छंडिय ।।
सब छत्रिय येकंत, मंत करि प्राकळ प्रिय ।
हेम तुला जुध आजि, कीय बहळा दिन अप्पिय ।।

अहलोक – इस लोक में । सौहड़ – वीर । बाकारियौ – ललकारा ।

४५. टरै – डिगे । मेर की मेर – सुमेरुगिरि का न डिगने की प्रतिष्ठा का भाव । पैलाय – दूसरे, विपक्षी । परत्त – प्रतिज्ञा कर के । तुतकारि – दुत्कार कर, ललकार के ।

४६. जितक – जितने । जागि – यज्ञ । सौव्रन्न – स्वर्ण । तुलन – तुलादान द्वारा । कासी – काशी तीर्थ पर । अड़सठ – अड़सठ तीर्थों में । ऊपास – उपवास ।

४७. ठाढ़ै – दृढ़, खड़े । गाढ़ै – दृढ़ । सोइ – जो, वे । मंडिय – रोपें । तुरी – अश्व । आरूढ़ि – असवार हुए । गयंद – हाथी । छंडिय – छोड़ा, त्यागा । येकंत मंत – एक मंत्रणा से । प्राकळ – युद्ध, आरम्भ में । हेम तुला – स्वर्ण तुला । बहळा – रणातुर वीर ।

कमधज्ज राव 'रामसिंघ' से, गुन छत्रिय और, सब गन।
मम उर हुं मर हुं मर तै उरहुं, मर हुं तो करहुं उछाह मन ।।४७।।

संबत सात अर सत, बरख दस पंच स बीतै।
सुकल पख्ख अष्टमी, जेठ सुदि थावर थत्ते ।।
चार जांम चहुवांन, धौसता रेनि दान वर।
हय गय रजत हरन करि, यम निमुक्त मुक्त कर ।।
अवधूत राव खित्रिय अटळ, सुजस ध्रम धन संचवै।
बंचवै कौन दिन दळ बदळ, बळ प्रमांन को बंचवै ।।४८।।

छंद दोहा

वारण फौज विभाड़, डारण हय जाडां झंडां।
अनमी कंध औनाड़, कारण भूत स कांम रा ।।४९।।

छंद त्रोटक

अगगं अगगं गजराज गजैं। घननं घननं घन घंट बजैं ।।
रमझंमं घमघंमं घूघरयं। प्रति बाजत ते हय पख्खरियं ।।
धम धंमयं वाजिय धूजि धरा। रज उड्डिय बुड्डिय सहसकरां ।।

उछाह – उत्सव, उत्साह।

४८. सत – सौ। बरख – बरस, वर्ष। दस पंच – पन्द्रह। जेठ सुदि – जेष्ठ शुक्ला। थावर – शनिवार। थत्ते – तिथी, स्थिर। धौसता रेनि – दिन से रात्रि पड़ने तक, सारे दिन। रजत – चाँदी। हरन – स्वर्ण। निमुक्त – पवित्र मुक्ति हित। मुक्त कर – खुले हाथ, उदारतापूर्वक। अवधूत – योगी। बंचवं – बचा रहे। दिन दळ बदळ – दिन पलट जाने पर।

४९. वारण फौज – गज सेना। विभाड़ – नाश कर। डारण – झोंके। जाडां झंडां – बलवानों के ध्वजों पर, घने झण्डों पर। औनाड़ – स्वतन्त्र, किसी के आगे न झुकने वाला।

५०. अगगं अगगं – अगाड़ी अगाड़ी। घननं घननं – ध्वनि। घन घंट – घने घंटे। रमझंमं घमघंमं – ध्वनि। घूघरयं – घुंघरु। प्रतिबाज – प्रतिध्वनि। हय – घोड़े। पख्खरि – घोड़ों के कवच। धूजि – कांपी। धरा – पृथ्वी। रज – रेणु-राशि। बुड्डिय – डूब गई, छिप गई। सहस करां – सहस्र किरणें, सूर्य।

धसमस्सि धमस्सि जवान धसैं। किरवांनन तौड़ि कमांन कसै ॥
खिलि मिल्लिय झिल्लिय छक्करयं। मनु कुंद तुरंगन बक्करयं ॥
पग छुट्टिय संकुळ छुट्टि पटा। घन-घौरि मिळी दहु वौर घटा ॥
हिंगलीय यलग्गिय हूल हुयं। धम गज्जर गज्जिय मांचि धुयं ॥
सुलत्तान चव्हान की सैनि जुरी। सद मद्द गयंदन घंट घुरि ॥
परि सद्दन सद्द पहार गज्जे। गिड़धौं गिड़धौं करि नद्द बज्जें ॥
मचि ऊध धंमं धमंका धकयं। मचि बीरन हक्क बको बकयं ॥
मनु बीजळ की झळसी बढ़ियं। किरवांनन होंत कढ़ौ कढ़िय ॥
पिलवांन खिले करि पील हुलै। मयमत्तन मत्तान दंत मिळै ॥
सो भिरैं मनुं पाहर पाहर भारि। किधौं दोऊ कोट करीर करारि ॥
नर सें नर कुंजर कुंजर सें। असवार जुरैं असवारन सें ॥
असिवार झिसारन के झटका। खनकार झंकारन के बटका ॥
रणराव बळी 'सत्रसाल' रचै। हुव गाज अराबनि सूर हिचै ॥
बरछांन की मार दूरार वहैं। सिरदारन के सिरदार सहैं ॥
बबकार बकारत घाव बजैं। गमकार गुरज्जन मार गजैं ॥
हलका हलकारि धकारि हलं। सु मनौं ललकारत मल्ल मलं ॥

धसमस्सि – भूमि ऊपर नीचे हुई। **किरवांनन** – तलवारें। **कसै** – बाँधे। **छक्करयं** – चक्र, तलवार विशेष। **कुंद** – कंधा। **बक्करयं** – वक्र, बाँक ॥ **संकुळ** – शृङ्खला। **छुट्टिपटा** – खुला पटा, तलवार विशेष। **दहु वौर** – दोनों ओर। **घटा** – सेना। **हिंगलीय** – शस्त्र विशेष। **यलग्गिय** – अलग। **हूल** – भाला, भाले का प्रहार। **धमगज्जर** – युद्ध, भयंकर युद्ध। **धुयं** – तोपें, धुंआ। **सद मद्द** – मद वाले। **घंट घुरि** – गजघंट बजे। **परि सद्द न सद्द** – ध्वनि प्रतिध्वनि होने से। **गिड़धौं गिड़धौं** – आवाज विशेष। **नद्द** – नगारे, वाद्य। **ऊध** – युद्ध। **हक्क बक्की** – हक्का बक्का। **बकयं** – बोलने लगे। **बीजळ** – बिजली। **झळसी** – ज्वाला सी। **बढ़ियं** – बढ़ी। **किरवांनन** – तलवारें। **कढौ कढ़ियं** – निकालो निकालो। **पिलवांन** – महावत। **खिले** – प्रसन्न। **पील**– हाथी। **हुलै** – गतिमान किए। **मयमत्तन मत्तन** – मदमस्त हाथियों के, मदोन्मत्त हाथियों के। **मिळे** – भिड़े। **कोट** – दुर्ग। **करीर** – हाथी। **करारि** – जबरदस्त। **कुंजर** – हाथी। **असवार** – अश्वारोही। **असिवार** – खड्ग-प्रहार। **झिसारन** – तलवार। **झटका** – प्रहार। **खनकार** – खन खन की ध्वनि। **झंकारन** – झनकार। **बटका** – खण्ड। **अराबनि** – तोपों की। **हिचै** – युद्ध करते हैं। **बरछांन** – बर्छों की। **दूरार** – दरारें। **हलका** – हाथियों का समूह। **हलकारि** – चलाकर। **धकारि** – धकेल कर। **हलं** – हल्लाकर। **ललकारत** – चुनौती देते हैं।

कुंवरां रण 'भारथसींघ' कथी। खग बाहत दोहुंन हथ्थ-हथी ।।
'मुहकंम' पराक्रम अैस कियो। गज को (दंत) सूर उखारि लियो ।।
खितरां चवहांन 'गुमांन' खिल्यो। मुढ़ मार कहैं डंड रोहि मिल्यो ।।
भुभ्भ पारत झारत 'भूझ' झुक्यो। रिणराव क सीह बराह रुक्यो ।।
चहुंवान के जुद्ध कमंध लरैं। पतिसाहन के दळ पारि परैं ।।
जमरूप 'जुरावर' अंगद ज्यूं। मिळि राव करै खग मंगद ज्यूं ।।
'सिवरांम' बळी बळ चाळक सूर। गिरै रणखेत समेति गरूर ।।५०।।

छंद दोहा

बळ बळ दिल्ली ऊबके, दळ जेहा दरियाव।
'सत्रसल' मुनि आखाड़सिध, रेसे 'अवरंग' राव ।।५१।।

जिम दुसराहे कीजिये, येहा कीध उछाह।
भड़ रवि मंडळ भेदबा, बधियौ मरण विमाह ।।५२।।

छंद सोरठा

बधियौ मरण बिमाह, 'सिवपति' हैमर सादळे।
खड़ा घतै गजगाह, सिरां फिरंगी पाखरां ।।५३।।

हथ्थ – हाथ से। हथी – हाथी पर, तलवार। अैस – ऐसा। उखारि – उखाड़। खितरां – युद्धस्थल, घावों से। खिल्यो – प्रसन्न हुआ। मुढ़ मार – (?)। डंड रोहि – शस्त्र विशेष से रोंद कर। भुभ्भ – युद्ध। झारत – गिराता। झुक्यो – झुका। बराह – बाराह, सुअर। रुक्यो – ठहरा। कमंध – धड़, राठौड़। पारि परैं – गिरा कर गिरे। खग मंगद – तलवार से चूर्ण जैसा। चाळक – चालुक्य। समेति – सहित। गरूर – गर्व।

५१. बळ बळ – बार बार। ऊबके – उमड़े, जोश करे। दळ – सेना। जेहा – जैसा। अखाड़सिध – योद्धा, युद्ध कुशल। रेसे – पराजित करने, नष्ट करने।

५२. दुसराहे – दशहरे पर, विजयादशमी का। येहा – ऐसा। कीध – किया। उछाह – उत्साह, उत्सव। भेदबा – भेदने के सिए। बधियौ – बढ़ा। बिमाह – विवाह।

५३. हैमर – घोड़ा। घतै – नाश करे। गजगाह – हाथी समूह, युद्ध। सिरां – सिरों पर। फिरंगी पाखरां – अंग्रेजी ढ़ंग की पाखरें।

छंद छप्पय

महाराजा 'गुमांन' सुतण, 'इंद्रसाल' स जांणे ।
बाबा आगळि बळी, अनड़ मूंछा बळ तांणे ।।
कळि क्रत राखण काज, साज केसरियां सज्जे ।
मणि माणिक नग जटित, हद्द सिर मौड़ अरज्जे ।।
'सत्रसाल' राव बेली सकौ, झड़ ओझड़ हूंता झड़ै ।
बाढ़ाळी करां बाहै वहसि, धड़ निरळंग हुय हुय पड़ै ।।५४।।

जोर कर कर बरजागि, अनड़ ब्रहमंड सु लग्गे ।
बींद घड़ा बारिबा, पितामह आगळि पग्गे ।।
करि केसरियां साज, बाज झोंके खग साहे ।
खग तुटै दोय च्यार, साहि गज ऊपरि बाहे ।।
भड़ हूंत कहै कविलाणपति, मो जतन(जीव)कराइयो ।
हिंदवाण नाथ 'सत्रसाळ' नृप, हाथळ बाहत आइयो ।।५५।।

महाराजा पति अनड़, नाम 'महौकम्म' कहाणों ।
'सत्रसल' री भुज सबळ, सबळ बिरदाव बहाणों ।।
झौंकि तुरी अरि घड़ा, बाहि किरमर बाढ़ाळी ।
ऊपाड़े गजदन्त, कन्न ज्यों करो कराळी ।।

---

५४. सुतण – पुत्र । बाबा – बड़े पिता, पिता के बड़े भाई । आगळि – अगाड़ी । अनड़ – बलवान्, वीर, अनम्र । मूंछा बळ तांणे– मूंछों के बट दे, बल का प्रदर्शन करे । कळि – कलियुग में । क्रत – कृत, कर्म । साज – पोशाक । नग – नगीनें । जटित – जड़े हुए । हद्द – बेहद । अरज्जे – शोभित हो रहा है । बेली – सहायक । सकौ – सबका, वह । ओझड़ – भयंकर प्रहार । झड़े – कटे । बाढ़ाळी – तलवार । वहसि – उत्साह में भर । निरळंग – खण्ड-खण्ड, छिन्न हांकर । हुय हुय – हो कर ।

५५. बरजागि – वज्र अंगी, बलवान्, वज्रास्त्र । अनड़ – वीर । बींद – दूल्हा । घड़ा – सेना । बारिबा – वरने के लिए । बाज – घोड़े । साहे – सम्हाले । कविलाणपति – कवंलापति, शाहजादा । हाथळ – हाथ ।

५६. अनड़ – अनम्र, वीर । भुज – हाथ, सहायक । झौंकि – आगे बढ़ा कर । किरमर बाढ़ाळी – धार वाली तलवार । कन्न – कन्न चौहान, कर्ण । कराळी – भयंकर ।

वाहि दंत सीस गज साहि रै, आछड़ि तुरी चलाइयो।
असुरेस ईस ऊबरे जहां, गज रण भूमि मिळाइयो।।५६।।

'भारथ' पारथ जिसौ, सुतण 'सत्रसाल' सिंघाळौ।
बय दस पंच प्रमांण, अनड़ बिरदां उजवाळौ।।
ताखा जिम बळ भरे, सुणै बीरारस बाजां।
सिंधु लहरी जिम चमू, चलै हुय तोप अवाजां।।
पित मुहरै अंत देबा अवसि, चाढ़ै तुरी चलाइयौ।
गज जूथ घणां देखे जहां, अनळ पंख जिम आइयौ।।५७।।

गवड़ नांम 'जगनाथ', पाथ जेहो भुज पांणे।
'सत्रसळ' आगळि सोहोड़, करां खग दोय झिलाणें।।
आरूढ़े हय लखी, सु तो अयराक ऊपनौ।
'गौव्यंद' रौ गहवंत, अछर बर काज स बन्नौ।।
दळ जुरत मुरत पग ना धरे, करे हाक आघा धरै।
अणबरी घड़ा भेळण हठी, प्रान कळपि पौरिस करै।।५८।।

चाळक बंस उजाळ, नांम 'सिवरांम' कहांणो।
खैराड़ो खग झाट, रीसि गज सीस बहांणो।।

आछड़ि – वेग से बढ़ा कर। तुरी – घोड़ा। असुरेस ईस – मुसलमानों के स्वामी, शाहजादा। मिळाइयो – गिरा दिया, मिला दिया।

५७. भारथ – भारतसिंह, युद्ध। पारथ – अर्जुन। सिंघाळौ – श्रेष्ठ वीर। बय – आयु। दस पंच – पन्द्रह। अनड़ – अनम्र, अटल। ताखा – तक्षक नाग। बळ भरे – बलवान्। सिंधु – समुद्र। चमू – सेना। मुहरै – सन्मुख, आगे। अंत देबा – अन्त देने, मौत। चाढ़ै – चढ़ कर। गज जूथ – गजसमूह, गजसेना। अनळ पंख – अनल पक्षी। नोट :–यह पक्षी सदैव आकाश में रहने वाला और हाथियों का आहार करने वाला कहा जाता है।

५८. पाथ जेहो – अर्जुन जैसा। भुज पांणे – भुज बल में। सोहोड़ – सुभट, योद्धा। करां – हाथों में। झिलाणें – ग्रहण किये। हय लखी – लाखी रंग के घोड़े। सु तो – वह तो, जो तो। अयराक – ईराक देश। ऊपनौ – जन्मा हुआ। बन्नौ – दूल्हा। हाक – वीर नाद। आघा – आगे ही। भेळण – नाश करने। कळपि – उत्सर्ग, संकल्प।

५९. चाळक बंस – चालुक्य वंश। खैराड़ो – खेरवाड़ भूभाग का स्वामी। खग झाट – तलवार चला। रीसि – क्रोध कर।

'सत्रसळ' आगळि सूर, खळां फाड़ै अवझाड़ै ।
केसरियां अंग साजि, जिरह जूसण बीभाड़ै ।।
दइवांण असुर दळ दाहिवा, बिहसि बिहसि आघा धरै ।
'अवरंग' 'मुराद' ऊपरि उरड़ि, सूंडाडंड निरळंग करै ।।५९।।

सिव पूजा 'सिव' करै, (असि) कीधी असवारी ।
नद्द घोर नीहाव, बजैं तीसरी स वारी ।।
हुय हाहुळि हैमरां, होय गैमरां हजारां ।
खळां मिळिया खरहंड, लडंग चढ़िया दळ लारां ।।
धर धूजि रजी रवि धूंधळौ, करबा यम सायक्क लो ।
आगि बरजागि अजमेर बे, फौजां कियौ मुकाबलो ।।६०।।

छंद भुजंगी

यम ऊलटै साहि आया अपारं । जुरें 'भीम' 'सिवरांम' सो नाम सारं ।।
मुरैं 'साहिदारा' जहां पांव मंडे । सबै सूर सिरताज हैराज छंडे ।।
उभै चाळ टंकी उसस्सै(तेग)वाही । मुरें मूठि नांही जिनैं मूठि साही ।।
करैं डिढ्ढ़ कढ्ढ़ी सुबढ्ढ़ी कराळां । मनौं जग्गि की प्रगट्टी कोटि ज्वाळां ।।

अवझाड़ै – प्रहारों से गिरावे । जिरह – कवच । जूसण – कवच । बीभाड़ै – तोड़े, मारे । दाहिवा – जलाने, नाश करने । उरड़ि – उमड़ कर । निरळंग – टुकड़े-टुकड़े ।

६०. असि – अश्व पर । कीधी – कीं । नद्द घोर – वाद्य विशेष की ध्वनि । नीहाव – ध्वनि, नाद । वारी – समय, बार । हाहुळि – हल्ला । हैमरां – घोड़ों । गैमरां – हाथियों । खरहंड – वीर, सेना । लडंग – लंबी पंक्ति । लारां – पीछे । रजी – धूलि । धूंधळौ – धूमिल । सायक्क – (?) । आगि – बरजागि – वज्राग्नि ।

६१. ऊलटै – उमड़े, उलट कर । सारं – सार । मुरै – मुड़े, लौटे, चढ़े । पांव मंडे – पैर रोपे । हैराज – अश्वराज, श्रेष्ठ घोड़े । छंडे – छोड़े । उभै – दोनों । चाळ टंकी – धनुष की प्रत्यंचा, वस्त्र के छोर टाँक कर । उसस्सै – जोश में आये । मूठि – तनिक भी । मूठि साही – तलवार पकड़ । डिढ्ढ – दृढ़ । कढ्ढ़ी – निकाली । बढ्ढ़ी – काटी, बढ़कर, तेज धार । जग्गि – यज्ञ । कोटि – करोड़ । ज्वाळां – अग्नि, लपटें ।

लगे मैन खाण्डीव ऊठै लपट्टं । झळं आंमही-सांमही ते . झपट्टं ।।
करैं सूर सन्नाह केते सहेते । वळे वक्ष वेली करें राह्न केते ।।
झरां झार बागी सिरं टोप झारैं । मनौं चक्र कोलाल कुंभं तारैं ।।
करैं मुण्ड हक्कं जहां रुण्ड जूटैं । तते तुण्डन ऊपरां तेग. तूटैं ।।
कटैं सुण्डि सुण्डिन असुण्ड भारें । परैं श्रोन के सैल तें ज्यूं पनारें ।।
परैं लाल ढालें हरी पीत भारी । मनौं बंध केसान तें केलि डारी ।।
परे मीरजा मीरजादे मुगल्लं । परैं चांमरं टोप बानैत वल्लं ।।
परैं हैरखं वैरखं बाज हथ्थी । जुरैं जोध जोधार जे लथ्थवथ्थो ।।
करैं सूर साहेंस बाहें कटारी । फळं भोगळी ग्रेंचते वूड़ि सारो ।।
कटैं सीफरं कोपरं भई फारं । मनौं कंकरी फूटि लीनों बिहारं ।।
भये सूर रत्ते बहैं रत्त रेळे । मनौं रंग पत्तंग तें फाग खेलें ।।
घटं घट्ट घूमंत फूटन्त घाये । मनौं फूल की छाक ग्रैराक पाये ।।
कटैं जंघ बाहू भये अंगभंगा । तरं चैत के पत्त ज्यूं तंग तंगा ।।
बहैं हथ्थ 'सिवरांम' के पातिसाई । भिरैं 'भीम' भाई मनौं 'भीम' भाई ।।

झळं – लपटें । आंमही सांमही – आमने-सामने । सन्नाह – कवचादि । केते– कितने । सहेते – प्रीति सहित । वक्ष – वक्षस्थल । बेली – सहायक । राह केते – राहु केतु की तरह । झरां झार – झड़ाझड़ी । झारै – गिराते हैं । चक्र – चाक यंत्र । कोलाल – कुम्हार । कुंभ तारै – घट उतारे, मटके उतारे । हक्कं – हाक, हल्ला । जूटैं – जुड़े, लड़े । तते – तेज, वहाँ । तुंडन – शुण्ड, मस्तक । तेग – तलवार । तूटैं – टूटे । असुण्ड – शुण्ड कटने पर रहा हुआ सिर । भारे – बड़े बड़े, भारी । सैल तें – पहाड़ से । पनारे – परनाले । पीत – पीलेरंग की । बंध केसान तें – बंधे हुए केशों से । केलि डारी – फूलों का गुच्छा फेंका हो । बानैत – वीरता सूचक चिन्ह । बल्लं – बल्लम, वाले । हैरखं – घोड़े पर रहने वाली पताका । वैरखं – हाथी पर रहने वाला ध्वज । बाज हथ्थी – घोड़े हाथी, तलवार बजने पर । लथ्थबथ्थी – बाथम-बाथ हो, गुत्थमगुत्थ हो । फळं – फल । भोगळी – शस्त्र विशेष । ग्रेंचते – खेंचने से । वूड़ि – भाले के डंडे का नीचे का भाग । सीफरं – ढालें । कोपरं – कोहनियां । फारं – दरारें, उस पार । रत्ते – लाल । रत्त रेळे – रक्त की बड़ी धारें । पत्तंग – लाल रंग । घटं घट्ट – घट प्रति घट । फूटन्त – फटे हुए । घाये – धाव, जख्म । फूल की छाक ग्रैराक पाये – पहली बार निकाले हुए शराब के प्याले पिये हुए । बाहू – भुजाएँ । तरं – तरु, पेड़ । चैत – चैत्र मास । पत्त – पत्र, पत्ते । तंग तंगा – कटे हुए तुर्रे । हथ्थ – हाथ ।

गहैं भीम के हथ्थ हाथी न भारै। बिहारें बिदारें उछारें पछारें ॥
घसें सामुंही सामुंही धारि धावें। उतें अच्छरी बैठि त्रिमांन आवें ॥
बजें बीर की घोर नीसान बाजा। जुरे साहि 'अवरंग' 'सिवरांम' राजा।
जरंजोधनं राव मारू दुवाहं। रहाचक्क कोनौं परे रामसाहं' ॥
खिवं खाग 'खंगार' बीजू खळक्कै। भड़ं कंध भांनें धडं में भळक्कं ॥
जुरें जैत रो 'कम्म' आये जिबारं। सहूं भाखरं नोर चढ्ढाय सारं ॥६१

छंद छप्पय

जिह मुख श्री गुर मंत्र, यस्ट ऊचारस कीनौं।
जिह मुख मंगन-जनह, लख्य लख्यन द्रव्य दीनौं ॥
जिह मुख पांन कपूर, और अगमद सैंबासी।
जिह मुख अधरे सदर, खानि खट रस आवासी ॥
सोही मुख प्रफुलित कंवळ सम, बीरारस रन लुट्टियो।
वह ठौर गौर 'सिवरांम' रो, बहो तरवारिन तुट्टियो ॥६२॥

॥ इति श्री कवि महेसदास बिरचतायां धोलपुर सिग्राम संपूरनं ॥

गहैं – पकड़े। भारै – विशाल, बोझिल। बिहारें – घुमाएं। बिदार – विदीर्ण करें, चीर डालें। उछारें – उछालें। पछारें – पछाड़ें, पटकें। घसें– प्रवेश करे। सामुंही – सामने, सम्मुख। धारि – शस्त्र धारा, सेना। धावें – जावे, बढ़े। उतें – वहाँ। अच्छरी – अप्सरा। नीसान – नक्कारे। जरं-जोधनं – दुर्योधन। राव मारू – मारवाड़ का राजा। नोट :– मारवाड़ के राजा चन्द्रसेन का वंशज होने से रामसिंह को 'राव मारू' कहा है। दुवाहं – वीर। रहाचक्क – भयानक संग्राम। खिवं – चमकाकर, घुमाकर। बीजू– बिजली। खळक्कै – चमकी, गिरें। भळक्कै – चमके, कान्तिमान हुए। जैत रो – विजय का, जैत्रसिंह का पुत्र। कम्म – कर्मसिंह। आये जिबारं – उस समय में आ कर। सहू – सारे, सब। भाखरं – भाखरोत, भाखरसिंहोतों के। नोर – आब, कान्ति। सारं – तलवार से, शस्त्र से।

६२. जिह – जिस। यस्ट – इष्ट, आराध्य देव। कीनौं – किया। मंगनजनह – याचक जनों। दीनौं – दिया। अगमद – कस्तूरी। सैंबासी – सुगन्धित पदार्थ। अधरे सदर –अधर और सधर दोनों ओठ। खानि – खाद्य पदार्थों का। खटरस – षट् रस। आवासी – प्रवेश हुए, स्वाद लिए गए। कंवळसम – कमल पुष्प सदृश्य। ठोर – स्थान। गोर – गौड़। बहो – बहुत। तुट्टियो – टूट कर गिरा।

॥ अथ त्रतीय संग्राम पूरब लख्यते ॥

छंद पद्धरी

'अकबर जलाल दीनह' दिलीस। सो तपै गयौ नवखंड सीस ॥
'नूरदीसाहि जहांगीर' नूर। प्रथमादि सिरै तिण तेजपूर ॥
'साहिजिहांन' साहिब्ब दीन। चहुं चत्रक जेर समसेर कीन ॥
सह मिळै आय दिल्ली स पांण। रस मिळै नहीं राजसी रांण ॥१॥

छंद छप्पय

'साहिजिहां' पतिसाह, राह दहुंवै सिर रज्जै।
बाजा पूरब दिखण, उतर पछिम दिस बज्जै ॥
पूत सपूत स च्यारि, यळा चहुवै ज्यां अप्पि।
ठावां ठोहड़ां ठोहड़, उथउ थाणां करि थप्पि ॥
जाजुळी तेज जग चक्खि जिम, दुनियां ऊपरि देखियै।
नवखंड सप्त दीपह नरिंद, लोह गहै कुण लेखियै ॥२॥

छंद पद्धरी

थिरं ऊत्तरं 'साहि दारा' स थप्पें। यळा पूरबं 'साहि सूजा' स अप्पें ॥
जरा दिखिणं 'साहि अवरंग' जांणौं। बळ पछिम 'साहिमुरियादं' बखांणौं ॥
चहूं देस अच्चाळ च्यारौं चगत्ता। करै च्यार हुं येमि चौ बेद कथ्था ॥
दिली 'साहिजिहांन' बैठो दुबाहं। यकं पांय सेवै जींह दोय राहं ॥
जीयप्पउ जह्नमत्ति जांणी जगत्तं। खाली हुवौ तखत्तं नै आतपत्तं ॥
मही मंडळं हूहळं कूक मांचै। वळां च्यारि वाका दहाका स बांचै ॥३॥

---

१. सह मिळै – सब मिले, शामिल हो गए। आय – आकर के। रस मिळै नहीं – प्रीतिकर नहीं मिले। राजसी रांण – उदयपुर के राणा राजसिंह।

२. बाजा – वाद्य। बज्जै – बजते हैं। अप्पि – सौंपी। उथउ – वहां। गहै – ग्रहण करें, पकड़ें।

३. च्यारौं – चारों। चगत्ता – मुसलमान, मुगल शाहजादे। येमि – इस प्रकार। बेद – वेद, विग्रह, युद्ध। यकं पांय – एक पैर पर खड़े होकर। सेवै – सेवा करते हैं। जींह – जिसकी।

छंद दोहा

'सूजे' पूरब सांभळे, वाका ढिल्लो येह ।
प्रारंभ जुध परट्टियौ, आरंभ कीध स येह ।।४।।

छंद त्रिभंगी

'सूजा' सुलिताणं औह अमाणं जांणि जवाणं जमराणं ।
आरंभ उमंगे अंग सु अंगे तंग तुरंगे ताणाणं ।।
पखराळ पमंगां नाग सनग्गां बाहि बिहंगा बाणासं ।
गज झंप स जग्गां धारै धज्जां ऊडि स रज्जां आकासं ।।
खंड खंड स खड़िया आभि स अड़िया जोधा जड़िया जरदाळं ।
रत्थांह उचड़िया खिझि दळ खड़िया अनड़ां नड़िया योहाळं ।।
दिल्ली-सर दावं चित्त स चावं राजा रावं उमरावं ।
पुणि सैद पठाणं तांणि कमांणं गिड़िकं धाणं गुमरावं ।।
नौहमी पालट्टं थट्ट सुथट्टं बहै बिहट्टं पूरबयं ।
'सूजा साहि' आया असा अधाया 'साहिजिहांन' सुणे स बयं ।।५।।

छंद छप्पय

सुणियौ 'साहिजिहांन', येमि 'सूजासाहि' आया ।
पट्टण हूंदा तोड़ि पाट, द्रहबट्ट लुटाया ।।

---

४. पूरब – पूर्व दिशा में । नोट :—यह मुगल सल्तनत के पूर्वी भू-भाग, बंगाल का सूबेदार था । सांभळे – सुना । परट्टियौ – रचा, शुरू किया । सयेह – सब ने ।

५. जवाणं – जवान, युवा । जमराणं – यमराज । तंग – जीन के तस्मे । ताणाणं – खींच कर । पमंगां – घोड़े । नाग – हाथी । बिहंगा – आकाश में । बाणासं – तलवारें । गज झंप – लम्बी छलांगें । धज्जां – ध्वजाएं, अश्व । रज्जां – धूलि । खंड खंड स खड़िया – विभिन्न भू-खण्डों से चले । आभि – आकाश । जरदाळं – कवच । उचड़िया – उखड़े, चले । खिझि – रुष्ट हो कर । अनड़ां नड़िया – अनम्रों को झुकाये, निर्बंधों को बांधे । तांणि – खेंच कर । गिड़ि कंधाणं – वाराह जैसे कंधे वाले । बिहट्ट – बिना मार्ग ।

६. येमि – इस प्रकार । पट्टण – नगर, संभवतया पटना । पाट – किवाड़ । द्रहबट्ट – संहार किया, दसों मार्गों में ।

असी सहस असवार, पार पैदळ कुण पावै।
मेक सहस मातंग, अरि गढ़ मूळ ऊचावै ॥
गजनाळि गजां सुत्रनाळि गणि, तोप जमूर जंगळा तई।
सीसांण बाण सौराण सजि, दीयण विधी फत्ते दई ॥६॥

छंद दोहा

'साहिजिहां' 'दारा' सुणै, 'सूजा' आया साहि।
कोके तोके कांमरा, दहुं राह रा दुबाहि ॥७॥

छंद छप्पय

दिली थंभ भड़ दूठ, कमध कूरम्म कहाणां।
गणि हाडा वळि गौड़, मोहरै पड़ी मंडाणां ॥
'जसमंत' नै 'जैसींघ', 'सत्तौ' दखि दीड़ सोहैं।
धींगराज 'अनुरुद्ध', लाख लाखां दळ लोहै ॥
'दल्लेलखांन' जेहा दुरत्त, दळ प्रणाम तांमें दुजां।
सिरदार 'साहि सल्लेम' सा, भार सार 'रासा' भुजां ॥८॥

छंद त्रोटक

भुज भार यतां सिरदार भणैं। पति साहिजिहांन तिता प्रभणैं ॥
दिस पूरब दुंद पड़ै दहलं। हुय कंपिय भू द्रगपाळ हलं ॥
दर कूच खड़ें 'जैसींघ' दिली। मह अंमर डंमर रैण मिळी ॥

मेक सहस – एक हजार। मातंग – हाथी। अरि गढ़ – दुश्मनों के दुर्ग। मूळ ऊचावै – जड़ या बुनियाद से उखाड़ कर। फंके जमूर – छोटी तोपें। जंगळा तई – बंदूक विशेष।

७. कोके – बुला कर। तोके – टोक कर। दुबाहि – बहादुर।

८. थंभ – स्तम्भ। दूठ – वीर। कमध – राठोड़। कूरम्म – कछवाह। दीड़ – प्रचण्ड वीर। धींग – वीर। लोहै – काटे, मारे। दुरत्त – वीर। तांमैं – उनमें। दुजां – दूसरा, अन्य।

९. यतां – इतने। तिता – जितने। प्रभणे – कहते हैं। दुंद – द्वन्द्व, युद्ध। भू – पृथ्वी। द्रगपाळ – दिग्पाल। दर कूच – मंजिल-ब-मंजिल। मह अंमर – पृथ्वी और आकाश। डंमर – समूह, धुंआ। रैण – रात्रि, धूलि। मिळी – मिली, हो गई।

तिण ऊपरि फौज उरेंस तंई। गलवाज दिसौ दिसी फूटि गई ॥
सरदार 'सलेमा साह' जिसा। उमराव 'जैसिंघ' रायसिंघ' असा ॥
'अनिरुद्ध' जोधार हरोळ अणी। धरि पांण भुजां अजमेरि धणी ॥
कविलापति जोध विदा स किया। गज हैंवर अंमर कौटि दिया ॥६॥

छंद वेली भुजंगी

सजै 'साहि सल्लेम' सेना स पांणं। प्रथमादि पूरब्ब कीधौ पयाणं ॥
बजै सद्द नद्दं छतीसं बिहद्दं। पुणै मेघ अग्राज तैं भाद्रपद्दं ॥
चढ़ै सींघ 'जैसींघ' राजा सचाळौ। सदा आतपत्तं दिली रक्खवाळौ ॥
वळै चढ़ै 'रायसिंघ' राजा बडेरौ। भुजा जेमि मौजां गजां सीस फेरौ ॥
'अनौ' चढ़ै राजा धणी अज्जमेरौ। सिहां पाखती झालियां संमसेरौ ॥
'जसौ' चढ़ै गिरंमेर राजा बिजाई। भुजां वणै 'अनुरुद्ध'रै जिसौ भाई ॥
'उदैभांण' जंमरांण चढ़ियौ अकूणौ। दळां रीठ बागां मारुराव दूणौ ॥
'भोजौ' चढ़ै खंगार री लीध भारां। लखां भांजणां जोध चढ़ै स लारां ॥
भड़ां 'भावसी' चढ़ै 'रणछोड़' भाई। पमाड़ा घणा खाटणां सिद्धि पाई ॥
दळां 'खांन दल्लेल' चढ़ैं दुहेला। रुड़ा साथि चढ़ैं रुहेला रुहेला ॥
वळै सैद 'बादर' चढ़ै स वेगं। तिकौ वाहणौ मैंगळां सीस तेगं ॥
मुणै 'जाफरं मीर' चढ्ढै मरद्दं। सत्रं कौंण चंपै जियांरी सरद्दं ॥

उरेंस – झोंकी। तंई – तब, उस समय। गलवाज – अफवाह। दिसौ दिसी – दिशा-विदिशाओं, दसों दिशाओं में। फूटि गई – फैल गई। असा – ऐसे। हैंवर – घोड़े। अंमर – वस्त्र। कौटि – विविध कोटि के, करोड़ों भांति के।

१०. सपांणं – बल सहित। पयाणं – प्रयाण, प्रस्थान। सद्द नद्दं – शब्द हुए। छतीसं – छत्तीस प्रकार के वाद्य। भाद्रपद्दं – भाद्रपद। आतपत्तं – छत्र। फेरौ – घुमा देने वाला। अनौ – अनिरुद्ध। धणी – स्वामी। पाखती – पार्श्व में। झालियां – लिए। संमसेरौ – खांडा, तलवार। जसौ – जसवंतसिंह गौड़। गिरंमेर – सुमेरुगिरी तुल्य। बिजाई – दूसरा। जिसौ – जैसा। अकूणौ – पूरा, पूर्ण। रीठ – प्रहार। बांगा – बजने पर। दूणौ – द्विगुना। भोजौ – भोजराज खंगारोत। लखां – लाखों, लक्षाधिक। लारां – पीछे। पमाड़ा – प्रवाड़ा, कीर्ति के विरुद। खाटणां – प्राप्तकर्त्ता। दुहेला – दुर्लभ। रुड़ा – अच्छा। रुहेला – मुसलमानों की एक जाति का नाम। सैद – सैयद। स वेगं – शीघ्रता से। तिकौ – वह। बाहणौ – चलाने वाला। मैंगळा – हाथियों। तेगं – तलवार। मुणै – कहते हैं। सत्रं – शत्रु। कौंण – कौन। चंपै – दावे, अधिकार में ले। जियांरी – जिनकी। सरद्दं – सरहद।

कड़ा-भीड़ चढ़ै घड़ा सेद 'कासूं' । बड़ा बाहरौ आंणियौ जिकौ बासूं ।।
अनै ओट मोटा घणां ऊमरावं । नहीं जांणिजै जेतलां तणा नांवं ।।
हवै येतला जम्मुना पार हूवा । रातंबेस स जोधां तणा हूह जूवा ।।१०।।

छंद छप्पय

मणि बासुर केइ मधि, साहि भरिया गस पत्ता ।
'सूजा' कथ संभळेवा, बूझे तात बिरत्ता ।।
दिये डेरा दूभरा, तटि त्रवैणी रजपूतां ।
सोह आरंभ सनांन, सौहड़ सामन्त सपूतां ।।
भद्र हुवा पाप मुदियौ भरम, परम धरम जंह प्रगट्टियौ ।
कळमस गंग सुर तार करि, करवत धार स कट्टियौ ।।११।।

चर दहुंवै दळ च्यारि, लियै चरचा बिचरत्ता ।
क्षिण क्षिण हंदी खबरि, कंत आपरां करत्ता ।।
'सूजा' हंदी खबरि, 'साहि सल्लेम' सुणांणी ।
उलटी दळ आविया, पीठि दै सोवन पांणी ।।
हरवल्ल हुवा 'महमद हया', 'जाम बेग' सा जाणियै ।
जुध 'राजसिंघ' हाडा जिसा, बंग सुलतांण बखांणियै ।।१२।।

कड़ा-भीड़ – कवच धारण कर। कासूं – कासिम खांन। जिकौ – वह। बासूं – पीछे से। अनै – अन्य। घणां – बहुत से। जेतलां – जितने। तणा – का। नांवं – नाम। हवै – अब। येतला – इतने। रातंबेस – यवन, मुसलमान सजोधा – योद्धाओं सहित। हूह जूवा – पृथक पृथक युद्ध नाद।

११. बासुर – शऊरदार। गस – क्रोध, मूर्छा। डेरा – पड़ाव। तटि त्रवैणी – त्रिवेणी के तट पर। सोहड़ – योद्धा, सुभट। भद्र – सिर और दाढ़ी मूछों के केश कटवा कर, मुण्डन। कळमस – कालिख, पाप। करवत – करोत, आरा, एक औजार।

१२. चर – गुप्तचर। च्यारि – चारों ओर। चरचा – चर्चा, खबरें। बिचरत्ता – घूमते हुए। हंदी – की। कंत – स्वामी। करत्ता – (सूचित) करते। उलटी – उमड़ कर। सोवन पांणी – सोन नदी। बंग – बंगाल।

छंद नींसाणी

सहसराव आया 'सुजा', 'सलेम' सुणांणां ।
येहा झळमळ ऊठिया, जेहा जमरांणां ।।
दळ उतरैं गंगा दुरत्त, परठिया पयाणां ।
बजि सिंधू सहनाइयां, निधसे नीसांणां ।।
हरवळ 'रासा' राय सा, 'जैसाह' स जाणां ।
हरवल्ला हरवल्ल हुवा, 'अनरुद्ध' अमाणां ।।
बीजा दळ दोळां बहै, हींदू तुरकाणां ।
यम बाणारसि आविया, सिर असंस लगाणां ।।
दरस विसेसर दरसिया, राजा राव रांणां ।
जिम दरसण जम दररा, मन तरस मिलांणां ।। १३।।

छंद नींसाणी

सहसराव हूंता 'सुजा', उलट्टिया येहा ।
जाणैं सातों समद जळ, गिर लागा जेहा ।।
दळ खड़तां पैडां दुरत, खळदळ मिळि खेहा ।
ताटंकां जळ तूटता, लूटै पुर लेहा ।।
घड़ काळा मात्तंग घड़, मंडै करि मेहा ।
आहंचे खड़ि आविया, लड़ि दिल्ली लेहा ।।

---

१३. **सहसराव** – बंगाल प्रदेश का स्थान विशेष । **येहा** – ऐसा । **झळमळ** – देदिप्यमान हो । **जेहा** – जैसा । **दुरत्त** – बलवान् । **परठिया** – किया, स्थापित किया । **पयाणां** – प्रयाण । **सिंधू** – सिंधु राग के वाद्य । **सहनाइयां** – शहनाई बाजे । **निघसे** – बजे । **नीसाणां** – नक्कारें । **हरवळ** – हरावल में । **रासा** – रायसिंह । **बीजा दळ** – अन्य सैनिक-दल । **दोळां** – आस पास । **बहै** – चलते हैं । **यम** – इस प्रकार । **बाणारसि** – वाराणसी, बनारस । **असंस** – असंख्य, अपार । **दरस** – दर्शन । **विसेसर** – विश्वेश्वर । **दरसिया** – दृष्टिगोचर हुआ ।

१४. **येहा** – ऐसा, इस प्रकार । **सातों समद** – सप्त सागर । **गिर लागा** – पर्वतों को छूने लगे । **जेहा** – जैसा । **खड़तां** – चलते । **पैडां** – यात्रा, मार्ग । **दुरत** – कठिन, दूर से । **खेहा** – धूलि । **ताटंकां** – तालाबों । **तूटता** – समाप्त होने पर । **लेहा** – लेते हैं । **घड़ काळा** – श्याम घटा । **मात्तंग** – हाथी । **मेहा** – मेघ, बादल । **आहंचे** – मार के या संहार कर के । **लेहा** – लेने वाले ।

खेत बभदर पूरव खंभे, बंधि नेत बिछेहा ।
वार पार दुय असपत्यां, घणघोर घुरेहा ।।१४।।

छंद छप्पय

वार पार हय हींस, वार पार हय गय गाजै ।
वार पार अणपार, बीर नीसांण स बाजै ।।
वार पार ऊमरां, सार वदै संमवादां ।
वार पार येखिजै, सुरंग डेरा साहिजादां ।।
वार नें पार बीच गंगा पुणि, पहल आड किण ही पिलै ।
पार नै वार हंदा प्रगट, झंडा लाल रंगी झिलै ।।१५।।

छंद नीसांणी

आखै 'साहि सलेम' यम, अपणां उमरावां ।
मसलति येहा मंडिये, ठिक हंदी ठावां ।।
ऊतरै गंगा पगार, कौन्ह झिलै नावां ।
दिल्ली कारण मंडिया, झंडा झूझांवां ।।
मह दिली के पातसाह, दिल्ली सिरदावां ।
दिल्ली सिर मारैं मरैं, भागें कित जावां ।।
'जैसिंघ' 'अनुरुध' 'रायसी', बोलै बहसावा ।
दिल्ली दळ दोखण धरा, लंकाळ धिकावा ।।

नेत – ध्वज, चिन्ह । बिछेहा – पीछे न हटने वाले । घुरेहा – बजते थे ।

१५. हय – घोड़े । हींस – हिनहिनाहट । हय गय – हाथी घोड़े । वार पार – इधर-उधर, इस ओर तथा उस पार । ऊमरां – उमराव । सार – तथ्य की बातें, तलवार । वदै – होड करते हैं । संमवादां – सम्वाद, विवाद । येखिजै – दिखाई देते हैं । सुरंग डेरा – लाल रंग के तम्बू । आड – ओट । पिलै – लोपें, उल्लंघन करें । हंदा – का । झिलै – सुशोभित हुए ।

१६. आखै – कहता है । मसलति – सलाह । ठिक – ठीक, उचित । ठावां – सयाने । पगार – तट, किनारे । कौन्ह – कौन । झिलै – धारण करे, पकड़े । झूझावां – जूझने वाले, युद्ध के । मह – महि । कित – कहां । बहसावां – जोश में भर कर । दोखण – दूषित, नाश करने । लंकाळ – सिंह, योद्धा । धिकावां – कुपित, आगे बढ़े ।

पच्छिम दिसा पहाड़ भी, पूरब दिस लावां।
उतर धर का पातसाह, बंधे ले आवां।।
यक दिली के पातसाह, कों कंध नवांवां।
लूण दिल्ली पतसाहि रै, तकसीर न पावां।।
यम लड़िसा मुंह आगळै, कछु तरस न लावां।।१६।।

छंद छप्पय

बिहुं दळ सिलहां बंटै, बणै पाखर गज बाजां।
बिहुं दळ बेढ़ विचार, सुहड़ साजै जुध साजां।।
येक दिल्ली ऊपरां, कहर लागा बेहुं केवै।
बिहुं बळ साहि अबीह, राह बेवै बळ खेवै।।
हळमळ बेहूं फौजां हुई, धमधमे सारी धरा।
'सूज' नै 'साहि सलेम' रा, कछै भीछ बेहुं कांम रा।।१७।।

वडा साह छळ वेढ़, बढ़ै अऊख बाणारस।
प्रब येकण पामियां, धार खग गंगह धार स।।
येक कहै रिवलोक, भेदि साजोति मिळावां।
येक कहै सुरलोक, येक सिवलोक स जावां।।
येक कहै करि द्रोम्रणि अणि, अणि ही धणि उबारस्यां।
येक कहै मारिस्यां अवसि, येक कहै दळ मारिस्यां।।१८।।

लावां – ले आएं। बंधे – बन्दी बना कर। नवांवां – झुकातें हैं। लूण – नमक। तकसीर – त्रुटि, दोष, गुनाह। आगळै – अगाड़ी। तरस – भय, त्रास। लावां – लायें।

१७. सिलहां – कवच। पाखर – हाथी व घोड़ों की कवच। बेढ़ – युद्ध। सुहड़ – सुभट। साजै – सज्जित होते हैं। जुध साजां – युद्ध सज्जा। कहर – युद्ध, शत्रु। केवै – बैर, आपत्ति। अबीह – निडर। राह – मार्ग। बेवै – दोनों। खेवै – चमकाते हैं। हळमळ – हलचल। धमधमे – धमधम की ध्वनि। कछै – बांधे, कसे, तैयार हुए। बेहुं – दोनों पक्षों के।

१८. छळ – लिए। वेढ़ – युद्ध। अऊख – ओक, स्थान। प्रब – पर्व। पामियां – पाये। धार खग – खड्ग-धारा। गंगह धार – गंगा की धारा। साजोति – सज्योति। द्रोम्रणि – बैरी। अणि – सेना। अणि ही धणी – सेनापति। मारिस्यां – मारेंगे।

हळमळ विहुं फौजां हुई, भले भलां उंमरावां ।
सौहड़ा संजैह........., दळां दहुवै विच दावा ।।
येक कहै सनांन दांन, जप जाप स जांणै ।
येक करै उजू निवाज, तसब्बी तुरकांणै ।।
यक रटैं रांम रांम हि रसण, अला अला यक ऊचरै ।
आरणि रटक्क लेबा अवसि, कटक्क बिहुं यण विधि करै ।।१६।।

महाराजा 'अनिरुद्ध', जुद्ध कारण ऊमंगां ।
भाई नौ काका भुजाळ, सह भीच ससगां ।।
कुळि राजाये कोकि, दिढ़ै बैठिया दिवांणं ।
धरम पुत्र जिम जांणि, सुतन 'वीठळ' सुभियांणं ।।
यम कहै धणी अजमेर वो, छित सूं माया छंडियै ।
चित च्यंत पंच तत्तह तणी, मरण रणे सो मंडियै ।।२०।।

मिळे वाय मधि वाय, सुन्नि मधि सुन्नि समांवै ।
तेज तेज में मिळै, पिंड धर मांइ मिळावै ।।
आप आप मिळ जांय, रहै अपणौ नह कोई ।
सत रज तम जिस मांय, जको ले देय समोई ।।
नह तात न मात न भ्रात पुणि, उड़ै हंस राखै कवण ।
टगटगी लाय रहियै जितें, भरियौ तजि जाये भवण ।।२१।

---

१६. हळमळ – हलचल । दावा – अधिकार प्राप्ति का वाद । उजू – ईश्वर की इबादत के पूर्व हाथ मुंह की सफाई । निवाज – नमाज । तसब्बी – माला । रसण – जिव्हा से । अला अला – अल्लाह, अल्लाह । आरणि – युद्ध में । रटक्क – टक्कर । लेबा – लेने । कटक्क – सेना । बिहुं – दोनों ।

२०. भुजाळ – बलवान् । भीच – योद्धा । ससगां – सगोत्र । कोकि – बुला कर । दिढ़ै – दृढ़ता के साथ, स्थिर भाव से । दिवांणां – परिवार-जन, सभासद, राजा । धरम पुत्र – युधिष्ठिर । सुभियाणं – श्रेष्ठ । छित – चित्त, पृथ्वी, इस लोक । पंच तत्तह – पंचतत्व ।

२१. वाय – वायु, पवन । सुन्नि – शून्य, आकाश तत्व । समांवै – मिले । पिंड – शरीर । धर मांइ – पृथ्वी में । आप – अपने अपने में । सत रज तम – सतोगुण, रजोगुण व तमोगुण । जको – वह । हंस – प्राण, जीव । कवण – कौन । टगटगी – ताक, चितवन । लाय – लगा कर । भरियौ – भरापूरा, सम्पन्न । भवण – भवन घर ।

काढ़ो काढ़ो कहै, मोह माया सह मूंकै ।
पुत्र कळित्र परिवार, सकळ त्रखवंत ससंकै ।।
दीठि दीठि हूं डरै, ग्रसह सह हाय ग्रलख्खौ ।
प्रीति रीति परिहरिय, रटै नारी नह रख्खौ ।।
भ्रम यह फिरंतौ ही भलो, सीस पड़ै जेती सहैं ।
ग्रावजे कांमि यण वासतै, कुळि सौहड़ां राजा कहै ।।२२।।

पिड़ि ऊपड़िया प्रसिद्धि, लच्छि कीरति पाईजै ।
गज - गांहण रावतां, धारि साम्हा धाईजै ।।
ससत्र भंग सब ग्रंग, तूटि पड़सी तंग तंगा ।
ईस सीस पळ पंखि, वरै सुर-कंवरि बरंगा ।।
ध्रम स्याम रहै जस ऊघरै, मुणै गौड़ ग्रापौ-मलो ।
भड़ि मरण भलो रिण भौमि रै, खाट भंजि मरबो भलो ।।२३।।

यम राजा ऊमरा, सकळ समोदि सग्यांनं ।
जेमि क्रस्ण ग्ररजुन्न, पय समजाय निदांनं ।।
यम ग्रग्या ऊचार, सजौ जुध तणौ सरूपं ।
भाई काको भीच, रूप ग्रायं बड़ रूपं ।।

---

२२. काढ़ो काढ़ो – निकालो निकालो । मूंकै – छोड़ कर । कळित्र – स्त्री । त्रखवंत – भयातुर । ससंकै – सशंकित । ग्रसह – शत्रुवत्, ग्रसह्य । परिहरिय – छोड़, त्याग कर । भ्रम – ब्रह्म । फिरंतौ ही – घूमता ही रहना । जेती – जितनी । ग्रावजे कांमि – काम ग्राने की ग्राज्ञा का भाव । सौहड़ां – योद्धाग्रों को ।

२३. पिड़ि – युद्ध । ऊपड़िया – ग्राक्रमण करने, मरने से । लच्छि – लक्ष्मी, द्रव्य । लच्छि कीरति – कीर्ति रूपी धन । गज-गांहण – युद्ध । धारि – शस्त्र धारा । साम्हा – सम्मुख । धाईजै – जाइए, बढ़िये । ससत्र – सशस्त्र । तंग तंगा – पृथक पृथक टुकड़ । ईस – शिव । पळ – मांस । पंखि – मांसाहारी पक्षी । सुर-कुंवरि – ग्रप्सरा । बरंगा – टुकड़े, क्षतांग । ऊघरै – प्रकट हुए । मुणै – कहता है । ग्रापो मलो – ग्रपने बल पर भरासा रखने वाला, शक्तिशाली । खाट भंजि – पलंग तोड़ कर । मरबो – मरना । भलो – ग्रच्छा ।

२४. यम – इस प्रकार । पय – पास । समजाय – समझा कर । ग्रग्या – ग्राज्ञा । सजौ – तैयारी करो । श्रायं – श्रायु ।

येकंत मंत सह ऊचरै, करै दांन पूजा करै।
आबरी वरण भड़ आजि रा, ध्रख खळां ऊपर धरै ॥२४॥

छंद छप्पय यकभ्भड़ो

रांम तणां बंदरां, जिसा राकस रावण रा।
अति करां ऊधरां, वपू जेहा बावण रा ॥
अगनि हूंत आकरा, अनड़ येहा वोयण रा।
नाहर जिम नाहरां, दाह देहा दोयण रा ॥
पाहड़ां गजां धड़ पेलणां, जीतण आजि स जुद्ध रा।
कांम रा खरा सजि बगतरां, असा भींछ 'अनुरुद्ध' रा ॥२५॥

छंद नीसांणी

असा भींछ 'अनुरुद्ध' जिका, जुद्ध गौड़ स जाणं।
गोपावत मांझी अगज, सज्जै सिलहाणं ॥
भाखर पाखर भीड़ियां, ब्रद पाखर बाणं।
कळह बार केल्हण-हरा, जेहा जमरांणं ॥
वळि पातळौत वाखांणिजे, दळ भींछ दिपाणं।
अड़ीखंभ अड बालउत, जमरूप जिसाणं ॥

आबरी – अविवाहित। ध्रख – कोप दृष्टि, इच्छा। खळां – शत्रुओं। धरै – धारण करें।

२५. राकस – राक्षस। करां – हाथों के। ऊधरां – उदार, उद्धार करने वाले। वपू – वपु, शरीर। बावन रा – वामन के। आकरा – तेज। अनड़ – पर्वत, अनम्र। येहा – ऐसे। वोयण – पैर। नाहर – सिंह। जिम – जैसे। दाह देहा – दाह देने वाले, नष्ट करने वाले। दोयण – बैरी। पेलणां – पेलने वाले, खदेड़ने वाले। खरा – पक्के, दृढ़ निश्चयी। असा – ऐसा। भींछ – योद्धा।

२६. जिका – वे। सजाणं – जानिये, सज्जित हुए। गोपावत – गोपालदासोत। मांझी – मुखिया। अगंज – अजेयी। सिलहाणं – कवच। भाखर – भाखरोत। पाखर – गज-अश्वादि के कवच। भीड़ियां – कस कर बांधे हुए। कळह बार – विपत्ति काल, युद्ध काल। वळि – फिर, पुनः। दिपाणं – शोभायमान होते हैं। अड़ीखंभ – जबरदस्त। अड़ – हठीले। बालउत – बाला के वंशज। जिसाणं – जैसे।

पंचायत भूप पेखियै, पूरा वपु पाणं ।
ठावा भड़ मारौठ रा, दावा दीयाणं ।।

सातळवता सूरिमां, कसियां केकाणं ।
मालावत धरियां मछर, बर बीर बखाणं ।।

सिंघ जेमि सिंघण-हरा, आवध ऊफाणं ।
लाखणवत भांजण लखां, येहा अप्रमांणं ।।

खोखरवत बाखांणिजै, सांवत अवसांणं ।
वळि नाथावत वेखिजै, देदावत दाणं ।।

भड़ बाकारण भूतियां, तांणै बळ ताणं ।
सकरावत जुध सूरिमां, ओठंभ अवसांणं ।।

बेलहावत रण भड़ां, असमर ऊबांणं ।
सांगावत सांवत सिरै, दोय राह दिवाणं ।।

ओंडा पैंडा हालणां, अहड़ावत आणं ।
झींथरिया जाडा झंडां, लड़बा लोहाणं ।।

कटहड़िया लखणोर का, बंस गौड़ बखांणं ।
चमर बंध खंधार का, करि कहे बखाणं ।।२६।।

पाणं – बल में । ठावा – चुने हुए । दीयाणं – देने वाले । सातळवता – सातल के वंशज । केकाणं – घोड़े । मालावत – माला के वंशधर । मछर – गर्व । सिंघण-हरा – सिंघण के पौत्र । आवध – आयुध, शस्त्र । ऊफाणं – उमड़ते हैं । लाखणवत – लाखण या लाखा के वंशज । भांजण लखां – लाखों को मारने वाले । खोखरवत – खोखर के वंश वाले । सांवत – सामंत । अवसांणं – अवसर । नाथावत – नाथा के वंशज । वेखिजै – देखे जाते हैं । देदावत – देदा के वंश के । दाणं – दानी । बाकारण – ललकारने । भूतियां– प्रेत तुल्य । तांणै – खींचे । ओठंभ – रक्षक, आश्रय, शरणस्थल । अवसांणं – अवसर पर । असमर – तलवार । ऊबांणं – नंगी रखने वाले, युद्धार्थ तत्पर रहने वाले । सिरै – श्रेष्ठ । दिवाणं – राजा । ओंडा पैंडा – कठिन मार्ग पर । हालणां – चलने वाले । आणं – आन के । झींथरिया – झींथर स्थान के । जाडा झंडा – घने झंडे या समूह । लोहाणं – शस्त्रों से । कटहड़िया – स्थान विशेष में निवास करने वाले । लखणोर – स्थान विशेष के निवासी ।

नोट :—इस छंद में गौड़ क्षत्रियों की विभिन्न शाखाओं के नामोल्लेख हैं ।

छंद छप्पय

वंम गौड़ बाखांणि, जिता घमसांणि स जीतण ।
सबै सूर सामंत, पबै जेहा अभैत पण ।।
सबै बंधि सन्नाह, सबैं पाखर हय साजै ।
सबै पराक्रम सिद्धि, उदधि सामंत स आजै ।।
अनुरुद्ध जुद्ध करबा अभंग, आवध बाहिबा ऊरड़ा ।
सूंडा लंकाळ डीकाळबा, रवताळा सजिया रूड़ा ।।२७।।

सजि रवताळा साथि, येमि दरबार स आयै ।
भड़ांनाथ संभळै, मुकट सन्नाह मंगायै ।।
'अनौ' येमि ऊचरै, जीण हयराव जड़ावौ ।
सिरी बांधौ सिर सोभ, पछै पाखर पहरावौ ।।
बंधि सिलह आप वळि बंधि, बळ साकुर ठाकुर सज्जिया ।
'अनुरुद्ध' जुद्ध करबा अभंग, वीर घौर नद बज्जिया ।।२८।।

छंद नीसांणी

वीर घौर नद बाजि येमि, सजिया चक्रवत्ती ।
फौजां सबदळ फूलिया, हूलिया हसत्ती ।।
जोड़ाई चढ़िया जकौ, भाई 'जसपत्ती' ।
काका साधक कांमरा, अधिका अधपत्ती ।।

---

२७. जिता – जितने । घमसांणि – युद्ध । जीतण – जीतने वाले । पबै – पर्वत । अभैत पण – अटलपने वाले, अडिगता वाले । सन्नाह – कवच । हय – घोड़े । उदधि – समुद्र । आजै – युद्ध । बाहिबा – चलाने । ऊरड़ा – जोश से, उमड़ कर । सूंडा – हाथी । लंकाळ – सिंह । डीकाळबा – (?) । रवताळा – रावत पदधारी, वीर ।

२८. रवताळा – योद्धा, क्षत्रिय । येमि – इस प्रकार । भड़ांनाथ – सेनापति । संभळै – सुना । सन्नाह – कवच । अनौ – राजा अनिरुद्धसिंह गौड़ । जीण – घोड़े का चारजामा, पलांण । हय राव – अश्वराज । सिरी – श्री, घोड़े के ललाट का आभूषण । पछै – तदनन्तर । साकुर – घोड़े ।

२९. चक्रवत्ती – चक्रवर्ती राजा । फूलिया – प्रफुल्लित हुए । हूलिया – झोंके, आगे बढ़ाये । हसत्ती – हाथी । जोड़ाई – जोड़ में, बराबरी के । जकौ – वह । जसपत्ती – जसवंतसिंह गौड़ । अधपत्ती – अधिपति, राजा ।

'भाऊ' चढ़िया रेणिसा, साऊ समजत्ती ।
'तेजा' चढ़िया जोरवर, बहता रबि रत्ती ।।
'जोरावर' चढ़ियां जरूर, नाहर निरत्ती ।
दीनां दान स छुंडिया, मंडिया मसलत्ती ।।
'नवला' 'सकता' नरिंद रा, वो बहलायत्ती ।
'रुकमांगद' रिण राखिबा, कुंवरां कीरत्ती ।।
'अचळा' गिर अचळा जिसा, रुपि चलै न रत्ती ।
कहै 'किसोवर' कांम रा, भारथ्थ अभत्ती ।।
सुज भाई काका समेति, छजिया छत्रपत्ती ।
पुन्यम चंद प्रकासिया, नखख जांणि नत्ती ।।२६।।

छंद छप्पय

नख जांणै नाखित्र, सकळ जोधार सपाणं ।
बिंब जांणि राकेस, बीचि राजा बहौ-जाणं ।।
कहियौ राव 'किसोर', जेमि देवांसुर जांणै ।
दीपै 'सांवळ दास', अटळ ध्रुव जे आराणै ।।
ये भट्ट ठट्ठ ठिल्लै अठिल, अधराजा ब्रद ऊधरै ।
दस अंस लिये संपति दिसा, कळहणि अध बांटौ करै ।।३०।।

साऊ – भली प्रकार । बहता – चलते हुए । रबिरत्ती – सूर्य की कांति जैसा । निरत्ती – तत्पर । दीनां – गरीबों को । छुंडिया – छोड़ा, दिया । मसलत्ती – गुप्त मंत्रणा । बहलायत्ती – युद्धातुर । राखिबा – रखने । गिर अचळा – पर्वत, पहाड़ । जिसा – जैसा । रत्ती – तनिक सा भी । भारथ्थ – युद्ध । अभत्ती – अभय, अडर । सुज – वह । समेति – सहित । छजिया – सजे, शोभित हुए । नख – नक्षत्र । नखत्ती – चंद्रमा ।

३०. नाखित्र – नक्षत्र । बिंब – प्रति छाया । राकेस – चन्द्र । बहौजाणं – बहुज्ञानी । देवांसुर – बृहस्पति । दीपै – शोभा पाता है । ध्रुव – ध्रुव, मस्तक । आराणै– युद्ध में । भट्ट – भाट । ठट्ठ – झुण्ड, ठाठ । ठिल्लै – धकेले गए । अठिल – नहीं ठिलने वाले । दसअंस – दशमांस । संपति – सम्पत्ति, धन । कळहणि – युद्ध में । अधबांटौ – आधा हिस्सा ।

छंद नींसाणी

कळहणि अध बांटी करै, सिलहां जे सारां ।
अनुरुध हंदा ऊमरा, जुध जांण अपारां ।।
'हरदा' सुंदरदास रा, बिरदां बेपारां ।
जोगावत रावत जुड़ण, सांमंत सिरारां ।।
'सिवा' 'महेस' महेस सा, करि क्रोध करारा ।
'रांम' 'डूंगर सीह' रणे, डूंगर उणिहारा ।।
'केसवदास' अकास पाज, लंकी कौधारां ।
साकुर 'सूर' नरिंद सुत, भुज भाखर भारां ।।
महा खग बाहै मरद्द, 'केसवा' करारा ।
दूठ दळा पातिळ दुवा, दाखियै 'दवारा' ।।
सूर 'अनायत' सारिसा, मैंगळ मौहारां ।
सो कज्जळगिर सारिसा, बादळ बरिखा रा ।।३१।।

छंद दोहा

बादळ बिरखा रा बणै, 'अंना' रा गज येह ।
सिरी सपख्खर सौहियां, दिग्गज दीरघ देह ।।३२।।

---

३१. सिलहां – कवचों । सारां – तलवारों से । हंदा – का । जुध जांण – युद्ध-विद्या में निपुण । बेपारां – अपार । जुड़ण – लड़ने में । सिरारां – उच्च-कोटि के, श्रेष्ठ । महेस सा – शिव जैसा । करारां – बलवान । डूंगर – पर्वत । पाज – मर्यादा, सीमा । लंकी – सिंह । कौधारां – क्रोधालु । साकुर – घोड़ा । भाखर – पहाड़, भाखर के वंश वालों में । भारां – भारी, बड़ा । महा खग – बड़ी तलवार । बाहै – चलावे । करारा – ताकतवर । दूठ – वीर । पातिळ – प्रतापसिंह । दुवा – अन्य, दूसरा । दवारा – द्वारका-दास । सारिसा – सदृश्य । मैंगळ – हाथी । मौहारां – मोहरे का । कज्जळगिर – कज्जलगिरि, विंध्यगिरि । बरिखा – वर्षा ।

३२. अंना – अनिरुद्धसिंह । सिरी – हाथी के ललाट का आभूपण विशेष ; सौहियां– शोभित हुआ । दिग्गज – दिशाओं के हाथी । दीरघ देह – विशालकाय ।

छंद छप्पय

दीरघ दिग्गज देह, येह मयमन्त 'अना' रा ।
गयण जेमि गाजता, मुणै भाद्रव मंझारां ।।
फौज डंमर फाबिया, फबै धज अंमर फरक्के ।
हरवळ कीध हठीह, जोध बरणों अब जक्कै ।।
दळ लाख मद्धि ऊर्धा दिपै, खळां लाख हूंता खहै ।
सिरदार लार खटतीस रा, लाख लाख मुजरा लहै ।।३३।।

छंद त्रोटक

लख लाखन के भुज दण्ड लहै । कवि नांम तिता बळि ठांम कहै ।।
परमारह सूर 'जूझार' पुणै । सिरदार जको जुधबार सुणै ।।
धर धार उधारण हार धणी । वप जेणि घणी खत्रवाट बणी ।।
सिध रूप 'जसौ' सिध रूप सदा । दळ मारण-हार मदां दुरदां ।।
'मोहकम्म' जिसा मोहकम्म मही । कथिये बळ भाय न जाय कही ।।
बळि 'क्रन' जिसो बलि 'क्रन' बळां । 'क्रमसेनि' जिसा अकळंक कळां ।।
सिंध जांणि 'सुजाणह सिंध' सिरै । फरिये दळ जो पछिमांण फिरै ।।
तवि 'डूंगर' डूंगर सींह तणौ । घण सार बहै जुधबार घणौ ।।
जुध 'केसरि' 'खां समसेर' जुवा । हरवल्ल भला तिण साथि हुवा ।।

---

३३. मयमन्त – मदोन्मत्त । गयण – आकाश । मुणै – कहे जाते हैं । भाद्रव – भाद्रपद । मंझारां – में । डंमर – शोभा । फबै – शोभित होते हैं। धज – ध्वज । अंमर – आकाश । फरक्कें – लहराते हुए । जक्कै – उन, जिनका । ऊर्धा – ऊँचे । दिपै – शोभित होते हैं । खहै – नाश करे । लार – पीछे । खटतीस रा – क्षत्रियों के छत्तीस राजवंशों के । लहैं – लेते हैं ।

३४. तिता – उतने का । बळि – फिर । ठांम – स्थान, ठिकाने । पुणं – कहलाते हैं । जको – वह, जो । धार – धार राज्य, मालव प्रदेश का धार नामक नगर । धणी – स्वामी । वप – वपु, शरीर । जेणि – जिसका । घणी – अधिक । सिध – सिद्ध, शंकर । मदां दुरदां – मस्त हाथियों के । मोहकम्म – दृढ़ । भाय – प्रकार । बळां – बलवान् । अकळंक – निष्कलंक । कळां – शक्ति, कला । सिरै – श्रेष्ठ । फरिये – फिरने पर । पछिमांण – पीछे की ओर । फिरै – लौटे, मुड़े । तवि – कहो । घणसार – बहुत तलवारें या शस्त्र । घणो – अधिक । जुवा – अन्य, दूसरा, अलग । भला – अच्छा, बलवान् । तिण – उसके ।

पिंड लौहन मेळ घणां पहलां । वर वीर यता बहलां बहलां ॥३४॥

छंद दोहा

बहला ही बहला बणै, रण-गहला रजपूत ।
मैमंतां मदि मारिवा, सामंत जिता सपूत ॥३५॥

छंद छप्पय

सामंत सबै सपूत, सबै जमदूत स जांणै ।
हेट हेट अविनास, पास अणठिल अप्रमांणै ॥
परां बंग सुळिताण, 'साहि सूजा' दळ सज्जै ।
उरां 'सलेमासाहि', करण गजगाह स अज्जै ॥
'जैसाह' चढ़े रिमराह जुध, घड़ा मेळि त्रबधी घणौं ।
मन साहि येक आणंद में, येक पतिसाहि उणमणौं ॥३६॥

छंद दोहा

यक पतसाह उणमणौं, भय लागै यण भांय ।
जिण ऊपरि 'जैसाहि' नृप, बंधी तेग सनाय ॥३७॥

छंद छप्पय

सुज वंधीय सनाह, किता बहला कछवाहा ।
'सूरसिंघ' सारिसा, अनै 'महासिंघ' उमाहा ॥

पिंड – शरीर । लौहन – शस्त्रों । मेळ – मिलाने । घणां – बहुत से । यता– इतने । बहला – युद्ध करने के लिए अत्यधिक आतुर, उतावले ।

३५. रण-गहला – रणोन्मत्त । मैमंतां – हाथियों के । मदि – मस्ति । मारिवा – नाश करने । जिता – जितने हैं ।

३६. हेट हेट – छोटे से छोटे भी । अणठिल – न ठेले जाने वाले । परां – उधर, उस ओर । बंग – बंगाल । उरां – इधर, इस तरफ । गजगाह – युद्ध । अज्जै – आज । रिमराह – शत्रु के संहार के लिए, युद्ध । घड़ा – सेना । मेळि – मिला, भिड़ा । त्रबधी – तीनों प्रकार से । घणौं – अधिक । उणमणौं – अन्यमनस्क, उदास ।

३७. भांय – तरह । सनाय – सन्नाह, कवच ।

३८. किता – कितने ही । अनै – अन्य । उमाहा – उत्साहित ।

'फतैसिंघ' रण फतै, हुवै जित हुवै सदा ही ।
'तेजसिंघ' तरसिंघ, अवर वोळगै असा ही ।।
'हृदमल्ल' तणा 'रिणमल' हठी, गज ढ़ल्ला रिण गाहिबा ।
अजमेरि धणी आमैरि छळि, बधि बधि साबळ बाहिबा ।।३८।।

छंद दोहा

बधि बधि साबळ बाहिबा, मन उमगै 'मथुरेस' ।
सो दाता जुधि सूरमा, दळां उजाळै देस ।।३९।।

छंद छप्पय

दळां उजाळै देस, जको मथुरौ जाणीजै ।
बंध जेणि समवड़ी, ईढ़ 'मधकर' आणीजै ।।
सूर धीर संग्राम, नांम हृंदा छळ जग्गै ।
मंडिये लोहमराट, अनड़ जेहाण अडग्गै ।।
ये गौड़ ठौड़ तिण ही अठिल, ठौड़ां ठौड़ां पण थट्टां ।
स्यांम रै कांमि आखाड़सिंध, कंध सहुवै कवचट्टां ।।४०।।

छंद नींसाणी

कंध सवाहै कवचटां, ऊपटां अपारां ।
'बळभद्र' तणौ बखांणिजै, 'तेजौ' तिण बारां ।।

जित – जिधर, जिस पक्ष पर। तरसिंघ – वीर। वोळगै – पहिचानते हैं, कीर्ति करते हैं। असा ही – इसी कोटि के। गज ढ़ल्ला – हाथियों के रक्षक, महान् वीर। गाहिबा – रौंदने, नाश करने। छळि – लिए। बधि बधि – बढ़ बढ़ कर। साबळ – भाले, बर्छे।

३९. बाहिबा – चलाने। उजाळै – उज्ज्वल करें।

४०. जको – वह। जेणि – जिन, जिस। समवड़ी – समान के, बराबरी के। ईढ़ – बराबरी के, हठ। मधकर – माधोसिंह। लोहमराट – जबरदस्त। अनड़ – पहाड़। जेहाण – जैसे। अठिल – अठेल, जिन्हें कोई इधर उधर हटा न सकें। थट्टां – समूह। कव चट्टां – (?)

४१. सवाहै – उठाये हुए चलाता है। ऊपटां – बढ़ कर। तेजौ – तेजसिंह। तिण बारां – उस समय।

खांडाहथ खंगार रा, बधिया बहसारां।
'रूपा' जेहा राठवड़, भंजण गज भारां॥
चत्रभुज का बणवीर का, भाखरा भलारां।
पंचायण नाथावतां, कीता अधिकारां॥
सूर नरूका सांमतां, अणचूक उदारां।
भारमला सुरताण का, जोगी जुहारां॥
पूरणमल रूपसिंह का, भंजण गज भारां।
आसक्रन कलियाण का, घण जांण अपारां॥
राजधरा हम्मीर का, खेहावत खारा।
कुंभावत कुंभाणिया, जांणै जोधारा॥
राजावत चढ़िया रुड़ा, सेखावत सारा।
वळ वळ सैदाना बजै, घणघोर नगारा॥
वळ वळ वणै बंदूकची, खड़ि खुर-खंधारा।
वळ वळ पायक नच्चता, घायक घणवारा॥
वळ वळ धज्जां फरकती, पचरंग प्रकारां।
वळ वळ बांणवि राजिया, घमसांण मंझारां॥
वळ वळ ठमकै वीरघंट, मैमन्त मदारां।
वळ वळ घमकै पाखरां, चमकै चोधारां॥
वळ वळ जोधा बहसिया, दे सेल सलारां।
हाहुळी मांची हैवरां, गैवरां गूंजारां॥

खांडाहथ – खड्गधारी। बहसारां – जोश में आकर। गजभारां – गज-समूह। अणचूक – अचूक। घणजांण – बहुज्ञ। खारा – खारे, क्रोधी। जांणै – जानें, पहिचानें। रुड़ा – सुन्दर, अच्छे। सारा – समस्त। बळ बळ – बारम्बार। सैदाना – विजय की प्रसन्नता की ध्वनि के वाद्य। खड़ि – चल कर। खुरखंधारा – कंधार देशोत्पन्न घोड़े। पायक – पैदल। घायक – संहारक, घायल। घणवारा – बहुत प्रहार करने वाले। धज्जां – ध्वजाएँ। फरकती – लहराती। पचरंग – पांच रंगों की। नोट :—आमेर के कछवाहों का राज-ध्वज पांच रंग का था। बांणवि – धनुषधारी। राजिया – शोभित हुए। घमसांण – युद्ध। मंझारां – में। ठमकै – ध्वनि करते हैं। वीरघंट – (हाथियों के गले में बँधे रहने वाले) घंटे। मैमंत मदारां – मदमस्त हाथियों। चोधारां – भाले विशेष। बहसिया – उत्साहित होते हैं। सलारां – (?)। हाहुळी – हलचल। मांची – हुई। हैवरां – घोड़ों की। गैवरां – हाथियों का। गूंजारा – गर्जना।

यों चढ़िया जैंसिघ दे, चढ़िया दळ लारां ।
जांणि सुमेरु बिराजिया, कुळ आठ मंझारां ।।४१।।

छंद दोहा

आठ कुळी जेहा अनड़, जैंसिघ रा जोधार ।
बरणंता लागै बरस, जो बरणौं बहु बार ।।४२।।

छंद छप्पय

जो बरणौं बहु बार, बंस कूरम्म वडाळौ ।
महाराजा 'जैंसिघ, यतां' बिरदा उजवाळौ ।।
'प्रथीय राज' 'कुंतिळ', मुणै 'पज्जून' 'मलेसीं' ।
कथ भाराथां कीध, कथा नहिं जिता कळेसी ।।
मांनहर असै अभिमांन में, भड़ि कुंतळ दळ भंगियौ ।
सद नद्द सुणै 'सूजा' तणा, पंचायण जिम जग्गियौ ।।४३।।

छंद दोहा

जाणि पंचायण जग्गियौ, रायसिघ रिमराह ।
मांनव कोई रच्चियो, दांणव रूप दुबाह ।।४४।।

यों – इस प्रकार । लारां – पीछे । बिराजिया – बैठा । कुळ आठ – आठ कुली पर्वतों । मंझारां – मध्य, में ।

४२. अनड़ – पहाड़, वीर । लागै – लगे, बीते ।

४३. कूरम्म – कूर्म, कछवाहा । वडाळौ – बड़ा, महान् । यतां – इतनें । मुणै – कहते हैं । पज्जून – पजवनराय । भारथां – युद्धों में । जितां – जितनीं, विजय की । कळेसी – युद्ध । मांनहर – राजा मानसिंह का पौत्र । असे – ऐसे । कुंतळ – भाला । पंचायण जिम – सिंह की भांति ।

४४. रिमराह – शत्रुओं को पराजित करने वाला । दांणव – दैत्य । दुबाह – वीर ।

छंद छप्पय

दांणव रूप दुबाह, राव कमधज्ज रढ़ीजै ।
'अमर' तणौ आदीत, पात परभात पढ़ीजै ।।
छात सकळ छत्रियां, वात राखण जुध-बारां ।
गात जियै बयराट, ठाठ ठेलण चवधारां ।।
ऊ पाट पाट 'गजबंध' रै, लड़बा कजि बगतर लिया ।
ऊससै भुजां लागा अरसि, बळा बळा भड़ बहसिया ।।४५।।

छंद दोहा

बळा बळी भड़ बहसिया, ऊससिया उमराव ।
उदैभांण' चढ़िया अभंग, समहर 'स्याम' सुजाव ।।४६।।

छंद छप्पय

समहर 'स्याम' सुजाव, 'भांण' चढ़ियौ अणभत्ती ।
मुणि 'जोधा' 'रिणमाल', साथि चढ़िया समजत्ती ।।
कसि तुरियां कैजमां, बांधि भूथांण वरम्मां ।
सु जमाति गौरख्ख, जांणि चलि आया दुगम्मां ।।

---

४५. **रढ़ीजै** – हठ करने वाला । **अमर तणौ** – राव अमरसिंह का तनय । **आदीत** – आदित्य, (कुल) रवि । **पात** – कवि । **परभात** – प्रभात काल में । **पढ़ीजें** – पढ़ा जाता है, स्मरण करते हैं । **छात** – छत्र, (छत्रधारी) राजा । **गात** – गात्र, शरीर । **बयराट** – विराट, विशाल । **ठाठ** – सेना, समूह । **ठेलण** – धकेलने वाला । **चवधारां** – भाले से । **ऊ** – के, वह, उस । **पाट** – राज्यासन । **गजबंध** – महाराजा गजसिंह । **ऊससे** – जोश में उमड़ कर । **अरसि** – आकाश । **बहसिया** – जोश में आए ।

४६. **समहर** – युद्ध । **स्याम** – श्यामसिंह । **सुजाव** – पुत्र ।

४७. **भांण** – उदयभान । **अणभत्ती** – इस प्रकार । **जोधा** – राव जोधा के वंशज । **समजत्ती** – समान बल वाले । **कंजमां** – एक शस्त्र विशेष । **भूथांण** – भाथे, तूणीर । **वरम्मां** – कवच । **गौरख्ख** – गोरक्षनाथ योगी की । **दुगम्मां** – दुर्जय, योद्धा, दुर्गम ।

अवसाण सिद्ध मारू अटळ, निडर राय अद उद्धरै ।
'क्रमसेणि' जहीं क्रमसेण हर, कथ समथ्थ भारथ करै ।।४७।

छंद दोहा

कथ समथ्थ भारथ करै, 'भोजराज' भैभीत ।
कछवाहां चाढ़ण कळा, रणरावत रणजीत ।।४८।।

छंद छप्पय

रणरावत रणजीत, 'भोज' यम चढ़ै भयंकर ।
भूरौ भड़ भैभीत, डोहें फौजां आडंबर ।।
जुद्ध केइ जीतियौ, प्रगट भड़ पूर पमाड़ां ।
पिड़ि पड़ि पड़ि ऊपड़ै, वोप यम चढ़ै सिवाड़ां ।।
'मांन' रौ जोध 'खंगार' जिम, कछवाहो चाढ़ण कळा ।
सन्नाह दुवाहां सज्जि करि, बीर चढ़ै रण बावळा ।।४९।।

छंद दोहा

बीर चढ़ै रण बावळा, 'दरिया' सुतण 'दलेल' ।
सूजा सिर खग साहियां, विढ़ण करेबा खेल ।।५०।।

छंद छप्पय

विढ़ण करेबा खेल, खांन चढ़ियौ खग साहें ।
अंग जको बजरंग, सूर ढांपियां सनाहें ।।

जहीं – ज्योंही । हर – पौत्र । समथ्थ – समर्थ । भारथ – युद्ध ।

४८. भैभीत - भयभीत, शत्रुओं को आतंकित करने वाला ।

४९. भूरौ – योद्धा, वीर । डोहें – मंथन करे । आडंबर – ठाठ-बाट । पूर – पूर्ण । पमाड़ां – प्रवाड़े, विरुद, कीर्त्ति । पिड़ि – युद्ध में । ऊपड़ै – उमड़ कर, उठे, दौड़े । वोप – ओप, कान्ति । सिवाड़ां – समीप वालों के, सीमान्त वालों के । रण बावळा – रणोन्मत्त ।

५०. सुतण – पुत्र । साहियां – सम्हाले, उठाये हुए । विढ़ण – युद्ध का । करेबा – करने ।

५१. खांन – दलेलखां । खग साहें – कृपाण ग्रहण कर । जको – वह । बजरंग – वज्रांग, वज्र जैसा अति दृढ़ अंग वाला । ढांपियां– ढका हुआ, आवेष्टित । सनाहें – कवचों से ।

मैमंतां गाजतां, अनै ताता अैराकी ।
रुहेला रिमराह, बांह देखतां कजाकी ।।
धर गाजि बाजि हुव धूहळां, दिल्ली सिर दावा दिया ।
जैसिंघ तणै हरवळ जकौ, करण फतै मुहरै किया ।।५१।।

छंद दोहा

करण फतै हरवळ किया, खां दलेल गजखंभ ।
सूजा हूं जुध सूत्रहे, आरंभ कीध अभंग ।।५२।।

आरंभे आरंभ यह, समर 'सलेमा साह' ।
यों उमगा भड़ आज रा, गंगा तट गजगाह ।।५३।।

छंद छप्पय

गंगा तटि गजगाह, करै मसलत्ति करारां ।
चढ़िया साहि 'सलेम', सफळ चढ़िया दळ लारां ।।
सैद 'वहादर' जिसा, 'मीरजाफर' भुजमंड़े ।
दहूं कीध चंदोळ, खूर फौजां खरहंडे ।।
तरंगाळ राव 'रासो' तवै, बरंगाळ 'अनुरुध' बणैं ।
गै-जूथ दळां ऊडै गिरद, ऊहजळा करि ऊफणैं ।।५४।।

मैमंतां – हाथियों । ताता – तीव्रगामी, तेज । अैराकी – घोड़े । बांह – भुजा, प्रहार । कजाकी – कज्जाकी, यम, भयंकर वीर । धूहळां – तोपें । जकौ – वह । फतै – विजय । मुहरै – आगे ।

५२. गजखंभ – गजस्तम्भ, शक्तिशाली । सूत्रहें – प्रारम्भ करने, बांधने । अभंग – वीर । समर – युद्ध । गजगाह – युद्ध ।

५३. मसलत्ति – परामर्श, विचार-विमर्श । करारां – जबरदस्त, कौल करार । दळ– सेना । लारां – पीछे । चंदोळ – सेना के पृष्ठ भाग की सैनिक टुकड़ी । खूर – समूह, घोड़े । खरहंडे – सेना, घोड़े, योद्धा । तरंगाळ – बांए पार्श्व की सेना । बरंगाळ – दाहिने पार्श्व की सेना । गै-जूथ – गज समूह । गिरद – धूलि । ऊह-जळा – बहते जल में बहने वाला कूड़ा कर्कट ।

छंद त्रोटक

दळ ऊलटिया दरियाव जिसा। अणभंग चढ़ै दळ साह असा ॥
धुबि डंक निंसाण सु नीधसिया। कड़ - भीड़ जिकै गयंदा कसिया ॥
करनाळि बजै उवनाळि करां। पड़ि गाज अवाज समंद परां ॥
सुर सिंधुव यों सहनाय बजै। वरघू रिणतूर गरूर गजै ॥
गड़नाळि गडां गजनाळि गजां। सुत्रनाळि सुत्रा धरि लाल धजां ॥
कइ झालि बंदूक अचूक कहै। असवार वहां उमहै उमहै ॥
डोहि डोरि गजां धज डंबरये। अदभूत झळमळ अंमरये ॥
कइ माहि-मुरातब तोग तवै। खग पायक नग्गिय झालि खवैं ॥
कइ कौतिल मोर कळा करता। भणि पैंग फिरै डकरां भरता ॥
मुंह आगळि झालि मुदग्गरयं। गुरजां - वरदार प्रहार गयं ॥
सुरतांण चढ़ैं जदि सिंधुरयं। कइ गोळ चंदोल हरोळ कियं ॥
हरवल्लह कूरम राव हठी। जयसींघ जको रणधींग जठी ॥
जिण रै हरवल्ल 'दलेल' जिसा। जमरांण जिको दइवांण जिसा ॥
घमसांण स जीतणहार घणां। तवि ठांण पठांण हरोळ तणा ॥

---

५५. दळ – सेनाएँ। ऊलटिया – उमड़े, उलट कर आए। दरयाव – समुद्र। अणभंग – बहादुर। साह – बादशाह के। असा – ऐसे। धुबि – लग कर। डंक – डंके, चोट। निसांण – नक्कारे। नीधसिया – बजे। कड़भीड़ – कड़े मिला कर। जिकै – जो। कसिया – कसे। करनाळि – करनाल नाम का वाद्य। उवनाळि – दुनाली बन्दूकें। गाज – गर्जना। परां – पार, उस ओर। सुरसिंधुव – सिंधु राग का स्वर। सहनाय – शहनाई। बरघू – एक वाद्य विशेष। रिणतूर – रणतुरही वाद्य। गरूर – भयंकरता से। गजै – तुमुल ध्वनि करे। गड़नाळि – बैलों की गाड़ियों में रख कर ले जायी जाने वाली तोपें। गडां – गाड़ियाँ। गजनाळि – हाथियों के धक्के से ढोयी जाने वाली तोपें। सुत्रा – ऊँटों। धजां – ध्वाजएँ। झालि – पकड़े हुए। उमहै – उत्साह में आये। डोहि – उठाए हुए। धज – ध्वज। डंबरये – समूह। अंमरये – वस्त्र। माहि-मुरातब – पद विशेष, दरजा विशेष। तोग – ध्वज विशेष। कौतिल – जलूसी घोड़ा, वह घोड़ा जो आवश्यकता के लिए सजा कर तैयार रखा जाता है। मोर कळा – मोर की भांति नृत्य करते। पैंग – हरकारें। फिरै – घूमते हैं। डकरां भरता – जोश में कदम उठाते हुए। आगळि – अगाड़ी। झालि – लिये। मुदग्गरयं – मुग्दर, गदा। गुरजां बरदार – गुर्जधारी। जदि – जब। सिंधुरयं – हाथी पर। जठी – शिव सदृश्य। घणां – बहुत, अधिक, घने। तवि – कहते हैं। ठांण – स्थान

कठठे वेऊ साह चढ़ै स कड़ै । अणभंग दिली सिर जंग अड़ै ॥५५॥

छंद दोहा

अडिया अणभंग येरसा, दिल्ली सिर दइवांण ।
समरि 'सलेमासाहि' सा, अरु 'सूजै' सुलितांण ॥५६॥

सो 'सूजै' सुलितांण हूं, जोध करैवा जंग ।
कड़ाभीड़ हरवळ किया, तीस हजार तुरंग ॥५७॥

छंद छप्पय

तीस सहस हय तुंग, सजिय 'जयसाह' हरोळह ।
ता प्रमांण सुलितांन, पासि गैथट्ट स गोळह ॥
बीस सहस चंदोळ, रवद रिमराह सरज्जिय ।
विहुं बाजुन वरवीर, सहस दस दस भर सज्जिए ॥
यक लख्ख सैनि दिल्लीसुरह, बजि निसांन घन गज्जियौ ।
चहुं वोर जोर जसवळ फिरहि, मोर व्यूह दळ सज्जियौ ॥५८॥

छंद दोहा

मोर व्यूह दळ सज्जियौ, तास सुदिन सुलितांन ।
फागुन सुदि येकादसी, संवत नौ अठ जांन ॥५९॥

कठठे – कठठ की ध्वनि हुई । कड़ै – निकट । अणभंग – वीर । सिर – पर । जंग – युद्ध । अड़ै – अड़ गये, रुप गए, भिड़ गए ।

५६. येरसा – ऐसे । दइवांण – योद्धा, राजा । समरि – युद्ध में । अरु – और ।

५७. करैवा – करने के लिए । कड़ाभीड़ – कवचादि से सुसज्जित । तुरंग – घोड़े ।

५८. हयतुंग – अश्वसमूह, अश्वसेना । ता – उसी । पासि – पास में । गैथट्ट – गजसेना । गोळह – सेना के मध्य भाग में, मध्य भाग की सेना । चंदोळ – पीछे के भाग की सेना । रवद – मुसलमान । सरज्जिय – तैयार किए गए । दिल्ली-सुरह – दिल्लीश्वर, बादशाह । घन – मेघ । जसवळ – जोश दिलाने वाले । मोर व्यूह – मयूर व्यूह ।

५९. तास – उस, वह ।

संवत नौ अठ पंच सद, और स मंगळवार ।
गंगा तटि भारथ रच्यौ, कर झल्लै किरवार ।।६०।।

छंद चौपाई

कर झल्लै किरवार करारं । असपति दोय हुवा असवारं ।।
देव धुनि तटि मंडि दूवाहं । आरंभ सिंभु घणौ ऊमाहं ।।६१।।

छंद छप्पय

आजि रंभ ऊछाह, आजि सिंभु नारद आये ।
आजि प्रेत पळचरां, ऊठि डक्कार अघाये ।।
आजि साहि दोय अड़ै, आजि निबड़ै सो बत्ती ।
पहर येक दिन चड़ै, जुड़ै जोधा समजत्ती ।।
है धूजि धरा हाहुळी हुई, चढ़ै साह सेना चडी ।
ऊपड़ी गरद मंडळ अड़ी, आजि घड़ी दोय ऊघड़ी ।।६२।।

छंद भुजंगी

संग्राम बरनन

घड़ी ऊघड़ी येमि बज्जे त्रधायं । चढ़ै सींघ 'जैसींघ' रायांनरायं ।।
पड़ै पाखरां रोळ धजां फरक्कै । भालां बीठिया पंखि मारग्ग थक्कै ।।
दळं ऊतरै येमि गंगा दुवाहं । मिळै पातिसाहां मिळै पातिसाहं ।।

---

६०. **संवत नौ अठ पंच** – संवत १७१५ । **भारथ** – युद्ध । **रच्चौ** – रचा, किया । **कर** – हाथ में । **झल्लै** – पकड़ कर, ग्रहण कर । **किरवार** – कृपाण ।

६१. **करारं** – बलवान् । **असपति** – अश्वपति, शाहजादे । **देवधुनि** – गंगा । **तटि**– किनारे । **दुबाहं** – वीर । **आरंभ** – युद्ध, संग्राम । **सिंभु** – शिव । **घणौ** – बहुत, अत्यधिक । **ऊमाहं** – उत्साह ।

६२. **रंभ** – अप्सरा । **ऊछाह** – उत्सव । **पळचरां** – मांसभक्षी । **डकार** – तृप्ति पर निकलने वाली कण्ठध्वनि । **अघाये** – तृप्त । **निबड़ै** – निपटे । **बत्ती** – बढ़कर, श्रेष्ठ । **समजत्ती** – समान वीर । **हाहुळी** – हलचल । **चडी** – चढ़ी सवारी कीं । **ऊपड़ी** – उठकर । **गरद** – रजसमूह । **मंडळ** – आकाश, सूर्य मंडल । **अड़ी** – लगी, स्पर्श की । **उघड़ी** – खुली ।

६३. **त्रधायं** – नगारों की ध्वनि । **रोळ** – आवाज । **धजां** – ध्वज । **बीठिया** – घिर कर । **पंखि** – पक्षी । **थक्कै (तकै)** – देखते हैं ।

पहल्लां बहल्लां हला कीं पठाणां । बगां ऊपड़ी मेळिया साहि डांणां ।।
अरावां धड़क्कै उड़ै सोर बाणां । करै कुंडळां जोध तांणै कबांणां ।।
तहां छटिया तीर ते बीर तेहा । खतंगं उरां लागै उड़ै पार खेहा ।।
परां वंग सुलितांणा 'सूजा' स वाही । मुगल्लां मिळै घांणमथ्थांण मांही ।।
तुरंगां मिळै येमि मंहम्मद तातो । मुगल्लां पठाणां दढ़ा रीठ मातो ।।
पड़ै रीठ नाराजियां वाढ़ पूरां । करै सिंभू माळा बळै रंभ सूरां ।।
कुरम्मा अवै बाग लीधी कड़क्कै । धरा पाखरां तुरां हूंता धड़क्कै ।।
भिड़ै 'भोज' भाराथ जिम भारी । 'सुरौ' जोध 'परताप' रौ आप सारी ।।
सकौ बाहतो सेल बदि बादि सूरौ । भड़ां टूक करतौ खगां बाहि भूरो ।।
'महासींघ' सेखाधणी अणी मांझी । रणे साहि सूजा तणो सेनि साझी ।।
'फतैसींघ' करणौ फतै गाहि फौजां । महासूर दातार रिझवार मौजां ।।
करां कूंत ऊपाड़ि भेळै कटक्कां । झाझा लौह री बौह लीधी झट्टकां ।।
'तेजै' कान्ह रै येमि भड़िजाळ तोरैं । अड़ाभीड़ फौजां बिचै दीयौ बोरैं ।।
धसै सावळां तणा बाजै धमौड़ा । घाये मेळिया 'मथुरादास' घोड़ा ।।
'माघोदास' बरहास मेळै समेळा । भड़ां काटि कीधा घणां धरण भेळा ।।

बहल्लां – उतावाले । हला – हमला । बगां – बागें । ऊपड़ी – उठी । डांणां – समूह । अरावां – तोपखाना । धड़क्कै – धड़कता है, गर्जता है । सोर – बारूद । बाणां – बन्दूकों से । कुंडळां – कुण्डल, गोल घेरा, मण्डलाकार । तांणै – खींचे । कबांणां – धनुषों को । ते – वे । बीर – बावन वीर, गण । तेहा – तैसे । खतंगं – बाण, घोड़े । उरां – इधर, वक्षस्थान । पार – उधर, पार निकल कर । खेहा – धूलि । परां – इधर, दूर । घांणमथ्थांण – भयंकर युद्ध, संहार, उथल-पुथल । तातो – तेज, उतावला, वीर । दढ़ा – दृढ़ - शरीर । रीठ – प्रहार । मातो – घनीभूत । नाराजियां – तलवारें । बाढपूरां – पूरी धार सहित । कड़क्कै – कड़क कर, गर्ज कर । धरा – पृथ्वी । तुरां – घोड़ों । सको – वह । बदि बादि – हठपूर्वक, बद बद कर । भूरो – योद्धा । सेखा धणी – शेखावतों का मुखिया । अणी – सेना । मांझी – मुखिया । साझी – संहार कीं । गाहि – नाश कर । मौजां – प्रसन्न हो कर । कूंत – भाला । ऊपाड़ि – उठा । कटक्कां – सेना । झाझा – गहरा, घनें । बोह – बहुत । झट्टकां – प्रहार । जाळ – व्यूह । अड़ाभीड़ – अधिक भीड़ । बोरें – झोंक दिए । धसै – घुसते हैं । सावळां – भाले । धमौड़ा – धमाधम की ध्वनि । बरहास – घोड़ा । घणां – बहुतों को । धरण भेळा – धरती में मिला दिये ।

समर वाहतौ सेल अणठैल 'सांगौ' । असौ लाख फौजां धसै फाड़ि आगौ ।।
तिहूं जोध 'हृदमाल' रा माल तेहा । अनड़ आभ थंभा दियै भीछ येहा ।।
रुडा 'रूप' राठोड़ तिठौड़ रढ़ियौ । चकाव्यूह हाथो तणै दांति चढ़ियौ ।।
नरूको कहे राव 'कलियांण' कोपै । असौ आज सिरदार गजभार वोपै ।।
हुई बार 'कुसलेस' रो फतै हाथां । नरां चाढ़णौ नीर रणधीर नाथां ।।
बणै ऊमरो बार 'खंगार' बीजौ । कहै राव राजा सुरां रूप कीजौ ।।
भणै भाट गजथाट भांजण भुजाळां । अभंग राव भाई बिन्हैं 'परस' वाला ।।
गहर राव 'गिरवर' गिरां जिसा गाढ़ा । दलां टांक मांझी दहु वेधि बाढ़ा ।।
'अखौ' भी झूझार आकार आडौ । लड़णवार फौजां तणौ टांक लाडौ ।।
कहर-बार तिण राव 'रासो' करारो । भलो आयौ मामा तणी मदति भारी ।।
मुणै बांकुड़ा पाघड़ा तणां मारू । समर आविया साहि काम सारू ।।
बिलंदां चढ़ै छकिया लोह बागै । असौ सिंघ 'गौयंदा' रौ 'हरी' आगै ।।
महामत्ति वाळै महामत्ति वाळै । कळह बाहि चौधार 'झूझार' काळै ।।
अनै ऊहड़ा राव 'गोयंद' येहा । जियें कंवर 'हरराम' वरियांम जेहा ।।
बिन्है वांघुळा सिंघ बहसिया बहल्लां । पिसण पाड़ता जोध मांझी पहल्लां ।।

अणठेल – अडिग । **सांगौ** – संग्रामसिंह । **असौ** – ऐसा । **धसै** – प्रवेश कर । **आगौ** – आगे । **तेहा** – तैसे, जैसे । **अनड़** – वीर । **आभ-थंभा** – आकाश थांभने वाले । **भीछ** – योद्धा । **येहा** – ऐसे । **तिठौड़** – उस ठौड़ । **रढ़ियौ**– हठ धारण किया । **चकाव्यूह** – चक्रव्यूह, युद्ध । **दांति** – मुंह पर, दांत पर, भिड़ गया । **कोपै** – कुपित होकर । **असौ** – ऐसा । **गज भार** – हाथी का वजन, बड़ा दायित्व । **वोपे** – शोभा पाता है । **नीर** – कान्ति, चमक, जल । **ऊमरो** – उमराव । **बीजौ** – दूसरा । **भणै** – कहता है । **भाट** – भट्ट, महेश दास कवि । **गजथाट** – हाथियों की सेना । **भुजाळां** – वीर । **गिरां** – पहाड़ । **गाढ़ा** – दृढ़ । **टांक** – भाटों की टांक जाति । **बेधि** – युद्ध । **आकार** – बलवान्, आकृति । **आडौ** – आड़, रक्षक । **कहरबार** – विपत्ति काल में । **उस–वह** । **मामा तणी** – मामा की, मिर्जा राजा जयसिंह की । **बांकुड़ा** – वक्र, टेढे । **पाघड़ा** – पगड़ियां । **तणा** – का । **मारू** – राठौड़ । **समर** – युद्ध । **सारू** – लिए, सिद्ध करने वाले । **बिलंदां** – विलंद, बड़े (वीर) । **बागै** – बजने पर । **महामत्तिवाळै** – महाबुद्धिमान, अत्यधिक मतवाले । **कळह** – युद्ध । **चौधार** – भाला विशेष । **काळै** – वीर, हाथी । **जियें** – जिसका । **वरियांम** – श्रेष्ठ. वीर । **जेहा** – जैसा । **बिन्है** – दोनों । **वांघुळा** – भूखे । **बहल्लां** – रणोत्सुक । **पिसण** – शत्रु । **पाड़ता** – गिराते ।

दळां 'चंद' दूजौ रघुनाथ दीठौ। तठै घाति हयराज अगराज तीठौ।।
'बन्नराज' चढ़ै बाज सिरताज बेली। झाझी फूलधारां तिकां सीस झेली।।

जठै 'सुंदरौ' 'भावसी' तणौ जांणै। वडौ वीर वीराधि मांझौ बखांणै।।
असी-वार में 'स्याम' रौ जोध 'ऊदो'। जुड़ण काज भेळौ सदा रहत्त जूदो।।

हुवे बीर हाथी किया वीर हाकां। डंडाळां बंबाळां छळे बाजि डाकां।।
कटै संध नैं बंध कंधा करग्गां। पड़ै टोप माथा झड़ै सार झग्गा।।

भभक्कै घणां घाव मांहे असुंडा। कमंध नाचिया जोगणी भरै कुंडा।।
गयंदा छुटै बहे येमि नाळि गौळा। दुगम्मा फरे अणी पातिसाह दौळा।।

निपट्ट साहि रा जकै बेली नजीकी। झलै गुरज्जा-दार गुरज्जा नझीकी।।
धड़ा ढालड़ां ऊपरां व्है धमंका। गुरज्जां तणा येमि बाजै गमंका।।

रुड़ा कामि आंणे मोहे कांम रांणै। कवे 'सगर' पोतौ क सूतौ कहाणै।।
सिसोदौ सदा सेवतौ येमि कासी। बिढ़े थयौ वैकुंट हंदो बिलासी।।

हवै छूटिया पांव सुलितांण हंदा। बढ़ै खेत पड़िया किता मीर बंदा।।
नमे नीसरै साहि बैठौ निवाड़ै। अभंगनाथ 'जैसाहि' जीतौ अखाड़ै।।६३।।

दीठौ – दीखा। तठै – वहाँ। अगराज – सिंह। तीठौ – तेज, तीव्र गति। बाज – घोड़ा। बेली – सहायक। झाझी – गहरी। फूलधारां – तलवार के प्रहार। तिका – वह। तणौ – पुत्र, का। जोध – पुत्र, वीर। ऊदौ – उदयभान। भेळौ – शामिल। जूदौ – अलग, जुदा। हुबे – भिड़े। डंडाळां– नक्कारें। बंबाळां – नक्कारें। छळे – युद्ध। डाकां – डंके, नक्कारे की चोट। करग्गां – हाथ। झड़ै – कट कर गिरे। सारझग्गा – लोह कोट, कवचादि। भभक्कै – उमड़ता है। घणां – बहुत। मांहे – में। असुंडा – ललाट, सिर। कमंध – धड़। नाचिया – नाचे। जोगणी – योगिनी, रणदेवी। कुंडा – रक्त-पात्र, खप्पर। नाळिगौळा – तोपों के गोले। दुगम्मा – कठिनता से। अणी – सेना। दौळा – चारों ओर। निपट्ट – बिल्कुल। जकै – जो। बेली – अंगरक्षक, सहायक। नझीकी – निकट के। धड़ां – शरीरों। ढालड़ा – ढालों। आणे – आने। मोहे – मुग्ध, मुंह आगे। कवे – कहते है। सगर – राणासगर। बिढ़े – युद्ध में। थयौ – हुआ। हवै – अब। बढ़ै – किता – कतिपय। मीर बंदा – अमीर जादे, सेवक। नमे – नमकर। नीसरै– निकल गया। बैठौ – पुत्र। निवाड़ै – समाप्त होकर, हार मान कर। अखाड़ै – युद्ध में।

छंद दोहा

आखाड़ै 'जैसिंघ' नृप, ऊभौ हथ्थ उपाड़ि ।
'जामबेग' 'अनरुद्ध' जुड़ि, रण बरणौं सोहि राड़ि ।।६४।।

छंद चौपई

रण बरणौं सोहि राड़ि रचिया ।
मार मार चहुंवै दिस मचिया ।।
महाराजा जुड़िया 'अनपालं' ।
नद्द बजै गजै करनाळं ।।६५।।

वचनिका

करनाळों का सौर । धमक बजे घनघोर । अराबों की आवाज । जुरे 'अनुरूध' महाराजाधिराज । कोहोकबांन चंद्रबांन, छूटतै हैं । तारे आसमान सै तूटते हैं । सुलतान नवारे कों गया । 'जामबेग' खरा रया । बात करतें बेर लगै । जोधा जुड़ै कायर भगै । 'राव किसौर' सै यौं फुरमाया । 'जामबेग' चलाय आया । 'बेग' के पीलवान नैं हाथी डाल्या । पाहर जैसा पगां चाल्या । येते दरम्यान कौंन खड़ा रहै । हाथी का धका हाथी सहैं । फौजदार 'साहि यनायत' के सै यों फुरमाया । अपरना हाथी डालि गनीम का हाथी नझीक आया । हाथी सै हाथी लडचा । वज्र जैसा टूटि पडचा । पील नै पीलवांन भजाया । अपणी फौज में मारि लाया । राजा नै अपणां फौजदार चढ़ाया । पहली फतै का हाथी पाया । राजा के हरौंळों नै साहिजादा के छत्र चंमर मारि लीया । साहिजादा जांणे दीया ।।६६।।

---

६३. ऊभौ – खड़ा । हथ्थ उपाड़ि – शस्त्र उठाए हुए । सोहि – वह । राड़ि – युद्ध ।

६४. मार मार – मारो मारो की ध्वनि । अनपालं – अनिरूद्ध सिंह । नद्द – वाद्य । करनांळं – करनाल, एक प्रकार का वाद्य ।

६५. सौर – आवाज, ध्वनि । अराबों – तोपों । कोहोकबांन – तोप विशेष । चंद्रबांन – तोप विशेष । नवारे – निपट गया, समाप्त होकर गया । डाल्या – डाला, झोंका । पाहर – पहाड़ । पगां – पैरों । पील – हाथी । पींलवान – गजारूढ़ योद्धा, महावत । मारि लीया – छीन लिए । जांण – जाने ।

छंद दोहा

साहिजादा जाणै दिया, महा मची रणमार ।
पहला बहला भेळिया, पिड़ि भाखरां पमार ।।६७।।

छंद छप्पय

परमारां मझि सूर, वीर भाखरां रढ़ाळौ ।
यां पैलां वौरिया, वीर बहलां बिरदाळौ ।।
पुणि पैंतीस पमार, गौड़ भड़ बीस गिणाणां ।
करि छूटा लंकाळ, ताळ मेळै सुलिताणां ।।
पाछाड़ि झाड़ि द्रोयण परां, घण थाटां हय घल्लियौ ।
आडंबर देखि फौजां तणा, चमू छत्र दिस चल्लियौ ।।६८।।

छंद दोहा

चंमर छत्र दिस चल्लिया, ये बहला उमराव ।
'जामबेग' 'अनुरुध' जुड़ै, घण वग्गे रण घाव ।।६९।।

छंद त्रोटक

राजा अनुरुध को जुध

घण घाय बजै रणफौज घड़ी । पड़ि बांण कवांणह रीठि पड़ी ।।
झखि आगि व्रजागि खाग झड़ी । कटि कंध बगत्तर तूटि कड़ी ।।
बहि धार अपार चौधार बहै । किलकार करै भड़ मार कहै ।।

---

६६. बहला – शीघ्रता करने वाले, जल्दबाज । भेळिया – झोंके । पिड़ि – युद्ध ।

६७. रढ़ाळौ – हठीला, युद्धालु । वौरिया – झोंके । पुणि – फिर, कहते हैं । करि – मानो । लंकाळ – सिंह । ताळ मेलै – ताल मिलाकर । झाड़ि – संहार । द्रोयण – वैरी । परां – दूर, उस तरफ । घणथाटां – सघन सेना । हय – घोड़ा । घल्लियौ – डाला । आडंबर – वैभव । चमू – सेना ।

६८. घण – घना । वग्गे – बजा । घाव – प्रहार ।

६९. घण घाय – घने घाव । बजै – लगे । रीठि – प्रहार । झखि – प्रज्ज्वलित । खागझड़ी – तलवार की झड़ी, तलवार से गिरी । कड़ी – शृंखला । चौधार– भाले । किलकार – हर्ष ध्वनि, किलकने की क्रिया । मार – मारो मारो ।

हयराज चढ़ै तिण वार हठी। जुध भार पड़े सिरदार ऊठी ।।
'भावसिंघ' अनै 'रिणछोड़' भणै। पहली रण दाखिय सूर पणै ।।७०।।

छंद दोहा

दांणी ऊपरि दोवड़ी, सुर राणियां समाज।
विढ़ि रण मंडळ भेदियौ, सुत 'भाखम' सिरताज ।।७१।।

छंद त्रोटक

सूर मंडळ भेदहि सूरि समैं। चवसठ्ठि नचैं तहां बीर रमैं।।
घन घाय सपूरन सूर मिळै। झटकांन की बाह दुवाह झिलै।।
कर बाहत सांवत सांगि कही। यत तैं उत तैं यक बेर बही।।
मुगलै तेंहि ठौरि कवांन गही। यक बार ही मार अपार भही।।
सिरदारन के जंह लोह लगै। घन घाय छकै पुनि खेत वगै।।
हयराज की बाग उपारत ही। सिरदार तहां कर सांगि गही।।
सु त्रभंगिय बाहिय यूं तरछी। सु बगत्तर फौरि गई बरछी।।
जिह बेर 'हरी' जस सेर भयौ। चक्रव्यूह नमाइ चलाय गयौ।।
बहु बाहत है रण तेग बळी। तिह बारह दीरघ धार चली।।
'भावसिंघ' जहां रणसिंघ भयौ। 'रनछौड़' जहां रण मांडि रयौ।।
पुनि 'जैत' जहां रन उपरियं। भर घावन तैं घट यौं भरियं।।
बरियांम 'करन्न' को खेत बग्यौ। जहां राव'किसौर'के गोरा लग्यौ।।

हयराज – श्रेष्ठ घोड़े पर। **तिणवार** – उस समय। **ऊठी** – उधर ही। **भणै** – कहते हैं। **दाखिये** – कहिये। **सूरपणै** – शूरपने में।

७०. **दांणी** – बराबरी के। **दोवड़ी** – दौड़ लगाकर। **सुरराणियां** – देव पत्नियां, अप्सराएँ। **विढ़ि** – कट कर।

७१. **चवसठ्ठि** – चौसठ रण देवियाँ। **बीर** – बावन वीर। **रमैं** – खेलते हैं, क्रीड़ा करते हैं। **घनघाय** – घनें घाव। **सपूरन** – सम्पूर्ण। **झटकांन** – प्रचण्ड प्रहारों। **दुबाह** – दुघर्ष वीर। **झिलै** – झेलते हैं, सहते हैं। **सांगि** – सांग। **यक बेर** – एक साथ, एकबार। **गही** – ली। **छकै** – छाके हुए। **खेत** –रण-क्षेत्र। **वगै** – वीरगति प्राप्त हुए। **बाग** – वल्गा, रास। **तहां** – वहाँ। **सांगि** – बर्छी। **त्रभंगिय** – तीन धार वाली सांग। **बाहिय** – चलाई। **तिरछी** – टेढ़ी। **जस** – जैसे। **नमाइ** – झुका कर, भंग कर। **मांडि रयौ** – करता रहा। **घट** – शरीर। **बरियांम** – श्रेष्ठ योद्धा। **गोरा** – गोला।

यक गोरा लग्यौ मुर तीर लगैं । दोउ भाट भयै रिन ठाठ अगैं ॥
उततैं यक मीर बळी निकस्यौ । तिंह ऊपरि 'सांवर' यों बिहस्यौ ॥
बहतांनि कमांनि को तीर दियौ । यह सांगि सैं मारि सुमार कियौ ॥
तवि 'सुंदर' को 'हदमाळ' तहां । जब जोर पर्यो तिहि वार जहां ॥
'नवलौ' 'सकतेस' को यौं निहस्यौ । मनु बीजळ सी खग लै बिहस्यौ ॥
'रुकमागंद' अंगद ज्यौं रन में । घनघाय करै अरि के घन में ॥
'अचळौ' अचळौ 'अनुरुध' अगैं । रनरोह लियो तन लोह लगैं ॥
सब सूरन में सु 'जोरावर' सैं । रन रूप कियै रुद्रावर सैं ॥
सब सूरन की उपमा बरनौं । रनखेत हि फाग बसंत मनौं ॥
अंगु लाल गुलालन तैं अरचै । मनु रंग पतंगह के चरचै ॥
सिरदार लौं सार अपार भये । रन भान जहां रथ खैंचि रये ॥
जब भाजि गनीम की फौज गई । जिंह ठौरन गौरन बाग लई ॥७२॥

छंद छप्पय

गौरन बाग उपारि, राज सिरमौर स गौरनि ।
सबै सूर सामंत, छकै घायन तिंह ठौरनि ॥
भट्ट सु भट्ट 'किसोर', राय नूप बाग स झल्लिय ।
जिंह सुबेर 'हरजस्स', आय आडौ हय घल्लिय ॥
रन जीति खेत ठढ्ढै रहे, 'जामबेग' नकसै गवय ।
कवि कहै 'महेस' येकादसी, महा भयंकर जुध भवय ॥७३॥

मुर – तीन । रिन – रण । निकस्यौ – निकला । बिहस्यौ – जोश में आया । बहतांनि – चलते हुए । सुमार – अच्छा प्रहार, उसके प्रहार । निहस्यौ – निकला । बीजळ सी – बिजली जैसी । घन – समूह । अचळौ – अचल । रनरोह – युद्ध में स्थिर हुआ । रुद्रावर – महादेव के । अरचै – अर्चा । पतंगह – लाल । चरचै – चर्चित । भान – सूर्य । खैंचि – रोक कर । गनीम – शत्रु । गौरन – गौड़ों ने । बाग लई – घोड़ों की लगामें पकड़ी ।

७२. घायन – घावों से । झल्लिय – पकड़ी, ली । आडौ – सहायतार्थ, विमुख । हय – घोड़ा । घल्लिय – डाला । नकसै – निकल । गवय – गया । भवय – हुआ ।

छंद दोहा

जुध महा भयक्रत भवय, कहि 'महेस' कविराव।
पहर येक अति ही प्रबळ, घन बग्गै रिन घाव ॥७४॥

छंद छप्पय

पहर येक पर पहर, गहर भर सार स बग्गै।
मार मार ऊचार, धार धाराह रन बग्गै॥
तिहिं सुबेर हरवल्ल, छात्र वारो गज घेरचौ।
डारि छत्र नेजा सम्हाय, मैमंत्त सु फेरचौ॥
उपारि हथ्थ भालो हन्यौ, भर टरि घोरैं के लग्यौ।
'रूप' दई 'रांम' फिरि सांगि की, बार येक लोहा बग्यौ ॥७५॥

छंद दोहा

बार येक लोहा बग्यौ, गज तैं परचौ स मीर।
छत्र उंचाय लीन्हौ जहां, सूर परमार सधीर ॥७६॥

छंद छप्पय

छत्र लयौ तहां बीर, मीर 'रांमह' रन मारचौ।
जान दयौ सुलितांन, मही सिर बौल उबारचौ॥
गौर राज रन जीति, जहां ठाढ़े जहां आयै।
आन पत्त बंधाय, भूप को कंध नवायै॥

---

७३. घन – घने। बग्गै – युद्ध हुआ, बजे, लगें। रिन – रण में।

७४. धार – शस्त्रधार। धाराह – सेना, तलवार की धार। छत्रवारो – जिस पर छत्र था वह। घेरचौ – घेरा। नेत – निशान। मैमंत्त – हाथी। फेरचौ – घुमाया, फेरा। हन्यो – मारा। भर – योद्धा। टरि – बच कर। घोरैं – घोड़े।

७५. उचांय – ऊपर उठा कर। परमार – परमार जाति के।

७६. बोल उबारचौ – वचन निबाहा, वचन-पालन किया। ठाढ़े – खड़े थे।

महाराज चलै सुलितान पै, सब उंचाय घायल लयै।
अदभूत जहां बिबव वन्यौ, साहि लाय हिय से लयै ॥७७॥

गवय साहि पै सूर, जाय कै छत्र सु दीन्हौ।
जिह सुवेर सुलितान, महा उच्छाह सु कीन्हौ ॥
फिरि राजा सें कह्यौ, फतै तुम सें हम पाई।
पतिसाही हम करैं, तुमैं दीनी पतिसाई ॥
सुलितान बहुत सनमांन करि, सैदांना बाजै सही।
जिहि ठौर साहि 'अनिरुद्ध' कौ, खासा असवारी दही ॥७८॥

छंद दोहा

खासा असवारी दई, जेह ठाढ़ै सब आंन।
दै घोरै सिर पाव दै, बहुत कियै सनमांन ॥७९॥

छंद छप्पय

अभंगनाथ 'जैसिंघ', जीति ऊभौ आखाड़ै।
बाबाड़ै अणबीह, सींह जिम मछर उपाड़ै ॥
सैदांना बज्जिय भंजिय, रिम साह स 'सूजा'।
कळां चंद जिम चढ़ी, पातिसाहे खग पूजा ॥
महि दीय फतै मामारखी, येमि कटक सह ऊलह्या।
पूरब कथा जुद्ध जै प्रसन, कवि 'महेस' बरनन कह्या ॥८०॥

॥ ईती श्री कवि महेसदास कृत बिन्हैरासो पूरब जूध संपूरन लिखतं महताप
सतपूत्र जौरावर सींघ कस्य पठनार्थ अगरजी सतपूत्र प्रतापजी कस्य
मती बैसाख सूदी २ सोमवार पूरो हुवो संवस[त] १८७६
राजै श्री सिवस्यंहजी इन्द्रगढ़ मद्ये लिखी
श्रीरांम रांम रांम ॥

लय – लगा।

७७. गवय – गौड़। उच्छाह – उत्साह, उत्सव। संदांना – विजय की प्रसन्नता के वाद्य। खासा – खास।

७८. घोरै – घोड़े।

७९. अभंगनाथ – वीर सेनायक। आखाड़ै – युद्ध-स्थल। बाबाड़ै – गजंना कीं। अणबीह – निडर। मछर – मात्सर्य धारण कर। रिम – शत्रु। कळां – कान्ति। चंद – चन्द्र। खग – तलवार। मामारखी – बधाई। कटक – सेना। ऊलह्या – उल्लसित हुए। कह्या – कहा, किया।

परिशिष्ट (१)

कवि की अन्य ऐतिहासिक कृतियां

क. रांणा राजसिंघजी में गुण राव महेसदास कृत

छंद छप्पय

अइ अइ अलेख भेख केते ज्याहां भ्रंमै ।
जळ सज्या सिवरूप कमळ किये नाभि स ब्रंमै ।।
ब्रह्म थियै विभ्रंम पेखि महणारंभ पांणी ।
तप तप हूंता तरण बोलि आकासह बांणी ।।
तप धरैं त्यार अदभूत में सहस कोटि लागा बरस ।
वैराट घाट पाह पलंब दीधी त्यार निधी दरस ।।१।।

अप्प दि अप्प उच्चारि आदि थट्टै नारायण ।
वेद भेद विस्तारि पकिर लोकेस परायण ।।
कीट भ्रंग जिम किया च्यार मुख वेद उचारा ।
विस्व मंडळ विस्तारी करण कीधं करतारा ।।
उण कीध मंडे दीसै यता धरा सीस बासिक धरैं ।
रवि करै दिवस रजनी'र चंद सकळ देव दांणव करै ।।२।।

देवां नै दांणवां द्वंद आदेर जुगादे ।
वरण कवण वरणवै वरण देवां अनुवादे ।।
असुर जिता ऊपनै तिता धरिया अवतारं ।
भार करै भव सीस तितांही बार उतारं ।।
सत जुग जुग त्रैता सुथिर धुर द्वापर लग यम धरै ।
कळि जुग करै चवथै क़ळा करि हिंदू मेछह करै ।।३।।

देवां नै दांणवां तेमि हिंदू तुरकाणां ।
चित्रगढ़ दिल्ली खाग सबळ रांणां सुरितांणां ।।

गहलोतां चगथवां सार बंधै समजत्ती ।
आप आप मग परै बाज जे करै बिरत्ती ।।
नरनाथ सहसना जिसै करणि रहस पूजं कहीं ।
जिण मुख सुरह मद संचरै जवन मुख्ख जोवै नहीं ।।४।।

कळंकी वत राइयां जियां केदार कळाकळ ।
पापी जियां पिराग जिता मदवा गंगाजळ ।।
हत्यारां हिंदुवां तेतां बाणारस ।
आस ऊपांदध पुणै मुणै पीरव समदारस ।।
सुरतांण गहण मोखण सदा आतपत्त सिर उल्लहै ।
राजसी विरुद हम्मीर का कवि महेस बरणन कहै ।।५।।

महि मंडळ मेवाड़ जिका दस-सहस सु गामं ।
बरण च्यार सुख बास धरंनि साद धामं ।।
विकट अनड़ बेछाड़ जूह जंगळ वन जेते ।
जळ पग पग ऊजळा तिहुं रति साख स तेते ।।
आलंब सुरह देवा द्विजां परम सरूप परस्सिय ।
राजसिंघ राण भूतेस रुख दोय यकलंग दरस्सिय ।।६।।

नगन नगन प्रति नगन तिनहि अंतर सळिता सर ।
पिखी करत किलोळ अरुन सित बिबधि वर ।।
चक्रवाक सारस विसाळ जळ काक स जोवत्त ।
आडि ढ़ंक बक अनत कुरज तट हिक यत उत्त ।।
उपकंठ तरन अति सघन वन नलन नलन जळ सीत बहु ।
कळिराय इंद्रपुर ते कलित कपोत कंठमनि मोर कहु ।।७।।

तट तटाक सैबाळ जाळ पंखी परि डोलत ।
जळ उज्जळ भासंत भूमि लहरी व्या बोलत ।।
कबहुं नीर तट परसि उदधि सबद उपजावत ।
कमळनाळि पतकपत जात बहो सो फिरि आवत ।।
समीर संग अनुसरत रौ निज येकत सोऊ निरत ।
जिस कौऊ सजन अति सजन कौं पहुचायर पीछौ फिरत ।।८।।

सत सळित नेत्र नकुलि विमळ जह वाल बिछंतं ।
कहुं दळ दळ कहुं पंक करी कहुं तीव्र छितं ॥
करत ग्राह कहुं केलि तिरत कच्छप त्वंबियं ।
कहुं वन नागिन नाग कलभ ले कै सकुटंबियं ॥
पय पियत अंब छंटित अनत कमळ पत्त पूगन करत ।
नहिं आवत स्वास समीर तैं मंद मंद गति अनुसरत ॥९॥

छंद बेलि भुजंगी

कहूं गज कपोल मंजै संवारें । कहुं लेत है बहौ करनीन लारें ॥
कहूं नीर उछारि सूंडे उछारे । मनौं सीस मोती क कढ़ै तिवारें ॥
कहूं रौंद ढाहंत छाया बिरोधैं । कहुं सूंघि हथनीन की गाज सोधैं ॥
कहूं ब्रंद के बीच ठाढ़े बिलासै । कहुं मूल राजीव काढ़ै हुळासै ॥
कहूं द्वार वाराह पीवैं विरोधैं । धरा दाढ़ तैं मोथि कै दंत खोंधैं ॥
भयं सिंघ कैं आवतं सब भज्जै । जहां येकलौ बैठि कै आप गज्जै ॥
कहूं बाघनी बाघ छौनान लीयै । पयं घाट विघाट तै आनि पीयै ॥
गिरं शृंग जां तै परैं नीर धारं । गतं ऊछटै ऊचरै यों अपारं ॥
जलं जरजरं सीकरं तैं बखानं । जहां श्रम तैं ऊपजै स्वाद जानं ॥
कहूं कुंड नीके भरै वारि पूरं । हरी दूर्वा लेत नीके हिलोरं ॥
कहूं भोलनी भील गुंजा समेटैं । दरी ग्रेह जांमें सिंघ लेटै ॥
कहूं नृत केकीन मंडे सुन्यारे । परं कंप तै पूंछ के छत्र धारे ॥
कहूं अगनी अग के संसोही । मनौं अग के मोह से रंभ मोही ॥
कहूं अगसाखा सों साखा हिलावे । द्रुम येक तैं कूदि येकं आवै ॥
लगै उद्र तैं डाभ डारी न लांबें । फलं तौरि चक्खैं केई डांबें ॥
कहूं सांभरं नीलगावं कहीजै । कहूं आरनै ढ़ंक तैं कंप भीजै ॥
कहूं गज्ज सा पांय आवंत गैंडा । वन धूजि प्रथी सूं धावंत वैंडा ।
कहू चीतळा मारि भखंत चीता । करी नख्ख तै खंड विहंड कीता ॥
कहूं जाति जामोद की जीति गावैं । उनै मेद तीके घिसै केस आवैं ॥
कहूं सिद्धं गिरं किन्नरां मद्धि सेवैं । दिढ़ं ध्यान लग्गैंत आनंद लेवैं ॥
कहूं संग नारीन स्नान क्रीड़ा । वसनं जहां मूकि मुखेति व्रीड़ा ॥
रिखं अंजुली देत सिध्यांत वंधै । जिनं वसनं पत्र भोजनं कंधै ॥
वनं [illegible] बुधि सारू ॥१०॥

छंद दोहा

बुधि सारू कवि बरणिया, पति मेवाड़ पहाड़ ।
रांण प्रतपै राजसिंह, अतुळित बल बेछाड़ ।।११।।

छंद छप्पय

दोय राह पतिसाह दोय दोय तखत दिपाणौं ।
छत्र दोय ससि सूर दोय क्रामत्ति कहाणौं ।।
खग दोय खळ खंड दंड द्रोयणां अडंडां ।
हिन्दू तुरक हजुरि पाण द्रोयणां प्रचंडां ।।
अदभूत बिहुं आखाड़ - सिध कथै जाय निरबळ कहूं ।
जाजुळी तेज जग ऊपरां दिल्ली उदियापुर दहूं ।।१२।।

उदियापुर यण अवनि जिसौ अमरापुर जांणौ ।
इंद्र रांण अवतार बिभौ ग्रह जेणि वखांणौ ।।
गज घंटा रव गाज बणै वैरक्ख विभत्तो ।
सहल काज नीसरै हद मद पूरि हसत्ती ।।
अबूजिया काच मचै यतौ भुज गयंद फण भींजिवै ।
मैनाक जिसा हलता मही दिग्गज मीढ़ न कीजिवै ।।१३।।

सद मद्दां सिंधुर तरां नाग ले त्रंबंका ।
धूर पूर धूंधळा निगड गड़ाहि निसंका ।।
मद जोखां माल्हणां बाग पेलणां वरम्मां ।
ओछाड़ी ढंकिया उभै बड़ दान भरम्मां ।।
राति दिन कंध चढ़िया रहै पीलवान त्यां ऊपरां ।
राकेस जेमि गोड़ो - रवद्द केइ विनोद छंदाकरां ।।१४।।

चरक्खी पेलै गड़दार मद जोखं मदगळ ।
बारहमण तोड़ा पचीस लंगरये सब्बळ ।।
जे रंगै रोळी जंगाळ सिंदूर नूर सिर ।
ऊजळ दंत उत्तंग सबै कज्जळ - गिर ।।
धरि पीलवान धुजदार धुज हाक डाक हूं हल्लिया ।
राजसी रांण खूमांण रा मुजरा कारण मल्लिया ।।१५।।

अळवळता उरड़ता अटकि रहंता आवंता ।
तरां धरां ढाहंता खून करता खूटंता ।।
छह रति ही छाकीया छठै मासे छूटंता ।
.... ।।

जांणिये सनिपाति जिसा लंगर मंदळ लग्गिया ।
राजसी रांण खूमांण रा मुजरा कारण उमग्गिया ।।१६।।

मद मोकळ मैंगळां असा दूकळ आंणीजै ।
पैंडा नह पाकड़ै जिकै वैंडा जांणीजै ।।
बांणदार चहुवळां चहुवळ गडह चरक्खी ।
जंजीरां जकड़िया करै तोहि नजरि कुरक्खी ।।

आपाहि करतां आवतां कौतूहळ पुरजन करत ।
मंदिरा चढ़ै पौ गौरख चढ़ि चंदमुखी जोवै चरित ।।१७।।

छंद दोहा

चंदमुखी जोवै चरित, सहलां चढ़ै दिवांण ।
सांकुळ छूटै सिंधुरा, पमंगा हुवै पिलांण ।।१८।।

छंद छप्पय

श्री दिवांण गजराज आप चवगांन लड़ावै ।
पुनि जोड़ी दस पांच जिकी कजि लड़िबा आवै ।।
जिण जोड़ी व्है हुकम जिकी आगळि आय जूटै ।
गयंद गयंद ऊपरां तमक करि करि यम तूटै ।।
अगड़ा ऊपरि आय हुवै चवदंत हमल्लां ।
तूटि रदां फाचरां फूटि कुंभाथळ टल्लां ।।

रीसि जुड़ै मुड़ै भग्गै नहीं यसड़ी राड़ि अघाइया ।
राजसी रांण जगतेस रै भाखर जांणि भिड़ाइया ।।१६।।

मेदपाट खळदाट राज राजेस दिवाणं ।
चवै दुरंग चीतौड़ वळै आहड़ बाखाणं ।।
नागद्रहा कुंभलमेर जकै कवळपुर कत्थै ।
उदियापुर विख्यात मुंण हिंदवांण समत्थै ।।

राजसी रांण राजे रिधु जगत जेमि प्रम ज्यां जपै ।
संताप नहीं ऊछह सहति तिण प्रताप तेजहि तपै ॥२०॥

असा तेज आगळे अगनि सूरिज हुं दीपै ।
जुध कवण जीपवै जियं रांम तिन जीपै ॥
बद विकार मैगळां पुणं ध्वजां फरकंता ।
तत्व ग्यान की च्यंत चवै परलोक स चंता ॥

बांधियै कावि सागर बदा कर अहियो सुकुमारिका ।
सांभळै में सब सता सदन सूना सदन संसारिका ॥२१॥

त्रासिक सावक घात तुरि तळ बाग फिरंता ।
असु - पात ऊपजै धोम जगि होम करंता ॥
वरण संकर वेखिजै मद्धि चितरांम मंडाणां ।
दंडक कनक धारि तखत सिर छत्र दिपाणां ॥

येखियै कनक रजनीस यम विण कळंक राजड़ सुवर ।
कर दोय जिका चकर किया कळा बिराजै सहसकर ॥२२॥

छंद दोहा

सहस - किरण राजड़ सुवर, हिंदूवे सुलितांण ।
जळ पोखण सोहि निरजरां, सोखण जळ असुरांण ॥२३॥

छंद विद्रुम

सोखिवा जळ असुरांण । राजसी प्रतपै रांण ॥
पुरहूत प्रभुताय । रिम क्रोध हूं जमराय ॥
बणियां भंडार कुमेर । व्रवतां सु नावै वेर ॥
प्रम चा कळा सु प्रमांण । दस सहस नाथ दिवांण ॥
बड़ तखत बखत बिळंद । निज द्रस्टि रौर निकंद ॥
बड़ मिंदर ऊंच बखांणि । पहाड़ा ऊंच प्रमांणि ॥
नवखणी द्रढ़ सु नींव । सुज चित्रसाळिय सींव ॥
पटिया स चंदण पाट । श्रीखंड केई कापाट ॥
थिर कनक रा जस थंभ । यळह होय देव अचंभ ॥
छजि फटिक रा छाजोळि । प्राकार दीरघ पौळि ॥

वगलां गौख बणाव । मुर बारियां महलाव ।।
पंच बारिया सुप्रकार । जड़िया स रतन जुहार ।।
जाळियां मुकता - जाळ । आरसी आळ उजाळ ।।
प्रभता चढ़न सूपांन । बदि ओर काहि बखांन ।।
सोवनी कळस सिंगार । नग हीर मद्धि निहार ।।
तणियां सु बारि उतांन । छविया अनोप बिछांन ।।
छजि सकळ बंधै छाति । भासंत तखते भांति ।।
जग - मग्ग सब जगीस । अमरावतो आसीस ।।
वळि राज - पंथ वरन्नि । नर सहर दूजै नन्नि ।।
हाटक पूरक हाट । बीथियां नूमळ बाट ।।
जखि कंद्रप गंध्रव जांणि । इंद रा पठठ आंणि ।।
कहुं जरै जेव जराय । कहुं हेमता यक-साय ।।
कसि कनक तार कसंत । रवि किरवि जिम विकसंत ।।
कहुं लेत मांनिक लाल । पुखिराज लेत प्रवाळ ।।
कहुं पन्ना लेत परख्खि । दखि दखि सुदख्खि ।।
मुकता लरी कहुं लेत । बहौ मोल द्रव्य सु देत ।।२४।।

छंद पद्धरी

कळंकियां राय केदार कथ्थ । पापियां राय परियाग पथ्थ ।।
सरापियां राय गंगा स्नांन । हत्यारां राय कासी निदांन ।।
सुरतांण गहण मोखण सकाव । कंध रांण बिरद सांगण गिणाव ।।
करणेस अमर जेहा करिग्ग । खळखंड रांण प्रताप खग्गि ।।
सुरति रांण गति उदैसींग । धजबंध रांण रायमल्ल धींग ।।
कुंभेण रांण मोकळ कंठीर । हंमीर जेणि हेळा हम्मीर ।।
खेतसी अजैसी लखमसींह । अवकंध रांण अरसी अबीह ।।
विद्रियां राय कळि कलिप व्रख्ख । आसवा रांय कामधेनि अख्ख ।।
दातार राय करतार देव । सेवियां राय सामंद सेव ।।
राजीव राय उतबंग सूर । कामियां राय रुदर करूर ।।
अहंकार राय जोधन अगंज । भुज भीम राय भारथ्थ भंज ।।
गांजीव राय भंजण गरोठ । दळ गजां राय सादूळ दीठ ।।
महि अगनि राय सिर धार मेह । छिलराय राय सागर अछेह ।।

बोलियां राय बांघ बोल । तोलियां राय पहाड़ां तोल ।।

भांगियां राय डूंगर भुजाळ। केवियां राय परतख्खि काळ ॥
पाळगां राय प्रसरांम पैज। मूगलां राय सिर डार मैज ॥
दिल्लीस राय उर दियण दाह। साहांन राय हिंदुवां साह ॥
सरणाय राय भड़ कोट-सार। मैमंतां राय मद्दां उतार ॥
अवतार रूप राजड़ स इंद। श्री आंण जेण सातों समंद ॥२५॥

छंद छप्पय

आज तणौ व्रतमांण दिल्ली सुरतांण दुवाहं।
जिणरा मुंह आगळै राह दहुंवै यकराहं ॥
कवण सकै दंभ काढ़ि कवण वेद मारिग चल्लै।
गऊ अध देखिये साक घातियां नथ्थलै ॥
जगपती तणौ सांगण जंही धर दिल्लीसर धख्खियां।
हिंदवांण धणी सुरतांण हूं रांण पांण यम रख्खियां ॥२६॥

प्रथियनाथ दीवांण हाथ मूंछां बळ तांणै।
तूठां बड करतार जांणि रूठां जमरांणै ॥
दिल्ली साह आथमैं पौहमि नवखंड पलट्टै।
रांण आज राजसीं घड़ां मेळियां अघट्टै ॥
सुतण जगपति उभत्ति सिरा चित्र खत्रवाट चग-चगो।
अकबराबाद ओचक रहै दिल्ली आज दग-दगो ॥२७॥

करै रांण आरंभ धरा खुरसांण धकांवण।
परवानां हल्लिया वंस खटतीस बुलांवण ॥
गिर अढ़ार अरबुद्द पुर डूंगर बांसापुर।
देवळिया सादड़ी सुणै कनवज्ज सलूंबर ॥
दिवांण खग तुरकां दहण झिल्ले व्रद सांगण झलै।
कुण अक्खर पंचमौ कहै चहुं दिस रा जोधा चलै ॥२८॥

आहाड़ां देवड़ां कमध झालां कछवाहां।
सौळंकिया सांखलां वळै तूंवर खग-बाहा ॥
भड़ गौड़ भाटियां जाम-कंवरां जाड़ेचां।
बाढेलां बैरड़ा खित्री हूलां खेड़ेचां ॥

हिंदवांण धणी खुरसांण हूं ऊखेळा ऊखेळिया।
दस-सहस धणी दस सहस भड़ दळ करि पाहड़ भेळिया।।२६।।

छंद नींसाणी

राय बखांण राजसीं हिंदवांणां सूरिज।
सुरतांण मोखण गहण चगतांण चूरिज।।
पोहो दिल्लो धर पालटण असमर भुज ऊछज।
उदियापुर दळ येकठा खिळि मिळिया खूरज।।
राजां रावां रावळां रावत रज।
बंस सीसोदै समद बड़ हठ मिळै हिलूरज।।३०।।

छंद दोहा

हठ मेळै रांणै हठी ग्रैंठी भौंह ग्रमांण।
ग्रवळापति ग्राळोचता सोच पड़ैं सुलितांण।।३१।।

छंद गाथा

ध्रम जयो ग्रध्रमं पापं कुवंती छयो जाते।
कथा निगमं धमं कामं उध्रते रांण राजेस्वरं।।३२।।

छंद छप्पय

दिज दान ग्रमांन निति ग्रगनति सुदीजै।
राजेसुरहि मुख देखि येमि प्रातहि उठीजै।।
हेमदांन रुक्म जे देखि पातर समपीजै।
पोह सुणि कथा पुरांण वळै वेदां वांचीजै।।
बहो सिखंडी डंडाळ रिस बद काफर नहिं जांणै किसा।
तुलि-तांण रांण राजड़ तपै देवरांण हंदी दिसा।।३३।।

मिळै बंस खटतीस मद्धि उदियापुर मेळा।
सभा मंडप दिवांण भीछ थहिया सह भेळा।।
ठोड़ ठोड़ ग्रापणी सोहड़ बैठिया सपाणां।
प्रहस पान कपूर वार दस बीच बटाणां।।

करि मौज गजां बाजां किता बसो नाथ सक्र वूठियो ।
सौहड़ां भड़ां सहतां सुथिर आरोगण कजि ऊठियो ।।३४।।

भोजन साल बिसाल भांति पाथरिया पत्ते ।
अदब अदब आपणै सौहड़ वैठिया स भत्ते ।।
कनक पाट दीवांण पाट हिंदवांण कळाधर ।
भोजन भांति भांति जिकै विंजन घरि इंधर ।।
खट वरण पौखि पसु पंखियां सत्त बाचा धरि सोखिजैं ।
स्नांन दांन निति ध्यांन सु जपति दिन येता पोखिजै ।।३५।।

वचनिका

दिल्ली का लिख्या आया । श्री दिवांण खोलि बंचाया ।।
साहिजिहां जहमति दवाया । दारासाहि सिर ऊंचाया ।।
खजांनै खोलि दीजै हैं । फौजों ते वे विदा कीजै हैं ।।
सात रोज सै पातसाह दरवार न आवै । कासीद निकसनै न पावै ।।
उमरावौं (नै) दिल चुराया । पातसाही जांणैं का बखत आया ।।
कुळि राह बंद कीनीं । साहौं (नै) हठनाळ दीनो ।।
चीतौड़ के नाह । पातिसाहों कै पातिसाह ।।
दरहाल चादरि दीजै । जोम अरचा की मारि लीजै ।।३६।।

छंद छप्पय

रिण रावत रघुनाथ रए कौकियो रढ़ाळौ ।
धर दिल्ली धोंपटां चित्त धरि येमि सचाळौ ।।
यम रघुपति ऊचरै करै प्रारंभ करारै ।
मालपुरे अजमेरि मुरड़ि संभरि धर मारै ।।
नर मरै नांम रहसी अमर यम चौंडाहर ऊचरै ।
पुनि जनम सुक्रत रजपूत रै कथ समथ्थ भारथ करै ।।३७।।

छंद नीसाणी

उदियापुर हूं उल्लहे करि क्रोध करारै ।
लाख दळा मिळिया लंगस धरहर घांसारै ।।

सिंधुर भाखर सारिखा पाखर पठियारै ।
ग्रहुं गांठे बहता ग्राकं धज नेजा धारै ।।
जांणें बादळ पावसे उतराध उभारै ।
पर राठा फेरण ऊपाट है-थाट हिंसारै ।।
रीछ हरीफ रंगियां उतमंग उघारै ।
घूघर चंमर घत्तियां गूमर भर गारै ।।
मैंज सिरां दिल्ली मरद फौजां फैलारै ।
दळ है गै-दळ पैदळां दळ रथ्थ दिपारै ।।
मेघाडंबर ग्रातपत्त सिर चंमर सुं धारै ।
कूरम दाढ़े पीठ कमठ फरण वासिग फारै ।।
धड़कै यम सारी धरा कसड़ी धर मारै ।
पड़ी धाक दिल्ली दसा ग्रैराक पुकारै ।।
रांणै प्रारंभ मंडिया ग्रारंभ यसारै ।।३८।।

छंद दोहा

ऊटोळा ग्रायाह, उदियापुर हूं उल्लहे ।
छति डूंगर छायाह, जग ऊपरि जगरांण उत ।।३९।।

छंद पारिजात

ऊटोळा मिळिया येह । ग्रामळा थाट ग्रछेह ।।
रीसे रवद रांणं राव । घूमाड़ै ग्रबधी घाव ।।
छत्र सीस भड़ां छत्र । पाड़ै दिल्ली ग्रातपत्र ।।
रासो हळवद्द रांण । घातणो द्रोयणां घांण ।।
रटै सबळेस राव । चंवाणौं मोटौ स चाव ।।
ग्रधराजियां बारखांण । दे ग्राधी गादी रांण ।।
रावत राधौ बराड़ि । मेवाड़ै हंदो किमाड़ि ।।
केहरी रावत्त काळ । सो सिरां पाड़ै सुंढ़ाळ ।।
सांमळ कमंध सूर । चौरंगे रवदां चूर ।।
दुरजण - सींह दक्खि । लोह बाहै घड़ां लक्खि ।।
राजड रावत्त रूप । भीछ्छ मेघा तणै भूप ।।
भणै राव इंद्रभांण । बीजै जगदे बखांण ।।

चंदसा मांहे अचल्ल । माहेचौ आखाड़मल्ल ।।
राघवदे झालौ राव । घणां खळां पाड़ै घाव ।।
भूपाळ जेहा भयंक । लोहै कीति तोड़ौ लंक ।।
गंगसा मारू करूर । पमाड़ां पमाड़ां पूर ।।
मौहोकमसिंघ मांण । दूणो तं राखै दिवांण ।।
मोहण जेहा मरद्द । हाथां जेणि हद हद्द ।।
मांनसिंघ मन्नमोट । केवियां उपाड़ै कोट ।।
सुणं राव माधौसींग । धाड़िधाड़ि खत्रीधींग ।।
जैतसी रावत्त जौर । घाहरै नीसांण घोर ।।
माहेस जेहौ महेस । दहूं करां वंदै देस ।।
भावसीं अभंग भड़ । ऊपाड़ै जेहौ अनड़ ।।
बिहारी उधारी बेढ़ । तकौ खळां काढ़ै तेढ़ ।।
सेरखां मल्लिक सेर । गज्जगाहां साहां गेर ।।
सूरताणसिंघ साथि । हवै दळां पाड़ै हाथि ।।
झालौ रिणछोड़ झाल । पाहड़ां घड़ां प्रजाळ ।।
भावसिंघ सा भुजाल । आहुंड़ां दळां उजाळ ।।
पीथळौ विराजै पूत । सांवतां मांझी सपूत ।।
नरां रौ समंद नीर । साहणां सामंद सीर ।।
महमां समंद मांण । रीस रौ सामंद रांण ।।
जौन-धरा जळाबोळ । हाथियां उठै हिलोळ ।।
रांण किनां जंमरांण । सोच दिल्ली सुरेतांण ।।४०।।

छंद छप्पय

जदिन रांण सज्जव प्रथम पयांण परट्ठै ।
घड़ असुरां घातबा लोह घण ले ले लट्ठै ।।
भाराक्रान्त अवनि झिलै नह भार भुयंगह ।
थावर सिर थरकिया मूंदि नया दसमंगह ।।
अवतार रांण इग्यारवें हेवै-पति सिर हंकिया ।
पुणि सात अनै इकवीस पुड़ च्यार चक्क भैंचक्किया ।।४१।।

छंद नींसाणी

ऊंटोळा हूं उल्लहे बंब त्रंब बजाया ।
चारौं दिसा चमंकियां वो रांणा आया ।।

मांडळ थहिया हळमळा दहलां दहलाया ।
बणहेड़ा फूल्या वळै केकड़ी कंपाया ।।
भहरै रांण भणाय भड़ थहरै थहराया ।
टळटळ टौडा टौडड़ी दळ सबळ दिखाया ।।
बाणवलख सरौंज बळ भेळसा भजाया ।
महि जोधपुर मेड़ता थरहर थहराया ।।
सांभरि अंबानैर का अळवळ अकुळाया ।
दहल चरक्खी दादरी सर अम्बर संकाया ।।
सींहनदी सुलतानपुर लाहौर लगाया ।
पुणि गजनी पैसोर सा काबळि कजळाया ।।
रांणै भंजै मालपुर धुवणण धिखाया ।
पटणहट पहट तौड़ि गढ़ खौदि गुमाया ।।
घोंपटि करि सारी धरा द्रहबट्ट लुटाया ।
सोना हुंदा सांपरति यळ मोर उड़ाया ।।
रांणै भंजै मालपुर धुवड़ांण धिखाया ।।४२।।

छंद छप्पय

जहां भाजि कमधज्ज जीव आसिरै सपत्तौ ।
अवरंग दारासाह येमि आराण निरत्तौ ।।
येथि रांण राजसीं धरा दिल्ली ढंढ़ोळी ।
बिरौळी वींनड़ी नड़ी बायैं कर तोली ।।
पण धरै बिरद अदभूत पण भग्गा भड़ तिय सरभरी ।
मारता सकळ नवखंड में यम अजमेरि स ऊबरी ।।४३।।

छंद भुजंगी

धरा डंड धारै धधूणें धिखाड़ै । पुरां सायरां पार रा भोग पाड़ै ।।
सत्रां उरां मावे नहीं त्रास सासं । वसैं डूंगरां किन्नरां तरां वासं ।।
तरां पत्त भोजन्न बेपत्त पायै । वळै वसनं बळकळं बणायै ।।
बळै अगनैणी तरुणी स बालो । पुळै रांण ग्रोद्राव हूंता क पाळी ।।
लखै वेडियां जावकं लाल लालं । तुटै हार छूटै नग्ग छालं ।।

जकै हींडती हिंडलोटै जुवत्तो । जकै मोहणी कांमणी कांमवंती ।।
जकै सेज हूं पांव देती न जंमी । जकै भाखरां झंगरां ही भरंमी ।।
जकै खोहळै बाहळै नाळ खाळै । जकै पंथी पंथां उभांणींज पाळै ।।
जकै राजवंती घणी रायजादी । सुणै सीस कूटै घणी साहिजादी ।।
लटां तौड़ि रोवै घणी मुग्गलांणी । पटक्कै सीस चूड़ी फोड़ै स पठांणी ।।
जहां मंदिरं सतं खंडं स भंडं । जहां नूपरं झंझरं बाल झुंडं ।।
जहां चंदग्रांननि झांकै उझक्कै । तिनं ग्रध्र विंव द्रगं भौंह कंपै ।।
जहां नृतं नादं संगीतं म्रदंगं । जहां बीन बाजंतं बाजंतं चंगं ।।
जहां तत्कारं थिकारं यकारं । तहां ग्रंग सुगंध सौं गंधसारं ।।
जहां ग्रग्गरं मेंदि जवादि जंगं । पुणै जक्खि काद्रुम घनसार पगं ।।
जहां ग्रारसी ग्राल ग्रारास ग्रासं । जहां चित्रसारी विसारी विलासं ।।
जहां बंगला गौख झाखी तिवारी । तिसं प्रीति बंदै जहां नाह नारी ।।
जहां पट्टनं हट्ट चौहट्ट पूरं । जहां सांमंतं रावतं जोध सूरं ।।
जहां मैंगळं खंभ बेलाल बालं । जहां ढोहि ढगूस माचंत ढालं ।।
जहां बाग ताटंक वापी स वारी । थट्टं पीन हट्टं वट्टं पन्निहारी ।।
जहां घूघवं घौर धूमंत घाई । जहां वायसं चीलं बैठै स ग्राई ।।
जहां प्रेत भूतं सकत्ती तमासै । जहां जुग्गनी दैत चौसठ्ठि रासै ।।
जहां भूत भैसासरं सबै भारी । जहां फ्यौंकरी बैन बोलै ग्रकारी ।।४४।।

छंद छप्पय

दुरंग खळा दईवांण पाड़ि ऊपाड़ि प्रजाळै ।
घाड़ि लगाड़ि उझाड़ि राड़ि खळ झाड़ि सराळै ।।
वसुह सिरि बाजाड़ि ताड़ि मेछांयण तट्टां ।
धूणैं खड़गि धपाड़ि चाड़ि खत्रवाट कवचट्टां ।।
जिहां साहि दारा सुणै सह सूजै सुणियो सही ।
ग्रवरंग मुरादहि ग्रोदकै दिल्ली धर रांणै दही ।।४५।।

दुंद पाड़ि दस देस पेस लीधी ग्रप्रमाणां ।
निडर राण नरेस संक पंचौं सुलिताणां ।।
कथा विमग्गी करै धरै धुव सांम घरत्ती ।
छत्रीपति खूमांण जोध जायै जगपत्ती ।।

पख उभै छीति खेड़ै प्रचंड गुमर न कहूं गिरमर गहे ।
जस जैति रांण राजड़ जरु उदियापुर दिस उल्लहे ।।४६।।

उदियापुर उल्लहे वळे दौड़िया बदाऊ ।
अभंग - रांण आविया साथि सामंत सहाऊ ।।
हट साहा अवछाड़ि जकै अंमर जर - तारां ।
बाळ तरुण व्रध बेस सहर साजे सिणगारां ।।
आणंद उछाह नर नारियां धरि सिर कळसां धावती ।
आवती येमि आनन उजळ गहमह मंगळ गावती ।।४७।।

उदियापुर परवेस रांण आयै राजिंदह ।
बोहौ रंग सेनि बणाय जकै आडंबर इंदह ।।
ध्रह अवाज धूहळौं पड़ै अनड़ां पड़सादं ।
सामंतां सामहां रांण भेटै रायजादं ।।
कर मेळि मौहर वंदै कळस अत्तन परजा भाइयां ।
अवतार रूप राजड़ अभंग यम उदियापुर आइया ।।४८।।

पहल दरस कियै परम पहल पूजे सिध पांये ।
कवळा राह करूर सूर हिंदवांण सवाये ।।
इंद्र जेमि आविया राज - महले रणवासे ।
बंदीजन बोलिया विप्र धुनि वेद विगासे ।।
हिंदवांण पति राखण सरहद कोटि जुगां लग सुख किये ।
ध्रुव मेर तितै अंमर धरा जितै रांण राजड़ जिये ।।४९।।

छंद छप्पय सांकळी

बंसावळि वरणीजै आय रघुवंस अवतारं ।
बिरदावळि बरणीजै सरणराय जगत सधारं ।।
धाम जेणि बरणीजे ईढ़ सुरिज्ज काइ इंदर ।
नाम जेणि बरणीजै विस्व लोकेस विसंभर ।।
आचार सार जे बरणीजै रसण गिरा थक्के रहें ।
राजसीं रांण परमांण रा कीं बखांण रूपग कहें ।।५०।।

धरम जेणि बरणीजै आप धरम ही अवतारं ।
करम जेणि बरणीजै सको तारण संसारं ।।
सत्त जेणि बरणीजै दत्त खट व्रण हि दीजै ।
दत्त जेणि बरणीजै वेद नित प्रत वंचीजै ।।
पति हिंदवांण मेवाड़पति गुर नरिंद छाया गहां ।
राजसीं रांण परमांण रा कीं बखांण रूपग कहां ।।५१।।

पतिसाहां आखीजै गहण मोखण पतिसावं ।
गहर धीरं आखीजै सात सामंद सुभावं ।।
बळ प्रमांण बरणीजै हणू भीषम भारथ्थह ।
दळ प्रमांण बरणीजै फिरै जेतै रविरथ्थह ।।
ऊपड़ै नजरि असमांण हूं लोयण जो परसन लहां ।
राजसीं रांण परमांण रा कीं बखांण रूपग कहां ।।५२।।

नर समंद बरणीजै समंद नर वैसा पिक्खै ।
दिल समंद बरणीजै दिल सामंद स दिख्खै ।।
व्रय समंद बरणीजै बरै सामंद बडाळौ ।
साहण समंद सरूप सामंद साहणौ सिंघाळौ ।।
चीतौड़ दिलो राखण चुरस गजगाहां साहां गहां ।
राजसीं रांण परमांण रा कीं बखांण रूपग कहां ।।५३।।

कीरति जेणि वरणीजै जगत कीरति तिण जंपै ।
सूरति जेणि बरणीजै काम सूरति आकंपै ।।
ग्यांन जेणि बरणीजै ग्यान गौरख हूं अग्गै ।
ध्यांन जेणि बरणीजै ध्यान ईसर हूं लग्गै ।।
जस भेद रांण नृप भोज जिम भेद दसां यम मह महां ।
राजसीं रांण परमांण रा कीं बखांण रूपग कहां ।।५४।।

गात जेणि बरणीजै निगम बैराग निमंधै ।
बंध जेणि बरणीजै बंध जिण सायर बंधै ।।
आवध जेणि बरणीजै तेणि सुद्रसन आवध ।
जुध जेणि बरणीजै जुड़ण राम जिम सावध ।।

चित क्रम क्रम जिम गौ चलौ जिम जिम जस अम्हां तहां ।
राजसी रांण परमांण रा कीं बखांण रूपग कहां ।।५५।।

छंद दोहा

षट षट पद की षट पदी, कीरति रूप कहांण ।
रायां पहौप ना रजै, राजेसुर महिरांण ।।५६।।

छंद सोरठा

सूर पूर कवि स कथि, कवि कथण आप पूरस कहै ।
साव्रति लौक समथ्थि, रांण रहाड़ै राजसीं ।।५७।।

छंद छप्पय

तवै कवित्त तैईस निपट मुर सरस निसांणी ।
वळै येक वचनिका मद्धि येक गाथ मंडाणी ।।
छंद तीस छत्राळ वळै दोहा मुर वंचं ।
चवि रूपग चौतीस सुकवि माहेस संचं ।।
धटि बढ़ि पाठ कोइ मति पढ़ौ कथा रांण वरणण कवण ।
आदम किसूं गुण ऊचरै भरियौ गुण तीनौं भवण ।।५८।।

(ख) महेसदास कृत डिंगल गीत

गीत अरजनजी गौड़ को महेसदास कृत

कदै गाल बावै नहीं साख तेरह कमंध, भिड़ण रिणमाळ वस चौज भूलो ।
अमर नग थाळ अजमाळ रै अडाणै, दूसरा माल सो माल दूलो ।।१।।

हाथ सिरदार मसळै मिळै रायहर, समर हथियार रो रहे सहियो ।

गौड़ रै मार बिच सटैं गहणो गळै, राव हीरा तणो हार हरियो ।।२।।

कोट नव समंद पाण थाका करै, खेड़ खांटायतां मांण खूटा ।
छात तोप रा वानैत रा छावड़ा, छात कणपात नौ हाथ छूटा ॥३॥
मांजियौ पाधरै घाय सैंदा भड़ा, चढ़ै चौ लाय हूं बांधि चेळौ ।
पाळ यळ माळ ली मास मोटौ पिसण, भुज गळै बांधियां बसै भेळौ ॥४॥

गीत अरजनजी को दूजो महेसदास कृत

करि तैं खळ खेति उजैणि कळहणि, मरतै मरण स मार बियो ।
तत चहुंवै जावा दीधा तदि, तत पंचमौ स तार बियौ ॥१॥
बाणव यकलख विढ़तां बीठळ रै, अंत रौ अंत कीधौ अदभूत ।
भूत वेद मिळिवा दीधा भ्रम, भूत भ्रम कियौ सांची भूत ॥२॥
प्रथी वाय अप तेज सून पुणि, छाड़ै जीवण मरण अभ छोति ।
जळ जावा दीधौ नह अरजण, जळ आतमा समांणो जोति ॥३॥

गीत अरजनजी को तीजौ महेसदास कृत

पालटतां पातिसाहि रा पूतां, बिजड़ां झाट निराट बजो ।
आफळि असपति अजण आवियौ, आफळि असपति गयौ अजो ॥१॥
लोहाळां गनेम करि लाल च, चुगळा खगां चढावै चाक ।
हुवां हूक आवियौ हींकै, हींसळ गयौ पाधरै हांक ॥२॥
राजा गौड़ रूक रस रोहे, ढोहे ढाहे लाल ढळ ।
अजमळ चालि आवियौ अवरंग, अवरंग गयौ अजैमल ॥३॥
दूजौ पाळ उरड़ियो द्रोमझि, थाट बिडार उदार थयौ ।
बाढ़ि बढ़ायै घाय तण बीठळ, गौड़ राय यम चाय गयौ ॥४॥

गीत दयाळदास झाला को महेसदास कृत

अछरां करि मछर अघाफर आई, धारां बहतां अंग धुकि ।
भूमियां पहल करंती झाला, झाला ऊपरि रही झुकि ॥१॥
दळथंभ दळां डोहतौ दीपै, अछरां धावै तेण अरथ ।
झाला काजि बरवा झळकै, रळकै ऊपरि घणां रथ ॥२॥

नरहर तणौ वाजतां निजड़ां, कौळाहळ बहौ अछर करै।
रावत अंग देखि बहौ रीझै, बढ़ियां पहली मुनै वरै ॥३॥

हळवद धणी चढ़ै रथ हालै, तेवड़ि करि चौवड़ि रिणताळ।
घूमर अछर दळां सिर घुळती, रुळती उर ऊपरि वरमाळ ॥४॥

गीत राजा रामसिंघ कछवाहा में महेसदास राव कृत

खसै खोंद आयौ वड़ा खान राजां खसै, दिसै कावलि असी दुलभ दाखी।
मांन लीधी धरा मार मांटी पणै, रांम जाती धरा धारि राखी ॥१॥

लोदपति गया यम हसन अवदाल लगि, बहसि कसि गया उमराव बीजा।
दूसिरै मांन महमांन जिम दाखियौ, राखियौ जितै खुरसांण राजा ॥२॥

बंगाला पीसि पाछा दिली आविया, हफत-हजारी यम मांण हरिया।
धरा कजि येमि जैसिंघ धू-धरै, धर-चकर येमि अवतार धरिया ॥३॥

बांणपति फरसपति हळोपति फाबिया, किया त्रेवाट देवां प्रथी कांम।
संखधर गदाधर फरसधर सारसौ, राम चोथै कळू खाग धर रांम ॥४॥

(ग) छप्पय राजा जयसिंघ का महेसदास राव कृत

भभीषण पूछियो बदौ निसचर कोई वातां।
समंद केमि हळमळै गिरां हळमळ तर पातां॥
बींटि बींटि ऊजड़ै खड़ै अरि बैठि जहाजां।
रोळ पड़ि राकसां गाढ़ लंका दरवाजां॥
महरांण तणौ दिल्ली मदति उत्तर धर हूं आइयो।
वोळिसी येमि बीजापुरां यम जैसाहि रिसाइयो ॥१॥

ये दळ औरंगसाह बिन्है धर वेध प्रगट्टो।
दळ खड़ै जैसाह हूह करि जूह उलट्टो॥
पूना धर आदि दहकि हदबोळ दुरंगां।
सेवा राजा सजि सांकिया चकचूर करंगां॥
चून करि गढ़ां चौरासियां खोंद खूंदाड़ै खुरां।
दस देस तणा पैसा लिये पैसे न दे बीजापुरां ॥२॥

महाराजा जैसाहि राह वेधी हिंदवांणै ।
सकळ धरा खग साझि श्राय लागो दखिणांणै ॥
पड़ै गढ़ां पालटां जड़ा ऊपड़ै खयोळा ।
रवताळा चै धकै (चढ़ै) माता सूंडाळा ॥
मांनहर श्राज मह मंडळी जोड़ै कुण समजत्तियां ।
श्रसमांन पुलिन्दर तोड़तां गा गुमांन गढ़ पत्तियां ॥३॥

गयंद समरे श्रजाद पूर भरियौ पखराळां ।
भड़ा तरंग मन बधै चले गहि श्रावध चाळां ॥
प्रथम बौळि तरहठि श्रनड़ बौळंतां उमंग्गे ।
चढ़तां चढ़तां चढ़ै जाय लागिया निहंग्गे ॥
राजगढ़ येक टापु रहे भरि फौजां दखिण भरे ।
नर समंद झिलै जैसिंघ दे सेवै सेवा श्रादरे ॥४॥

येथि गड़ियड़ै स तोप वेथि धड़हड़ै बुरज्जां ।
श्रनड़ चढ़ै येथि सूर वेथि उड़ै सिल रज्जां ॥
वज्रमार गोळा बहंत बाणां श्रप्रमाणां ।
वळै श्रागि बरसवै ढहै कोटां कमठांणां ॥
मांनहर श्राज मह मंडळी जोड़ै कुण समजत्तियां ।
श्रसमांन पुलिन्दर तोड़तां गा गुमांन गढ़पत्तियां ॥५॥

वोढ़रण सूर श्रंगज जंग मच्चय जाजत्ती ।
कुसळसिंघ करि कुंत धूणि श्ररि लियण धरत्ती ॥
सुज मुथरो समसेर जेर करणौ चहुं चक्कां ।
जुध के दरि जमदाढ़ मरद यम दिये मारक्कां ॥
कमांण रूप री जोड़ कहि बाणाजी कूरम बिया ।
जुड़ि लिया दुरंग जैसिंघदे जिता जोध श्रांका किया ॥६॥

घ—राव अमरसिंघ जी को साको महेसदास राव कृत

छंद दोहा

धर मुरधर रासो धणी, सुतण राव अमरेस ।
गुण तिण रौ यम गाइये, मन सुध राव महेस ।।१।।

छंद छप्पय

आदि मंगळ ऊचार मंगळ सोही करण यता महि ।
रिधि मंगळ गणराज काबि मंगळ गुणियण कहि ।।
मुणै सुणै ज्यां मंगळ मंगळ लेखक कै लखन्तां ।
महाराजा रायसिंघ दरस मंगळ देखन्तां ।।
कवि महेस मंगळ यतां बड़ कवियां पठ बूझिये ।
गुण रचण आदि समझै गुणी पहली मंगळ पूजिये ।।२।।

आदि राज कनवज्ज वरणि सुज नाट बडाळौ ।
बलि राजा चँ बडो सूरिज कमधज्ज गढ़ाळौ ।।
मंडोवर परिहार भंजि जोधपुर मंडे ।
सुत रणमल सामन्त पाटि राव जोघ प्रचंडे ।।
जोध राव बाघ सूजा जंहो दळे खळां दळ मारिदे ।
तिण पाटि नाट भंजण तवै दीपाणो राव मालदे ।।३।।

छंद दोहा

महि तपै राव मालदे, बिया नखत्र बट बाट ।
सुर नर सेवै पाट सह, असुरां पती सु आंट ।।४।।

छंद भुजंगी

भड़े राव गौरी दसो देस भंजी । गौरी राव हूं माल मारू अगंजी ।।
मिळै नैण बैण न येहो अमेळौ । खेड़ेचौ करै धरा ढिली ऊखेळौ ।।
मनें साही मल्ले भरै नाथि भावै । नहीं माल्दे राव कांधो नवावै ।।
चमर चारु छत्तर सिरै चमर चालै । हिंदू साख तेहरे तियां साथि हालै ।।
यसो मालदे राव वाजे भारवं । हुई जेंफि सामंद सातोहि हदं ।।

चमू मालदे राव हुंदी स चालै । घोड़ां पाखरां चाल दूणां स घालै ।।
पुणै मालदे पाटि ऊदील पूरं । सऊ पाटि ऊदील राजंत सूरं ।।
राजा सूर रै पाटि गजसिंघ राजै । बसु ऊपरां जेंणि रा त्रंब बाजै ।।
भड़े तेणि गंगा तटे भीम भंजे । वळै साहिजिहांन श्रयांन वंजे ।।
फौजां साहगाजी फणे सेस फाटै । सुणे रूपगां द्वीजयं गजां साटै ।।
गाजिसाहि रै पाटि श्रमरेस गाया । मनौ ऊर्धं तें आजि ही इंद्र आया ।।५।।

छंद छप्पय

श्रसो राव श्रमरेस पाटि राजा गजपत्ती ।
भड़ वंका बोळगै भुजां पूजै श्रसपत्ती ।।
नगर तखत नागौर बखत मोटे बिरदाळौ ।
नव कोटां नरइंद साख तेरहां सिंघाळौ ।।
श्रवतार रूप मानव इसै करण फतै सोही करैं ।
पाताळ श्रनैं श्राकास पुड़ भारथ जिम ऊंडळ भरै ।।६।।

छंद पारिजात

राजंते श्रमर राव । सामुदे इंदे सुभाव ।।
मेवासां गासां मरोड़ । गैमरां करंतां गौड़ ।।
केकाणां जवाणां काळ । सालुळै घड़ां स बाळ ।।
पाखरां सलोहां पूर । सामंतां रावतां सूर ।।
पैदळां खंधारां पंथ । गैज फेरै खलां गंथ ।।
बेछाड़ां कंधां ऊबाड़ । पहट्टां कीजै पहाड़ ।।
बीकाणै जोधाणै बाद । येही चलै श्राई याद ।।
दहकै जंगळ देस । रूड़ै राव श्रंमरेस ।।
चंपै कुण धरा चम्म । खोंटाळां गजाळां खम्भ ।।
नागपुरै नवो निध्ध । सांपजै श्रस्ट सिध्ध ।।
नौबत्यां बाजै निहाव । बिभा रा केहौ बणाव ।।
खेले गजां खंभियांण । छहु रति छक्कियांण ।।
तुरंगां कुरंगां चाव । नगां ऊरगां निहाव ।।
बसै क्षित्री येहा बास । पांचाहूं भड़ां पचास ।।७।।

छंद नींसाणी

मारू राव राजै अमर बाजै सदनद्दां ।
वूझै मांण खळां तणा धूजै सरहद्दां ।।
गढ़ रख्खण दीयण गढ़ां गढ़ कीयण गरद्दां ।
जिण घरि रासा जनमिया आसा कबियंदां ।।
अरक ऊजासा येहवा त्रासा तिमरंदां ।
अनि पोहो दीसै येहुवा जेहा वोड़ि रवद्दां ।।८।।

छंद छप्पय

अठ ऊभै सै एक सक सवत सुखुंधं ।
बरस निबं व्रतमांन बरणि कहि कबि सुबुंधं ।।
ईख मास पख ऊजळ प्रात तथि दसै ।
बार बुध नखित्र बसु सुभ जोग स घटै ।।
तइतळह नांम तिण करण कही प्रथम लगन तुळ पूगियै ।
अवतरे अमर घरि रायसी येक घड़ो दिन ऊगिये ।।९।।

छंद दोहा

येक घड़ी दिन ऊगिये, पुळ चालीस र च्यार ।
सरद रति उजळ ससि, बिचरण गह सु विचार ।।१०।।

छंद छप्पय

जनम रति सू रवि.........चिरी बरतारै ।
अलप खेद होय अंग सरण सेवै जग सारै ।।
दुतिय थांन सनिदेव धन अन धान धरत्ती ।
अथरा क्रम ऊग पोहा वोपम छत्रपत्ती ।।
चतुरथ थांन वणियौ चंदर नाना भोग विलास नित ।
रिप रोग सोग भंजण रमैं थांन छठें सोहि थांन थित ।।११।।

नवै सथांन निदान सूरांचारिज सुभाणौं ।
विविध सु वुधि बिलास करम सुभ घरम कहाणौं ।।
गुर मेछां मंगळां रमैं ग्यारमें रमंतां ।
आव भोग अति होय सत्र वणियौ सव कैतां ।।

राजाधिराज रायसिंघ घरि कही जनमपत्री कथं ।
अमरेस पिता फळ ऊंच कहिय वरणौ सोही पंडतं ॥१२॥

अमरसिंघ रै रायसिंघ येहा अवतरिया ।
इंद चंद समंद देव सूरिज सरभरिया ॥
आठ कुळी कहिया अनड़ नव मानसरइया ।
दह दिगपाळ ओतार दस धर ग्यारम धरिया ॥
ग्यारा रुद्रह सांगिणौ बारह वर बरिया ।
तवै येम चौदह रतन यतरा परवरिया ॥
सोळह सूर सांमत सत करि येकत करिया ॥१३॥

छंद दोहा

करि येकत करियाह, बप येकै धरिया सवै ।
सूरिज संभरियाह, रायासिंघ अमरेस रै ॥१४॥

छंद छप्पय

येमि राव अमरेस धणी राजै जोधाणै ।
अड़ां-भीड़ अवनाड़ कंध अवकंध कहांणै ॥
असपति अस आगरै सुर असुरां तिण सेवै ।
राव जठैं जमराव कहर लग्गा तिण कहवै ॥
पाटपति आय तण ऊपरां मंडे खळ मारै मरै ।
लंकाळ जहीं लोहाइयो काळ हूंत चाळौ करै ॥१५॥

चाळ काळ हूं रचै अमर राव असौ अज्जकौ ।
धरा बेध सैंघणी रूप राठौड़ रज्जकौ ॥
पडि सासै पतिसाह अमर दरगह जदि आवै ।
असो भड़ आखतौ जकौ विपरीत जगावै ॥
अवदक्क रहै असपति ऊवर दीह राति येहौ उरै ।
जिम जिम लगै छाती जहर कहर रूप केई करै ॥१६॥

साहिजिहां पतिसाह साहिदारा साहिजादै ।
भरथ खंड भोगवै मांण दोयण थिया मांदै ॥

तिण असपति तेड़िया मांडि मोटी महमांनी ।
मिळिया सह उमराव जिता दिल्ली रजधानी ।।
घरहरे मेघ सावण घटा छित अंमर सह छाइयो ।
असपती तणै मुजरै अमर ऊससतौ तहं आइयो ।।१७।।

छंद भुजंगी

दिल्ली साहिजिहांन बैठौ दुबाहं । ऊंह हाथ जोड़े रहे दोय राहं ।।
राजां रावळ रांन रावत रूपं । भड़ां हिन्दुवां बंस पैंतीस भूपं ।।
मीरां मीरजां खांन मांझी नबाबां । अड़ाजूड़ जेहा खुरासाण आवा ।।
तबल्ले मुगल्ले वधे दोय तेगं । सहु सेख जादे तबी खंत तेगं ।।
जके पाहड़ां जड़ां हूंता ऊपाड़ैं । खड़ा राह बेहू भड़ां रै अखाड़ैं ।।
खड़ा खांन कलील कलीच खांनं । असा खांन केईक ऊभा अमानं ।।१८।।

छंद छप्पय

साहिजिहा पतिसाह यळा ऊपरै अमांनै ।
आंबखास हूं ऊठि खेद किये गुसळखानै ।।
दोय बगसी दीवांन चाढ़ि अरजां मन चावां ।
सतरिखांन सामठा अनैं बहत्तरि उमरावां ।।
अमर री फौज जंगळ यळा खगवळ भोगत खाइयो ।
बीकगढ़ हूंत तिण रौ बळैं यतरो वाको आइयो ।।१६।।

छंद नींसाणी

वाका बीकानेर रा येहा ऊघड़िया ।
यळ जंगळ ऊपरि अमर खुंदा दळ खड़िया ।।
आप आप धर ऊपरां अजरायळ अड़िया ।
रण रावत अमरेस रा ज्यां ऊडा जड़िया ।।
धार मार मांचै धरा बाजे बड़ बड़िया ।
लुत्थि बुत्थि लगि लाल रंग लाखां दळ लड़िया ।।
के रहिया भड़ कांमरा खिसि कायर खड़िया ।
सो जीता राव अमरसिंघ बीका मुड़िया ।।२०।।

छंद नीसाणी

साहिजिहा वाका सुणे आखे असपत्ती ।
मुणै राव अमरेस सों बळि येही बत्ती ।।
मेरो पतिसाही महो जोर न जाजत्ती ।
हेकण घाटै सींह गाय पाणी पीवत्ती ।।
मेरे बिण दीधै मुलक रखै कुण रत्ती ।
खांन सलाबत्ति सों कहै भैभीत ये वत्ती ।।
धखि पांण मूछो धरै त्रिण चसमौं तत्ती ।।२१।।

छंद छप्पय

खरी सलावति खांन अमर हूंता यम आखै ।
दिलीसुर आगळै दम्भ कुण उत्तर दाखै ।।
तम येती जाजत्ती मुलक हजरति के मंडो ।
चोरों को चाहते दौस साधी दे डंडो ।।
कुण आजि अठै येती करै मन ही सुद चाहे मुवा ।
दरगाह बीजि ऊतर करें हिंदू बेअकली हुवा ।।२२।।

बेअकली बौलता कमध ऊभलै कटारी ।
पवै सरीखी पड़ी कड़कि दामणी अकारी ।।
ऊवर बीचि आहणी कहर मोरां दिस कढ्ढी ।
चळूवळ अणी चमंकि बहण ज्वाळा जिम वढ्ढी ।।
बोलिया जके खांनड़ बयण पूरा कहण न पाइया ।
नर जांणि कबूतर बाज जिम लोटण आंणि लूटाइया ।।२३।।

लोटण जिमि लुट्टियौ धरा खांनड़ जम धक्का ।
तड़फड़ात मुख तेणि बीबकर करै ऊबक्का ।।
अमर करां आगरै भांहि लग्गी कुदरत्ती ।
अणियाळी चूवंती आप देखै असपत्ती ।।
गढ पती नरपती दुड़ि गया गजपती हूंदा अगै ।
वैरियां ऊवरि धरि बांकड़ो लाय जेमि माथै लगै ।।२४।।

लाय जेमि लागणी निपट नागणी निरखै ।
काळ हंदी कामणी दुती दामणी दखै ।।
येही अधियामणी महा जामणी स जाणैं ।
राकसणी डायणी काळ डांसणी ढाडांणैं ।।

ऊफणी दरगाह बीच अणी अणियाळी हंदी अणी ।
तिण पांण भौंह मूंछां तणीं अेम खांन उर आहणी ।।२५।।

छंद झमाळि

खानों गो सळवळे असपति उर औदक्क ।
अमर काळ मुख आवतां चावा भड़ां चमक्क ।।
चावा भड़ां चमक्क बड़ाळा ऊमरां ।
तुड़ि हिन्दू तुरकांण खळभळ खूमरां ।।
थाहे कौंण अथाह जाहर कुण जारवै ।
मूढ़ै चढ़े अमरेस मुणै कुण मारवै ।।२६।।

राजां रावां रावळां निय भड़ खांन नवाब ।
येतां हंदो रूहरो असपति जोवै आंब ।।
असपति जोवैं आंब कहौ कीजै कसी ।
खाय गङूथळ खांन क ऊभौ अमरसी ।।
तवि लोयण मुख रत्त तड़ी लग रत्तड़ी ।
रोवै महल हरम विसूरै बीबड़ी ।।२७।।

हिन्दू राव कहर कीये हैवै तणी हजूर ।
मिळै न कोई मारका रहे दूर ही दूर ।।
रहे दूर ही दूर घणां मिळ घेरियौ ।
ढिब ढिब गुसां ढ़ाळ पोहौ मन फेरियौ ।।
बरचे राह बराह सींह रुधौ सहो ।
बेळां तेणि बिमांण अपछर ऊलहो ।।२८।।

छंद दोहा

अपछर चमर ऊलही बंदे जहां बरमाळ ।
आजे के बरसो अवसि बर राव अमर विसाल ।।२९।।

छंद छप्पय

राम हुकम विण बंदर पवै कुण सायर पट्टै ।
परम हुकम बिण पाथ थटां किम भारथ थट्टै ।।
विण हुकम अब ईस दिरद खिम खिम खीगाड़ै ।
लिछमण बिण लोहियौ अनड़ किम हणु ऊपाड़ै ।।
मांडियां राव मंडौवरौ घैरचौ घण थाटां घणै ।
असपती हुकम बिन नर अवर अमर राव कुण आहणै ।।३०।।

पाड़ि सलावतखांन सकळ दरगह अवगाहे ।
जांणि विरुथौ बाघ करत गल्लार अघाहे ।।
सतरिखान सटाय अनै बहत्तरि उमरावं ।
नूर न जिण मुख रहे कहण मुख वैण न आवं ।।
साहिजिहां दारासकौ अजण दिसा सारति कीयै ।
खासा नराज मसलंद सै तौकि करां कर हूं दोयै ।।३१।।

अजण निराजी झलै आय मुख राव बकारे ।
अगनि कुंड में किधौं स्वाहा करि के घिव डारे ।।
अमर अनम्मी कंध दिसा कपाट चलायै ।
जुड़िया दहुं देखिया जदे बारी सिर नाये ।।
उण समैं पहुंचि बोठळहरे बाहि तेग कंधै जड़ी ।
घड़ हुंत बिछूटे सिर जहां जांणि खिलायत की दड़ी ।।३२।।

छंद दोहा

घड़ हूं सीस बिछूटतां, राव गही जमदड्ड ।
तोकि चलाई अजण पै, कान बरावरि कड्ड ।।३३।।

छंद छप्पय

राव पड़ै रण भीम प्राण सुरपुर प्रयाणै ।
अछर चालि आकर्ष बाद मांचियो बिमांणै ।।
माळ माळ बरमाळ बरण बरमाळ परक्खै ।
अकंइ सों पूर सूरां हुई ··· कंवारि हरक्खै ।।
छुड़ाय चाळ बरमाळ छडि खाथीय पड़ि खड़ खड़ै ।
बिमांणं अैसे राव बैठियौ अछर बिमांणां आभड़ै ।।३४।।

।। इति राव अमरसिंघजी को साको राव महेसदास कृत ।।

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

घ वंसावळी गौड़ा की महेसदासजी राव कृत

छंद साटिक मंगलाचरण

स्वेतां ग्रंमर वैयसिता मुक्तासिरा मंगता ।
स्वेतां ग्रंमर सोभ लंबज चिहुर सोभ सजिता ।
रुक्मासिता रामनो श्वेता हंस ग्ररुढ़िता ।
... ... जगजिता श्वेता गुना सारिनी ।
वीना पुस्तक धारिता सरस्वती विद्या वरं कारिनी ॥१॥

छंद मोतीदाम

... ... मति गहीरं । सुकव्या देयण बुद्धि सरीरं ॥
वणै ... ... ळ । सुंरंगिय चख्ख सुलोळ सुढाळ ॥
... ... मंत्ति । पैबे चंद कळा यक दंत्ति ॥
कपोळ ... गळ··· सुमंत । ग्रणंकि गुंजारव ग्रंगि भ्रमंत ॥
सुंडाडंड ... गात सिंदूर । निरख्खिय भाग प्रभातिय नूर ॥
घमंकिय घूघर नेवर घोर । सुरन्नर नाग सबै लभ सौर ॥
लंबोदर उद्र सुभद्र सुभाव । विद्या वळ पूर नमौ गणराव ॥
चत्रभुज ग्रायुध धारिय च्यारि । वळै चत्रवेद सुकंठ उचारि ॥
वणै तरसूळ फरस्स सतख्खि । दळां ग्रसुरां बळ भंजण दख्खि ॥
मुणै मधु मोदक पाण सुमंढ़ि । महा प्रिय मूषक बाहण मंढ़ि ॥
दुवै रिद्धि सिद्धि सु ग्रागळि दौड़ि । बलं सोइ श्रय मंजार बिहौडि ॥
गुणी - जण ग्रारंभ ग्रग्र गनाय । ... ... धनं गणपत्ति मनाय ॥
बरनं गौड़ सु राज वड़ाळ । ... ... मौतिय माळ ॥२॥

छंद किलकिला

सुप्रसन्न होय ... । ... होय धि बिधि ॥
... सोहियं वाहन हंस । वरदाय ग ... ... ॥
... हर धरिय बिसाळ । ... मोहनिय मुकता-माळ ॥
हि ... ... । ... वेद वाक्य उच्चार ॥
... चंदन चर्चित गात । सोभा ग्राय ... ॥

चंद कौटिक अ···न चार । घुनि नाद पुस्तक धार ।।
ऊ··लं ··· अमर अंग । गति ज्यूं प्रकास सुगंग ।।
ब्रह्मसुता ··· वरदाय । मौ उक्ति दीजै माय ।।
बुधि तुच्छि वर सबिसेखि । भद्र काळिय बोहो भेखि ।।
प्रथम सु गिरिजा रूप । अरधंग सिंभु अनूप ।।
ब्रह्मचारिणीय वखांणि । जळ थळे जोगणि जांणि ।।
चंद्रघंटिका चंडी सुकाय । महामंगळा महामाय ।।
कौमारिका कात्यायनी । सौभानिजा जानि रूपायनी ।।
आसापूरा अंबिकाय । श्रीनग्ग कौटि सुरां राय ।।
काळी कपाळीय कथ्थ । चामुंड मुंड समथ्थ ।।
दुर्गा अन्नपूर्णा दक्खि । आरज्या गवरी अक्खि ।।
चूड़ामणि ब्रह्मांणि । रटि ··· भैरवी रुद्रांणि ।।
स्रब मंगळा म ··· सि । भूतेस्वरी ··· विंधवासि ।।
ज्वाळामुखी जमघंटि । विद्याभंडार रसवंटि ।।
महालक्ष्मी महामारि । सेवगां रूपकां सुधारि ।।
पदमावती अजू यं ··· । ··· ··· णि ।।
हेमावती हिंगुळांजि । चवसठ्ठि देवी ··· ।।
··· ··· धात्र । उमिया कळा सुव रात्र ।।
महाविद्या ··· । ··· ··· किया ।।
दाक्षाणियं अडांणि । मंगळा मंगळ ··· ।।
··· ··· माय । कमळा स कोमळ काय ।।
सिवरि सु ··· । ··· ··· ··· ।।
··· ··· दे रिद्धि । संकरी श्रवा सुबुद्धि ।।
जिण असुर भंजै जुद्ध । इन्द्राणी स ··· ।।
··· ··· यस रूप । रचिया स नाना रूप ।।
मधुकैट दांनव मारि । इळ सणौ ··· ।।
··· ··· र उतारि । ··· ··· ··· ।।
अदनं करी मह खास । ··· या स्रबु आकास ।।
घूमरं ला ··· न धारि । चक्र सूळ गदा प्रहारि ।।
बे चण्ड मुण्ड बिभाड़ि । परचंड जगन पछाड़ि ।।
बळि रक्तबीज बिहंडि । मंडि त्रहूं लोक सुमंडि ।।
सुंभ निसुंभ सहेति । बढियाय दांणव खेति ।।

बीरां हियं नर संग । मन सुद्ध करि कवि मंग ।।
सरस्वती बुद्धि समंद । अजमाल बरणूं इंद ।।
गुण बिन्हैरासो गौड़ । महि छत्रियां सिर मौड़ ।।
गुण मद्धि होय न भंग । तन उठै अधिक तरंग ।।
रचि यह कवळा छंद । मुणि गौड़राज ... ।।३।।

छंद नींसाणी

... ... गुण कीधा गुण कथण काज ।
गोब्यंद ... ... ।।
... ... ण कहाया ।
श्रोणित पांणी संग हुवा घड़ जे ... ।।
... ... पांणी महि बळ हड्ड बणाया ।
मास नवै अभ ... ... ।।
जठर अगनि जळिया नहीं पळिया प्रह... ।
... ... णि दुनिया दरसाया ।।
चखि मुख नासा श्रवण ... ... या ।
हस्त चरण भिज्या कवळ विधि विधि बणाया ।।
पहुता वळिया पाळिया पूरा पौहोताया ।
बाळ अवसता ... गति या तरुणाया आया ।।
विषया-रस लागा रहा लालच लोभाया ।
पर निंदा अहमेव प्रिय प्रिय जेमि उपाया ।।
रसणा रस चाखे इम्रत खटक्रम बणाया ।
वासा रसना सों वळै आसा उळझाया ।।
चित चंचळ चंचळ चखे रस रूप सुचाया ।
श्रवणे राग सिंगार रस बस जेणि बसाया ।।
करां सुक्रत कीधा नहीं कुक्रत कुंमाया ।
क्रम तीरथ क्रमिया नहीं अणक्रमे आया ।।
रांम नांम रटिया नहीं यम जनम गुंमाया ।
सुणिया कथा पुराण नहीं नहीं वेद बंचाया ।
ह ... या नहीं नहीं दरसण पाया ।।
परम संत नहीं पोखिया नहीं ... ।
कपट कुटिळ कामी कळी लपट मन लाया ।।

वे दिन आदिन आंणिया मुख औंध झुलाया ।
... ... नीसांणिया रटि रटि रघुराया ॥
गुण कीधा गुण कथ्थ ... गोव्यंद न गाया ।
गुणि अनि मानव गाइया यों नृगुण कहाया ॥४॥

छंद कवित्त

जयौ मच्छ जगदीस जेणि संखासुर भंजिय ।
जयौ कच्छ जगदीस जेणि गोमि पीठिस गंजीय ॥
जयौ न सिंध ... ... दाढ़ा बिच रक्खिय ।
जै जै श्री नरसिंघ भभकि हिरणा कुस भंजिय ॥
बामन जयौ बळिबंधणह फरस जयौ धारी फरस ।
राम ब्रह्म अण रढ़णथी जै नाथ जै जं दरस ॥५॥

बालमीक रामाणि कथै रामायण कथं ।
बणै व्यास विलास भेद गायौ भारथं ॥
सुखदेव जैदेव क्रस्ण आचारिज सारं ।
माघ बाणि कवि दंडि चंद बरदाय उचारं ॥
कळस रूप काळीदास कहि भेद सुरां नर भेखिये ।
द्रस्टान्त उकति बरन न कव्यां रंचक वाकी राखिये ॥६॥

रंचक नह रखियौ काव्य की करै सुकव्विय ।
सोही उकति द्रस्टांत सोही सोही जुकति सुसाखिय ॥
... द प्रबंध सोही बरननं बिसाल ... ।
... ... सोही सिणगार रस गाया ॥
कहियै कवित्त 'माहेस' कवि पातघ्नन ... पावजै ।
... ... ग कवियां यता गाया आया सोही गावजै ॥७॥

छंद दोहा

गांव खोहरी ... न कर जे तोरथ राज ।
मेडलगढ़ अजमेर की को क्रम ... ॥८॥

राजगढ़ बानैत सुव राज करत अजमाल ।
... ... गोडांपति सत्रनवै उर साल ॥९ ॥

कवि महेस हर ... ... थ समोय ।
नाम बिन्है रासो रच्यौ बिन्है करैं सब कोय ।।१०।।

पुस्करराज रौ बरनन

छंद पद्धरी

पौहकरा - रन्य पौहकर क ... । ... दुख परिहार कित्त ।।
मुर बींस अठ्ठ तीरथ्थ सुमद्धि । पर गुरुता पाल कहि प्रसिद्धि ।।
वाराह आदि तिहि ठौर बंचि । सावर्त्री ब्रह्मा गायत्री संचि ।।
... पट्टेसुर जंह रहत आप । नरदेव करत सब सेव जाप ।।
अरधं सु नंदेसुर तत्थ थांन । बळि अजै गंधेसुर ते बखांन ।।
अरधं सु चंतेसुर वैजनाथ । तिह रूप किरातह छळे पाथ ।।
पंच जह सरस्वती है प्रगट्ट । तीरथ्थराज सेवै सु तट्ट ।।
जे सस्ट ... भांन । मद्धि स्वधा सरस्व ... ।।
... ... निष्ट कुंड कनिका । ... ... ।।
... बहुरि प्राची विसाल । ... ... ।।
... पुरहूत भवानी तहां पगि । ... ... ।।
चवसट्ठि रहै नित प्रति चेर । इह रूप दियै गढ़ अजयमेर ।।
... ... विसविसवानि । जेते सहाय सब गौर ... ।।
... ... गहीर । सोइ यता अंस धारै सरीर ।।११।।

छंद दोहा

... ... दुतिय गवरि पति जांनि ।
तृतीय ब्रह्म ... ... खांनि ।।१२।।

छंद मोतीदाम

।। उत्पत्ति ।।

... ... आदि दियं । कुळि ब्रह्म तणै बिस ... ।।
... ... वास बली । विसवास धरै रिख धो ... ।।
... ... जयं । जिण पाट भारगव जेणिज ... ।।
... ... । प्रजाळण रोख खळा प्रजाळ ।।
... ... । बि ईद अबै सिरताज ।।१३।।

छंद छप्पय

जिन … … विन थंभ सु रक्खिय ।
जिन किय ससि अरु … … खिय ॥
जिन किय चक्रवति भूप गाम ग … ।
… … र सुमेर धरनि सिर से… ॥
… … … … … गढ़ चौरासी येम ।
रनसूर … … … … … … ॥१४॥

छंद गाथा

गवड़ आ … … … ।
… … … … गोपति राजं ॥१५॥

बंसावळी छंद कमला

… … … … । रा … … … ॥
गोपती पाट सैढ़ल गरीठ । … … … … ॥
सेढुव पाटि समसेरसींह । राखणौ वाट खत्रवाट रीह ॥
… … आभौ अरक्क । हद जेणि समंदां दंड हक्क ॥
अ … … … । लेखियै मौज फौजां अलेखि ॥
सिंधुराज … … । … … वर वणै चौज ॥
अनुराज पाटि बछराज … । … … … … ॥
नागौर द्रुंग भंजै निराट । बाहे निराट … … ॥
… … द्यो बिल्हण भुजाळ । सुज हनुराज रा … … ॥
… … … अबीह । सूंडाळ दळां पखराळ सींह ॥
… … … …ध । रजवट राखण कुळवाट रीध ॥
चंद … … … । प्रथमादि संकल सेवैज पांव ॥
भोज रै थी … … । … अघराज के अोखल्लमल्ल ॥
सुलताण अलाव … … । हिंदवांण साह हट्टै हठाल ॥
… … … स भाटियांध । कहियो स … … ॥
… … … … । … … … प्पाल ॥
रिढ़राज गौड़रा कंध रहसि जोध । वर बीर धीर राखण स बोध ॥
… … … … । बैरियां हूंत चालणौ बक्र ॥

थाणां जिण टेक हुंद थप्प । ··· ··· ··· प ।।
बाढ़ियौ मुदफरांखां बराड़ि । धिखाड़ि द्रू ··· ··· ।।
··· ··· ··· डो निरिंद । मारियौ गौड़ आखै मयंद ।।
अखैराज ··· ··· ··· । प्रमांण रा ··· ··· ।।
ब्रन जिण छहू ब्रन्न । ··· ··· ··· ··· ।।
सरवाड़ राम राजा स जोध । ··· ··· ··· ध ।।
खींचीज राम सिर बंधि खाग । वाहळा भड़ा ऊपाड़ बाग ।।
··· ··· राजा बड़ाळ । आसीस जेणि दीजै उजाळ ।।
राम री ··· ··· ··· । भुज बणै धणी अजमेर भार ।।
कुंभक्रन ··· ··· ··· । ··· ··· उदार हत्थि ।।
सुरजन चाढ़ि जैसिंघ सू ··· । बीजळां झाट ··· ··· ।।
··· ··· ·· ·· । ··· ··· ··· ओध ।।
जुड़ि पड़ै खेत अजमेर जोध । ··· ··· ··· ··· ।।
··· ···रे राज वैकुंट आळ । जिण सिद्ध ··· ··· ।।
···· ··· ··· ··· । ··· ··· ···राण पीस ।।
जोगराज पाटि गोपाल जांण । ··· ··· ··· भांण ।।१६।।

छंद दोहा

भांण महि भळहळै ··· ···· ···· ।
अजमेर घर मोटां का ··· ··· ··· ।।१७।।

छंद ......

ध्रमराज गौड़ सुध्रम । परतक्खि दूजौ प्रंम ।।
··· गोड़ सु राव । ··· ··· ।।
पंच उभै अठ्ठ पुरांण । बौहो ··· तसु दांन ।।
घरि उभै हरि हर ध्यान । ··· ··· ।।
सुर गुरु ··· वट लाज । ··· ··· ।।
बाल ध्रुव धवळ अबीह । ··· ··· ।।
समहरे प ··· घर दाहि । गढ़ राखिगौ खगगाहि ।।
रहिसगढ़ गु ··· । ··· ···ण ओर ।।
समहरे बाहण सेल । खळ जड़ा मूळ उखेळ ।।

... ... रौड़ । आवियौ महुं अरौड़ ।।
धुळियौ सरब गोपाळ । ... ... ।।
... घर घिखाड़ि । पाहड़ां भोग स पाड़ि ।।
... ... । सांभळै सुल्तांणि ।।१८।।

छंद छप्पय

सांभळ ... ... णै ।
सूरवीर सामंत छळां जगण ... ... ।।
... ...पख रहै कलो ।
भड़ां वोट रखण ... ह लायक दलो ।।
अम उजीरां ऊमरां... ... ...।
... ... अहृदी विदा करै ।।१६।।

छंद नींसाणी

... ... मांण बौहौ सनमांनि ।
बुला ... ... ।।
पंडित पूछांण सुभ बासर सुभ बचन पौहो कीध पयांणं ।
खळभळिया भड़ खरहंड़ां चतुरंग चलाणं ।।
सजै सुभटां सांवतां बज्जै नीसाणं ।
धर धूजै गिर धूजिया थरहरि अरियाणं ।।
मि... पाहि खूरन सो... जालिम जमरांणं ।
गज बाजां भुज अरधिया... ... ... ।।
राजां रावां रावळां बंदि सिरै बखाणं ।
खांन निवाबां मीरजां सिरजा ति सोभाणं ।।
महाराजा गोपाळमल दरगाह दिवाणं ।।२०।।

छंद कुंडळिया

मिळिया साहि गोपाळमल गुमर अगंजी गौड़ ।
साहि घणौ संमांन किय रवदां पति अरौड़ ।।
रवदां पति अरौड़ पिता हूंता पालट्टै ।
खून सपाय मनख री थाट ऊपाट स थट्टै ।।

थाट खुरम्म येहा थट्टै जोरावर जमराळ।
गढ़ बिभाड़ आगळि गवड़ गज भूरज गोपाळ ॥२१॥

छंद सारसी

धुर मुसाह दीर वाह रूप राह रज्जिये।
सामंत सूर पाणि पूर साव ... र सज्जिये ॥
टोपं सनाह बाह बाह हैंरख वैरख्खिये।
रांग सरांग ओबरक्क दस्सतान दक्खिये ॥
जिरह जूसांण ... पठांण मूगलांण मंडिये।
खानां निबाब मीरजावं ताव धावं तंडिये ॥
खूरम खड़िया खड़िया आभि अड़िया जोध जड़िया बज्जरं।
घर दक्खिण धाया उरड़ि आया नि ... मद्रि ... क निज्जरं।
खस ... वं गरक्क गावं करै खुरम कौपिया।
धर काजं सजै सा ... ध ध्रम स वौपिया ॥
जिण पिता सीस रचैं रीस है थट्ट ... ।
जोधा जवाणं जम्मराणं चातुरंग चल्लिये ॥
औघटां घाटं ... ह बाटा थाट थाटां नेसये।
धर पड़ै धाह गढ़ां गाह स हल्लये पड़ै दंस देसये ॥
पटण हट्टं व्है पहट्टं तुट्टि गिर तर ता ... कं।
गढ़ पड़ै घेरा फौज फेरा जूझ मो भिर झाटकं ॥
रिणथंभ आया दहराया ताव झल्लै तेगयं।
गढ़ सर गिढोही दूठ दोही बीजळं लै बेगयं ॥२२॥

छंद छप्पय

थंभ द्रुग रिणथंभ सहे खूरंम सपाणं।
... सीस दौड़िया मेळ थाणां आपाणं ॥
दिगराज गोपाळ देय खूरंम सपाणं।
बीजळी बांकीवेग पाण दख्खै पतिसाई ॥
ता हूंत तपै अजमेर पति सूरां गुरां मांझी सनढ़।
महि साह आजि खूरंम भंज क छंडै थंभ गढ़ ॥२३॥

बीजळ वांकीवेग बिन्है यक बात विचारी।
मौहवति खांन निबाब धरा भुव डंड उधारी ।।
करि विचार गजभार दीय जंह गिरंद रहाई ।
अम्हा दोह येतळा खग सट्टै धर खाई ।।
बांकीवेग बीजळ सहित उतरि लड़िबा आवियौ ।
नेत बंध बि ... दळ बिहसवा झूझ खेत झांडांखियौ ।।२४।।

छंद त्रोटक

रिण गोपाळ अनै बांकीबेग रचै । बड़बात जुगां लगि चारि बचै ।।
बाजि धाव अघाव स नद्द वजे । ... ...।।
हुवि सूर बिन्है दळ हूचक्कियं । थिर सद्दन भांण तणा थक्कियं ।।
चलि बांण कबांण बंदूक चलै । मचि मार भले सरदार मलै ।।
झिलि सार हूं सार बहै झटका । बकसी करि जांणि ... बटका ।।
उड़ि सोर अराब सिताव उडै । बिंब भांण स धुंमर मांहि बुडै ।।
घमकै उर कुंत सु मौर घुरं । किलकार हकार वही कररं ।।
लट - चट्ट पड़ै भड़ लाल रंगं । अध टूक - तिटूक ... अंगं ।।
बहि पाणि बीजळ बेग बिन्है । तै बात रही मझि लोक तिन्है ।।
अछरां रथ तथ्थर ऊतरिया । रुण्डमाळ भूतेसर लै रुरिया ।।
वर बीर बिन्है भिड़तै बिरियां । करि नारद तंडव तै करिया ।।
पतरा भरि चौसठि श्रौन पियै । जुध आमिख भक्खि सु पक्खि जियै ।।
भरि उद्र यताव असीस भणी । ध्रुव तेमि तपै अजमेरि धणी ।।२५।।

छंद छप्पय

पोहो जीतौ गोपाळ बेग बीजळ खग बाढ़े ।
थाणो दै रिणथंभ चाव अजमेरि स चाढ़े ।।
मुड़ै साह खूरम जुड़ै पित हूंत न जीता ।
मिळि आयै गोपाळ बढ़ि दोय काळ बदीता ।।
असुरेस भुजां गज अरघिया लै भुज भुजां लगाइया ।
धजरां नरां हैमरां कसै धरा दिखण दिस धाइया ।।२६।।

छंद बेग्रक्षरी

खड़िया साह खूरंम सपाणं । नीधसिया कसिया नोसाणं ॥
उस्सिये जोधा उमरावं । दळां हले करि बद्दल दावं ॥
फरहर धजां गजां फव्वाणी । घूरा सर तर तुट्टिया पांणी ॥
पाळ जिसा लंकाळ स पाणां । मोहौ ग्रागळि खड़िया जमराणां ॥
कंवर बसी लीधा सह कांनै । गवड़ गजां भंजण ग्रवगानै ॥
मांडै सह खूरंम सपाणां । थूरै दीधा ग्रपणां थाणां ॥
बळै साह मसलत्ति बिचारी । प्रीत लगी नन दिल्ली प्यारी ॥
बळि कोकै गोपाळ बडाळै । चित करि धरि वेद स चाळै ॥
दिल्ली पड़ै ग्राप रै दावै । येक पहल ग्रासेर स ग्रावै ॥
लागि पहल ग्रासेर स लीजै । दाखै पाळ बिदा मौ कीजै ॥
पाळ बिदा कीधौ पौंतारे । बळैं बिखी फुरमांण बिचारे ॥
गढ़ आसेर जकोज गढ़ोई । जांहांगीरज मेळे संजोई ॥
तिण ऊपरि गोपाळ स तोकै । कंवर विहारी रा भट कोकै ॥
पहल खड़े ग्रासेर सपत्ता । भारै दुरंग लियण भैभीता ॥
दुरंग सेर माळी दरवाजै । सुभटां थाट मेळियां साजै ॥
साहां गिर फुरमांण जितावै । ऊतरि गढ़पति लेवा ग्रावै ॥
गढ़ हूंता ग्राविया गढोई । सथ सांमंत ग्रानि सथ सौई ॥
लै फुरमांण ब ··· खां बंचे । उठि गोपाळ दखिण कर खंचे ॥
बज वामें वड़हथ्थ विलग्गो । भरम हवै भुरजाळ स भग्गौ ॥
रामसिंघ मिरजां समांही । ग्रनि ग्रोदरिया देखि ग्रगाही ॥
गौड़ भड़ां स पंच स गाढ़ा । ठीक लियण गढ़ ग्रंदरि ठाढ़ा ॥
कहै खांन ग्रब कौल स कीजै । दांने धरम दवार स दीजै ॥
पौहो ग्रापण गढ़ सीस पधारे । ग्रसुर तणा सब ही ऊतारे ॥
हवै तुरक गयौ गढ़ हूंता । पौहो भरिया गौड़ां रजपूतां ॥
फतै साह खूरंम फबांणी । लखि वाका दिल्ली दिसलांणी ॥
यतै साहि खूरंम स ग्राया । बळै गौड़ मनसूभ बधाया ॥
पंच हजारी दीन्हा पट्टा । घाये तैं भंजण गज घट्टा ॥
यौं करि तूं ग्रासेर स आंणें । तूं ऐसा दिल्ली बैठाणै ॥
धरै ग्रबै नांम मन धातां । विढ़ि राखो गढ़ ऊपर बातां ॥
मै यक ठौड़ रहण नहिं पाऊं । जिस खातरि पूरब दिस जाऊं ॥
पूरब गया खुरम बळ पूरा । सांजै ग्रासेर गौड़भड़ सूरा ॥२७॥

छंद दोहा

गौड़ सजे आसेर गढ़, खड़िया साह खुरंम।
बेगम सौपर तिन बळी, हैमर जीत हरंम ।।२८।।

छंद कवित्त

मळिया गढ़ गोपाळमल ससि सूर समांणी।
गढ़ जीपण रण गौड़ गढ़ रखण भुज पाणी ।।
भरि सज्जित भंडार भुरज सह कोट सम्हारे।
बाण नाळि बंदूक सोर सीसा भरि सारे ।।
सांमंत सूर जोधा समूह कळह गौड़ भड़ कौपियो।
अजमेरि धणी पाणी-अणी यम आसेर स औपियो ।।२९।।

छंद बेअक्षरी

यसड़ौ गढ़ आसेर अगंजै। सूरां गुर गोपाळ स सज्जै ।।
गढ़ माळा कमर गढ़ गाढ़ं। चडियो गौड़ घणां ब्रदचाढ़ं ।।
भरिया संजति अनन्त भंडारां। सौज जिती ऊठै.सिरदारां ।।
बेढण रौ आरंभ वडाळौ। गढ़ गाढ़ां गाढौ गोपाळौ ।।
कोटां भुरज मोरचा कीधा। दिसवादिसा थंभा भड़ दीधा ।।
मतिवाळा टोळा मंडाऐ। बळांबळी कांगुरा बणाऐ ।।
द्रिढ़ गाढ़ा जोधा दरवाजां। रूड़ा जिके वंस रावराजां ।।
दस हजार खंधार बंदूकां। चूकै नहीं हदफ अणचूकां ।।
ऊंदाबासी भरियस ऐही। काळ तणा त्रिय जांणै तेही ।।
बड़कसाव बळै बिपरीता। भखै सोर मण नौ सैभीत ।।
छूटै असणि हजार स छूटै। केवी दळां दोयंळा कूटै ।।
नाळ्यां ··· गौळा नी छाड़ै। पांच सात कोसां लगि पाड़ै ।।
जस नाळी मुर सहस स जाणो। कहियौ गढ़ रौ किसो बखाणो ।।
बाजै सांझ संवारे बाजा। रुधणौ गढ़ ऊपरि यों राजा ।।
येबदाब जाहांगीर स आये। फबिया करि सागर फूटाये ।।
घोड़ां भड़ां गजां रथ घेरौ। ऊपरि गढ़ वणियौ अजमेरौ ।।
झिलता लाल श्वेत पित झंडा। मांझी केई मारिग स मंडा ।।
झंडा गौड़ गढ़ दौळा झूळै। फबिया कारि बसंत स फूळै ।।

कहियो यम परवेज कहाणौं । रीसाणां मांझी रीसाणौं ।।
मिळिया जाव लछी बे मेळा । अण मिळिया थारी ऊखेळा ।।
पातिसाहि यण भांति पयंपै । अम्हां जो आसेर स अप्पै ।।
मोटां गाढ़ां आप अजमेरौ । साहै तो ... समसेरौ ।।
येमि बसीठ गढ़ां सिर आये । बळै गढ़ राजा बौलाये ।।
कहियौ क्या परवेज स कीजै । राजा अण बोलै न रहीजै ।।
कहिया मेळण तणी कहांणैं । परसति अगनि घिरत्त सींचाणैं ।।
गौड़ सूतौ पंचायण जग्गै । पणगी अगनि सोर जिण पग्गै ।।
यम झळहळ ऊठौ अजमेरौ । फिरया जुग मांडू नंह फेरौ ।।
अरक जाय पछिम दिस ऊगै । पैज कही प्रसरांम न पूगै ।।
गंग उत्तर दिस बहै गहीरं । सत चूकै सतवंत सरीरं ।।
भुयंग भार झेलै न भुवाळो । गाढ़ असुर अप्पै गोपाळौ ।।३०।।

छंद दोहा

गढ़ राजा दढ़ियौ गवड़, पढ़ियौ वेद पुरांण ।
मेळण कथ मांनै नहीं, ऊखेळण असुरांण ।।३१।।

छंद रेड़की

गढ़ां झालियो आसेर, गौड़ साहे समसेर सेर ,
मूछां वळ घातै मानधाता मंन मेर।
भाहरां नगारां भेर, झींकाड़ै गुंडाळा झेर ,
आज रै उजाळै बाप धरा आजमेर ।।
साहरा फेरै बसीठ कौपाणें ज्यूं काळकीठ ,
रूकां झाड़ां उझाड़ां वाहेव जुध रीठ
तौराळा पूरै नतीठ, दौंळां साह दळां दीठ ,
पूरौ पमाड़ां पाळ, जीप मांड़ी पीठ पीठ ।।
ढाहणौ सूरां गढ़ाळ, मौरछा मांडै मंडाण, बोछटै कोहौकबांण ।
घेरौ चहुंबळां घांण, अराबां मांचै अफांण, साजै सुरतांण ।।
हळाहळ मांचै हक्क, तोपां हंदी मंडै तक्क, बाहळां फाटैन बक्क ।
कन्नडां अंके कजक्क, धरा गैण धूजी धक्क, आतसां हंदो उझक्क ।।
चकत्थां चढावै चाक, दसों देस डाक, नाळयां रा गोळा निहाव ।
घड़ां धल्ले घणां घाव, परट्टै पनंगां पांव, चौज में सजाव ।।
द्रोयणी ऊपरां दाव, बिहूं अर्गनि राव, कहीजै जो कहाक रोस गौड़ राव ।।३२।।

छंद पद्धरी

गौपाळ थियौ मन मेर गौड़ । आहणे दुरग खड़ियौ अरोड़ ।।
कहि लघु वेस दिग्घ काम कीध । लौह रै ताव धर दखिण लीध ।।
गूंगौर सालि वेहै गंजाड़ि । आवध जुध दीधौ उभाड़ि ।।
धर मांडू कीध बळि धूक धाक । च्यारिसै ग्राम दस चाढ़ि चाक ।।
ठांभियौ न करि गोपाळ ठौड़ । गांजियौ साहि गौपाळ गौड़ ।।
तजि गयौ गांम गाडरी तांम । धर मेलि खड़ै ऊजैणि धांम ।।
परचंड चंड खीची पजाड़ि । पाहड़ां धरा सहि भोग पाड़ि ।।
रीझाड़ि झाड़ि रतनेस राव । पूजियो भुज तैंहि प्रभाव ।।
सांभळी बात यह पातिसाह । रजपूत एक बिच बिन्है राह ।।
तिण काज कीध फुरमाण त्यार । पतिसाहि लिखं करि वहौत प्यार ।।
कौकियो ज ... ... कंठीर । बळिवंत महा बीराधि - वीर ।।
सांभळै पाळ ... ... । आरंभ कीध पायेण आव ।।
पौहौ देखि महुरथ की पयांण । ... य मिळै सो सुलितांण ।।
सुळितांण घणौ सनमांन कीध । ... ... पटौ मोटौ सु दीध ।।
बाढ़े रण वीजळ अनै बेग । ... ... पूजे स तेग ।।
आसेर रखे अजमेर वौप । केइ करै गया सुलितांण ।।
चलि थटा सीस खूरंम अचल्ल । मौहरै दळां गोपाळ मल्ल ।।
होय हळाहळ यम बीर हक्क । केइ करै बीर काळा किलक्क ।।
डहडहे वाजि डोरू डममं । परचंड भडां उतबंग पमं ।।
हूरां रथ उतरै अरस हूंत । ऋंगळां दूसारां बहैं कूंत ।।
गड़ गड़ै नाळि गोळा गरज्जि । धड़ धड़ां ऊपरां कमंध धज्जि ।।
हींसल्ल हमल्लां गरद होय । गति गुड़ै सीस चवगांन गोय ।।
जुध पाळ अनै बळिरांम जोध । करकिया जाणि संभू किरोध ।।
ढाहतां गजां ढालां ढिचल्ल । ढिग ढौह थिया सुरितांण ढ़ल्ल ।।
पाळ नै कंवर बळिरांम पूर । सूरामणि सूरातन स सूर ।।
पड़ि खेत बिहुं पुर अमर प्रंम । ध्रम स्याम अनै खत्रवाट ध्रंम ।।
रवि मंडळ बेधै करै राज । पूठै बिकम ... ... णि पाज ।।
दिल्ली सथंभ अनम्या स दाट । मन मेर गौड़ लौ ... ... ।।
... खग वाहै जेणि पाठांण खाग । आबधां तणौं मुखि झड़ै आग ।।
... ... बक हुवै जम्म । बरजागि गौड़ भाहर बिकम्म ।।
धड़ ... ... धाक । बजि पार संमदां गुल्ल बाक ।।
हरि समर क ... ... ह । धर पड़ै येमि खंधार धाह ।।

घर धूणि बलख … । … चाढ़ि अनै गढ़ेस नोर ।।
बे पाकड़ि किया सुलितांण बंदि । चाढ़ै तिण नामें सूर चंद ।।
बछराज वंस नर सहस मांण । अजमेर धणी री फिरै आंण ।।
राजै बिकम राजाधि - राज । अनि नृपति नहीं समतुल्ल आज ।।
अजमेरि भोग ग्वालेरि मौड़ । आमेर धणी सों रै अरौड़ ।।
जोधपुर धणी सों नही जुहार । मेवाड़ धणी सों सार - मार ।।
खत्रवट्ट वट्ट रजवट्ट पूर । साहि के … न हर वळ सूर ।।
जिन कियौ गढ़ गढ़न सिंघार । अजमेर मेर ओपम अपार ।।
राजगढ़ राज सुभ रचै गांम । आवास वास धौळहर धांम ।।
गिरकोट गिरन सिर धज भुरज्ज । सिंघपौळि दीरग्घ सीमाळ सज्ज ।।
है मंदिर ध्वजां फाबंति हद्द । नीसांण सथ्थ छालरिय नद्द ।।
बे सुनत रौर वपु तें बिलाय । ऋस कटत कष्ट कल्यान राय ।।
सागर बीकम सागर समांन । रितराज बाग बारी वखांन ।।
गुंजार अलिन कौकिल्ल कीर । सीतळ सुगंध मंदह समीर ।।
पटन हट्ट सोहै अपार । बाजार गळिन में भीर भार ।।
ब्रन च्यारि ओर अरचन्न च्चारि । जंह बसत संत ब्रत पुन्नकारि ।।
चातुर विचित्र जुवतोन लोग । भिनं भिन्न करै सब तीर्थ भोग ।।
पन - घट्ट घाट नारी अनेक । भरि चलै भरन आवै अनेक ।।
हंस गवनि चंद बदनि हसंत । दारिम्म जेम चमकंत दंत ।।
कमनीय काम कै सीस मांन । विधि और कहां कीजै बखांन ।।
पंडित पात सामंत सूर । किन्दरां गिरन सिद्धिन गरूर ।।
गढ़ कियौ यसौ बानैत गौर । अनि गढ्ढ नहीं समतुल्लि ओर ।।
बानैत तणां कंवरां विचारि । जे हुवा चारि घर लियण कारि ।।
अनपाळ अनै अजमाल येमि । जांणिजै कह्या बळिराम जेमि ।।
जसराज अनै भीमाल जोड़ । मांझियां दळां दीठा अमौड़ ।।
सत सूर दत्त खत्रवट समाज । राजैधिराज अनिरुद्ध राज ।।
धंधैड़ धरा ऊवेड़ धार । बासाड़ि अजाड़े दोय बार ।।
भड़ गंज्जैण उदयेर भांजि । गिळ लिया बैर आमेर गांजि ।।
पूरव्ब साह भांगै पंडोस । छत्र लिया मारि मौखिया सीस ।।
गज लिया मारि बाना र तोग । सामंद गया सूजा स लोग ।।
राजाधिराज अनरुद्ध राड़ि । जीतिया बळै नौबति बजाड़ि ।।
वपु लगे घाव ऊबरै वीर । सामंत सहित राजा सधीर ।।

जुध जैत बाणारसि जैत वार । धारें प्रवाह गंग लार धार ।।
पातिसाह जैत दिल्लीस पांण । अनुरुद्ध भुजां फत्तेस आंण ।।
अनपाळ हुवै राजा स इंद । कथि सकै कवण बांणी कविंद ।।
अनुरुद्ध पाट नरसिंघ आज । लघु बेस गौड़ दीरघ लाज ।।
बरसां जिण द्वादसि खड़ग बांधि । केवियां तणा बाहवा स कांधि ।।
भड़ि जेणि साहि दारा भजाड़ि । राजा नरिंद जीतियो राड़ि ।।
बंगाल कांवरू लै बिहद्द । हुवि कीध सांमदां लग्ग हद्द ।।
यम सूजै सुणै सामंद वारि । पौहो ताड़ि कियौ तिणतिण पयारि ।।
वानैत पाटि अजमाल बीर । दातार सूर दहुं विधि सधीर ।।
अवतार रूप पारत्थ आप । जिण इंद ईस जगिदीस जाप ।।
मुरत्ति मैण बरणै विसाल । माननी जीय त्रिय अंक माळ ।।
दाखै जुवांन यक दोय राह । बेछाड़ कंध आजांन - बाह ।।
ऊबरो विसेख अति हो अभीत । आकार सिद्ध जुध वार जीत ।।
पव्बैस पांव रिण मांहि पेखि । दळथंभ जैतखंभ जिसौ देखि ।।
असपति दिली परखेस अेम । जगि क्रस्ण रथि पारथ्थ जेमि ।।
भारत्थ तणा प्राक्रम भुजाळ । प्रम अत्थ कत्थ री पैज पाळ ।।
जैयधूत्त क्रस्ण सा सला जांणि । बळि बहै सुधन्वा तेणि बांणि ।।
सांपरत जीपणौ हार सोंज । इंद्र तणो बरं परजाळि ओज ।।
पतिसाह जांणि यम करै प्रीत । जुध येह त्री अणजीत जीत ।।
थिर दियै पाटि अजमेर थांन । बापी गढ़ चाढ़ण घणो बांन ।।
अजमाल अेमि अजमेर आय । गिड़ किया पमाड़ा कितै गाय ।।
सांभळे सेर समसेर सांहि । मैवास कहावै धरा मांहि ।।
त्यां तणै सीस कियै क्रोध त्यांम । नर खळां साल अजमाल नांम ।।
बाज अनै आप पक्खर बणाय । सामंत सिलह यण सजै चाय ।।
घण गजै बजै त्रामाळ घीर । मंहि गिरां तरां बौलिया मोर ।।
प्रथमादि सीस नद झौक पाड़ि । पौहौ समै अड़ायळ झोकझाड़ि ।।
बोरवै खांन दाऊद बेढ़ि । त्यों तजै मिळै बळ पांण तेढ़ि ।।
बंधणी बळै सारोठ बाळि । अौनाकर बौराहड़ उखाळि ।।
दूजड़ां गहो त्यां दही देह । जे काटि आंगुळी रह्या तेह ।।
दूसिरां बळा सिर बाळि दाट । घासाहर बिचरै बिघट घाट ।।
चांग यम खांन मीढ़ा सुचाव । पौहौमि सु झांडि सेवै सुपांव ।।
मानपुर अनै लालपुर मारि । धर खळां येमि धर चाक धारि ।।

कालिंजर डेरा तेखि कीध । लुळि आय खांन यावोस लीध ।
यम जीति बळै अजमेर आय । बोथिका साहि मारिग बणाय ।।
दिल्लीवै आगरै फोजदार । भै गांम जीतियौ गजां भार ।।
महि मऊ अखौ पूरन्न माळ । ढाहिया बिन्है गज ढाहि ढाल ।।
साहियौ त्यार यम खड़्ग सैण । जगमाल आय मिळियौ स जैण ।।
चक्र असी गढ़ां करि चून-चान । मैवास ग्रासियां तौड़ि म्यान ।।
जुध अंतरबेध स जीति जोध । पतिसाह तैण बाधे प्रमोद ।।
हजरत्ति तैणि राखै हजूर । देसन्तरि भेजै नहीं दूरि ।।
साहांनसाह साही जुवांन । आगरै येमि राजै अमांन ।।
तिण सेव करै संसार सार । पौही जीता समंदां वार पार ।।
अै दखिण अनै पूरव्व देस । पछिमादि उत्तर अप्पै सु पेस ।।
पग अेक रहै ऊभा स पास । खट तीस वंस हो आंब खास ।।
अनि असुर कहर ऊभा असंक । लेखियै जांणि गढ़ तिणा लंक ।।
त्यां बीच राव बहड़ै सधीर । मारियौ सलावति खांन मीर ।।
ऊरड़ै बळै सूधौ अपाल । आडौ जदि फिरियौ अज्जमाल ।।
जुध गौड़ अनै राठौड़ जांणि । प्रतिमाळ लगै पड़ियाळ पांणि ।।
कहि खहै खहै बाहै निसंक । हाथळां मैंगळा जेहि हंक ।।
पाहड़ां बीहुं जुड़िया प्रकार । मैंगळां मैंगळा हुई मार ।।
च्यार जद बही जमदाढ़ चीन । तदि बहै ताप तरवारि तीन ।।
बाहबा मही बिहुं नही बंक । ऊवरे मरै लिखिया स अंक ।।
दोय लड़ै जेथि यक पड़ै दूठ । यम गजण तणौ पड़ियौ अकूठ ।।
बानैत तणौ जीत्यौ वजागि । खूंद जिण देखि पूजियौ खागि ।।
वळियौ जीति बधनोर वाढ़ि । कमधज्ज घरां हूँ दीध काढ़ि ।।
जुध कीध पमाड़ा अजै जांणि । विधि बिन्हैरास केतै बखांणि ।।
जा मिळै मूड़ै दीजै स वंत । यम दियौ अजैणि खेत अंत ।।
अजमाल पाट राजड़ अबीह । दौयणां पड़त चढ़ तास दीह ।।
मेड़तै अनै गढ़ अजयमेर । बेऊ पंख अंजसै येणि बेर ।।
प्रभ साह तणै हणमंत पेखि । दोय भुजां जैणि भीमांण देखि ।।
उतमंग भाग झल्ले कै अमोल । तिण मद्धि रत्ति गिरमेर तोल ।।
बणि बदन कमळ तेहौ बिकासि । पून्योम चंद सूरिज्ज प्रकासि ।।
यण बार आय अवतार लीध । सांवंत सूर अवसांण सीध ।।
दूसिरी भुजा सोही राम दूठ । अवकंध गाल दाता अकूठ ।।

राम री भुजां वणि भरत रूप । बानैंत पाटि अजमाल भूप ।।
भरथ भुजां सत्रघण भुजाळ । सिरदार सूर फौजां सिंघाळ ।।
सुज कहै आतमा राम सीह । अजमाळ तणा पांचौ अवीह ।।

।। इती श्री वंसावळी गोड़ां की राव महेसदास कृत लिखतं महताप पठनार्थं
अगरजी संमत १८७६ मिती चैत सुदि २ सनिवार
पूरी हुई बांचै ज्यांनै श्रीराम ।।

परिशिष्ट (२)

ऐतिहासिक टिप्पणियां

उज्जयिनी युद्ध

पृ. २ (१) **अकबर जलालदीनह**—मुगल वंश का प्रसिद्ध बादशाह जलालुद्दीन अकबर, जो हुमायूं का पुत्र और बाबर का पौत्र था।

(२) **नूरदीसाहि जहांगीर** — बादशाह अकबर का पुत्र बादशाह अबुलमुजफ्फर नूरुद्दीन जहाँगीर। इतिहास में वह जहाँगीर के नाम से प्रसिद्ध है।

(३) **साहिजिहांन** — बादशाह जहाँगीर का पुत्र और उत्तराधिकारी बादशाह शाहजहाँ। शाहजहाँ के चारों शाहजादों के तीन स्थानों पर लड़े गए युद्धों का इस ग्रंथ में वर्णन है।

(४) **राजसीं रांण** — उदयपुर (मेवाड़) के शासक महाराणा राजसिंह (प्रथम)। महाराणा राजसिंह महाराणा जगतसिंह के पुत्र थे। जगतसिंह की मृत्यु के बाद सन् १६५२ में मेवाड़ के सिंहासन पर बैठे। राजसिंह अपने समय के बड़े वीर, स्वतंत्रता प्रेमी तथा विद्वानों एवं कलाकारों के आश्रयदाता थे। तीनों शाहजादों के उत्तराधिकार के युद्धों में उन्होंने प्रत्यक्ष रूप में तो तटस्थता ही बरती थी। किन्तु वैसे वे शाहजादे औरंगजेब और मुरादबख्श के पक्ष में थे। संभवतः महाराणा की ओर से शाही सेवा में दक्षिण में नियत एक हजार सेना ने दोनों शाहजादों का पक्ष ग्रहण किया हो। शाहजादों की तरफ से लिखे गए पत्र और महाराणा को उपहार भिजवाने के उल्लेख से इस तथ्य की पुष्टि होती है। उनका सन् १६८० में निधन हो गया।

—वीर विनोद भा. २ पृ. ४१२–१५

पृ. ३ (१) **शाहिदारा** — शाहजादा दाराशिकोह बादशाह शाहजहाँ का जेष्ठ पुत्र था। उसकी सूबेदारी में दिल्ली से उत्तरी भूभाग के प्रदेश थे। वह एक नेक-दिल, धर्मसहिष्णु और सहृदय शाहजादा था। बादशाह की उपस्थिति में भी दिल्ली दरबार में उसकी मंत्रणा और कार्यादेश माने जाते थे। जब शाहजहाँ की अस्वस्थता के समय शाहजादा शुजा, औरंगजेब और मुराद ने विद्रोह किया, तब दाराशिकोह ने ही तीनों शाहजादों को अपने अपने प्रान्तों में लौट जाने के लिए शाहजहाँ की ओर से आदेश और सेनाएँ भेजी थीं। औरंगजेब और मुराद के विरुद्ध महाराजा जसवंतसिंह जोधपुर और कासिम खां को भेजा गया था। किन्तु युद्ध में शाही सेना शाहजादों की सेना से उज्जैन के पास धरमत के मैदान में हार गई, तब फिर दाराशिकोह ने धौलपुर के पास मुकाबिला किया। वहां भी उसके पक्ष की हार

हुई। तदनन्तर वह यत्र तत्र बल-संग्रह करने के लिए भटकता रहा और अन्त में औरंगजेब के संकेत पर मलिक जीवन अफगान द्वारा बन्दी बनाया जाकर मरवा दिया गया।

(विशेष परिचय के लिए देखो दाराशिकोह)

(२) **साहि सूजा** — बादशाह शाहजहाँ का द्वितीय पुत्र शाहजादा शुजा। तब उसके मनसब में दिल्ली से पूर्व के बंगाल आदि प्रान्त थे। शाहजहाँ की अस्वस्थता की सूचना पर सब से पहले उसी ने विद्रोह किया था। उसे दिल्ली-आगरे की ओर बढ़ने से रोकने के लिए मिर्जा राजा जयसिंह (प्रथम) आम्बेर और दाराशिकोह के बड़े शाहजादे सुलेमानशिकोह को भेजा गया था। दोनों पक्षों का बनारस के निकट बहादुरपुर स्थान पर सामना हुआ और शुजा को परास्त होकर बंगाल की तरफ भाग जाना पड़ा। औरंगजेब ने बादशाह बनने के बाद में उसे भी छलाघात से मरवा डाला।

—वीरविनोद, द्वि. भा., पृ. ३६१, दाराशिकोह पृ. १०६–१५

(३) **साहि अवरंग** — शाहजादा मुहम्मद औरंगजेब शाहजहाँ का तृतीय पुत्र था। उसके मनसब में दक्षिण के भूभाग थे। बादशाह की अस्वस्थता के समाचार प्राप्त कर उसने भी दक्षिण से दिल्ली की तरफ कूच किया और रास्ते में गुजरात के सूबेदार शाहजादे मुराद से सांठ-गांठ कर अपने शामिल कर लिया। तदनन्तर धरमतपुरा और धौलपुर के युद्धों में दाराशिकोह की सेनाओं को हरा कर आगरे पर अधिकार कर लिया। वहाँ से दिल्ली पर कब्जा करने के लिए प्रस्थान कर मथुरा के मुकाम पर मुराद को मदिरा पिला कर कैद कर लिया और मांडू के किले में काराग्रह में रख कर कुछ अर्से बाद मरवा डाला।

— मुगलकालीन भारत, भा० २ देखो

(४) **साहि मुरियाद** — शाहजादा मुरादबख्श बादशाह शाहजहाँ का सब से छोटा पुत्र था। उस समय वह गुजरात का सूबेदार था। शाहजादे औरंगजेब ने पहिले तो उसे बादशाह बनाने का प्रलोभन देकर अपने पक्ष में बना लिया था। फिर धरमतपुरा और धौलपुर के युद्धों में विजय प्राप्त कर शाहजहाँ को आगरा के किले में बंदी बना दिया। फिर दिल्ली पर अधिकार करने के लिए जाते हुए मार्ग में मुराद को कैद कर मांडू के किले में भेज दिया। तदनन्तर उसी दुर्ग में मुराद को मरवा डाला। — मुगलकालीन भारत, भा० २ देखो

पृ. ५ (१) **जसमंत** — महाराजा जसवंतसिंह जोधपुर नरेश राजा गजसिंह के छोटे पुत्र थे। राजा गजसिंह की इच्छा से बादशाह शाहजहाँ ने उनके बड़े भाई अमरसिंह को तो राव का खिताब तथा नागोर का वतन दिया और उनको जोधपुर का राज्य व पहले राजा और बाद में महाराजा का उपटंक दिया। बादशाह ने विद्रोही शाहजादे औरंगजेब और मुरादबख्श को समझा-बुझा कर अपने सूबों में लौट जाने को बाध्य कर देने के लिए जसवंतसिंह और कासिम खाँ को भेजा था। महाराजा जसवंतसिंह ने अनेक हिन्दू उमरावों के साथ मालवा के उज्जैन नगर के समीपस्थ धरमतपुरा नामक स्थान पर दोनों शाहजादों का सामना किया। दोनों पक्षों में बड़ा कड़ा संग्राम हुआ। अन्त में महाराजा जसवंतसिंह की पराजय हुई और वे रणक्षेत्र त्याग कर जोधपुर चले गए। उस समय इनका सात हजारी जात छह हजार का मनसब था। सं० १६६५ से १७३५ तक इनका जोधपुर पर राज्य रहा।

— मा. इ. भा. १ पृ. २१०–४२

(२) जैसींघ —- मिर्जा राजा जयसिंह (प्रथम) आम्बेर के स्वामी थे। बादशाह शाहजहाँ ने अपने पौत्र शाहजादा सुलेमान शिकोह सहित इन्हें बागी शाहजादे शुजा को रोक कर अपने सूबे को लौटा देने के लिए भेजा था। मिर्जा राजा जयसिंह ने अपनी रणदक्ष नीति से शाहजादा शुजा की सेना पर बनारस के निकट बहादुरपुर स्थान पर नैश्य आक्रमण कर बंगाल की तरफ भगा दिया। शाहजहाँ के शासनकाल में उनका मनसब छह हजारी जात पांच हजार सवार का था। जयसिंह का सं० १७२३ तक आम्बेर प्रदेश पर शासन रहा।

— ना. ई. पृ. १३६-३७, मा. उ. पृ. १६३

(३) सत्तो — राव शत्रुशाल हाडा बूंदी के स्वामी राव राय रतनसिंह के पुत्र राजकुमार गोपीनाथ का पुत्र था। गोपीनाथ का निधन राव राय रतनसिंह के जीवन काल में ही हो गया था। राव राय रतनसिंह की मृत्यु के पश्चात् राव शत्रुशाल सं० १६८८ में बूंदी की गद्दी पर बैठे थे। धौलपुर के युद्ध में वह शाही पक्ष के प्रमुख योद्धा और हरावल के नेता थे। शाहजादा दाराशिकोह के मैदान छोड़ कर भाग जाने पर भी शत्रुशाल अन्य राजपूत योद्धाओं के साथ युद्ध में डटे रहे और अन्त में हरावल में लड़ते हुए मारे गए। उस समय उनका मनसब चारहजारी जात, चार हजार सवार का था। — रा. ई. ज. द्वि. भा. पृ. ११७

(४) अनुरुद्ध — राजा अनिरुद्ध सिंह गौड़, बादशाह शाहजहाँ के अत्यधिक विश्वासपात्र राजा गोपालदास गौड़ लाखेरी और अजमेर (नगर को छोड़ कर) के स्वामी के द्वितीय पुत्र राजा विट्ठलदास गौड़ के पुत्र थे। वह भी शाहजादा शुजा के विरुद्ध भेजी गई शाही सेना में मिर्जा राजा जयसिंह कछवाहा के साथ भेजी गई सेना में नियुक्त हुआ था। अनिरुद्धसिंह बहादुरपुर के युद्ध में घायल होकर बच गया था। उसके वतन में मालपुरा और रणथंभौर का परगना था। उस समय उसका मनसब तीनहजारी जात, तीन हजार सवार का था। सं. १७१६ में इनका देहान्त हो गया।

— मा. उ. (मुगल दरबार के हिन्दू सरदारों की जीवनी) पृ. ६३-६४

(५) दलेलखांन — नवाब दलेलखांन (दिलेर-खाँ) रुहेला शुजा के विरुद्ध भेजी गई शाही सेना में नियुक्त था। उस समय वह कन्नौज का फौजदार था।

— दाराशिकोह पृ. ११२

(६) साहि सलेम — शाहजादा दाराशिकोह का पुत्र शाहजादा सुलेमानशिकोह। वह शाह शुजा के विरुद्ध भेजी गई सेना का सेनानायक था। उस समय उसका मनसब पन्द्रह हजारी जात, आठ हजार सवार का था। वह भी मांडू के किले में एक वर्ष कैद भोगने के बाद गला घोंट कर मार दिया गया।

— वीर विनोद द्वि. भा. पृ. ३६१, दाराशिकोह पृ. १०६–१७, १५७

(७) राणा — राजा रायसिंह सीसोदिया मेवाड़ के महाराणा अमरसिंह के पुत्र राजा भीम (भीमसिंह) का पुत्र था। उसके वतन में टोडा रायसिंह का परगना था। उज्जैन के युद्ध में वह भी शाही सेना में नियुक्त था। महाराजा जसवंतसिंह के रणक्षेत्र छोड़ने के साथ ही, वह भी युद्ध से अलग हो गया था। उस समय उसका मनसब पाँच हजारी जात, अढ़ाई हजार सवार का था। — मा. उ. पृ. ३६३–६६

(८) रायसिंघ — उज्जैन, धौलपुर और बनारस के युद्धों में रायसिंह नाम के कई योद्धा शामिल थे। जिनमें राजा रायसिंह सीसोदिया टोडारायसिंह, राव रायसिंह राठौड़ नागौर प्रमुख थे। यहाँ कवि का किस रायसिंह से अभिप्राय है, स्पष्ट नहीं होता। संभवत: यहाँ रायसिंह का रायसिंह सीसोदिया ही तात्पर्य है।

पृ. ६ (१) जसौ — जसवंतसिंह गौड़, राजा अनिरुद्धसिंह गौड़ का छोटा भाई था। वह भी अपने भाई राजा अनिरुद्धसिंह के साथ पूर्व (बहादुरपुर) के युद्ध में शामिल था। संभवतः उसकी जागीर में मारवाड़ के नांवे परगने के मारोठ ठिकाने के गाँवों का एक भाग था। — ख्यात ग. हस्तलिखित

(२) उदैभांण — अजमेर मेरवाड़ा के राठौड़ों के ठिकाने भिणाय के राजा श्यामसिंह का पुत्र राजा उदयभान। वह भी पूर्व (बहादुरपुर) के युद्ध में शामिल था। उदयभान के वंशजों के अजमेर मेरवाड़े में भिणाय, देवलिया और बघेरा के ठिकाने थे। उस का मनसब आठ सौ जात, पांच सौ सवार का था। — ख्यात ग. हस्तलिखित

(३) भोजौ — भोजराज खंगारोत कछवाहा। वह नराणा के राव खंगार का पुत्र था। मिर्जा राजा जयसिंह के साथ शुजा के विरुद्ध भेजी गई शाही सेना में नियुक्त था।
— नैणसी ख्यात भा. १ पृ. ३०५, कछवाहों के वीर गीत

(४) भावसी — भावसिंह, संभवत: वह गौड़ योद्धा था। और राजा अनिरुद्धसिंह गौड़ की सेना में अपने भाई रिणछोड़दास के साथ बहादुरपुर के युद्ध में सम्मिलित था।

(५) रिणछोड़ — भावसिंह गौड़ का भाई रणछोड़दास गौड़। वह भी बहादुरपुर के युद्ध में अपने भाई के साथ था।

(७) बादर — बहादुर खांन सैयद। वह भी बहादुरपुर के युद्ध में सेना के चंदावल भाग में रह कर लड़ा था।

(८) जाफरमीर — मीरजाफर। वह शुजा के विरुद्ध लड़े गए युद्ध में सेना के पृष्ठ भाग में रह कर लड़ा था। उस समय उसका मनसब एक हजारी जात, छह सौ सवार का था।

(९) कासूं -- संभवतः कासिमखांन सैयद। वह बंगाल का सूबेदार भी रह चुका था।

(१०) गजपत्ति—जोधपुर के राजा गजसिंह राठौड़, जो महाराजा जसवंतसिंह के पिता और शाही मनसबदार थे। सं. १६७६ से १६९५ तक उनका शासन काल रहा।
— मा. ई. भा. १ पृ. १९९-२०८

पृ. १०(१) अरजण — राजा विट्ठलदास गौड़ का द्वितीय पुत्र अर्जुन गौड़। वह बादशाह शाहजहां का विश्वस्त सेना नायक और दरबारी योद्धा था। अर्जुन गौड़ ने ही दरबार में सलावतखांन बक्सी को मारने पर पांच-छह अन्य योद्धाओं के सहयोग से राव अमरसिंह राठौड़ नागर को मारा था। धरमतपुरा के युद्ध में वह भी कतिपय गौड़ योद्धाओं सहित

महाराजा जसवंतसिंह के साथ भेजा गया था। वह भी धरमत में जूझता हुआ वीरगति को प्राप्त हुआ। उस समय उसका मनसब दो हजारी जात, पन्द्रह सौ सवार का था। उसके वतन में अजमेर के निकट राजगढ़ का ठिकाना एवं जागीर थी।

— मा. ख्यात, गौड़ों के वीर गीत

(२) **मुकंदेस** — कोटा के राजा माधवसिंह हाडा का जेष्ठ पुत्र मुकंदसिंह हाडा। वह उस समय कोटा का शासक और तीन हजारी जात, दो हजार सवार का मनसबदार था। वह भी धरमत के युद्ध में सेना के हरावल भाग का नेतृत्व करता हुआ खेत रहा।

— रा. ई. ज. द्वि. पृ. ४७-४८; हाडों के वीर गीत

पृ. ११ (१) **मोहणसिंघ** — कोटा के शासक राव मुकंदसिंह हाडा का भाई मोहनसिंह हाडा। वह उस समय आठ सौ जात, चार सौ सवार का मनसबदार था। मोहन-सिंह भी धरमत में खेत रहा था। उसकी जागीर में कोटा राज्य का पलायथा ठिकाना था।

— को. रा. ई प्र. भा. पृ. १३४

(२) **जूझार** — कोटा नरेश मुकंदसिंह हाडा का तृतीय भाई जूझारसिंह हाडा। वह भी धरमत में लड़ता हुआ काम आया। उसके वतन में कोटा राज्य का कोटड़ा ठिकाना था।

— को. रा. ई प्र. भा. पृ. १३४

(३) **किसोवरसिंघ** — राव मुकंदसिंह हाडा कोटा का पांचवा भाई किशोरसिंह हाडा। वह धरमत के युद्ध में घायल होकर बच गया था। तदनन्तर औरंगजेब के राजत्व के २५वें वर्ष में वह कोटा का शासक बनाया गया था। उससे पूर्व उसकी जागीर में कोटा राज्य का सांगोद ठिकाना था। — रा. ई. ज. द्वि. पृ. ५०–५२

(४) **कन्हीराम** — कोटा के राव मुकंदसिंह हाडा का चतुर्थ भाई कन्होराम हाडा। वह भी धरमत के युद्ध में लड़ता हुआ धराशायी हुआ था। उसकी जागीर में कोटा रियासत का कोयला ठिकाना था। — को. रा. ई. प्र. भा, पृ. १३४

(५) **रतनागर** — मालवा के रतलाम राज्य का शासक राजा रतनसिंह राठौड़। वह महेशदास का पुत्र और महाराजा जसवंतसिंह का दो पीढ़ी दूर का भाई था। धरमतपुरा के युद्ध में राठौड़ सेना के हरावल का संचालन करता हुआ मारा गया था। उस समय उसका मनसब दो हजारी जात, सौलह सौ सवार का था। — र. प्र. पृ. १५–६७

(६) **दळथंभ** — मालवा के गंगधार परगने का स्वामी रावत दयालदास झाला। वह भी धरमत के युद्ध में मारा गया। उस समय उसका मनसब नौ सदी जात, पांच सौ सवार का था। — मा ख्यात-क

(७) **सूजाणसिंघ** — शाहपुरा का शासक सुजाणसिंह सीसोदिया वह महाराणा अमर-सिंह के छोटे पुत्र सूरजमल सीसोदिया का जेष्ठ पुत्र था। वह भी धरमत के युद्ध में अपने तीन पुत्रों सहित खेत रहा था। उसका मनसब दो हजारी जात, आठ सौ सवार का था।

— मा. ख्यात-क

(८) बैरीसिंघ — शेखावाटी प्रदेश के शेखावतों के प्रमुख राज्य खण्डेला का शासक राजा वैरीसिंह (वरसिंहदेव) शेखावत। वह अकबर-कालीन सुज्ञात राजा रायसल दरबारी के पौत्र राजा द्वारिकादास शेखावत का पुत्र था। उसकी लड़की से जोधपुर के महाराजा जसवंतसिंह का विवाह हुआ था। धरमतपुरा के युद्ध में वह भी महाराजा जसवंतसिंह के साथ शाही सेना में नियुक्त हुआ था। महाराजा जसवंतसिंह के रणभूमि त्यागने पर वह भी युद्ध क्षेत्र से अलग हो गया था। खण्डेला पर उसका शासन संवत् १६९० से १७२० तक रहा था। — मा. ख्यात क. खण्डेला, पृ. ६६-६९

(९) गोवरधन चंद्रहतणौ — मारवाड़ के चण्डावल ठिकाने के ठाकुर चन्द्रसिंह का पुत्र गोवर्द्धनसिंह कूंपावत राठौड़। गोवर्द्धनसिंह पहिले राजा गजसिंह की सेना में था। उसने गजसिंह के द्वारा लड़े गए विभिन्न युद्धों में अच्छी ख्याति अर्जित की थी। उनके निधन के बाद महाराजा जसवंतसिंह की सेना में भी उसका प्रमुख स्थान था। धरमपुरा के युद्ध में वह सेना के हरावल में रह कर लड़ा था और उसी युद्ध में अपने साथियों सहित धराशायी हुआ। उस समय उसका मनसब एक हजारी जात, पांच सौ सवार का था।

— मा. ख्यात क, ख, ग, रा. वीरगीत, वचनिका र०, टि. पृ. ११८।

(१०) केहरी — रावत केशरीसिंह शक्तावत (सीसोदिया)। वह महाराणा प्रतापसिंह के भाई शक्तिसिंह का वंशज था। रावत केशरीसिंह बांनसी के स्वामी रावत नारायणदास का पुत्र और किशनसिंह का भाई था। धरमतपुरा के युद्ध में केशरीसिंह अपने एक अन्य भाई सहित सम्मिलित था और उसी युद्ध में वीरता प्रदर्शित कर धराशायी हुआ।

— मा. ख्यात. ग., मारवाड़ के परगनों की विगत, शक्तावतों के वीर गीत।

(११) रुकमांगद — रुक्मांगद शक्तावत सीसोदिया सुरताण अचलदासोत का पुत्र था। अचलदासोत बांनसी के रावत नारायणदास शक्तावत के भाई सुरताण का पुत्र था। वह भी धरमतपुरा के युद्ध में सम्मिलित था। — मा. ख्यात. ग.।

(१२) राघवदे — मालवा के गंगधार संस्थान के स्वामी रावत दयालदास झाला का छोटा भाई और रावत नरहरिदास झाला का छोटा पुत्र राघवदेव झाला। वह भी शाही सेना में नियुक्त था और अपने जेष्ठ भाई रावत दयालदास झाला के साथ ही धरमतपुरा के युद्ध में वीरगति को प्राप्त हुआ। — मा. ख्यात ख, ग.।

(१३) चंद्रावत अमरेस — रामपुरा राज्य के चंद्रावत सीसोदिया हरिसिंह का पुत्र और उत्तराधिकारी राव अमरसिंह चंद्रावत। वह भी धरमतपुरा के युद्ध में नियत शाही सेना में शामिल था। युद्ध का परिणाम प्रतिकूल जानकर राव अमरसिंह भी रणक्षेत्र का त्याग कर चला गया था। तब उसका मनसब पन्द्रह सौ जात, एक हजार सवार का था! वह संवत् १७२५ वि. में दक्षिण के साल्हेर किले की तलहटी में लड़ता हुआ मारा गया।

— मा. ख्यात ख, बां. ख्यात पृ. १०८, मा. ख्यात ग., म. उ. पृ. २१६-१८।

(१४) अमरेस — नरवर का शासक राजा अमरसिंह कछवाहा। वह राजा आशकर्ण कछवाहा के पौत्र राजा रामदास का पुत्र था। धरमतपुरा के युद्ध में वह भी अपने पुत्र कुंवर जगतसिंह सहित शाही सेना में नियत था। युद्ध में शाही सेना की पराजय की स्थिति का

अनुभव कर राजा अमरसिंह लड़ाई के मैदान से अलग हो गया था। तब उसका मनसब पन्द्रह सौ जात, एक हजार सवार का था।

— नैणसी. भा. १, पृ. ३०३. मा. ख्यात ग., वीरविनोद द्वि. भा. पृ. ३७०।

(१५) वेळू — धरमतपुरा के युद्ध में भेजी गई सेना में वेलूजी नाम नहीं मिलता। यहां वस्तुतः मालोजी भोंसला नाम होना चाहिए था। वह धरमतपुरा के युद्ध में शाही पक्ष की सेना में था। उस के जिम्मे युद्ध-शिविरों की रक्षा और सम्हाल का कार्य था। वह पर्सोजी के साथ ही युद्ध की स्थिति बिगड़ने पर मैदान छोड़ कर चला गया था।

— मा. ख्यात. क.।

(१६) परसु — मालोजी भोंसला का भाई पर्सोजी भोंसला। वह धरमतपुरा के युद्ध में शाही सेना में डेरों की रक्षा एवं सम्हाल के लिए अपने भाई मालोजी सहित नियत हुआ था। किन्तु युद्ध की स्थिति बिगड़ते देख कर वह भी मालोजी सहित मैदान छोड़ कर आगरा को कूच कर गया। तब उसका मनसब तीन हजारी जात, दो हजार सवार का था।

— मा. ख्यात. क, मा. उ. भा. १ पृ. ३०४-८ वीरविनोद द्वि. भा. पृ. ३६६।

(१७) देवीसिंह — ओरछा का शासक राजा देवीसिंह बुंदेला। वह भी धरमतपुरा के युद्ध में महाराजा जसवंतसिंह की नायकता में भेजी गई सेना में नियुक्त था। परन्तु युद्ध की भयंकरता से विचलित होकर वह विद्रोही शाहजादों से मिल गया था। उस समय उसका मनसब अढ़ाई हजारी जात, दो हजार सवार का था। वह बादशाह औरंगजेब के शासन के तेरहवें वर्ष में काबुल के सूबेदार मुहम्मद अमीनखां के साथ नियुक्त हुआ था। खैबर दर्रे में मुहम्मद अमीनखां के पराजित होने के बाद का उसका कोई उल्लेख प्राप्य नहीं है। इसलिए संभवतः खैबर में ही वह मारा गया हो।

— वीरविनोद द्वि. भा. पृ. ३६७, मा. उ. भा. १, पृ. २२०-२३।

(१८) सुजाणसिंघ — बुन्देलखण्ड के राजा पहाड़सिंह का पुत्र राजा सुजानसिंह बुंदेला। राजा सुजानसिंह भी धरमतपुरा के युद्ध में शाही सेना में नियुक्त हुआ था। वह भी युद्ध की भयानकता से भयभीत होकर मैदान से दूर हो गया था। उस समय उसका मनसब दो हजारी जात, दो हजार सवार का था। तदनन्तर वह औरंगजेब की सेवा में रह कर शाहजादा शुजा के विरुद्ध भेजी गई सेना के सहायकों में नियुक्त हुआ और कूच-विहार, आसाम, पुरन्दर दुर्ग, और बरार के युद्धों में भी शामिल हुआ। उन युद्धों में वीरता दिखला कर प्रशंसा प्राप्त की। बादशाह औरंगजेब के शासन के ११ वें वर्ष में दक्षिण में उसका देहान्त हो गया।

— मा. उ. भा. १, पृ ४३५-३६, वीरविनोद द्वि. भा. पृ. ३६८, मा. ख्यात. क।

(१९) राजा छत्रमणि — डीग (भरतपुर) राज्य के शासक राजा छत्रमणि यादव। वह यादवों के करौली राज्य के नजदीकी भाइयों में था। राजा छत्रमणि भी धरमतपुरा के युद्ध में महाराजा जसवंतसिंह राठौड़ के साथ नियुक्त शाही सेना में सम्मिलित था। महा-

राजा जसवंतसिंह का पाणिग्रहण उसकी राजकुमारी के साथ हुआ था। महाराजा अजितसिंह उसका भानजा था। युद्ध की स्थिति बिगड़ने पर वह भी मैदान से हट गया था।

— राठौड़ां री ख्यात, मा. ख्यात. ख, नैणसी भा. ३ पृ. २१३।

(२०) बलिराम — बलिराम हाडा के वतन और शाही मनसब की जानकारी उपलब्ध नहीं है। संभवतः वह कोटा तथा बूंदी के हाडा राजवंश के भाइयों में हाडौती के किसी ठिकाने का जागीरदार था। धरमतपुरा में वह भी शाही सेना में था।

(२१) पातळ — प्रतापसिंह मारू राठौड़ कहां का था, ख्यातों तथा इतिहास से प्रमाणित नहीं होता। संभवतः वह मालवा के झाबुआ राज्य के संस्थापक अकबर-कालीन राजा केशवदास मारू राठौड़ के वंशक्रम में हो।

(२२) सबळसिंह — राणा अमरसिंह (उदयपुर) के पांचवें पुत्र बाघसिंह सीसोदिया के पुत्र सुरताण का पुत्र सबलसिंह राणावत सीसोदिया। धरमतपुरा के युद्ध में वह घायल होकर बच गया था। बादशाह शाहजहां के शासन के २२ वें वर्ष में उसका मनसब दो हजारी जात, एक हजार सवार का था। — मा. ख्यात. ख, म. उ. भा. १ पृ ४०६।

पृ. १२ (१) **जखमी उजबक** — कवि ने यहां उजबक जाति के किस मुस्लिम योद्धा का उल्लेख किया है, ख्यातों आदि से स्पष्ट नहीं होता है। संभवतः यहां सैयद कुली उजबेक से अभिप्राय होगा। तब उसका मनसब आठ सौ जात चार सौ सवार का था।

(२) खां अफितार — अब्दुलाखां फीरोज जंग का भतीजा इफ्तखारखां ख्वाजा अबुलबका। वह बादशाह शाहजहां के १८ वें वर्ष में इफ्तखारखां की उपाधि प्राप्त कर सम्मानित हुआ। तदनन्तर अकबर नगर की फौजदारी पर नियुक्त होते समय उसका मनसब डेढ़ हजारी पांच सौ सवार का हो गया। वह कंधार में कजिलबाशों के युद्ध में बड़ी बहादुरी से लड़ा। तब पुरस्कार रूप में दरबार से उसका मनसब बढ़ा कर दो हजारी सवार का किया तथा झण्डा भी प्रदान हुआ। बादशाह शाहजहां के ३८ वें वर्ष में वह तीन हजारी मनसबदार बनाया गया और तब ही मालवा में चौरागढ़ की फौजदारी तथा जागीरदारी प्राप्त हुई। बादशाह के शासन के अन्तिम वर्ष में धरमतपुरा के युद्ध में महाराजा जसवन्तसिंह की सेना में वह शामिल हुआ और मुरादबख्श की सेना से युद्ध करता हुआ मारा गया।

— मु. द. भा. २ पृ. ४४८-५१।

(३) कासिमखांन — महाराजा जसवंतसिंह जोधपुर को सहयोग देने के लिए कासिमखांन को एक स्वतंत्र शाही सेना का प्रधान बनाकर बागी शाहजादा मुराद का मार्गविरोध करने के लिए भेजा गया था। परन्तु उसने शाही सेना और विद्रोही शाहजादों की सेना का मुकाबिला होने पर मैदान छोड़ दिया। कासिमखांन का धरमतपुरा के युद्ध के समय चार हजारी जात, चार हजार का मनसब था।

— मा. ख्यात, ख, रा. ख्यात. दाराशिकोह पृ. ११७-१८।

(४) सिवपति — राजा गोपालदास गौड़ के जेष्ठ पुत्र राजा बलिराम गौड़ का पुत्र राजा शिवराम गौड़। उस समय वह मालवा प्रान्त के प्रसिद्ध दुर्ग मांडू का दुर्गपाल

था। वह भी धरमतपुरा के युद्ध में शाही पक्ष में लड़ कर घायल हुआ था। तदनन्तर धौलपुर के युद्ध में वीरगति को प्राप्त हुआ। एक समय उसके वतन में मालवा का धंधेरा भूभाग भी रहा था। राजस्थान में सरवाड़ (किशनगढ़ राज्यान्तर्गत) ठिकाना उसकी जागीर में था। तब उसका मनसब अढ़ाई हजारी जात, अढ़ाई हजार सवार का था।

— मा. उ. भा. १ पृ. ४३०-३१, मा. ख्यात ग, मा. प. विगत।

(५) **मांन** — सुमेरसिंह गौड़ का पुत्र मानसिंह गौड़। वह तब मालवा के आसेर (आसिर) गढ़ का किलेदार था। उसी ने सर्व प्रथम दोनों विद्रोही शाहजादों की सेनाओं के शामिल होकर आगरे की ओर बढ़ने की सूचना उज्जैन में महाराजा जसवंतसिंह के पास भेजी थी। धरमतपुरा के युद्ध में वह भी शामिल था। मानसिंह के मनसब और जागीरी व ठिकाने की जानकारी प्राप्य नहीं है।

(६) **गोपाळ** — राजा विट्ठलदास गौड़ का पिता राजा गोपालदास गौड़। वह शाहजादा खुर्रम (शाहजहां) का अत्यधिक विश्वासपात्र सरदार था। एक समय उस के अधिकार में बूंदी राज्य की ओर से प्रदत्त लाखेरी परगना था। रणथंभोर के युद्ध में उसने वहां के किलेदार बांकीवेग को बन्दी बना लिया था और सहायक किलेदार बीजल कछवाहा को मार कर किले पर अधिकार कर लिया था। अन्त में वह शाहजादे पर्वेज के विरुद्ध झूसी की रणभूमि में लड़ता हुआ वीर गति को प्राप्त हुआ।

— गोपालदास गौड़री बात, गौड़ों के वीरगीत।

(७) **बळिराम** — राजा गोपालदास गौड़ का जेष्ठ पुत्र और राजा शिवराम गौड़ का पिता राजा बलिराम गौड़। राजा बलिराम गौड़ भी शाहजादा खुर्रम के पक्ष में था। पर्वेज और खुर्रम के झूसी के युद्ध में अपने पिता के साथ वह भी मारा गया था।

— गौड़ों के वीरगीत, मा. उ. पृ. ४३०-३१।

पृ. १३ खां मनसूर — सैयद खानजहां शाहजहानी का पुत्र सैयद मंसूरखां बारहः। उसे बादशाह के ३० वें वर्ष में एक हजारी, चार सौ सवार का मनसब प्रदान हुआ। धरमतपुरा के युद्ध में वह शाहजादा औरंगजेब के साथ था। जब औरंगजेब ने धरमतपुरा और धौलपुर के युद्ध में विजय प्राप्त कर शाहजादा मुराद को गिरफ्तार किया, तब मंसूरखां को तीन हजारी जात पन्द्रह सौ सवार का मनसब मिला और दाराशिकोह का पीछा करने के लिए खलीलुल्लाखां के साथ भेजा गया था।

— मु. द. भा. ४ पृ. १८७-९०।

पृ. १४ रावळ समरसेनि — दिल्ली मण्डल के अन्तिम और प्रसिद्ध हिन्दू सम्राट् पृथ्वीराज चौहान के समकालीन और उसके बहनोई चित्तौड़ के स्वतंत्र शासक रावल समरसिंह सीसोदिया। वह पृथ्वीराज के पक्ष में महम्मद गौरी के विरुद्ध लड़ता हुआ मारा गयो था।

पृ. १५ वचनिका राणा करण — मेवाड़ के शासक राणा कर्णसिंह सीसोदिया। संवत् १६८१ में बनारस के पास टौंस नदी के युद्ध में शाहजादा खुर्रम शाहजादा पर्वेज की

सेना से पराजित होने पर एक अर्से तक उदयपुर (मेवाड़) में वहाँ के शासक की शरण में रहा था। उसी प्रसंग में यहाँ राणा कर्णसिंह का उल्लेख हुआ है।

— वीरविनोद द्वि. भा. पृ. २८६।

पृ. २२ (१) सूलितांण महमूद — शाहजादा औरंगजेब का पुत्र और बादशाह शाहजहाँ का पौत्र मुहम्मद सुल्तान। वह भी धरमतपुरा के युद्ध में अपने पिता के साथ था। तब उसका मनसब सात हजारी जात, दो हजार सवार का था।

— वीरविनोद द्वि. भा. पृ. ३४६।

(२) खांन निजाबति — शाहजादा औरंगजेब का पक्षधर निजाबत खांन। वह धरमतपुरा के युद्ध में अपने पुत्र शुजाअतखाँ सहित औरंगजेब के समर्थन में लड़ा था। मांडू के किले को अपने अधिकार में लेकर शाहजादा औरंगजेब के सुपुर्द करने के लिए भी वह प्रयत्नशील हुआ था। किन्तु तब वहाँ के दुर्गाध्यक्ष राजा शिवराम गौड़ की सतर्कता एवं दृढ़ता के कारण वह सफल नहीं हो सका। बादशाह शाहजहाँ के शासन समय में उसका मनसब चार हजारी जात, चार हजार सवार का था। — मा. उ. (हिन्दीं) भा. ३. पृ. ४९२-९८।

(३) पोहकरदास — पृ. १२ छं. सं २७ की टिप्पणी के राजा शिवराम गौड़ बलिरामोत का छोटा भाई पोखरदास (पुष्कर दास) गौड़। वह विद्रोही शाहजादों की सेना से मांडू के किले में भी लड़ चुका था। धरमतपुरा के युद्ध में घायल होकर बच गया था। धौलपुर के युद्ध में वीरतापूर्वक लड़ता हुआ रणशायी हुआ।

पृ. २७, खाचरौंद — उज्जैन के समीपस्थ मालवा प्रान्त का गाँव खाचरोद। महाराजा जसवंतसिंह ने पहिले खाचरोद स्थान के पास ही शाहजादा मुराद की सेना से सामना करने का निश्चिय किया था। पर शाहजादा को अपनी अकेली सेना से मुकाबिला करने का साहस नहीं हुआ। तब अपना मार्ग महाराजा की सेना के सामने से बदल कर उज्जैन के पास अपना मुकाम किया। — मा. इ. प्र. भा. पृ. २२१।

पृ. २८ (१) चौरनरायणो — उज्जैन से ४ कोस दूर नरायना चोर नाम का नाला। महाराजा जसवंतसिंह ने इसी स्थान पर अपना सैनिक शिविर बनाया था।

— रा. ख्यात।

पृ. २८ (२) अस्टम तिथि — वैसाख कृष्णा ८, गुरुवार संवत् १७१५ धरमतपुरा के युद्ध का प्रथम दिन। इसी तिथि को उभय-पक्षीय सेनाओं ने अपने अपने मोरचे तैयार किये थे।

पृ. ३१ सतरा सै संमत्त -- धरमतपुरा के युद्ध की तिथि संवत् १७१५, वैसाख कृष्णा ९ शुक्रवार।

पृ. ३५ श्रोमनि — गौड़ वीर अर्जुन के सिलहखाने का अधिकारी शिवमणि जोशी (ब्राह्मण)। शिवमणि खेमराज जोशी का पुत्र था। वह भी अपने स्वामी अर्जुन गौड़ के साथ धरमतपुरा में विपक्षी सेना का संहार करता हुआ खेत रहा था।

पृ. ३६ बीरभद्र — राजा गोपालदास गौड़ का छोटा पुत्र और राजा विट्ठलदास गौड़ का छोटा भाई वीरभद्र गौड़। वीरभद्र भी धरमतपुरा के युद्ध में भेजी गई शाही पक्षीय सेना में सम्मिलित था। अपने वीर नायक अर्जुन गौड़ और अन्य अनेक गौड़ योद्धाओं एवं मनसबदारों सहित वह भी धरमतपुरा की रणभूमि में वीरगति को प्राप्त हुआ। उसके मनसब और जागीरी स्थान की जानकारी प्राप्त नहीं है।

पृ. ३७ मुरारि — राव मुरारिदास सोलंकी। तब उसके वतन में मेवाड़ प्रदेश के मांडल परगने का खैराड़ भूभाग था। खैराड़ पर अधिकार रहने के कारण सोलंकी खैराड़े (खैराड़ के स्वामी) कहलाते हैं। तब खैराड़ भूभाग की राजधानी जहाजपुर थी। मुरारिदास सोलंकी भी अपने नौ सेना नायकों सहित अर्जुन गौड़ के साथ की सेना में लड़ता हुआ धराशायी हुआ। मुरारिदास के मनसब की जानकारी उपलब्ध नहीं है।

पृ. ३८ (१) प्रथीराज — रावत लक्ष्मीदास का पुत्र रावत पृथ्वीराज किस स्थान का स्वामी था, ख्यातों से कोई प्रमाण नहीं मिलता। वह अपने भाई आशकर्ण सहित धरमतपुरा के युद्ध में शाही पक्ष की ओर से लड़ता हुआ खेत रहा था।

(२) आसकरण — रावत लक्ष्मीदास का पुत्र और रावत पृथ्वीराज का लघु भ्राता आशकर्ण। आशकर्ण के विषय में भी तत्कालीन ख्यात ग्रंथों में कोई आधार नहीं मिलता। वह अपने भाई रावत पृथ्वीराज के साथ ही धरमतपुरा के रणक्षेत्र में काम आया था।

पृ. ३९ (१) राजसिंघ — गौड़ों की केहलनोत शाखा के प्रतापसिंह गौड़ का पुत्र राजसिंह गौड़। राजसिंह के विषय में भी सम्बन्धित इतिहास ग्रंथों में कोई सामग्री प्राप्त नहीं है। वह भी धरमतपुरा के युद्ध में अर्जुन गौड़ के नेतृत्व में लड़ता हुआ खेत रहा था।

(२) मानसिंघ — संभवत: पृ. १२ छं. सं. २८ टिप्पणी का मालवा के आसेरगढ़ का दुर्गपाल मानसिंह गौड़। उसके पिता का नाम सुमेरसिंह था। वह भी धरमतपुरा में वीरगति को प्राप्त हुआ था।

(३) सांईदास — गौड़ जसराज भाखरोत (भाखरसिंह का वंशज) का पुत्र सांईदास गौड़। सांईदास का परिचय ख्यातों आदि में प्राप्त नहीं है। वह भी इस युद्ध में अन्य गौड़ योद्धाओं के साथ शाही सेना के पक्ष में लड़ कर खेत रहा था।

पृ. ४० (१) कुसळसिंघ — गौड़ क्षत्रियों की भाखरसिहोत शाखा का योद्धा कुशलसिंह गौड़। कुशलसिंह भी अपने अनेक सजातीय वीरों के साथ धरमतपुरा के रणक्षेत्र में शाही पक्ष के समर्थन में लड़ता हुआ खेत रहा था। उसके भी निवास स्थान, जागीरी भूभाग और मनसब आदि की जानकारी उपलब्ध नहीं है।

पृ. ४० (२) इंद्रभांण — प्रसिद्ध गौड़ नेता राजा गोपालदास गौड़ के छोटे भाई सुन्दरदास गौड़ का पुत्र इन्द्रभानु गौड़। यद्यपि सम्बद्ध ख्यात-ग्रंथों में इन्द्रभानु का उल्लेख प्राप्त नहीं है। किन्तु राजा शिवराम गौड़ के साथ की सेना में उदयभानु गौड़ योद्धा का होना ख्यातों में प्राप्त है। उदयभानु का मनसब चार सदी दो सौ सवार का था।

संभवतः इन्द्रभानु और उदयभानु एक ही योद्धा का नाम है। वह भी धरमतपुरा में वीरगति को प्राप्त हुआ। — मा. प. वि., रा. ख्यात. ग।

पृ. ४१ (१) **किसनदास** — गौड़ों की पातळोत (प्रतापसिंहोत) शाखा के राघवदास गौड़ का पुत्र किशनदास गौड़। किशनदास अर्जुन गौड़ के सेनानायकों में से था। वह भी अपने स्वामी अर्जुन गौड़ के साथ धरमतपुरा में लड़ता हुआ मारा गया था।

(२) **नरहरदास** — जसवन्तसिंह गौड़ का पुत्र नरहरिदास गौड़। नरहरिदास मारवाड़ की नागौर सरकार के परगने मारोठ (गौड़ावाटी) के घाटवा, झूंथर, खोरण्डी आदि में से किसी एक ठिकाने का स्वामी था। वह भी धरमतपुरा के युद्ध में लड़ कर खेत रहा था।

(३) **नरसींघ** — टिप्पणी पृ. संख्या १२ छं. सं. २८ के मानसिंह गौड़ का पुत्र नृसिंहदास गौड़। वह भी धरमतपुरा के युद्ध में सम्मिलित था। इसके अतिरिक्त कृपाराम गौड़ का चचेरा भाई हीरामणि गौड़, मनसब दो सदी चालीस सवार; हरिभानु गौड़ मनसब तीन सदी, एक सौ सवार; सदाराम गौड़ मनसब चार सदी, डेढ सौ सवार; राजा शिवराम का पुत्र सूरजमल गौड़ मनसब तीन सदी, एक सौ सवार और शूरसिंह गौड़ मनसब दो सदी, बीस सवार आदि कई मनसबदार भी धरमतपुरा के युद्ध में शामिल थे। — मा. प. वि., रा. ख्यात ग।

(४) **जगभांण**—खैराड़ (परगना जहाजपुर) के किसी ठिकाने के दीपचन्द सौलंकी का पुत्र जगभानु सौलंकी। वह अर्जुन गौड़ की सेना में नियुक्त था। जगभानु भी धरमतपुरा के युद्ध में वीर गति को प्राप्त हुआ।

पृ० ४२ (१) **किसोर**—कर्मसिंह का पुत्र राव किशोरसिंह राजावत कछवाहा। वह आमेर (जयपुर राज्य) के राजावाटी भूभाग के किस ठिकाने का स्वामी था, स्पष्ट नहीं होता। वह भी धरमतपुरा के युद्ध में अर्जुन गौड़ की सेना में था। किशोरसिंह राजावत के मनसब की परिचिति भी प्राप्त नहीं है।

(२) **बैरियसाल** — खैराड़ प्रान्त के स्वामी मुरारिदास सौलंकी का सेनानायक बैरीशाल खीची (चौहान)। बैरीशाल खीची के ठिकाने आदि की निश्चित जानकारी प्राप्त नहीं है। सम्भवतः वह मालवा के खीचीवाड़े के राज्य राघोगढ़, गढ़ा, खिलचीपुर आदि में से किसी ठिकाने का रहा हो। वह भी धरमतपुरा के युद्ध में सम्मिलित था।

(३) **कुम्भक्रन्न**—खीचीवाड़े (मालवान्तर्गत) के भगवानदास खीची का वंशधर कुम्भकर्ण खीची (चौहान)। कुम्भकर्ण के वतन और मनसब की जानकारी प्राप्त नहीं है। वह मुरारिदास सौलंकी के साथ की सेना में था। वह भी धरमतपुरा में शाही पक्ष की तरफ से लड़ता हुआ काम आया था।

(४) **मोहणदास**—जहाजपुर (रामपुरा वालों के पूर्वज) दुर्गभानु चन्द्रावत सीसोदिया के वंशज केशरीसिंह का पुत्र मोहनदास चन्द्रावत सीसोदिया। वह भी धरमतपुरा में लड़ता हुआ मारा गया था।

(५) जयरांम—भैरवदास का पौत्र और कल्याणदास का पुत्र जयरामदास पंवार क्षत्रिय। जयरामदास के निवास स्थान और शाही सेना के पद की जानकारी प्राप्त नहीं है। वह भी धरमतपुरा के युद्ध में शाही पक्ष की ओर से लड़ता हुआ काम आया।

पृ० ४३ (१) राघवदास—खैराड़ प्रान्त के सौलंकी क्षत्रिय कल्याणदास का पौत्र और खेतसिंह का पुत्र राघवदास सौलंकी। राघवदास भी धरमतपुरा के युद्ध में शाही सेना की ओर से लड़ कर काम आया था।

(२) मनरांम—मालव प्रदेश के पंवारों के प्रसिद्ध राज्य धार का स्वामी मनराम पंवार क्षत्रिय। उसके पिता का नाम बुद्धिसेन था। वह भी विद्रोही शाहजादों के विरुद्ध धरमतपुरा में लड़ता हुआ वीरगति को प्राप्त हुआ था। उसके मनसब आदि की परिचिति नहीं है।

(३) भीमेणि—अजमेर प्रान्त के गौड़ों की खोखर शाखा के ताजखांन गौड़ का पौत्र भीमसिंह गौड़। वह भी अपने पिता सहित धरमतपुरा के युद्ध में सम्मिलित हुआ और उसी युद्ध में वीरता पूर्वक लड़ कर मारा गया।

(४) कुम्भक्रन—चूंडा खवास का पुत्र कुम्भकर्ण खवास। वह राव मुरारिदास सौलंकी का सेवक था। वह भी धरमतपुरा के युद्ध में अपने स्वामी राव मुरारिदास के साथ ही लड़ता हुआ काम आया।

(५) महेस—प्रस्तुत बिन्है रासौ का कर्त्ता कवि महेशदास राव।

पृ० ४८ स्याम—पुष्कर (अजमेर) के पास खोहरी ग्राम के दसोन्धी केशवदास राव का पुत्र श्यामदास दसोन्धी। श्यामदास स्वयं अच्छा कवि, वक्ता और योद्धा था। वह भी अपने आश्रयदाता अर्जुन गौड़ के साथ ही लड़ता हुआ धरमतपुरा के युद्ध-स्थल में धराशायी हुआ था।

पृ० ५० (१) सोमदत्त—सोमदत्त द्विज (ब्राह्मण) किस स्थान का था, ख्यातों से स्पष्ट नहीं होता है। सम्भवतः वह अर्जुन गौड़ का सेवक था और अपने स्वामी के साथ ही धरमतपुरा में मारा गया था। उसके पितामह का नाम जैसा (जसराज) था।

(२) तेजसी—भाट (राव) जाति का दसोन्धी तेजसी। वह गौड़ों का आश्रित था। धरमतपुरा के युद्ध में उसने भी भाग लेकर वीरता प्रदर्शित की थी। उसका छोटा भाई हरजी भी उसके साथ इस युद्ध में शामिल था।

(३) हरजी—तेजसी भाट (राव) का छोटा भाई हरजी भाट। हरजी गौड़ों का आश्रित था। धरमतपुरा के युद्ध में वह भी गौड़ वीरों की सेना के साथ था।

(४) मेघौ—अर्जुन गौड़ के भोजनालय का दारोगा (अधिकारी) बारी जाति का मेघराज। वह अर्जुन गौड़ का विश्वस्त सेवक था। धरमतपुरा के युद्ध में वह भी अपने स्वामी के सामने वीरता प्रकट कर काम आया।

(५) नरो—अर्जुन गौड़ का सेवक नाई जाति का नरा। वह भी अपने स्वामी के साथ रणभूमि में अश्वारूढ़ होकर शत्रुओं से लड़ने गया और धरमतपुरा की रणभूमि में ही काम आया था।

पृ० ५२ (१) सूर—जोधपुर के राजा शूरसिंह राठौड़। राजा शूरसिंह राजा गजसिंह के पिता और महाराजा जसवन्तसिंह राठौड़ जोधपुर के पितामह थे। यहाँ सूरहर शब्द महाराजा जसवन्तसिंह के लिए प्रयुक्त हुआ है।

—मा० ई० प्रथम भाग पृ० १८१।

(२) मधुकरी—बूंदी के राव सरबुलंद राय रतनसिंह हाडा का छोटा पुत्र राव माधवसिंह हाडा। राव माधोसिंह ने अपने पिता के जीवन काल में ही उल्लेखनीय शाही सेवाएं कर कोटा का स्वतन्त्र राज्य प्राप्त किया था। धरमतपुरा के वीर योद्धा राजा मुकन्द सिंह, कन्हीराम, मोहनसिंह, जूझारसिंह और किशोरसिंह.राव माधवसिंह के पुत्र थे।

—रा० ई० द्वि० भा० पृ० ४०-३७.

(३) खुरम्म—बादशाह अकबर का पौत्र और जहांगीर का पुत्र शाहजादा खुरंम। वह दिल्ली के सिंहासन पर बैठने पर बादशाह शाहजहाँ के नाम से इतिहास में प्रसिद्ध हुआ। वह ६ फरवरी १६२८ ई० में आगरे में सिंहासनारूढ़ हुआ था। धरमतपुरा और धौलपुर के युद्धों में विजय प्राप्त करने के बाद औरंगजेब ने उसे आगरा के किले में कैद कर दिया था। अन्त में २२ जनवरी, १६६६ ई० में बन्दी अवस्था में ही उसका देहावसान हुआ।

(४) रतनं—बूंदी रियासत का स्वामी सरबुलन्दराय राव रतनसिंह हाडा। राव रतनसिंह हाड़ा अपने समय का प्रसिद्ध योद्धा और कुशल शासक था। उसने शाही सेवा में रहकर अनेक युद्धों में भाग लिया था। दक्षिण में बुरहानपुर पर विजय प्राप्त कर उसने यश कमाया था। बादशाह शाहजहां के चौथे वर्ष में बालाघाट के पड़ाव पर उसकी मृत्यु हो गई। उस समय उसका पाँच हजारी, पाँच हजार सवार का मनसब था। राव रतनरी वेलि, मु० द० भाग १ पृ० ३१७-२०

(५) भोज—बूंदी के राव सुर्जन का छोटा पुत्र राव भोज हाड़ा। राव भोज बड़ा स्वाभिमानी और जातीय गौरव का रक्षक तथा मर्यादा-पालक राजा था। उसे बादशाह अकबर के २२ वें वर्ष में बूंदी का अधिकार मिला था। उसने शाही सेवा में रहकर अनेक युद्धों में भाग लिया था। सन् १६०८ ई० में उसकी मृत्यु हो गई।

—मु० द० भाग १-पृ० २७३-७४

पृ० ५३ दूदरज—बूंदी के शासक राव सुर्जन हाड़ा का जेष्ठ पुत्र राव दूदा हाडा। वह अपने पिता के शासनकाल में उसकी अनुपस्थिति में बूंदी का राज्य-कार्य सम्हालता था। पर राव सुर्जन उस पर नाराज रहता था। सुर्जन की इच्छानुसार उसकी मृत्यु के बाद उसके छोटे भाई भोज ने उससे बूंदी छीन ली, तब वह बागी हो गया और मेवाड़ की सहायता से लूट-मार करता रहा। अन्त में सन् १६४२ ई० में मालवा में मर गया।

—रा० ई० द्वि० भा० पृ० ६२-६३

पृ० ६० (१) बीठल—राजा गोपालदास जोगीदासोत गौड का द्वितीय पुत्र राजा विट्ठलदास गौड़। राजा विट्ठलदास गौड़ बादशाह शाहजहाँ का विश्वस्त और प्रिय सेनानायक था। एक समय उसके वतन में मालपुरा का परगना था। फिर उसे रणथंभौर की

फौजदारी और प्रान्त शाहजहाँ ने प्रदान किया था। उसने बुन्देलखण्ड के राजा जूझारसिंह बुन्देला, खानेजहाँ लोदी, परेन्दा दुर्ग का युद्ध, शाहजी भोंसला के विरुद्ध युद्ध, बदख्शां की चढ़ाई आदि युद्ध में बड़ी वीरता एवं साहस का परिचय दिया था। बादशाह शाहजहाँ उसकी सैनिक सेवाएं और स्वामि-धर्म पर उससे बड़ा खुश रहा। वह सन् १६५१ ई० में मृत्यु को प्राप्त हुआ।—मु० द० भाग १ पृ० २३८–४१।

(२) **बीठल**—पाली के स्वामी ठाकुर गोपालदास चाँपावत का पुत्र विट्ठलदास चाँपावत। विट्ठलदास चाँपावत कुल आठ भाई थे, जो आठों ही विभिन्न आठ युद्धों में लड़ कर मारे गये थे। विट्ठलदास महाराजा जसवन्तसिंह की सेना में था। धरमतपुरा के युद्ध के समय उसके पट्टे में बिलाड़ा तहसील का रणसी गाँव था। वह भी धरमतपुरा के युद्ध में वीरगति को प्राप्त हुआ।—वचनिका र० म० टि० पृ० १३६।

पृ० ६६ (१) **अम्मेरस**—धरमतपुरा के युद्ध में नियत अमरसिंह नामक दो कछवाहा नरेशों का कवि ने नामोल्लेख किया है, जिनमें एक तो पृ० १० टिप्पणी सं० १४ का राजा अमरसिंह कछवाहा नरवर का शासक था। दूसरे अमरसिंह को कवि ने रामगढ़ का बतलाया। जयपुर-राज्य में रामगढ़ नाम के दो तीन ठिकाने थे, जिनके इतिहास के अभाव में यह स्पष्ट नहीं होता कि दूसरा अमरसिंह कहाँ का था। महाराजा जसवन्तसिंह जोधपुर की सेवा में एक समय अलबत्ता दांता-रामगढ़ परगने का ठाकुर अमरसिंह शेखावत कछवाहा दाँता का रहा था। वह महाराजा जसवन्तसिंह का साला और राजा वैरीसिंह खण्डेला का द्वितीय पुत्र था। किन्तु निश्चयपूर्वक नहीं कहा जा सकता कि वह धरमतपुरा के युद्ध में उपस्थित था। जोधपुर हकूमत की बही, नैणसी री ख्यात भा० १ पृ० ३२२

(२) **फतो**—शाहपुरा के शासक सुजानसिंह सीसोदिया का जेष्ठ राजकुमार फतहसिंह सीसोदिया। फतहसिंह अपने पिता और अपने दो छोटे भाई दौलतसिंह मन्सब तीन सदी और रामचंद्र सहित धरमतपुरा के युद्ध में सम्मिलित था। फतहसिंह अपने पिता सुजानसिंह और भाई रामचंद्र सहित इस युद्ध में मारा गया और दौलतसिंह घायल होकर बच गया। इस युद्ध में शाहपुरा की सेना के ५३३ सैनिक मारे गए थे। फतहसिंह तब पाँच सदी सवार का मन्सबदार था। उस का चाचा वीरमदेव सीसोदिया भी शाही सेवा में था। वीरमदेव धोलपुर के युद्ध में दाराशिकोह के पक्ष में लड़ा था। तदनन्तर वह औरंगजेब की सेवा में रहा। वह महाराजा जसवंतसिंह जोधपुर का ससुर था। वीरमदेव तीन हजारी जात एक हजार सवार का मन्सबदार था। उसका संवत् १७२५ के आस-पास देहान्त हुआ।

—उदयपुर का इतिहास २ जिल्द पृ. ९३७, शाहपुरा की ख्यात भाग १

पृ. ७३ **भगवंतसींग**—बून्दी के राव शत्रुशाल हाडा का पुत्र राजकुमार भगवन्तसिंह हाडा। वह शाहजादा औरंगजेब की सेना में था। उज्जैन और धोलपुर के दोनों युद्धों में उसने औरंगजेब के पक्ष में युद्ध किया था। जब औरंगजेब सिंहासनारूढ़ हुआ तब उसने भगवन्तसिंह को राजा की पदवी और मालवा का मऊ का परगना प्रदान कर सम्मानित किया था। —रा. इ. द्वि० भा० पृ. ७२–७३

पृ. ७४ (१) **केसरीसिंघ**—बीकानेर के राजा कर्णसिंह का द्वितीय पुत्र राजकुमार

केसरीसिंह राठौड़ । वह खण्डेला के राजा द्वारिकादास शेखावत का दौहित्र था । उज्जैन और धौलपुर के युद्धों में राजकुमार केशरीसिंह शाहजादा औरंगजेब की सेना में रह कर लड़ा था। बादशाह औरगजेब उसकी वीरता और निर्भीकता का बड़ा सम्मान करता था। वह जैसा वीर था वैसा ही उदार भी था । तब वह अढ़ाई हजारी मन्सबदार था।

—राजस्थानी बात संग्रह पृ. १७०–१७५

(२) चिकनखान—सफशिकनखां का असली नाम मुहम्मद ताहिर था। शाहजहाँ के शासन काल के अन्तिम वर्षों में वह दक्षिणी सूबे में तोपखाने का दारोगा नियुक्त किया गया था। जब शाहजादा औरंगजेब ससैन्य दिल्ली पर अधिकार करने के लिए रवाना हुआ तब नर्मदा नदी पार करने पर मुहम्मद ताहिर को सफशिकन खां का खिताब दिया गया था। तब उसका मनसब अढ़ाई हजारी जात, दो हजार सवार का था। —आ. ना. पृ. ५३

(३) बहादरखाँ—बहादुरखाँ का असली नाम मीर मलिक हुसैन था । वह प्रारंभ से ही शाहजादा औरंगजेब के साथ में रहा था। शाहजहाँ के जुलूस सन् २७ में उसे हण्डिया होशंगाबाद की फौजदारी दी गई थी । कल्याण के घेरे के समय उसने नैलंग के किले पर अधिकार कर लिया था । सन् १६५८ ई. में उसे बहादुरखां का खिताब दिया गया । धरमत-पुरा के युद्ध में वह औरंगजेब की सेना के हरावल में नियुक्त हुआ था ।

—आ. ना. (अंग्रेजी) भा. १ पृ. ७८३–८४

(४) अलयाखांन—मीर तुजुक अल्लाहयार खाँ । वह औरंगजेब का उसकी शाहजादगी के समय से ही सेवक था। धरमतपुरा के युद्ध में वह भी सेना के हरावल भाग में शामिल था। औरंगजेब के शासन के पांचवे वर्ष में वह उन्नति को प्राप्त होकर डेढ़ हजारी जात पन्द्रह सौ सवार का मनसबदार बनाया गया था । छठे वर्ष में सन् १६६३ ई० में मर गया।

—मु. द. भा. २. पृ. ३२५

(५) हमीर—सीसोदिया हम्मीरसिंह राणावत। कविराजा श्यामलदास ने वीर विनोद द्वि. भा. पृ. ३४१ पर हम्मीरसिंह को देवगढ़ वालों का बड़ा (पूर्वज) लिखा है, जो ठीक नहीं है । देवगढ़ वाले तो चूण्डावत सीसोदिया हैं और यह राणावत सीसोदिया था। वह भी धरमतपुरा में औरंगजेब की सेना में था । उस समय उसका मनसब पांच सौ जात, तीन सौ सवार का था। —वीर विनोद द्वि. भा. पृ. ३७८

(६) सेख मीरक—काजी असलम का भतीजा मीरक शेख हरवी। वह जहाँगीर के शासन-समय में खुरासान से भारत आया था । वह बड़ा विद्वान् और सुशिक्षित था । बादशाह शाहजहां के शाहजादों की शिक्षा का भार उसे सौंपा गया था। शाहजहां के शासनकाल में उसे अर्ज मुकर्रर और बेगम साहिबा का दीवान का पद मिला था। औरंगजेब ने बादशाह बनने पर उसे तीन हजारी के मनसब पर नियुक्त किया था । धरमतपुरा के युद्ध में वह औरंगजेब की सेना में था । सन् १६६१ ई. में उसकी मृत्यु हो गई।

—मु. द. भाग ४, पृ. २६५–६६ ।

पृ. ८२ खांनजिहां—दौलतखाँ लोदी शाहू खेल का पुत्र खानजहाँ लोदी । उसका जन्म-नाम पीरखाँ था । अपनी जवानी के प्रारंभ में शाहजादा सुलतान दानियाल का अन्तरंग

मित्र बन गया था। उसकी मृत्यु के बाद जहाँगीर के दरबार का खास दरबारी बना। तब उसे तीन हजारी मनसब और सलावतखाँ की पदवी मिली। तदनन्तर खानजहां की बड़ी पदवी प्राप्त हुई। बादशाह उस पर अधिक भरोसा करता था। उसे बादशाह ने अनेक जिम्मेदारी के कार्यों और युद्धों में भेजा था, जहाँ उसने बड़ी योग्यता और बहादुरी का परिचय दिया था। जहांगीर के समय में वह बारह हजारी के मनसब तक आसानी से पहुँच गया था। शाहजहाँ के बादशाह बनने पर वह उससे शंकावश बागी हो गया। तदनन्तर अनेक स्थानों पर शाही सेना से मुकाबला करता हुआ वह लड़ता रहा। अन्त में कालिंजर के युद्ध में माधवसिंह हाडा के बाण से घायल होकर गिर गया। अब्दुल्लाखां जख्मी ने उस का सिर काट कर दरबार में भेजा। उसका बड़प्पन बादशाह शाहजहां द्वारा सैयद खानजहाँ को कहे गए इस वाक्य से प्रकट हो जाता है—यह पदवी उस आदमी की है, जिसकी हम और सभी शाहजादे कृपादृष्टि चाहते थे और वह बेपरवाही से किसी से नहीं बोलता था।

—मु. द. भाग ३, पृ. १३७-५२, रा. इ. द्वि. भा. पृ. १११।

पृ. ८४ (१) **कलियांण**—पंवार शाखा का क्षत्रिय कल्याणसिंह। उसके वतन तथा जागीर की जानकारी प्राप्त नहीं है। संभवतया वह राव मुकन्दसिंह हाडा का सामन्त था। वह भी धरमतपुरा के युद्ध में वीरगति को प्राप्त हुआ।

(२) **दळथंभ**—यहाँ राव-पदधारी किस दलथंभ राठौड़ का उल्लेख कवि ने किया है, यह निश्चयपूर्वक नहीं कहा जा सकता। वह औरंगजेब के विरुद्ध शाहजादा दाराशिकोह के पक्ष की सेना का योद्धा था।

(३) **हरियंद**—भाट (राव) जाति का हरिदास कौन था, स्पष्ट नहीं होता है। संभवतः पृ ५० टिप्पणी २ का हरजी भाट ही हरियंद भाट होगा। वह भी हाडा वीर मुकन्दसिंह कोटा के साथ में युद्ध में मारा गया था।

पृ. ९५. **जगभांण**—मारवाड़ के मारोठ परगने के गौड़ों के ठिकाने पांचवो, पांचोतो, लूणवो, मीठड़ी और सरगोठ आदि में से किसी एक स्थान का स्वामी जगभानु गौड़। वह धरमतपुरा में विद्रोही शाहजादे औरंगजेब और मुराद की सेना से युद्ध करके मारा गया था।

—मा. ख्यात, रा. ख्यात ग.

पृ. १०० (१) **स्यांमदास**—भाट-जाति का श्यामदास राव। वह अजमेर-प्रान्त के गौड़ों का आश्रित और वहाँ के भाटों (रावों) का मुखिया था। वह भी धरमतपुरा के युद्ध में जूझता हुआ काम आया।

(२) **मलो**—बाघावत भाटों (रावों) का वंशज मालीराम राव। मालीराम स्वयं अच्छा कवि था। राजसिंह गौड़ पर रचित उसकी एक दवावैत प्राप्त है। वह भी धरमतपुरा में लड़ता हुआ मारा गया।

धौलपुर-युद्ध

पृ. १०८ **भाराथ सिंघ**—बून्दी के स्वामी और धौलपुर-युद्ध के प्रमुख हिन्दू-सेना-नायक राव छत्रसाल हाडा का सबसे छोटा पुत्र राजकुमार भारतसिंह हाडा। उस समय

उसकी पन्द्रह वर्ष की आयु थी। वह भी अपने पिता सहित धौलपुर के रणांगण में वीरगति को प्राप्त हुआ। रा. इ. द्वि. भा. पृ. ७२. बांकीदास री ख्यात पृ. १४६।

पृ १०९ (१) **महौक्कमं**—बूंदी के राव शत्रुशाल का छोटा भाई महाराज महोकम-सिंह हाडा। वह राजकुमार गोपीनाथ का पुत्र और राव रतनसिंह का पौत्र था। महोकम-सिंह भी अपने दोनों कुमारों जोरावर सिंह और नाहर सिंह सहित धौलपुर में शाही पक्ष की ओर से लड़ता हुआ वीरगति को प्राप्त हुआ। वह कोटड़ियाद के आंतरदाह ठिकाने का स्वामी था।—रा. ई. द्वि. भा. पृ. ७२

(२) **गुमांन**—बून्दी के शासक राव रतन सिंह हाडा के द्वितीय राजकुमार इन्द्रशाल का पुत्र गुमान सिंह हाडा। कोटा का इन्द्रगढ़ ठिकाना उसका वतन था। इन्द्रशाल आठ सौ जात, चार सौ सवार का मनसबदार था। उसका उत्तराधिकारी गुमानसिंह हाडा धौलपुर के युद्ध में शाही पक्ष में लड़ कर खेत रहा था। मा. ख्यात.।

(३) **जोरार नाहर**—बून्दीनरेश राव शत्रुशाल के भाई महाराज महोकम सिंह हाडा के पुत्र जोरावर सिंह और नाहर सिंह। वे दोनों भाई भी धौलपुर के मैदान में शाहजादा दाराशिकोह के पक्ष में लड़ते हुए वीरगति को प्राप्त हुए। मा. ख्यात.

(४) **जगपत्ति**—गोविन्ददास गौड़ का पुत्र जगन्नाथसिंह गौड़। वह राव शत्रुशाल हाडा का सामन्त था। वह भी धौलपुर के युद्ध में मारा गया था।

(५) **सिवरांम**—खैराड़-प्रान्त के शिवराम सौलंकी का परिचय प्राप्त नहीं है। संभवतः वह राव शत्रुशाल हाडा का सेवक और सेना-नायक था। धौलपुर के युद्ध-वृत्तान्त की किसी भी ख्यात में उसका उल्लेख उपलब्ध नहीं है। एक अन्य शिवराम का वर्णन अवश्य मिलता है जो राजा बलिराम गौड़ गोपालदासोत का पुत्र था। वह उज्जैन के युद्ध में घायल होकर बच गया था। धौलपुर में वह भी अपने भाई पोखर दास सहित लड़ कर मारा गया था। वह अढ़ाई हजार जात, अढ़ाई हजार सवार का मनसबदार था। उसके साथ में उसका पुत्र सूरजमल तीन सदी एक सौ सवार और सदाराम गौड़ चार सदी डेढ़ सौ सवार के मनसबदार भी वीरगति को प्राप्त हुए थे। मा. प. विगत.

पृ ११० **खांन रुसतम**—रुस्तमखाँ बहादुर फिरोज जंग। वह बादशाह शाहजहाँ के शासनकाल के बड़े सेना-नायकों में था। शाही सेवा में रह कर उसने अनेक युद्धों में भाग लिया था। शाहजादों के विद्रोह के समय वह काबुल के सैनिक शासक के पद पर नियुक्त था। शाहजादा दाराशिकोह के बुलावे पर वह द्रुतगति से काबुल से आगरा आकर पहुँचा और धौलपुर के युद्ध में शाहजादा सिपहर शिकोह के साथ शाही सेना के हरावल के वाम भाग में नियुक्त हुआ। वहाँ वह बड़ी दिलेरी के साथ लड़ता हुआ मारा गया। तब उसका मनसब सात हजारी जात, छह हजार सवार का था।

—मु.द. भा. ४, पृ. १२१, वि. विनोद द्वि. भा. पृ. ३५६, ३६३.

पृ. ११४ **रांमसी**—जोधपुर के राव चन्द्रसेन का पौत्र और राव कर्मसेन का पुत्र राव रामसिंह राठौड़ वह महाराणा उदयपुर का भांनजा था। महाराणा की सेवा में रह कर

उसने गुजरात के राज्य ईडर के शासक को हराया था और प्रतापगढ़ के रावत जसवन्तसिंह को भी युद्ध में पराजित कर मार दिया था। वह बड़ा वीर और उदार था। उदारता के कारण वह इतिहास में रामसिंह रोटला के नाम से विख्यात रहा है। धौलपुर के युद्ध में वह भी दाराशिकोह के प्रतिद्वंद्वियों से लड़ कर मारा गया।

—मु. द. भाग १ पृ. ३४६–४७. वां. ख्यात. पृ. ८५।

पृ. ११५ रूपसिंह—राजस्थान के किशनगढ़ राज्य का स्वामी राजा रूपसिंह राठौड़। वह बादशाह शाहजहां के शासनकाल में बल्ख, कंधार और चित्तौड़ के घेरे तथा युद्धों में वीरता प्रकट कर प्रसिद्धि प्राप्त कर चुका था। राजा रूपसिंह भी धौलपुर के युद्ध में अपरिमित पराक्रम प्रकट कर वीरगति को प्राप्त हुआ। उस समय उसका चार हजारी जात, अढ़ाई हजार सवार का मनसब था। मु. द भाग १, पृ. ३६८-७०, वां. ख्यात पृ. ८१.

पृ. ११६ भीमाळ—राजा विट्ठलदास गौड़ का तीसरा पुत्र भीमसिंह गौड। वह धरमतपुरा के युद्ध में घायल होकर बच गया था। वह भी धौलपुर के युद्ध में लड़ कर शाही पक्ष की ओर से वीरगति को प्राप्त हुआ। तब उसकी जागीर में रणथंभोर सरकार का बोंळी ठिकाना था।—मा. प. विगत, मु. द. भाग १ पृ. २४२।

पृ. ११९ (१) केसरीसींघ—मोटे राजा उदयसिंह जोधपुर के तृतीय पुत्र भगवानदास राठौड़ का पुत्र केसरीसिंह राठौड़। वह धौलपुर के युद्ध में शाहजादा दाराशिकोह की निजी सेना में नियुक्त था। वह भी धौलपुर के युद्ध में खेत रहा था। मा. ई. प्रथम भाग पृ. १७८।

(२) नाहर—यहां कवि ने नाहरखांन सैयद नाम के किस योद्धा का उल्लेख किया है, निश्चयपूर्वक नहीं कहा जा सकता है। वह दाराशिकोह की सेना का योद्धा था।

पृ. १२० (१) अलियार खांन—यहां अल्लाहयार खाँ मीरतुजुक जो धरमतपुरा में औरंगजेब के साथ था, से भिन्न किस अल्लाहयार खाँ से कवि का प्रयोजन है, निश्चयपूर्वक नहीं कहा जा सकता।

(२) रहमतुला—रहमतुला के विषय में भी कोई निश्चित जानकारी प्राप्त नहीं हुई है। वह धौलपुर के युद्ध में शाही सेना में सम्मिलित था।

(३) सत्रसाल—कछवाहों की नरूका-खांप का शत्रुशाल। वह अक्षयराज का पुत्र और चन्द्रभानु का पौत्र था। कछवाहों की ख्यात से स्पष्ट नहीं होता कि वह कहां का था। शत्रुशाल भी अपने भाई महासिंह सहित धौलपुर के युद्ध में शाही पक्ष में था।

(४) महासिंघ—कछवाहों की नरूका-शाखा के अक्षयराज का पुत्र और चन्द्रभानु का पौत्र महासिंह। उसके स्थान आदि की जानकारी उपलब्ध नहीं है। वह भी अपने भाई शत्रुशाल के साथ धौलपुर-युद्ध में नियुक्त शाही सेना में था।

(५) नरपाल—चौहानों की सांचोरा-शाखा के बल्लू का पुत्र नरहरदास चौहान। नरहरदास के वतन में जोधपुर का सांचोर परगना था। वह भी धौलपुर के युद्ध में शाही सेना में था और युद्ध में मारा गया था। नरपाल के पिता बल्लू का मनसब सात सौ जात, चार सौ सवार का था।—वी. विनोद द्वि. भा. पृ. २०६, नै. ख्यात. भा. १ पृ. २३४

(६) रणछोड़ि—मानसिंह राठौड़ का पुत्र रणछोड़दास राठौड़। वह किशनगढ़ के राजा रूपसिंह राठौड़ का सेना-नायक था। रणछोड़दास भी अपने स्वामी राजा रूपसिंह के साथ युद्ध क्षेत्र में वीरगति को प्राप्त हुआ। ख्यात. ग.

(७) सूजाणसींघ—सुजानसिंह राठौड़ किस स्थान का निवासी था, स्पष्ट नहीं होता। वह भी धौलपुर के युद्ध में शाही सेना में रह कर लड़ा था।

(८) रांम—आमेर (जयपुर) के प्रसिद्ध कछवाहा-नरेश मिर्जा राजा जयसिंह के जेष्ठ पुत्र राजकुमार रामसिंह कछवाहा। रामसिंह अपने भाई कीर्त्तिसिंह सहित धौलपुर के युद्ध में शाही सेना में नियुक्त था। तब उसका मनसब तीन हजारी जात. दो हजार सवार का था। मिर्जा राजा जयसिंह के देहावसान के बाद वह आमेर के सिंहासन पर बैठा था। छत्रपति शिवाजी मरहठा को औरंगजेब की कैद से निकल जाने का अवसर प्रदान करने का श्रेय राजकुमार रामसिंह को ही है। वीर विनोद द्वि. भा. पृ. ३६६, कछवाहों के वीरगीत।

(९) कीरत्तीसींघ—आमेर के कछवाहा-नरेश मिर्जा राजा जयसिंह का कनिष्ठ राजकुमार कीर्त्तिसिंह कछवाहा। वह भी धौलपुर के युद्ध में नियुक्त शाही सेना में था। तब उसकी जागीर में मेवात (अलवर) का इलाका और कांमां खोहरी का परगना था। वह एक हजारी जात, नौ सौ सवार का मनसबदार था। कछवाहों की ख्यात.

(१०) कुसळौ—राजकुमार रामसिंह कछवाहा आमेर का सेनानायक कुशलसिंह कछवाहा। वह अपने पुत्र कनकसिंह सहित धौलपुर के युद्ध में नियुक्त था। कुशलसिंह धौलपुर में घायल होकर बच गया था। तदनन्तर वह बीकानेर के राजा अनूपसिंह के भाई पदमसिंह राठौड़ के साथ दक्षिण में संवत् १६४० में सांवतराम जादवराय दक्षिणी के मुकाबले में युद्ध करता हुआ वीरगति को प्राप्त हुआ। —रा. बात संग्रह पृ. १८६–८७

(११) कनको--कुशलसिंह कछवाहा का पुत्र कुंवर कनकसिंह कछवाहा। वह भी धौलपुर के युद्ध में नियुक्त राजकुमार रामसिंह आमेर की सेना में सम्मिलित था।

(१२) दाऊदखांन — दाऊदखाँ कुरेशी का पुत्र शेख दाऊद। वह शाहजादा दाराशिकोह की सेवा में रहकर उन्नति को प्राप्त हुआ था। शाहजहाँ के शासन के ३० वें वर्ष में मथुरा, महावन, जलेसर तथा अन्य महालों का फौजदार नियुक्त हुआ था। धौलपुर के युद्ध में वह राव शत्रुशाल हाडा बूंदी के साथ शाही सेना के हरावल में नियत हुआ था। औरंगजेब के बादशाह बनने पर भी वह दाराशिकोह के साथ बना रहा। अन्त में भक्खर के पास से वह अलग होकर अपने देश हिसार फीरोजा चला गया। तदनन्तर औरंगजेब के दरबार में उपस्थित होने पर उसे चार हजारी जात, तीन हजार सवार का मनसब मिला। वह औरंगजेब की सेवा में रहकर अनेक युद्धों में शामिल हुआ तथा खानदेश, बरार और इलाहाबाद का प्रान्ताध्यक्ष भी रहा। आलमगीरी के २५ वें वर्ष में उसकी मृत्यु हुई।

—मु. द. भा. ३ पृ. ४०९–१२

(१३) नरपाल—मारवाड़ के गोड़ावाटी-प्रदेश के किसी ठिकाने का स्वामी नरपाल गोड़। वह राजा शिवराम गोड़ की सेना में था। धौलपुर में वह भी राजा शिवराम गोड़ के साथ खेत रहा था।

पृ. १३८ (१) खंगार—खंगार का नाम धौलपुर के युद्ध-वृत्तान्त की किसी भी ख्यात में नहीं मिला। संभवतया वह राजा रूपसिंह राठौड़ किशनगढ़ की सेना का योद्धा था।

(२) कम्म—जैतसिंह का पुत्र भाखरोत कर्मसिंह का परिचय भी उपलब्ध नहीं है।

पूर्व (बहादुरपुर) का युद्ध

पृ. १४३ राजसिंघ हाडा—बूंदी के स्वामी सरबुलंदराय राव रतनसिंह हाडा का छोटा द्वितीय पुत्र राजसिंह हाडा। वह बंगाल के सूबेदार शाहजादा शुजा की सेना में नियुक्त था और पूर्व (बहादुरपुर) के युद्ध में शुजा के साथ रह कर राजा जयसिंह कछवाहा और शाहजादे सुलेमानशिकोह के नेतृत्व में भेजी गई शाही सेना से लड़ा था। बां. ख्यात पृ १४६

पृ. १५१ (१) जसपत्ती—राजा अनिरुद्धसिंह गौड़ का भाई जसवन्तसिंह गौड़। वह भी अपने भाई राजा अनिरुद्धसिंह के साथ शाहजादा शुजा के विरुद्ध भेजी गई सेना में शामिल था।

(२) भाऊ—रतनसिंह का वंशज भावसिंह कहां का था, स्पष्ट नहीं होता। अनुमानतः वह बून्दी के राव शत्रुशाल हाडा का जेष्ठ राजकुमार भावसिंह हाडा था। भावसिंह राव रतनसिंह का प्रपौत्र था। वह बहादुरपुर के युद्ध में शाही सेना में सम्मिलित था।

(३) तेजा—जयपुर के बलभद्रोत कछवाहों के ठिकाने अचरोल का ठाकुर तेजसिंह बलभद्रोत कछवाहा। वह बहादुरपुर के युद्ध में मिर्जा राजा जयसिंह की सेना में नियुक्त था। वह भी शाहजादा शुजा के विरुद्ध शाही पक्ष की ओर से लड़ा था। उसके पिता का नाम कान्ह सह था।

(४) जोरावर—मिर्जा राजा जयसिंह कछवाहा का सेनानायक शिवब्रह्मपोता कछवाहा राव जोरावरसिंह। वह जयपुर के नींदड़ ठिकाने का स्वामी था। राव जोरावरसिंह भी बहादुरपुर में शादजादा शुजा के विरुद्ध लड़ा था।

(५) नवला—शक्तिसिंह का पुत्र नवलसिंह किस स्थान का स्वामी था, कोई स्पष्ट प्रमाण प्राप्त नहीं है। वह भी बहादुरपुर में भेजी गई शाही सेना में था।

(६) सकता—शक्तिसिंह का स्थान और जातीय परिचय अज्ञात है। वह भी शाही सेना में रहकर बहादुरपुर के युद्ध में शाहजादा शुजा के विरुद्ध लड़ा था।

(७) रुकमांगद—कुंवर रुक्मांगद गौड़ का परिचय भी उपलब्ध नहीं है। अनुमातः वह राजा अनिरुद्धसिंह गौड़ की सेना में था। उसने भी बहादुरपुर में शाहजादा शुजा के विरुद्ध भाग लिया था।

(८) अचला—अचलदास गौड़ के भी वतन और मनसब-प्रभृति की जानकारी प्राप्त नहीं है। संभवतया वह राजा अनिरुद्धसिंह की सेना में था। उसने भी बहादुरपुर के युद्ध में शाहजादा शुजा के विपक्ष में युद्ध किया था।

(९) किसोवर—किशोरसिंह के स्थान, जाति और मनसब आदि का परिचय अप्राप्त है।

पृ. १५२ (१) किसोर—उदयपुर से तीन मील दूर चिकलवास ग्राम का दसोंधी किशोर-दास राव। वह दासाजी राव (भाट) का पुत्र था। किशोरदास स्वयं डिंगल-साहित्य का

अच्छा विद्वान् कवि था। उसने राणा राजसिंह पर 'राजप्रकास' नामक एक खण्डकाव्य लिखा है। बहादुरपुर के युद्ध में वह राजा अनिरुद्धसिंह की सेवा में था। किशोरदास के तोप का एक गोला और तीन तीर लगे थे। —वरदा त्रैमासिक वर्ष ७ अंक २ पृ. ५७

(२) **सांवळदास**—भाट-जाति का श्यामलदास किस राजा के साथ की सेना में था और कहां का निवासी था आदि का कोई आधार नहीं मिलता। अनुमानतः वह किशोरदास राव का सम्बन्धी था।

पृ. १५३ (१) **हरदा**—जोगीदास गौड़ के छोटे पुत्र सुन्दरदास गौड़ का पुत्र हृदयराम गौड़। वह राजा अनिरुद्धसिंह गौड़ का निकटस्थ सम्बन्धी और उमराव था। वह भी बहादुरपुर के युद्ध में शाही पक्ष की सेना में था। —गौड़ों के वीरगीत, मा. प. विगत

(२) **सिवा**—शिवा अथवा शिवराम का परिचय प्राप्त नहीं हुआ। अनुमानतः वह राजा अनिरुद्धसिंह गौड़ की सेना का योद्धा था।

(३) **महेस**—महेशदास कहाँ का था, उसका भी कोई वृत्तान्त उपलब्ध नहीं हुआ। संभवतया वह गौड़-क्षत्रिय था और राजा अनिरुद्धसिंह की सेना में था।

(४) **रांम**—रामसिंह का भी सम्बन्धित ख्यात ग्रंथों में कोई उल्लेख प्राप्त नहीं है। अनुमानतः वह-नाथावत कछवाहा था और तब राजा जयसिंह की सेना में था।

—नै. ख्यात, भा. १ पृ. ३१०

(५) **डूंगरसींह**—डूंगरसिंह नामक योद्धा का नाम बहादुरपुर के युद्ध के योद्धाओं की किसी नाम-सूची में नहीं मिलता है।

(६) **केसवदास**—राजा शूरसिंह के पुत्र केशवदास का परिचय भी स्पष्ट नहीं है।

(७) **दवारा**—पातळ (प्रतापसिंह) का वंशज द्वारिकादास कहां का था, कोई आधार प्राप्त नहीं हुआ।

पृ. १५४ (१) जूझार—मालवा के धार-राज्य के परमारों के वंशज जूझारसिंह का भी बहादुरपुर के युद्ध में सम्मिलित शाही सेना के योद्धाओं की किसी सूची में नाम नहीं मिलता है।

(२) **जसौ**—यह जसवन्तसिंह राजा अनिरुद्धसिंह गौड़ के भाई पृ. १५१ छं. सं २९ टिप्पणी (१) का जसवन्तसिंह गौड़ ही है अथवा उससे भिन्न जसवन्तसिंह है, स्पष्ट नहीं होता है।

(३) **मोहकम्म**—मोहकमसिंह के भी वतन और मनसब आदि की कोई जानकारी ख्यातों से प्राप्त नहीं है।

(४) **क्रन**—यह कर्णसिंह भी किस स्थान का था, कोई संकेत ख्यातों में नहीं मिलता है।

(५) **क्रमसेनि**—कर्मसेन का भी वंश-परिचय और शाही वतन आदि की कोई जानकारी प्राप्त नहीं है।

(६) सुजांणहसिंघ—सुजानसिंह के भी वंश, स्थान और शाही मनसब आदि की कोई स्पष्ट जानकारी ख्यातों के आधार पर प्राप्त नहीं है ।

(७) डूंगर—डूंगरसिंह पृ. १५३ छं. सं. ३१ टि. (५) वाला ही डूंगरसिंह है अथवा कोई अन्य है , स्पष्ट नहीं होता है ।

पृ. १५५ (१) सूरसिंघ—शूरसिंह जयपुर-राज्य के कछवाहों के किस ठिकाने का स्वामी था, स्पष्ट नहीं होता । वह मिर्जा राजा जयसिंह का सामन्त और सेना-नायक था । वह भी बहादुरपुर के युद्ध में शामिल था ।

(२) महासिंघ—जयपुर-राज्य के प्रमुख ठिकाने मनोहरपुर शाहपुरा के राव लूणकर्ण शेखावत कछवाहा के पौत्र उग्रसेन का पुत्र महासिंह शेखावत । महासिंह अमरसर-वाटी परगने के दौराला ठिकाने का स्वामी और मिर्जा राजा जयसिंह कछवाहा का सेना-नायक था । वह भी बहादुरपुर के युद्ध में शाही पक्ष की सेना में सम्मिलित था । रा. ज. सरोज.

(३) फतैसिंघ—जयपुर राज्य के उनियारा संस्थान का स्वामी राव फतहसिंह नरूका कछवाहा । वह राव चन्द्रभानु का पुत्र था । बादशाह शाहजहा ने चन्द्रभानु को चार हजारी मनसब और शाही मुरातब प्रदान किया था । राव फतहसिंह मिर्जा राजा जयसिंह के साथ बहादुरपुर भेजी गई शाही सेना में सम्मिलित था । तब उसका मनसब सात सौ जात, तीन सौ सवार का था । ला. रा. भूमिका पृ. ३३, वीर विनोद द्वि. भा. पृ ३७६.

पृ. १५६ (१) मथुरो—मथुरादास कछवाहा मिर्जा राजा जयसिंह कछवाहा की सेना में था । वह बहादुरपुर के युद्ध में कछवाहों की सेना में रह कर लड़ा था । तदनन्तर वह कंधार की तरफ के किसी युद्ध में मारा गया था । नै. ख्या. भा. १ पृ. ३१०–११ ।

(२) मधकर—मथुरादास का भाई और हृदमाल का पुत्र माधोदास कछवाहा । वह भी बहादुरपुर के युद्ध में मिर्जा राजा जयसिंह की सेना में शामिल था ।

पृ. १५८ (१) प्रथीयराज—आमेर का प्रसिद्ध राजा पृथ्वीराज कछवाहा । वह बड़ा विवेकशील, धार्मिक और भगवद्भक्त था । कछवाहों की बारह कोटड़ियां खंगारोत, बलभद्रोत, नाथावत आदि राजा पृथ्वीराज के बारह पुत्रों से ही अलग-अलग प्रचलित हुई हैं । (शासनकाल वि.सं. १५५६-१५८४ तक) ना. इ. पृ. ३६-४१.

(२) कुंतिल—आमेर के राजा कछवाहा किल्हणदेव के पुत्र राजा कुंतिल । राजा कुंतिल वि. सं. १३३३ में आमेर के सिंहासन पर आसीन हुए थे । ना. इ. पृ. ३०

(३) पज्जून—सम्राट् पृथ्वीराज चौहान के समकालीन और सम्बन्धी राजा पज्जवन राय कछवाहा । राजा पज्जवनराय सम्राट् पृथ्वीराज और राजा जयचन्द राठौड़ के युद्ध में लड़ता हुआ काम आया था । कछवाहां री ख्यात

(४) मलेसी—राजा पज्जवनराय का ज्येष्ठ राजकुमार मलयसिंह कछवाहा । मलयसिंह भी सम्राट् पृथ्वीराज के पक्ष में राजा जयचन्द राठौड़ की सेना से लड़ता हुआ काम आया था । कछवाहां री ख्यात

पृ. १५६ अमर—जोधपुर के राजा गजसिंह का जेष्ठ राजकुमार और राव रायसिंह नागौर का पिता राव अमरसिंह राठौड़ । उसका जन्म वि.सं. १६७० पौष शुक्ला ११

को हुआ था। वह बड़ा वीर, हठी और निर्भीक योद्धा था। राजा गजसिंह अपने छोटे राजकुमार जसवन्तसिंह को अपना उत्तराधिकारी बनाना चाहते थे। इसलिए राजा गजसिंह ने बादशाह शाहजहां को कह कर अमरसिंह को अपने जीवनकाल में ही नागौर का राज्य और राव की उपाधि प्रदान करवा कर जोधपुर के अधिकार से वंचित कर दिया था। वह वि. सं. १७०१ में शाहजादा दाराशिकोह की हवेली में बादशाह शाहजहां के सरह दरबार में फौज बक्षी सलावत खां को मारने के बाद अर्जुन गौड़ और खलीलुल्ला खां आदि छह योद्धाओं के सामूहिक प्रहारों से मारा गया था।

—म. उ. भा. १ पृ. ६७-७३ सू. प्र. भा. ३ भूमिका. पृ. ४७.

पृ. १६६ (१) **सांगो**--हदमाल का पुत्र संग्रामसिंह कछवाहा। वह भी अपने भाई मथुरादास और माधोदास सहित बहादुरपुर के युद्ध में शाही पक्षीय सेना में शामिल था।

(२) **कलियांण**—अलवर-राज्य के स्वामी नरूका कछवाहों का पूर्वज राव कल्याणसिंह फतहसिंहोत नरूका। तब वह मिर्जा राजा जयसिंह के द्वितीय राजकुमार कीर्तिसिंह की सेवा में था। बहादुरपुर के युद्ध में वह भी मिर्जा राजा जयसिंह की सेना में शामिल था।

—ला. रा. भूमिका पृ. ३४-३५.

(३) **कुसळेस**—कुशलसिंह नाथावत कछवाहा। जयपुर में नाथावत कछवाहों के चौमू और सामोद दो बड़े ठिकाने थे, परन्तु उनके इतिहास में कुशलसिंह नाम के किसी नाथावत का कोई नाम-संकेत नहीं मिलता। बहादुरपुर के युद्ध में वह भी कछवाहों की सेना में था।

(४) **गिरवर**—कछवाहों का पोलपात्र राव गिरवर भाट। उसके पिता का नाम परशुराम था। वह रावों की टाक-शाखा का था। अनुमानतः वह भट्टों की गली के रावों का पूर्वज हो। गिरवर भी बहादुरपुर के युद्ध में कछवाहों की सेना के साथ में था।

(५) **अखौ**—गिरवर का भाई और परशुराम का पुत्र अक्षयराज राव। वह भी अपने भाई के साथ बहादुरपुर के युद्ध में कछवाहों की सेना में था।

(६) **हरी**—गोयंददास ऊहड़ का पुत्र हरिसिंह ऊहड़। वह भी अपने पिता सहित बहादुरपुर के युद्ध में सम्मिलित था।

(७) **गोयंद**—हरिसिंह ऊहड़ का पिता गोयंददास ऊहड़। वह भी अपने पुत्र सहित बहादुरपुर के युद्ध में शाहजादा शुजा के विरुद्ध शाही सेना में शामिल हुआ था।

पृ. १६७ **रघुनाथ**—चंद का वंशज रघुनाथ कौन और कहाँ का था, कोई आधार-स्रोत प्राप्त नहीं है।

पृ. १७० **जैत**—कर्ण के पुत्र जैतसिंह की जानकारी भी प्राप्त नहीं है।

पृ. १७१ **सांवर**—सांवरदास भाट (राव) का भी स्थान और अन्य परिचय उपलब्ध नहीं है।

परिशिष्ट ३

नामानुक्रमणिका

इ

ई

उ

ऊ

ऐ

ओ

क

ख

च

छ

ज

य

र

परिशिष्ट (४)

छन्दानुक्रमणिका

उज्जयिनी युद्ध

छन्द नाम	प्रथम पंक्ति	पृ०	पद्यांक
अलिला	जिण वेळां अजमाल ज जग्गं	३३	७६
ऊधोर	गैमर जिसै हैमरगात	४५	१०७
किलकिला	सजै यम मारुव सेन्नि सपांण	६२	१३१
गाथा	उलटि दळ अणभंगो	२७	६२
चोपई	प्रथियराज सांमंत सिंघाळी	३९	८९
चोपाई	गोड़ अमर देखि गढ़ गाढ़ौ	१९	५१
छप्पय (कवित्त)	अध फौंज मुंह अग्गै पड़ि अध फौज स पूठी	८७	१७७
	अबरी वर अजमाल चढ़ै नरइंद स चावौ	४८	१०९
	अवरंग साहि मुराद पेखि मांडौ गढ़ये हौ	२०	५३
	अष्टम तिथि गुरुवार पुणै वयसाख कृष्ण पक्षि	२८	६६
	आलै येमि नकीब सिलहबंदो सांमंतां	३५	८२
	आजि छत्र ओरठो साहि ओरठी स जाणो	९७	१९१
	इंद्रभांण जमरांण किसूं वाखांण कहीजै	४०	९४
	इतें गल महि उल्लही उभै साहां दळ आया	२७	६३
	उरड़ि उरड़ि अजमाल फौज सुलतांणी फाड़ै	९६	१८७
	ओरंग रा जासूस लीय जासूसी दिल्ली	१०	२१
	ओरंग साहि अवीह कोप करि येमि कहाये	१९	४९
	कहीस हाडा कथ्थ सुणे बाहुड्यो बसीठी	६०	१२७
	कितां घाव सेंकोजै कितां घाव बांधीजै	१०२	२०२
	कुसळसिंघ रणधींग अक्खि अक्खो अणबीहं	४०	९३
	खग बाहौ अफितारखांन मुगलांण स मांझी	६४	१३६
	गज केसरि व्रद गौड़ अहल व्रद गौड़ बखांणै	८२	१६०
	गज फौजां बेहंडी हठी हरवळ बंगाळां	९७	१८९
	घाव कियो गज घटे असुर ऊलटे अपारां	९९	१९६
	चढ़ै रतन कमधज्ज जतन जीव री न जांणै	६२	१३२
	चवि हजारे [illegible]	७४	१४८

छन्द नाम	प्रथम पंक्ति	पृ०	पद्यांक
	कहुं परै बीर खंडह बिहंड	१०१	१९९
	थिरं ऊतरं साहिवारास थप्पै	३	१०
	दळथंभ चढै झालो वुझल्ल	६३	१३३
	यत करही सूर संनांन दान	३१	७५
	सजि सूर अनै सांमंत सारं	४३	१०२
	सुरितांण बिन्है चढ़िया सपांण	७२	१४७
बिराज (बीराज)	घसै सार धारं	८८	१७८
	वणै वीरभद्दं	३६	८४
वेअक्खरी	बाजा बरण बरण बणावं	६८	१४१
	साह कहै अवरंग स पांणी	२२	५९
बेलीभुजंगी	रचै सिलह येम जोधा मुरारी	३७	८७
	सजै साहि सलेम सेनां सपांणं	५	१७
भाखड़ी	अरजन उरड़ैजीक औरंग आहुड़ै	९१	१८६
भुजंगी	कछे काछ जोधार मेवास वाछं	४४	१०४
	चढै गौड़ पीड़ी तणा चावा	४८	११०
	जितं साह सन्नाह सूर सज्जे	९८	१९३
	धरा गाहि ऊजेणि अवरंग धायौ	१०३	२०३
	पड़ै खेत वीरभद्र झूझि पड़ै	१००	१९८
	रटं हिंदवां नाम सिव रांम रांम	७७	१५४
भुजंगीप्रियात	पळं बीर वैताळ भाराथ पूक्षे	२७	६४
रसावळा (रसावळो)	असपत्ति उच्चरै मत्ति हिंदू मरै	२०	५४
	रांम रांम रटे अजणं उव्लटे	९९.	१९५
रोमकंध	सजि सूर सुभट्टं थूरण थट्टं थट्ट गरट्टं तेथइया	६७	१४०
लघुनिराज	कमधं ये सुणी कथं	२४	६१
वचनिका	अहमदाबाद के जासूस जासूसी लाये	१२	३०
	औरंगसाह मुरादसाह ये लिक्षा किया	१५	३५
	औरंगसाहि मुरादसाहिये सौं फुरमाया	७६	१५१
	दिली के कासीद दक्षिण की धाये	७	१८
सागर	मोहणसिंघ हाडौ अमोडं	५४	११५
साटिक	सूंडाडंउ सिंदूर सोभसिरसा देवादन अप्रिता	१	३
	श्वेता अमर वैयसिता मुक्तासिरा मंगता	१	१
सोरठा	आखाड़ै अवनाड़	८१	१५७
	रायसिंघ जसराज	८१	१५६

धौलपुर युद्ध

पूर्व (बहादुरपुर)–युद्ध

सहायक ग्रन्थ-सूची

आलमगीर नामा	मुहम्मद काजिम कृत (बिबलोथिक इण्डिका संस्करण)
उदयपुर राज्य का इतिहास	डा० गौरीशंकर हीराचंद ओझा कृत, जिल्द २
कछवाहों के वीर गीत	सौभाग्यसिंह शेखावत, भगतपुरा का हस्तलिखित संग्रह
कछवाहां री ख्यात	राजस्थानी शोध संस्थान, जोधपुर का संग्रह
कोटा राज्य का इतिहास	डा० मथुरालाल शर्मा कृत, प्रथम भाग
खण्डेला का इतिहास	पं० सूर्यनारायण
मारवाड़ री ख्यात ग.	सीताराम लाळस, जोधपुर का संग्रह
गौड़ों के वीर गीत	सौभाग्यसिंह शेखावत, भगतपुरा का संग्रह
गोपाळदास गौड़ री बात	कुंवर देवीसिंह मंडावा का संग्रह
दाराशिकोह	डा० कालिकारंजन कानूगो
नाथावतों का इतिहास	हनुमान शर्मा कृत
मआसिरुल उमरा	ब्रजरत्नदास, बी० ए० एल० बी० द्वारा अनुवादित, भाग १
मारवाड़ का इतिहास	पं० विश्वेश्वरनाथ रेऊ कृत, भाग १
मारवाड़ री ख्यात ख	राजस्थानी शोध संस्थान, जोधपुर का संग्रह
मारवाड़ री ख्यात क	राजस्थानी शोध संस्थान, जोधपुर संग्रह
मारवाड़ के परगनों की विगत	मुंहता नैणसी लिखित, राजस्थानी शोध संस्थान, जोधपुर संग्रह
मुगलकालीन भारत	डा० आशीर्वादीलाल कृत, भाग २
मुगल-दरबार	अनुवादक ब्रजरत्नदास, बी. ए. एल. एल. बी., भाग १, २, ३, ४
मुंहता नैणसी री ख्यात	सं० बद्रीप्रसाद साकरिया, भाग १, २, ३, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर
राजपूताने का इतिहास	जगदीशसिंह गहलोत कृत, भाग २
राजपूताने का इतिहास	डा० गौरीशंकर हीराचंद ओझा कृत, भाग २
राजस्थानी बात संग्रह	सं० नारायणसिंह भाटी, राजस्थानी शोध-संस्थान, जोधपुर
राठौड़ां री ख्यात	राजस्थानी शोध संस्थान, जोधपुर का संग्रह
वचनिका राठौड़ रतनसिंध महेसदासोत री	सं० काशीराम शर्मा, डा० रघुबीरसिंह, सीतामऊ
राठौड़ों के वीर गीत	राजस्थानी शोध संस्थान, जोधपुर का संग्रह
रायसल जस सरोज, रामदयाल कविया कृत	सौभाग्यसिंह शेखावत का संग्रह
वरदा, त्रैमासिक पत्रिका,	राजस्थान साहित्य समिति. बिसाऊ

बांकीदास री ख्यात,	सं० नरोत्तमदास स्वामी, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर
वीरविनोद	महामहोपाध्याय कविराजा श्यामलदास कृत, भाग २
सूरज प्रकास	कविया करणीदान कृत, सं० सीताराम लाळस, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर, भाग ३
हाडों के वीर गीत	बंगाल हिन्दी मण्डल, कलकत्ता का संग्रह

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर द्वा

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला में प्रकाशित

राजस्थानी–हिन्दी-ग्रन्थ

१. कान्हड़दे प्रबन्ध, (ग्र. ११), महाकवि पद्मनाभ विरचित; सम्पादक - प्रो. के. बी. व्यास । मू. १२.२५

२. क्यामखां रासा, (ग्र. १३), कवि जान कृत; सम्पादक - डॉ. दशरथ शर्मा और अगरचन्द भंवरलाल नाहटा । मू. ४.७५

३. लावा रासा, (ग्र. १४) अपर नाम कूर्मवंशयशप्रकाश, गोपालदान कविया कृत; सम्पादक - श्रीमहताबचन्द खारेड़ । मू. ३.७५

४. बांकीदास री ख्यात, (ग्र. २१), बांकीदास कृत; सम्पादक - श्रीनरोत्तमदास स्वामी । मू. ५.५०

५. राजस्थानी साहित्य संग्रह भाग १, (ग्र. २७), सम्पादक - श्रीनरोत्तमदास स्वामी । मू. २.२५

६. राजस्थानी साहित्य संग्रह भाग २, (ग्र. ५२) तीन ऐतिहासिक वार्ताएं—बगड़ावत, प्रतापसिंह म्होकमसिंह और वीरमदे सोनगिरा; सम्पादक - पुरुषोत्तमलाल मेनारिया । मू. २.७५

७. कवीन्द्र-कल्पलता, (ग्र. ३४), कवीन्द्राचार्य सरस्वती कृत; सम्पादिका - रानी लक्ष्मीकुमारी चूण्डावत । मू. २.००

८. जुगलविलास, (ग्र. ३२), कुशलगढ़ के महाराजा पृथ्वीसिंहजी अपरनाम कवि पीथल कृत; सम्पादिका - रानी लक्ष्मीकुमारी चूण्डावत । मू. १.७५

९. भगतमाळ, (ग्र. ४३), चारण ब्रह्मदास दादूपंथी कृत; सम्पादक - श्रीउदयराज उज्ज्वल । मू. १.७५

१०. राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर के हस्तलिखित ग्रन्थों की सूची भाग १, (ग्र. ४२), ई. स. १९५६ तक संगृहीत ४००० ग्रंथों का वर्गीकृत सूचीपत्र; सम्पादक - मुनि जिनविजय, पुरातत्त्वाचार्य । मू. ७.५०

११. राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान के हस्तलिखित ग्रन्थों की सूची, भाग २, (ग्र. ५१), ७८५५ तक के ग्रन्थों का सूची-पत्र; सम्पादक - श्रीगोपालनारायण बहुरा । मू. १२.००

१२. राजस्थानी हस्तलिखित-ग्रन्थसूची भाग १, (ग्र. ४४), मार्च १९५८ तक के ग्रंथों का विवरण; सम्पादक - मुनि जिनविजय, पुरातत्त्वाचार्य । मू. ४.५०

१३. राजस्थानी हस्तलिखित ग्रन्थसूची भाग २, (ग्र. ५८), १९५८-५९ के संगृहीत ग्रंथों का विवरण; सम्पादक - पुरुषोत्तमलाल मेनारिया । मू. २.७५

१४. स्व. पुरोहित हरिनारायणजी विद्याभूषण-ग्रंथ-संग्रह, (ग्र. ५५), सम्पादक - श्री गोपालनारायण बहुरा और श्रीलक्ष्मीनारायण गोस्वामी । मू. ६.२५

१५. मुंहता नैणसी री ख्यात भाग १, (ग्र.४८), मुंहता नैणसी कृत; सम्पादक - श्री० श्रीबदरीप्रसाद साकरिया । मू. ८.५०

...सी री ख्यात भाग २, (ग्र. ४९), संपा०-प्रा० श्रीबदरीप्रसाद साकरिया।
मू. ९.५०

...नं० री ख्यात भाग ३, ((ग्र. ७२), ,, मू. ८.००

सूरजप्रकास भाग १, (ग्र. ५६), चारण करणीदान कविया कृत; सम्पादक—श्रीसीताराम लाळस। मू. ८.००

१९. सूरजप्रकास भाग २, (ग्र. ५७); सम्पादक - श्रीसीताराम लाळस। मू. ९.५०

२०. ,, भाग ३, (ग्र. ५८); ,, ,, ,, मू. ९.७५

२१. नेहतरंग, (ग्र. ६३), बूंदी नरेश राव बुधसिंह हाड़ा कृत; सम्पादक - श्री रामप्रसाद दाधीच। मू. ४.००

२२. मत्स्य-प्रदेश की हिन्दी-साहित्य को देन, (ग्र. ६६), लेखक डॉ. मोतीलाल गुप्त; मू. ७.००

२३. राजस्थान में संस्कृत साहित्य की खोज, (ग्र.३१), अनु० श्रीब्रह्मदत्त त्रिवेदी, प्रोफ़ेसर एस.आर. भाण्डारकर द्वारा हस्तलिखित संस्कृत-ग्रंथों की खोज में मध्यप्रदेश व राजस्थान में (१९०५-६ ई०) में की गई खोज की रिपोर्ट का हिन्दी अनुवाद। मू. ३.००

२४. समदर्शी आचार्य हरिभद्र, (ग्र. ६८), लेखक—पं० सुखलालजी, हिन्दी अनुवादक—शान्तिलाल म. जैन। मू. ३.००

२५. वीरवांण, (ग्र. ३३), ढाढी बादर कृत; सम्पादिका—रानी लक्ष्मीकुमारी चूंडावत। मू. ४.५०

२६. वसन्त-विलास फागु, (ग्र. ३६); सम्पादक - एम. सी. मोदी। मू. ५.५०

२७. रुघमणीहरण, (ग्र. ७४), महाकवि सांयाजी झूला कृत; सम्पादक—पुरुषोत्तमलाल मेनारिया। मू. ३.५०

२८. बुद्धि-विलास, (ग्र. ७३), बखतराम साह कृत; सम्पादक—श्री पद्मधर पाठक। मू. ३.७५

२९. रघुवरजसप्रकास, (ग्र. ५०), चारण कवि किसनाजी आढ़ा कृत; सम्पादक—श्री सीताराम लाळस। मू. ८.२५

३०. संस्कृत व प्राकृत ग्रन्थों का सूचीपत्र भाग १ (ग्र. ७१), राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर संग्रह का स्वरित रोमन-लिपि में ४००० ग्रन्थों का सूचीपत्र, अंत में विशिष्ट ग्रन्थों के उद्धरण; सम्पादक—पद्मश्री मुनि जिनविजय पुरातत्त्वाचार्य। मू. ३७.५०

३१. संस्कृत व प्राकृत ग्रन्थों का सूचीपत्र भाग २ अ. (ग्र. ७७), सम्पादक—पद्मश्री मुनि जिनविजय पुरातत्त्वाचार्य। मू. ३४.५०

३२. सन्त कवि रज्जब—सम्प्रदाय और साहित्य (ग्र. ७६), लेखक—डॉ. व्रजलाल वर्मा। मू. ७.२५

३३. प्रतापरासो, (ग्र. ७५), जाचिक जीवण कृत, सम्पादक—डॉ. मोतीलाल गुप्त। मू. ६.७५

३४. भक्तमाल, (ग्र. ७८) राघोदास कृत, चतुरदास कृत टीका; सम्पादक—श्री अगरचन्द नाहटा। मू. ६.७५

३५. पश्चिमी भारत की यात्रा, (ग्र. ८०) कर्नल जेम्स टॉड कृत, अनु० श्री गोपालनारायण बहुरा, एम.ए. मू. २१.००

बांकीदास री ख्या
(सी री ख्यात भाग २, (ग्र. ४६), संपा०-आ० श्रीबदरीप्रसाद

वीरविनोद - '(ग्र. ७२), ''

सूरज सूर ` चारण करणीदान कवि

श्री

१६. स क - श्रीसीताराम

२० ''

र हाड़ा